इलाहाबाद जिले के यमुना पार प्रदेश के सामाजिक आर्थिक विकास हेतु स्थानिक नियोजन

(SPATIAL PLANNING FOR SOCIO - ECONOMIC DEVELOPMENT OF TRANS - YAMUNA REGION OF ALLAHABAD DISTRICT)

भूगोल विषय में - डाक्टर आफ फिलासफी (डी0 फिल्0) उपाधि हेतु प्रस्तुत - शोध प्रबन्ध

निर्देशक
डा० बी० एन० मिश्र
प्रोफेसर, भूगोल विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

शोधकर्ता
रामराज तिवारी
भूगोल विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद
वर्ष - 2000
न-रात्रि

CERTIFICATE

Certified that the present thesis entitled Spatial Planning for Socio-Economic Development of Trans-Yamuna Region of Allahabad District being submitted for the degree of Doctor of Philosophy in Geography is the original work of Shri Ram Raj Tiwari who has worked as a research scholar under my supervision.

Date:- 2000
Navratri

6.10.2000

(Dr.B.N Mishra)
Professor
Department of Geography
University of Allahabad
Allahabad

आभार

मैं सर्वप्रथम परम श्रद्धेय, धैर्यशाली, कर्तव्यनिष्ठ, पथप्रदर्शक, गुरुप्रवर डा0 बी0एन0मिश्र, प्रोफेसर भूगोल विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ, जिनके अनवरत प्रोत्साहन, रचनात्मक कार्य प्रेरणा एवं कुशल निर्देशन के परिणामस्वरूप यह अपूर्व 'शोध प्रबन्ध' पूर्ण हुआ। गुरुजी के पारिवारिक सदस्यों से जो स्नेह मिला उसे भूलना, भूल ही होगी।

तत्पश्चात् प्राफेसर डा0 आर0पी0मिश्र (पूर्व कुलपति इ0वि0वि0), प्रोफेसर डा0 आर0एन0तिवारी (पूर्व विभागाध्यक्ष) वर्तमान विभागाध्यक्ष प्रोफेसर डा0 सविन्द्र सिंह, प्रोफेसर डा0 एच0एन0मिश्र, प्रोफेसर डा0 आर0सी0 तिवारी, प्रोफेसर डा0 के0 राय, डा0 मनोरमा सिन्हा, डा0 बी0एन0 सिंह, डा0 एस0एस0 ओझा, डा0 आलोक दुबे, डा0 महमूद अख्तर, डा0 सुधाकर त्रिपाठी, डा0 वन्दना शुक्ला, डा0 महेन्द्र सिंह, डा0 सन्तोष मिश्र का मैं विशेष आभारी हूँ जिन्होंने मेरा उत्साहवर्द्धन किया।

मैं, सपरिवार श्री टी0एन0द्विवेदी (पी.सी.एस.) एवं श्री सूर्य प्रकाश पाण्डेय (पी.सी.एस.) के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ, जिन्होंने सर्वेक्षण के दौरान गंगा यमुना की वीथियों से लेकर विन्ध्याचल की उपत्यका तक मेरा साथ दिया। एवं सर्वेक्षण यंत्रों का भार भी सम्भाला।

मैं अपने भूगोल प्रवक्ता भाइयों डा0 विनीत नारायण दुबे, डा0 महेन्द्र विक्रम सिंह, डा0 राधेश्याम मिश्र, डा0 कमल किशोर मिश्र एवं श्री प्रमोद पन्त, श्री शैलेन्द्र त्रिपाठी, श्री दुर्गेश शुक्ल आदि का विशेष आभारी हूँ, जिन्होंने सदासयता से पुस्तकें एवं सावधि पत्रिकाएं उपलब्ध कराकर इस शोध प्रबन्ध को पूर्ण कराया।

मैं अपने सुहृद् सहपाठी मित्र श्री मनीष शुक्ल (मैनेजर), श्री सतीश सिंह (प्रवक्ता), सुश्री डा0 कनक त्रिपाठी (प्रवक्ता), श्री अवधेश शुक्ल, श्री अनन्त राम तिवारी, श्री राजेन्द्र प्रसाद यादव (पी.सी.एस.), श्री सुभाष चन्द्र यादव (प्रवक्ता), सुश्री अर्चना राजे (प्रवक्ता), श्रीमती पूनम श्रीवास्तव, सुश्री ज्योति श्रीवास्तव, सुश्री

वन्दना वर्मा, सुश्री विनीता जॉन (प्रवक्ता ई0सी0सी0), श्री राजेश गौतम (ऑडिटर), श्री अवनीश सिंह (प्रवक्ता), श्री मृगेन्द्र सिंह (प्रवक्ता), श्रीमती अलका रानी सिंह (प्रवक्ता बी.एच.यू.), श्री जय शंकर शुक्ल इत्यादि का एवं इनके परिवार वालों का आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से इस शोध कार्य में मूल्यवान सुझाव एवं सहयोग प्रदान किया।

श्री संजय त्रिपाठी एवं स्व0 श्री अशोक मिश्र का मैं हृदय से आभारी हूँ, जिन्होंने शोध प्रबन्ध के अध्यायों की पाण्डुलिपि को पढ़ा एवं परामर्श दिया। साथ ही इलाहाबाद के विभिन्न कार्यालयों, पुस्तकालयों, तहसीलों एवं ब्लॉक मुख्यालयों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों तथा संख्याधिकारी, जनगणना निदेशक, जिला उद्योग केन्द्र निदेशक, जिला संचार केन्द्र निदेशक इत्यादि के प्रति भी अपना आभार व्यक्त करना चाहूँगा, जिन्होंने अपना अमूल्य सहयोग देते हुए ऑकड़े एवं सूचनाएं उपलब्ध कराईं। साथ ही मैं उन विद्वानों, लेखकों, शोध प्रबन्धकों के प्रति भी कृतज्ञ हूँ जिनसे मैंने शोध कार्य में मदद ली है।

केन्द्रीय जल आयोग-लखनऊ के वरिष्ठ संगणक श्री राहत सिंह जी एवं श्री जोर्ज फैंक्लिन तिर्की तथा श्री अनवर नईम सिद्दीकी का विशेष रूप से आभारी हूँ जिन्होंने टंकण, मानचित्र एवं रेखा चित्रों की तैयारी में सहायता की।

पंडित सर गंगा नाथ झा छात्रावास के सभी वरिष्ठ अन्तःवासियों श्री श्रीनारायण, श्री शैलेन्द राय, श्री विन्ध्यवासिनी त्रिपाठी आदि एवं कनिष्ठ अन्तःवासी श्री बृजेश मिश्र, श्री रत्नाकर तिवारी, श्री राकेश पाण्डेय, श्री मोहित किशोर भटनागर आदि का मैं आभारी हूँ जिन्होंने मेरा इस कार्य के प्रति उत्साह कम न होने दिया।

मैं उन परम पूज्यनीया माँ श्रीमती सावित्री देवी तिवारी एवं श्रद्धेय पिताजी श्री राम बहोर तिवारी एवं श्रद्धेय बड़े पिताजी श्री राम पाल तिवारी का विशेष आभारी हूँ जिनके अपरिमित वात्सल्य एवं अथाह स्नेह ने मुझमें इस महानेतर उपाधि की प्रबलेच्छा जागृत किया। साथ ही इन्हीं के समत्व शैक्षिक प्रणेता आदरणीय

श्री परशुराम द्विवेदी जी का आभारी हूँ जिन्होंने मुझे सम्बल प्रदान किया।

मैं अग्रज सहोदर श्री राघवेन्द्र त्रिपाठी, श्री सुरेश चन्द्र त्रिपाठी, (अभियन्ता) श्री धीरेन्द्र कुमार त्रिपाठी (वी.डी.ओ.) एवं भाभियों श्रीमती शोभना त्रिपाठी, श्रीमती बिन्दु त्रिपाठी, श्रीमती बिमला त्रिपाठी का ऋणी हूँ जिनकी स्नेही चरणरजनेमुझे इस महान उपाधि तक पहुँचाया। साथ ही कुटुम्ब के सभी चाचा-चाचियों, ज्येष्ठ भाइयों एवं अनुजों का आभारी हूँ जिन्होंने समय-समय पर मेरा उत्साह बढ़ाया। अपने सहोदर अनुज श्री तत्वदेव त्रिपाठी एवं श्री बुद्धदेव द्विवेदी (पी.सी.एस.) का आभार व्यक्त करना मात्र औपचारिकता ही होगी।

मैं अपने सभी जीजाजी लोगों एवं दीदियों, छोटी बहनों, भान्जे-भान्जियों एवं सभी पूजनीयों का विशेष आभारी हूँ जिनकी शुभाशीषों ने मुझे यहाँ तक पहुँचाया। साथ ही उन सभी सगे-सम्बन्धियों मित्रों सर्वेक्षण के दौरान आश्रयदाताओं के प्रति कृतज्ञ हूँ, [illegible] दौरान प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से मेरी सहायता की।

मैं अपनी शालीन वामा श्रीमती सलिलेश तिवारी का विशेष रूपसेकृतज्ञ हूँ, जिनकी परिमल पतिच्छाया ने इस उपाधि के प्रति अनुराग पैदा किया। साथ ही सभी बच्चों अभिषेक, अभिनव (पुत्र) मानसी (पुत्री) नमो, ओम, अरविन्द, अंकुर (भतीजे) राभा नीलम, सोनम, प्रियम, कविता, खुशबू (भतीजियां) का विशेष आभारी हूँ जिनकी नैसर्गिक किलकारियों ने मुझमें इस शोध कार्य के लिए सौर्य एवं स्फूर्ति उत्पन्न किया।

दिनांक .वर्ष 2000

नवरात्रि

विनयावत्

(राम राज तिवारी)

अनुक्रमणिका

List of Maps and Diagrams

LIST OF TABLES

फोटो प्लेट सूची

फोटो प्लेट नं0	विवरण
1	अपरदन द्वारा असमतल भूमि, देवघाट बजहा गॉव, कोरांव इलाहाबाद
2	खड़ा कटाव, जवाइन गॉव कोरांव इलाहाबाद
3	बरांव बाजार, करछना इलाहाबाद
4	सड़क जलभराव उरूवा ब्लॉक इलाहाबाद
5	घुमक्कड़ जाति 'नट' बसाव स्थल - नैनी सेवा केन्द्र - चाका, इलाहाबाद
6	कूड़ा-कचरा ढेर - नैनी सेवा केन्द्र, चाका इलाहाबाद
7	कपड़ा विक्रय केन्द्र, भारतगंज सेवा केन्द्र, माण्डा इलाहाबाद
8	सब्जी बाजार, भारतगंज सेवा केन्द्र, माण्डा इलाहाबाद
9	करमा बाजार सेवा केन्द्र, कौंधियारा इलाहाबाद
10	खीरी बाजार सेवा केन्द्र, कोरांव इलाहाबाद
11	थोक मण्डी, 'चावल' लेड़ियारी कोरांव इलाहाबाद
12	थोक मण्डी - 'गेहूँ' लेड़ियारी, कोरांव इलाहाबाद
13	धान कृषि लेहड़ी गॉव, उरूवा इलाहाबाद
14	बाजरा अरहर मिश्रित कृषि चितौरी ग्राम, जसरा इलाहाबाद
15	भेड़ पालन गौहानी ग्राम, जसरा इलाहाबाद
16	कुक्कुट पालन बरौली ग्राम, कौंधियारा इलाहाबाद
17	जलभराव एवं बलीजा विस्तार, कौंधियारा ब्लॉक इलाहाबाद
18	किसान सेवा केन्द्र, खजुरी ग्राम, कोरांव इलाहाबाद
19	यातायात प्रमुख चौराहा, मेजा रोड इलाहाबाद
20	सड़क जलभराव सिरसा, मेजा रोड मार्ग, इलाहाबाद
21	दरी बुनाई केन्द्र, लेहड़ी ग्राम, उरूवा, इलाहाबाद
22	सिलिका सैण्ड खनन केन्द्र, गोबरा कल्याणपुर क्षेत्र, शंकरगढ़, इलाहाबाद
23	गोपाल विद्यालय इण्टर कालेज, कोरांव इलाहाबाद
24	गाढ़ा जूनियर हाई स्कूल, गाढ़ा, कोरांव, इलाहाबाद
25	सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र, तरांव, कोरांव, इलाहाबाद

अध्याय .1

संकल्पनात्मक आधार

भौगोलिक आकृतियो के वितरण का स्थानिक दृष्टिकोण भूगोल की पराकाष्ठा एवं आभ्यान्तर (सारभाग) को प्रकट करता है,और मानवीय क्रिया कलापों के संगठन का स्थानिक आयाम सभी वर्गीकरणों और विभाजनों यथा. सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, नृत्तात्विक, भौतिकीय एवं सांस्कृतिक की अपेक्षा अधिक बृहत है। स्वाभाविक रूप से भौगोलिक वितरणं के स्थानिक आयाम का प्रमुख सम्बन्ध भूगोलवेत्ताओं से होता है, और उस विषय के लिए 'प्रदेश ' जो पृथ्वी में एक भिन्न विशिष्ट और अलग क्षेत्रीय इकाई है, का महत्व भूगोल एवं भूगोलवेत्ताओं दोनों से है। आज तक 'प्रदेश' की कोई सार्वभौमिक परिभाषा नहीं दी जा सकी है, किन्तु भूगोल में प्रदेश के अर्थ में ' समयानुवर्ती अनभिज्ञता[1] एक विचारणीय अनिश्चितता पैदा करती है। रिचर्डसन[2] ने ठीक ही कहा है कि इस शीर्षक पर हजारों शब्द बिना किसी संतोषजनक उत्तर के लिखे जा चुके हैं। डेविस[3] आगे कहते हैं कि 'भौगोलिक प्रदेशों' से शुरूआत करने पर साधारणतया हमें सूचनाओं का ऐसा विन्यास प्राप्त होता है, जो कि किसी भी सिद्धान्त के अनुसार किसी भी तरह ठीक हो।

प्रदेश की परिभाषा इस विचारणीय अनिश्चितता के कारण, प्रदेश का परिसीमन भी लम्बे विवाद का विषय रहा है, और अभी तक कोई संतोषजनक हल प्रस्तुत नहीं किया जा सका है। रिचर्डसन ने प्रदेश के परिसीमन को तीन आधारों पर वर्गीकरण करने का प्रयास किया समरूप प्रदेश, केन्द्रीय और योजना प्रदेश। जबकि वर्तमान प्रवृत्ति यह दर्शाती है कि विश्व का प्रत्येक भाग किसी न किसी समस्या से घिरा है, चाहे वह सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक कोई भी हो, जिससे प्रदेश की पहचान का एक अन्य आधार बनता है। अतः प्रदेश के चार प्रकार हो सकते हैं :

1. आकारजनक प्रदेश (Formal Region)
2. कार्यात्मक प्रदेश (Functional Region)
3. योजना प्रदेश (Planning Region)
4. पिछड़े प्रदेश (Depressed Region)

1. आकारजनक प्रदेश :-

आकारजनक प्रदेश की परिभाषा भौगोलिक आकृति में समानता एवं एकरूपता की प्राप्ति के आधार पर की जाती है। अतः एक प्रकार की समरूप इकाई को आकारजनक प्रदेश कहा जाता है।मेयर[4] ने कहा है कि समरूप प्रदेश कुछ एक की समरूपता के सन्दर्भ में अथवा भौतिक, आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक समरूपता तथा अन्य लक्षणों पर बल देता है। आकारजनक प्रदेश में किसी एक तत्वके समांग वितरण को प्रदर्शित किया जाता है, जैसे भूपृष्ठ पर उच्चावच तत्व के समान वितरण वाले प्रदेश आकारजनक प्रदेश हैं। समरूप प्रदेश यौगिक समाकलन समिश्र से प्राथमिक आंशिक समाकलन को तथा संपूर्ण विषयों से एक विषय को प्रदर्शित कर सकते हैं।

2. कार्यात्मक प्रदेश :-

कार्यात्मक प्रदेश के सन्दर्भ में, समरूप क्षेत्र इसके घेरे से अलग हो जाता है, यह इसमें मान्य नहीं होता। किन्तु एक समिश्र क्षेत्र जिसमें सम्पूर्ण कियात्मकता साथ हो, इस तरह के प्रदेश का अभ्यान्तर बनाता है। इसमें अंतरकिया (Interaction) पर बल दिया जाता है, मानव.भूमि का कर्मोपलक्षी सम्बन्ध ही कार्यात्मक प्रदेश के निर्धारण का आधार है। कार्यात्मक प्रदेश केन्द्रीय कियाओं और सेवाओं की विविधता के आधार पर केन्द्रीय स्थल या गुच्छा (Node) के चारों ओर संगठित होता है। ऐसे संगठित क्षेत्र को सेवा क्षेत्र भी कहते हैं। इस प्रकार के सेवा क्षेत्र को केन्द्राधारित प्रदेश (Nodal Region)

कहा जाता है। मेयर के अनुसार केन्द्र स्थल के कार्यात्मक महत्व को केन्द्रीयता कहते हैं जिससे अन्तरक्रिया उत्पन्न होती है जो नगरीय केन्द्रीय स्थल के चारों ओर परिचालित होती है। परिणामस्वरूप नगरीय एवं ग्रामीण क्षेत्र कार्यात्मक आधार पर एक दूसरे से अन्तरसम्बन्धित हो जाते हैं। यह एक ऐसा क्षेत्र है जिसके अन्तर्गत विपरीत भौतिक पर्यावरण विविध मानव संचालित क्रिया कलापों को उत्पन्न करता है जो उस क्षेत्र सम्पूर्ण संगठन को संचालित करने में पूरक होते हैं। कार्यात्मक प्रदेश के सभी भाग अन्तरसम्बन्धित एवं सहकर्मी होते हैं तथा एक दूसरे के ऊपर पूर्णतया निर्भर होते हैं। केन्द्र स्थल एवं संचार रेखाएं इसके मुख्य अवयव हैं।

क्रियात्मक अन्तरसम्बन्ध प्रायः जनसंख्या विविध कार्यों एवं सेवाओं के प्रवाह और संचार को प्रकट करते हैं। प्रवाह एक अथवा दो प्रमुख केन्द्रों की ओर ध्रुवीकृत होता है जो कि प्रायः नगरीय केन्द्र होते हैं। इस प्रकार कार्यात्मक प्रदेश में एक विशिष्ट प्रकार का ध्रुवीकरण एवं स्थानिक संगठन प्राप्त होता है।

3. योजना प्रदेश :.

मेयर के अनुसार इस तरह के नीति निर्धारक प्रदेश मुख्यतया प्रशासनिक सामन्जस्य के साथ जुड़े होते हैं। यद्यपि नियोजन प्रदेश की प्रशासनिक सीमाएं विवेकाधीन हैं और समरूपता एवं केन्द्रीयता के अनुरूप नहीं हो सकती हैं, फिर भी राजनैतिक वास्तविकता और आंकड़ों की प्राप्यता उन्हें एक व्यावहारिक आवश्यकता बनाती है[5]।

मिश्रा[6] के अनुसार " नियोजन प्रदेश वास्तव में एक संश्लेषित प्रदेश है, जो कुल मिलाकर आर्थिक, सामाजिक, पर्यावरणीय और प्रशासनिक प्रदेशों की संकल्पनाओं को जोड़ते हैं।" लीप्ले द्वारा प्रतिपादित और पैट्रिक गिडीज

द्वारा ग्रहीत स्थल.कार्य.जनसंख्या(Place-Work-Folk) सिद्धान्त भौगोलिक तत्वों के ऐसे अंतर्सबंध को प्रदर्शित करता है, जो वास्तव में पर्यावरण, अर्थव्यवस्था एवं समाज के प्रतीक हैं। ये तीनों एक ही प्रकिया के प्रतिकिया, अन्तरकिया और किया के अन्योन्याश्रित तत्व हैं[7] । राव[8] नियोजन प्रदेश की कल्पना एक ऐसी व्यवस्था के रूप में करते हैं जिसमें बहुत से क्षेत्रीय तत्व समाहित होते हैं, जो किया और प्रतिकया को प्रभावित और संचालित करते हैं। इनमें से किसी एक तत्व में परिवर्तन आवश्यक रूप से दूसरे तत्व में भी परिवर्तन उत्पन्न कर देते हैं। इस प्रकार किया प्रतिकिया की एक श्रृंखला बन जाती है। पाठक एवं कुन्दु[9] नियोजन प्रदेशों की विशेषताएं बताते हुए रेखांकित करते हैं कि नियोजन प्रदेश में संतोषजनक स्तर तक उत्पाद वस्तुओं और संसाधनों का पर्याप्त भण्डार होना चाहिए। कार्यान्वित एवं चयनित क्षेत्र में प्रभावपूर्ण आन्तरिक समरूप संसाधन संरचना होनी चाहिए। मालगावकर एवं धीयरा[10] नियोजन प्रदेश के लिए स्पष्ट रूप से समरूपता, केन्द्रीयता और प्रशासनिक सुविधा के तत्वों पर बल देते हैं।

4. पिछड़े प्रदेश :-

कुछ क्षेत्र बहुत विकसित होते हैं, कुछ कम विकसित, कुछ विकासशील, कुछ विकासोन्मुख और कुछ पिछड़े होते हैं। ऐसा क्षेत्र जिसमें इनसे मिलती. जुलती समस्याएं होती हैं उन्हें पिछड़े प्रदेश कहा जाता हे। पिछड़े प्रदेशों में संसाधनों के निम्नस्तरीय उपयोग एवं उपलब्धता के परिणामस्वरूप आय, रोजगार और कल्याण के निम्न स्तर पाये जाते हैं। पिछड़े प्रदेश कुछ केन्द्रीकृत उद्योगों पर निर्भर होते हैं। पिछड़े प्रदेशों से संबंधित प्रादेशिक नियोजन स्वपोषित विकास हेतु पूरक नीतियां एवं प्रभावित प्रदेशों में नये आर्थिक किया कलापों को प्रोत्साहित करने हेतु तर्कसंगत नीतियों द्वारा प्रादेशिक विशेषीकरण द्वारा उत्पन्न विरोधी प्रवृत्तियों को दूर करने का प्रयास करता है[11] ।

<u>सेवा केन्द्रों की संकल्पना</u>

धरातल पर प्राचीन काल से ही मानवीय क्रियाओं के संगठन की समस्या अर्थशास्त्रियों, योजनाशास्त्रियों और धरातलीय वैज्ञानिकों के विचार का विषय रहा है। कई विद्वानों ने इस ओर सराहनीय एवं विचारणीय प्रयास किये और कई सिद्धान्त एवं परिकल्पनाएं प्रतिपादित किए। वानथ्यूनेन ने 1826 में सर्वप्रथम ऐसा प्रयास किया। इन्होंने अपना सिद्धान्त पृथक प्रदेश सिद्धान्त (Theory of Isolated State)[12] प्रतिपादित किया और अग्रिम प्रदेश उपयोगिता का एक प्रतिरूप (Model) बनाया। इनके प्रतिरूप में पृथक समदैशिक मैदान (Isotropic Surface) के साथ केन्द्रीय शहर के चारों ओर विभिन्न भू उपयोग को अलग .अलग वलय पेटियों से दिखाया गया है। यातायात लागत किसी स्थान पर विभिन्न प्रकार की उत्पादक इकाइयों के स्थानीयकरण का मुख्य आधार होती थी। आदर्श धरातलीय एवं समरूप वितरण मान्यताओं के कारण वानथ्यूनेन का सिद्धान्त काफी अव्यवहारिक था। इसलिए स्थानिक क्रियाओं के सेवा क्षेत्रों की सन्तुलित संरचना असफल हो गई। 1933 में वाल्टर क्रिस्टालर[13] ने धरातल पर केन्द्रीकरण प्रकीर्णन प्रक्रिया की व्याख्या के लिए समरूप मैदान (Isotropic Surface) की पूर्वधारणा के आधार पर प्राकृतिक संसाधनों, जनसंख्या उपभोक्ता वरीयता और प्रत्येक उत्पाद के लिए उत्पादन प्रविधि हेतु अपना 'केन्द्र स्थल सिद्धान्त '(Central Place Theory) प्रस्तुत किया। अपने षटकोणीय प्रतिरूप में राष्ट्रीय महत्व के महानगर से लेकर एक छोटे पुरवे तक के विविध आकार वाले केन्द्रों के समान वितरण की वकालत (Adocated) की ताकि कम से कम केन्द्र स्थलों द्वारा किसी प्रदेश की प्रभावी सेवा हो सके। क्रिस्टालर आगे अनुबद्ध करते हैं, कि किसी प्रदेश में एक छोटे गांव से लेकर राष्ट्रीय स्तर के नगर तक केन्द्र स्थलों का एक पदानुक्रम होता है, जिनमें विविध प्रकार के केन्द्रीय कार्य एवं सेवाएं पायी जाती हैं। छोटे केन्द्र स्थलों पर न्यूनस्तरीय कार्य एवं सेवाएं मिलती हैं, तथा बड़े केन्द्र स्थलों पर छोटे केन्द्र स्थलों के कार्यों एवं सेवाओं के साथ

कुछ विशिष्ट एवं बड़े किया कलाप एवं सेवाएं प्राप्त होती हैं। इस प्रकार विविध स्थानिक स्तरों पर विविध श्रेणी के केन्द्र स्थलों द्वारा सेवित षटकोणीय कार्यात्मक प्रदेशों के पदानुकम का विकास होता है। केन्द्र स्थलों के विभिन्न कम प्रदेश के षटभुजीय कार्यों के अनुकम द्वारा नियंत्रित होता है। इन्होंने यह भी माना कि यातायात लागत, मांग, कार्य और आर्थिक मापदण्ड उत्पादों के आधार पर परिवर्तित होते हैं, परिणामस्वरूप उत्पादित वस्तुएं एवं सेवाओं की स्थानिक सीमा भी बदलती रहती है[14]। यद्यपि किस्टालर का 'केन्द्र स्थल सिद्धान्त' आज भी अनेक सामाजिक, आर्थिक सेवाओं के विकेन्द्रित केन्द्रीकरण एवं किसी प्रदेश के सामाजिक आर्थिक विकास हेतु एक प्रभावशाली प्रतिदर्श प्रस्तुत करता है, फिर भी इसे समांगी धरातलीय दशाओं एवं मात्र सेवा क्षेत्र हेतु इसकी उपयोगिता के आधार पर इसकी आलोचना भी हुई है[15]। किस्टालर की सैद्धान्तिक अवधारणा के समान ही लश ने भी अपना केन्द्रस्थल सिद्धान्त प्रतिपादित किया, जो मूलतः किस्टालर के सिद्धान्त का विस्तार एवं संशोधन मात्र है।

लश ने अपना सिद्धान्त 1944 में प्रतिपादित किया जो कि 1954 में स्टापलर द्वारा अंग्रेजी में इकोनॉमिक्स ऑफ लोकेशन
(Economics of Location) के रूप में प्रस्तुत किया। लश के सिद्धान्त में एक आर्थिक भू क्षेत्र की व्याख्या है[16]। इनके प्रतिरूप में केन्द्र स्थलों का स्थायी एवं निश्चित अनुकम नहीं है, बल्कि पूर्ण प्रतियोगी दशाओं के अन्तर्गत स्थितियों का अपेक्षाकृत गतिशील संतुलन है[17]।

कुछ विद्वानों ने विभिन्न प्रदेशों में लश एवं किस्टालर के सिद्धान्तों का परीक्षण करने के लिए आनुभविक प्रयास किया है। इनमें मुख्य विद्वान उलमैन[18] ब्रुश[19] ब्रेसी[20] बेरी[21] स्मेल्स[22] किंग[23] डेविस[24] और डेविज़[25] हैं। वे विद्वान जिन्होंने किस्टालर माडल को स्वीकार किया वे ज्यादातर भूगोलवेत्ता थे

और मानव तथा उनकी क्रियाओं के एकत्रीकरण को समाज में सामाजिक एवं आर्थिक परिवर्तन के स्थानिक परावर्तन के रूप में देखा। जबकि वे विद्वान जिन्होंने लश की योजना का अनुकरण किया वे ज्यादातर अर्थशास्त्री थे[26]। पेराक्स[27] ने 1955 में 'विकास ध्रुव सिद्धान्त' का प्रतिपादन किया। इन्होंने कल्पना की कि केन्द्र की स्थिति अथवा विकासध्रुव एक भावात्मक आर्थिक धरातल (Abstract Economic Space) है, जिसमें केन्द्रापसारी शक्तियां बाहर की ओर प्रसारित होती हैं तथा केन्द्राभिसारी शक्तियां केन्द्र की ओर प्रसारित होती हैं।[28] बाद में वाउदविले[29] ने पेराक्स के 'विकास ध्रुव सिद्धान्त' में स्थान के तत्व को जोड़ने का प्रयास किया। हर्शमैन[30] और मिर्डेल[31] ने धरातल पर विकास के संचार पर कार्य किया। लेकिन वास्तविक रूप से धरातल पर नवाचारों के प्रसरण का मूलाधार टी हैगर स्टेन्ड[32] के 'प्रसरण सिद्धान्त' के साथ प्रस्तुत हुआ।इन्होने कहा कि नवाचारों की शाखाएं एक बड़े केन्द्र से शुरू होती है, मध्यम केन्द्रों से होती हुई निम्न केन्द्रों की ओर प्रसारित होती है। आर0 पी0 मिश्रा[33] ने 1970 में, किस्टालर के केन्द्रस्थल सिद्धान्त, पेराक्स के विकास ध्रुव सिद्धान्त, टी0 हेगर स्टेन्ड के प्रसरण सिद्धान्त के प्राथमिक तत्वों के योग से अपने विकास केन्द्र (Growth Foci) की परिकल्पना को प्रतिपादित किया। इन्होंने भारत[34] के सन्दर्भ में केन्द्रों का पांच स्तरीय कम-विकास ध्रुव, विकास केन्द्र, विकास विन्दु, सेवा केन्द्र और केन्द्रीय गांव प्रस्तुत किया। जो अपने निजी कार्यात्मक प्रदेश से शासित होते हैं तथा अपनी सेवाओं और कार्यो की गुणवत्ता के विशिष्ट समूह द्वारा निर्धारित होते हैं। विकास केन्द्र की संकल्पना समेकित क्षेत्र विकास संकल्पना के अन्दर निहित प्रभावी पृष्ठपोषण (Feed Back) तंत्र प्रस्तुत करती है। किस्टालर[35] के केन्द्रीय स्थल तथा पेरावस[36] के विकास ध्रुव की तरह ये सभी केन्द्र अपने चारों ओर समीपवर्ती ग्रामीण क्षेत्रों में विविध कार्य एवं सेवाएं प्रसारित करते हैं। इसी प्रकार ये केन्द्र ग्रामीण क्षेत्रों

में विकास तरंगें एवं नवाचारों को सम्प्रेषित करते हैं। इस तरह परोक्ष रूप से विकास केन्द्र संकल्पना आर्थिक क्षेत्र के सभी खण्डों को पूर्णरूपेण समेकित करती है। अन्य बहुत से विद्वानों का कार्य जैसे प्रकाशराव[37], एल०के०सेन[38], वनमाली[39], भट्[40], सुन्दरम[41], बी०एन०मिश्रा[42], जी०के०मिश्रा[43], महादेव[44] आदि, जिनका विकास ध्रुव योजना और समेकित क्षेत्र विकास में प्रयुक्त अध्ययन विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण है।

प्रादेशिक विकास और सेवा केन्द्र

आज कल विकासशील देशों में सन्तुलित सामाजिक आर्थिक विकास के लिए ठोस वाह्य सुविधाएं और अच्छी वितरण श्रृंखला तथा प्रादेशिक संसाधनों के सन्तुलित विदोहन के लिए एक विश्वस्तरीय चेतना बढ़ रही है। इन उद्देश्यों को पूरा करने के लिए प्रयत्न चल रहे हैं। सेवा केन्द्र योजना सामाजिक आर्थिक सेवाओं और नवाचारित संस्थानों के समुचित स्थिति के लिए अति प्रभावकारी यंत्र की तरह मान्यताप्राप्त है। सेवा केन्द्र योजना नगरीय एवं ग्रामीण क्षेत्रों तथा उत्पादक एवं उपभोक्ता क्षेत्रों के मध्य, जनसंख्या एवं वस्तुओं के स्वतंत्र एवं कुशल प्रवाह, अन्तर्क्रिया और संचार के लिए एक अच्छी श्रृंखला मूल्यांकित है। सेवा केन्द्रों की योजना का उद्देश्य अभिनव परिवर्तन, संसाधन और विकास सूचना की प्रसरण दक्षता तथा प्रादेशिक संभावना का विदोहन और संगठन, कम से कम गुच्छों के साथ किसी विशेष प्रदेश की सेवा करना है। इसलिए यह योजना ग्रामीण आधुनिकीकरण और परिवर्तन के लिए एक सरल रास्ता सुझाती है। ग्रामीण विकास हेतु सेवा केन्द्रों की योजना का उपयोग सुस्पष्ट प्रादेशिक असंतुलन का उन्मूलन करता है और संतुलित ग्रामीण विकास का मार्ग प्रशस्त करता है। वर्तमान शोध का उद्देश्य इलाहाबाद जिले के यमुना पार क्षेत्र की मुख्य सामाजिक आर्थिक विकास की समस्याओं को पहचानना है, वहाँ के सेवा केन्द्रों के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन करना एवं प्रादेशिक

विकास तथा वर्धन की प्रक्रिया में सेवा केन्द्रों की भूमिका का मूल्यांकन करना है।

विकासशील देशों में सीमित संसाधन, अपर्याप्त वाह्य सुविधाएं और कमजोर तकनीकी जानकारी होती है। अंतरसंबंधित, सुगठित एवं पूरक सामाजिक आर्थिक संगठन प्राप्त करने हेतु, विकासशील देशों में सेवा केन्द्रों या विकास ध्रुवों का एक संतुलित पदानुक्रम होना चाहिए, जो प्रदेश विशेष में अधिक संतुलित एवं प्रभावी विकास सुनिश्चित कर सके। इस योजना के क्रियान्वयन हेतु सेवा केन्द्र नीति का उपयोग आवश्यक है, जो सेवा केन्द्रों के सोपानीय स्थानिक पदानुक्रम के माध्यम से किसी प्रदेश के स्थानिक, सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक, तत्वों के समन्वयन हेतु एक व्यावहारिक एवं क्रियापरक प्रतिदर्श प्रस्तुत करता है। सेवा क्षेत्रों और उनके देहात के मध्य आपसी सामाजिक आर्थिक और स्थानिक अन्तर्क्रिया होती है। जैकब स्पेल्ट[45] ने सुझाया है कि यदि वर्तमान नगर नियोजन अपने उद्देश्यों की पूर्ति करना चाहता है तो उसे नगर एवं उसके प्रभाव क्षेत्र को एक इकाई मानकर नियोजन करना पड़ेगा। अतः नगर नियोजन के अन्तर्गत उसके प्रभाव क्षेत्र का नियोजन स्वतः सम्मिलित हो जाता है क्योंकि दोनों एक दूसरे से जैविक आधार पर एवं स्थानिक आधार पर अन्तरसंबंधित हैं। माथुर[46] ने इस विचार का समर्थन किया और सुझाया कि धरातल पर सुविधाओं के संगठन का सही स्थानिक विन्यास सेवा केन्द्रों द्वारा ही सम्भव हो सकता है। किन्तु भारत जैसे विकासशील देशों में एक बड़ा प्रादेशिक केन्द्र ही सम्पूर्ण प्रदेश पर प्रभावशाली होता है। यह केन्द्र प्राकृतिक एवं मानवीय दोनों प्रकार के संसाधनों को न केवल ग्रामीण क्षेत्रों से बल्कि नगरीय क्षेत्रों से आकर्षित करता है। असन्तुलित विकास की सम्पूर्ण समस्या में यह एक महत्वपूर्ण पहलू है। विकासशील देशों में प्रादेशिक असन्तुलन को दूर करने हेतु यह आवश्यक है कि बड़े प्रादेशिक नगरों एवं गांवों के मध्य सेवा केन्द्रों एवं उनके सेवा क्षेत्रों का उपयुक्त परिसीमन किया जाए।

इस प्रकार ऐसे कार्यात्मक प्रदेशों का पदानुक्रम संतुलित प्रादेशिक विकास हेतु एक विशिष्ट एवं प्रभावशाली प्रतिरूप प्रस्तुत करेगा। अतः इसके द्वारा नगरीय एवं ग्रामीण क्षेत्रों तथा उत्पादक एवं उपभोक्ता क्षेत्रों के मध्य के विकास असंतुलन को दूर किया जा सकेगा[47]।

नियोजन की संकल्पना

नियोजन का आशय अलग.अलग लोगों के लिए अलग.अलग होता है। इसकी परिभाषा व्यक्ति, व्यवसाय, प्रदेश, समय एवं क्षेत्र के आधार पर अलग.अलग होती है। फीडमैन[48] ने भी प्लानिंग(Planning) शब्द को परिभाषित करते हुए कहा है कि इसमें सामाजिक आर्थिक समस्या के बारे में एक चिन्तन समाविष्ट होता है और यह उत्कृष्ट रूप से भविष्य की ओर उन्मुख होता है। हिलहोर्स्ट[49] के अनुसार नियोजन की सकियता निर्णय लेने की प्रकिया में सम्मिलित होती है। इसका उद्देश्य किसी प्रदेश के उद्देश्यों एवं उपलब्ध सीमित संसाधनों के संदर्भ में उस क्षेत्र में सुविधओं का उपयुक्ततम समुच्चय प्रस्तुत करता है तथा जिसके द्वारा नीति.यंत्रों को समन्वित किया जाता हैं। मैरियम[50] कहते हैं कि नियोजन मानव पर्यावरण एवं सामान्य कल्याण से संबंधित लोक कार्यों में निश्चित दिशा, कमबद्धता, सामंजस्य एवं प्रगति उत्पन्न करने हेतु सामूहिक विवेक एवं दूरदर्शिता के उपयोग से संबंधित है। डोर[51] के अनुसार नियोजन वरेण्य साधनों द्वारा भावी लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु कियापरक निर्णय विकसित करने की प्रकिया है। फलूदी[52] के अनुसार नियोजन विकास उद्देश्यों के निर्धारण एवं भविष्य में लोक नीतियों एवं ठोस कार्यकमों के रूप में उनके रूपान्तरण से संबंधित एक विवेकपूर्ण एवं तर्कसंगत विधि का प्रयोग है। मिश्रा[53] ने इन उपरोक्त विचारों को समाविष्ट करते हुए कहा कि प्रादेशिक नियोजन मानव समाज को इस रूप में संगठित करने का साधन है ताकि वह

परिवर्तनशील सामाजिक, तकनीकी पर्यावरण से समन्वय स्थापित करके उस पर्यावरण का समाज के अधिकतम लाभ हेतु प्रयोग कर सके।

नियोजन के प्रकार

नियोजन एक व्यापक किया कलाप ही नहीं है बल्कियह एक मिश्रित दुष्कर प्रकिया है जिसमें सामाजिक आर्थिक ,राजनैतिक, सांस्कृतिक और प्राविधिक कारणों की विविधता सम्मिलित है। निष्कर्ष रूप में 'नियोजन प्रकार ' भौगोलिक वर्गीकरण की एक जटिल चुनौती एवं समस्या है[54]। यद्यपि नियोजन शब्द की गतिशील प्रकृति ने, नियोजन वर्गीकरण के अनेक मापदण्डों को पीछे छोड़ दिया है, लेकिन क्षेत्रीय स्तर, समय, उद्देश्य, अनुकम, संगठन और सुगमता (उपागम) महत्वपूर्ण स्वीकृत आधार है जिनपर नियोजन के प्रकार का प्रयास किया गया है। उपरोक्त मापदण्डों के आधार पर नियोजन के प्रकारों का एक संक्षिप्त वर्णन निम्न रूप में प्रस्तुत है: ..

क्षेत्रीय आधार :-

क्षेत्रीय आधार पर नियोजन को दो प्रकारों में विभाजित किया जाता है, जैसें

1. एकल स्तरीय नियोजन।
2. बहुस्तरीय नियोजन

एकल स्तरीय नियोजन विश्व के विकासपरक एवं विकासशील देशों का प्रारूप है। जिसकी विशेषता संसाधनों की उपयोगिता का निम्न स्तर, अकुशल मानव शक्ति और अर्थ का अस्वस्थ्य संगठन है। इन दशाओं में नियोजन का प्रयास केवल राष्टीय स्तर पर हुआ है।

इसके विपरीत बहुस्तरीय नियोजन विभिन्न क्षेत्रीय स्तरों पर किया गया है, जैसें - वृहदस्तर (राष्टीय), मध्यम (प्रादेशिक) एवं लघु (स्थानीय) स्तर।

नियोजन का यह प्रकार पूर्व प्रकार की अपेक्षा अधिक वृहद होता है क्योंकि इसमें विवध क्षेत्रीय स्तरों पर विकास और संसाधनों के उपयोग की सुविधाएं सामान्य रूप से उपलब्ध होती हैं, लोगों को अपने कल्याण के लिए प्रशिक्षित किया जाता है, प्रादेशिक और स्थानीय आवश्यकताओं एवं आकांक्षाओं को समुचित महत्व दिया जाता है और राष्टीय मांगों का अत्यधिक प्रतिनिधित्व होता है।

समय आधारित नियोजन :-

समय के आधार पर नियोजन को अल्पकालिक एवं दीर्घकालिक में विभाजित किया जाता सकता है। अल्पकालिक एवं अल्पकालिक नियोजन तात्कालिक आवश्यक समस्या का निदान प्रस्तुत करता है जिसमें वर्तमान सामाजिक एवं आर्थिक संरचना में बहुत अधिक बदलाव नहीं होता। दीर्घकालिक नियोजन को कभी.कभी भ्रांति से संदर्श नियोजन कहा जाता है। इसके अन्तर्गत समाज के दीर्घकालिक सामाजिक और आर्थिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए संस्थागत एवं संरचनात्मक उद्देश्यों में बदलाव आवश्यक है।

उद्देश्य आधारित नियोजन :-

विभिन्न उद्देश्यों के आधार पर नियोजन को दो वर्गोअर्थखण्डीय नियोजन एवं स्थानिक नियोजन में विभाजित किया जाता है। अर्थखण्डीय नियोजन कभी.कभी अर्थव्यवस्था के विभिन्न खण्डों के लिए लक्ष्य निर्धारण उपलब्ध भौतिक एवं सामाजिक आर्थिक संसाधनों के संदर्भ में विकासोन्मुख जनसंख्या के बढ़ती मांगों, मांगों की प्रत्यास्थताओं, निर्यात और आमदनी के लिए किया जाता है अतः इसे विशेष उद्देश्य नियोजन कहा जाता है। हरमान सेन[55] ने सुझाव दिया कि विकास प्रकिया कार्यात्मक उपतंत्रों तक ही सीमित नहीं है बल्कि स्थानिक संगठन एवं आर्थिक किया कलापों के प्रसार में भी वह समान रूप से प्रभावी है तथा धरातल इसकी अभिव्यक्ति स्थानिक उपतंत्रों अथवा प्रदेशों के रूप में होती है। स्थानिक नियोजन प्रदेश की वास्तविकताओं

और स्थानिक कारणों पर ध्यान देता है तथा सम्पूर्ण नियोजन अथवा भौगोलिक नियोजन प्रस्तुत करता है, इसलिए यह अर्थ खण्डीय नियोजन से भिन्न होता है। इन दोनों प्रकार के नियोजनों में विभेद यह होता है कि, बाद वाले में स्थल पर विकास की भौगोलिक अभिव्यक्ति खण्डीय नियोजन का परिणाम है, जबकि पहले में अर्थ खण्डीय विकास समन्वित स्थानिक नियोजन द्वारा उत्पन्न होता है।

संगठन आधारित नियोजन :-

संगठन के आधार पर नियोजन आदेशात्मक नियोजन और निर्देशात्मक नियोजन, दो भागों में बांटा जाता है। आदेशात्मक नियोजन के अन्तर्गत सरकार अथवा सार्वजनिक उद्यम का उत्पादक संसाधनों पर पूर्ण नियंत्रण होता है। विकास की प्रकिया में निजी क्षेत्र का कोई सकारात्मक सहयोग नहीं होता है। इसके विपरीत निर्देशात्मक नियोजन के अन्तर्गत उत्पादन तंत्र निजी क्षेत्र में ही निहित होता है और यह आर्थिक वृद्धि को उत्प्रेरित करता है, यद्यपि अनेक मुख्य उद्यम सरकार के अर्द्ध या पूर्ण स्वामित्व में हो सकते हैं।

विषयवस्तु आधारित नियोजन :-

कार्यकम के आधार पर नियोजन को आर्थिक नियोजन और विकासात्मक नियोजन, दो भागों में बॉटा जाता है। आर्थिक नियोजन यूरोप अमेरिका जैसे आर्थिक रूप से विकसित देशों एवं प्रदेशों का प्रारूप है। इस तरह के नियोजन का उद्देश्य प्रमुखतया व्यक्ति और बाजार की मांगों का परिवर्तन, आर्थिक व्यवस्था का पुनर्संगठन और आधुनिकीकरण के कम में होता है। विकासात्मक नियोजन की लोकप्रियता मुख्यतया विकासपरक एवं विकासशील देशों में होती है, जिसमें अर्थ व्यवस्था में वृद्धि और प्रसार के लिए आवश्यक बाह्य संरचना की कमी होती है। विकासात्मक नियोजन समाज में अत्यधिक व्यापक और अभिकल्पना के लिए संरचनात्मक परिवर्तन पैदा करता है और इसी

कम में राष्टीय अर्थ व्यवस्था के वृद्धि के लिए सुविधा प्रदान करता है। लेविस के अनुसार सामान्यतया विकासात्मक नियोजन प्रयोग और प्रतिपादन के लिए वस्तुनिष्ठ और प्राविधिक तथा अधीनस्थ सामाजिक सिद्धान्त है।

उपागम आधारित नियोजन :-

विधि तंत्र के आधार पर नियोजन, मानक नियोजन एवं तंत्र नियोजन, दो प्रकार का होता है। मानक नियोजन का उद्देश्य स्थापित लक्ष्यों के संदर्भ में अच्छा परिणाम प्राप्त करना होता है। यह नियोजन के सामाजिक और संस्थागत कारणों पर बल देता है। बनफील्ड[57] के अनुसार नियामक नियोजन के निम्न पांच सोपान हैं।

1. लक्ष्यों और उद्देश्यों को परिभाषित करना।
2. योजना की अवस्था, तारतम्यता और संयोजन या अनुषन्धों को परिभाषित करना।
3. योजना के कार्यात्मक तत्व और खण्डीय तत्वों को समन्वित करना।
4. क्षेत्रीय योजना तत्वों को समन्वित करना।
5. विशेषज्ञों के किया कलापों एवं योगदानों को निर्धारित करना।

मुसिल[58] के अनुसार तंत्र नियोजन के मुख्य तत्व निम्न हैं:

1. मूल्य या मान्यताएं, उद्देश्य और आदर्श।
2. नियोजन द्वारा हल किये जाने वाले प्रत्यक्ष कार्य।
3. विकासात्मक कार्य को पहचानना।
4. नियोजकों की भूमिका।
5. संगठनात्मक इकाई के बीच और व्यक्तिगत भाग लेने वालों के बीच संबंधों का आदर्श नियमन।

6. संगठनात्मक इकाई जिसके द्वारा विकासात्मक कार्य कार्यान्वित होता है।

7. नियोजन प्रकिया में भाग लेने वाले विशेषज्ञ एवं व्यवसायी।

प्रादेशिक नियोजन की संकल्पना

फीडमैन ने सुझाया है कि 'प्रादेशिक नियोजन राष्टीय स्तर पर प्रादेशिक विकास नीति, प्रादेशिक स्तर पर निर्णय प्रकिया एवं निवेश योजनाओं के निर्धारण तथा उपराष्टीय क्षेत्रों हेतु आर्थिक विकास कार्यकम का पर्याय है। इसके अतिरिक्त इसका यह भी तात्पर्य है कि प्रादेशिक नियोजन महानगरीय विकास, संसाधन प्रबंधन तथा कृषि एवं सामुदायिक विकास से भी संबंधित है।

लेकिन इन उपरोक्त व्याख्याओं में प्रादेशिक नियोजन की संकल्पना को कोई भी स्पष्ट रूप से परिभाषित नहीं कर सकी। सामान्यतया प्रादेशिक नियोजन धरातल के उन बड़े समरूप क्षेत्रों में उठने वाली उन समस्याओं को सावधानी के साथ हल करने के लिए निर्धारित होता है, जिसको भूगोलवेत्ता सर्वप्रथम 'प्रदेश ' शब्द देता है, जिसके अन्तर्गत नदी घाटी, उच्च भू क्षेत्र, तटीय मैदान आदि सम्मिलित होते हैं, जो मानव किया कलापों की विविधता के लिए एक आधार निर्धारित करते हैं। फिर भी प्रादेशिक नियोजन जिसका प्रयोग व्यवहार में होता है, स्थान के अन्तराल और प्रकृति के रूप में अत्यधिक लचीला और जटिल है। प्रादेशिक नियोजन उन समस्याओं को भी हल करने के लिए विकसित होता है, जो बढ़ती हुई चल जनसंख्या के कारण प्रगतिशील होते हैं तथा जिनमें सघन सामाजिक और आर्थिक किया कलाप एक अथवा अनेक केन्द्रों के चारों ओर एकत्रित हैं जो अपनी परिभाषा केवल समरूपता के आर पार ही नहीं, बल्कि कार्यात्मक अन्तर्किया और अन्योन्याश्रित संबंध से प्राप्त करते हैं। इस अन्तर्किया और अन्योन्याश्रित संबंध की दो महत्वपूर्ण व्याख्या कार्य के लिए यात्रा और व्यापार प्रवाह के लिए यात्रा[60] है। इस तरह प्रादेशिक नियोजन मुख्यतया नियोजन के एक ऐसे प्रकार की ओर इंगित करता है जो स्थानिक विकास को प्रोत्साहित करे। फीडमैन[61] के अनुसार 'प्रादेशिक

नियोजन एक ऐसा किया कलाप है, जिसका संबंध परास्थानीय धरातल पर मानव किया कलापों को संगठित करने से है।

उपरोक्त वितरण के अनुसार प्रादेशिक नियोजन एक विशिष्ट नियोजन प्रकिया है जिसका उपयोग विविध कारणों एवं उद्देश्यों हेतु किया जाता है। इसका तात्पर्य यह भी है कि प्रादेशिक नियोजन को मात्र सामाजिक, आर्थिक या भौतिक नियोजन तक सीमित नहीं किया जा सकता। यह इन सबका अतिकमण करता है तथा इसमें सभी प्रकार के नियोजन सम्मिलित हैं। इसका अभिप्राय यह भी है कि प्रादेशिक नियोजन की विशेषता उसके द्वारा हल की जाने वाली सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक समस्याओं द्वारा नहीं होती, बल्कि उसकी संरचनात्मक विशेषताओं द्वारा होती है। अधिकार प्रयोग में यह उप राष्ट्रीय है, स्थानीय समस्याओं के समाधान में यह परानगरीय है तथा यह स्थानिक आधार पर विस्तृत समस्याओं का निराकरण करता है। इन्हीं विशेषताओं के कारण प्रादेशिक नियोजन अन्य प्रकार के नियोजन से भिन्न है।

प्रादेशिक नियोजन के लिए मूलाधार :-

प्रादेशिक नियोजन एक ऐसा वृहद नियोजन है जो सभी सीमाओं एवं विभाजनों का अतिकमण करता है तथा यह सभी प्रकार के प्रदेशों, मानव समुदाय एवं आर्थिक तंत्रों हेतु समान रूप से लागू होता है। प्रादेशिक नियोजन की तार्किकता से संबंधित प्रमुख बिन्दु निम्न हैं:

1. प्रादेशिक नियोजन को एक संस्थात्मक स्वरूप इसलिए प्रदान किया जाना चाहिए क्योंकि किसी भी समाज में रहने वाले मानव वर्गो की विविध समस्याओं के समाधान हेतु एक नियोजन प्रकिया में प्रबल एवं विशिष्ट क्षमता है।
2. प्रादेशिक नियोजन दूसरे प्रकार के नियोजनों के व्यावहारिक कियान्वयन में सहयोग करता है।

3. प्रादेशिक नियोजन का उपयोग समांगीय औपचारिक एवं विषमकर्मोपलक्षी प्रदेशों हेतु समान रूप से किया जा सकता है।
4. नियोजन प्रकिया में प्रादेशिक उपागम एक महत्वपूर्ण तत्व है क्योंकि यह ऐसे प्रत्यक्ष भौगोलिक धरातल पर नियोजन करने का प्रयास करता है जिसपर विविध मानव समुदाय निवास करता है।
5. यह यातायात समस्याओं जैसी स्थानीय समस्याओं के समाधान में जितना सक्षम है उतना ही राष्टीय समस्याओं के समाधान हेतु भी।
6. चूंकि धरातल सभी मानव किया कलापों का आधार है अतः प्रादेशिक नियोजन सभी सीमाओं को पार करता हुआ सबको समन्वित करने का प्रयास करता है।
7. प्रादेशिक नियोजन त्रिआयामी धरातल से संबंधित होने के कारण प्रत्यक्ष पर्यावरण की समस्याओं से सीधे संबंधित है।
8. किसी राष्टीय अथवा प्रादेशिक धरातल या आय एवं समपत्ति के विषय वितरण को दूर करने हेतु भी विविध प्रादेशिक स्तरों पर किया गया नियोजन ही उपयुक्ततम समाधान है और इसी में पिछड़े हुए प्रदेशों की समस्याओं का समाधान हो सकता है।
9. चूंकि सभी संसाधनों को मूल धरातल में है अतः संसाधनों हेतु किया गया नियोजन वास्तव में प्रादेशिक नियोजन ही होता है।

उपरोक्त विन्दुओं के समर्थन में फीडमैन एवं अलोंशो[62] का कथन उल्लेखनीय है। उनके अनुसार राष्टीय धरातल पर मानव किया कलाप एक निश्चित कम एवं प्रतिरूप में वितरित होते हैं। ये कम एवं प्रतिरूप मनमाने अथवा संयोगी स्वरूप के नहीं होते, बल्कि यह विविध चरों के अन्तर्संबंधों के स्थानिक परिणाम हैं जो क्षेत्र विशेष को एक निश्चित आर्थिक स्वरूप प्रदान करते हैं।

प्रादेशिक विकास हेतु नियोजन :-

वर्तमान समय में सम्पूर्ण विश्व सामाजिक आर्थिक विकास के विषय वितरण से ग्रसित है। यह विषम वितरण स्थान एवं समय दोनों अक्षों पर है। समृद्धि एवं गरीब, विकसित एवं अविकसित देशों एवं प्रदेशों के मध्य आय एवं सम्पत्ति का विषम वितरण आधुनिक युग की प्रमुख चुनौतियां हैं। इस समस्या से विकसित एवं अविकसित दोनों समान रूप से ग्रसित हैं।

भारत जैसे विकासशील देश में सीमित संसाधन अपर्याप्त एवं निम्न स्तरीय आधारभूत सुविधाएं एवं न्यून स्तरीय तकनीकी आधार है अतः ऐसे देश 'प्रयास एवं त्रुटि प्रकिया ' का अनुगमन करके अपने सीमित संसाधनों एवं विकास प्रयासों को विफल करने में सक्षम नहीं हैं। आवश्यक रूप से विकासशील देशों को विकास प्रकिया के कुछ बिन्दुओं को छोड़ना पड़ेगा जिससे वे अपेक्षाकृत कम समय में अपने सामाजिक आर्थिक विकास संबंधी आधारभूत सुविधाओं का विकास कर सकें। यह तभी सम्भव है जब नियोजन को प्रादेशिक एवं स्थानीय स्तरों पर लाया जाए। इस प्रकिया के दौरान यह भी प्रयास होना चाहिए कि एक अन्तरसंबंधित सुसंगठित एवं पूरक आर्थिक सामाजिक तंत्र की स्थापना हो जिससे वर्तमान एवं भावी आवश्यकताओं की पूर्ति आसानी से हो सके। विविध स्थानिक एवं कर्मोपलक्षी सूचकांकों के आधार पर निर्धारित नियोजन इकाइयों के स्थानिक पदानुकम के अनुकूल मानव किया कलापों के स्थानिक संरचना में परिवर्तन इस दिशा में एक उपयोगी एवं महत्वपूर्ण कदम होगा। साथ ही इसके माध्यम से प्रादेशिक नियोजन प्रकिया प्रादेशिक एवं स्थानिक स्तरों पर आएगी तथा उसे राष्टीय नियोजन प्रकिया से आसानी से जोड़ा जा सकेगा।

लघुस्तरीय नियोजन :-

पिछले पांच दशकों में विश्व के विविध अविकसित एवं विकासशील देशों में समृद्धि एवं गरीब समुदायों एवं प्रदेशों के मध्य आय एवं सम्पत्ति का

विषम वितरण बढ़ता हुआ भयावह स्थिति में पहुंच गया है। इस उत्तरोत्तर बढ़ती समस्याओं का अनुभव हमारे नियोजकों ने चौथी पंचवर्षीय योजनाओं में किया और तभी से नियोजन प्रकिया को ग्रामीण क्षेत्रों से संयोजित करने हेतु 'समन्वित ग्रामीण विकास नीति' का शुभारम्भ हुआ। यद्यपि नियोजन प्रकिया को स्थानीय एवं ग्राम स्तर तक ले आने हेतु सार्थक प्रयास पंचवर्षीय योजना में हुए। इस प्रयास का मूल उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्र की समस्याओं, आवश्यकताओं को राष्टीय नियोजन से सम्बद्ध करना था जिससे राष्टीय योजना सम्पूर्ण देश की आकांक्षाओं का सम्यक प्रतिनिधित्व कर सके। लघुस्तरीय नियोजन जिसका तात्पर्य विकास प्रकिया को लघुस्थानीय स्तर अथवा ग्राम्य स्तर से प्रारम्भ करने का है, का मूल उद्देश्य बढ़ती हुई आय विषमता को रोकना, प्रादेशिक असंतुलन को दूर करना तथा सुनियोजित विकास के लाभ को तर्कसंगत एवं उचित ढंग से सभी समुदायों एवं क्षेत्रों के मध्य समान रूप से वितरित करना है। इस नियोजन का उद्देश्य मूल रूप से ग्रामीण विकास है जो न्यून क्षेत्रीय विस्तार, जनसंख्या एवं अल्प संसाधनों के कारण नियोजन हेतु उपयुक्त इकाई नहीं हो पाते। मिश्रा एवं सुन्दरम[63] द्वारा लघुस्तरीय नियोजन की निम्न विशेषताएं बताई गई हैं:

1. यह किसी प्रदेश विशेष में संतुलित सामाजिक आर्थिक विकास सुनिश्चित करने का प्रयास करता है।
2. यह सरकारी एवं निजी क्षेत्रों के मध्य अधिकतम समन्वय स्थापित करता है जिससे योजना कियान्वयन हेतु उपयुक्त कार्यात्मक सहयोग मिलता है।
3. इस नियोजन द्वारा योजनाओं के निर्माण एवं कियान्वयन में बृहदस्तरीय लोक भागीदारी भी सुनिश्चित होती है।
4. इस नियोजन में आन्तरिक प्रोत्साहन, बाह्य प्रेरणा एवं सामंजस्य स्थापित करने हेतु नीतिगत भागीदारी संबंधी आवश्यक विधियों का प्रयोग भी किया जाता है।

5. इस नियोजन किया द्वारा विकास के पृष्ठ एवं अग्र संबंधों को भी निर्धारित किया जाता है जिससे संतुलित विकास हेतु विविध स्थानिक एवं कार्यात्मक स्तरों पर अधिकतम अन्तरसंबंध एवं समन्वय स्थापित हो सके।

इस प्रकार लघुस्तरीय नियोजन ग्रामीण विकास हेतु एक प्रभावशाली नीति है क्योंकि इससे विकास नियोजन प्रकिया ग्राम्य स्तर तक पहुंचती है तथा इसके द्वारा ग्राम्य संसाधनों का उपयुक्ततम उपयोग होता है। इस नियोजन के अन्तर्गत विकास प्रकिया गांव से शुरु होकर राष्टीय स्तर तक पहुंचती है। परिणामस्वरूप विविध स्तरों पर अधिवास से अर्थव्यवस्था एवं सामाजिक संगठन में पर्याप्त सुधार होने की सम्भावना होती है।

<u>ग्रामीण विकास की नीतिया</u> :-

जापान में नगोया में 23 से 26 अगस्त 1980 के मध्य सम्पन्न हुई संयुक्त राष्ट संघ की इक्सपर्ट ग्रुप मीटिंग (E.G.M) ने ग्रामीण समाजों में प्रादेशिक विकास विकल्प की खोज करने हेतु सम्पन्न हुई। तथा इस समिति ने भारत के विशेष संदर्भ में विश्व के विविध भागों में ग्रामीण विकास संबंधी समस्याओं के समाधान हेतु अपनाई गई नीतियों को सूचीबद्ध किया। ये नीतियॉ निम्न हैं : .

1. नगरीय औद्योगिक उपागम एवं विकास धुव नीति।
2. कृषि विकास नीति एवं ग्रामीण क्षेत्रों में प्रत्यक्ष लागत नीति।
3. मौलिक न्यूनतम आवश्यकता एवं लक्ष्य वर्ग या उपागम नीति।
4. समन्वित विकास एवं सेवा केन्द्र नीति।
5. कृषि नगर उपागम (Agropolitan Approach)

उपरोक्त प्रथम दो नीतियॉ अधोगामी (Centre Down Approach) उपागम हैं जबकि शेष उर्ध्वगामी (Bottom Up Approach) उपागम हैं। नगरीय औद्योगिक उपागम एवं विकास धुव उपागम ने ग्रामीण क्षेत्रों की समस्याओं का

समाधान करने की अपेक्षा नगरीय पूंजीवाद को अधिक बढ़ावा दिया। इसीलिए कृषि विकास एवं प्रत्यक्ष लागत उपागम को सघन कृषि विकास ,ग्रामीण औद्योगीकरण, आधारभूत सुविधाओं का विकास एवं भूमि सुधार उद्देश्यों हेतु किया गया है। मौलिक न्यूनतम आवश्यकता उपागम एवं लक्ष्य वर्ग उपागम का उद्देश्य, रोजगार अवसरों को बढ़ाने तथा ग्रामीण क्षेत्र के कमजोर वर्गों की आय एवं रहन.सहन के स्तर में वृद्धि करने जैसे मौलिक आवश्यकताओं की पूर्ति करना था।

समन्वित ग्रामीण विकास एवं सेवा केन्द्र उपागम ग्रामीण विकास एवं परिवर्तन के प्रभावशाली यंत्र माने जाते हैं क्योंकि ये कृषि आधारित उद्योग, लोक सहभागिता, आत्मनिर्भरता एवं स्वावलंबंन जैसे विकास तत्वों पर अधिक बल देते हैं। कृषि नगर उपागम वास्तव में 'समन्वित ग्रामीण विकास ' का ही संशोधित रूप है एवं 'विकास ध्रुव नीति ' का विरोधी है। जिन नियोजकों एवं विद्वानों ने विविध विकास नीतियों की संकल्पनात्मक एवं व्यावहारिक स्वरूप के विकास में सहयोग किया है उनमें फीडमैन[64], लीयरमन्थ[65], वुड[66], हरमान्शन[67], मिश्रा[68] राव[69], चटर्जी[70], वनमाली[71], अहमद[72], सेन[73], भट्ट[74], मिश्रा[57], सुन्दरम[76] आदि प्रमुख हैं।

<u>समस्या विवेचन</u> :-

यमुना पार क्षेत्र इलाहाबाद जिले का सबसे विकासशील क्षेत्र है। यह यमुना एवं गंगा की सहायक नदी, नालों एवं विन्ध्य कम की पहाड़ियों के कारण काफी असमतल धरातल वाला है। यमुनापार क्षेत्र में वाह्य सुविधओं की कमी, गरीबी तथा सामाजिक आर्थिक पिछड़ापन आदि प्रमुख समस्याएं हैं। यह क्षेत्र विभिन्न संसाधनों के लिए क्षेत्रीय स्तर पर विविधतायुक्त है। इस क्षेत्र में विन्ध्य कम की पहाड़ियों में कांच उद्योग के लिए बालू, सीमेन्ट उद्योग के लिए पत्थर, सड़क, भवन निर्माण के लिए विशेष आकार के पत्थरों की प्रचुरता है जबकि यमना एवं गंगा के निकटवर्ती क्षेत्रों में विभिन्न प्रकार की उपजाऊ

मिट्टी, जल, कृषि और मानव संसाधनों का प्रयोग प्रचुरता में पाया जाता है। इन संसाधनों का प्रयोग प्रचुर मात्रा में न हो पाने का कारण सरकारी प्रयास में कमी है। वैसे धीरे.धीरे इधर कुछ वर्षों से सरकारी प्रयास में तेजी से कई उद्योग स्थापित हो चुके हैं और कई उद्योगों के स्थानीयकरण की प्रकिया चल रही है। जिससे इस क्षेत्र में सामाजिक आर्थिक दशाओं में कुछ विकास हो रहा है। इन प्रयासों के बावजूद भी कृषि उद्योग एवं आधारभूत सुविधाओं के विकास को तीव्रतर करने हेतु अभी काफी प्रयास करने पड़ेंगे। विविध सामाजिक एवं आर्थिक सुविधाओं जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य, नागरिक सुविधाओं, वस्तुओं एवं सेवाओं, कृषि वितरण आदि के क्षेत्र में भी सुधार की आवश्यकता है। तभी इस क्षेत्र को राष्टीय विकास की सामान्य धारा से जोड़ा जा सकता है। अतः इस दिशा में प्रत्यक्ष प्रयास एवं अनुकूल परिणाम हेतु समन्वित ग्रामीण विकास प्रकिया के अन्तर्गत 'सेवा केन्द्र नीति ' को अपनाना आवश्यक है क्योंकि विविध स्तरीय सेवा केन्द्र ही विविध स्तरीय विकास किया कलापों एवं सेवाओं के स्थानीयकरण एवं सुदूर ग्राम्य क्षेत्रों तक उनके प्रसार में अधिकतम सहयोग कर सकते हैं।

अतः अध्ययन क्षेत्र के सन्तुलित सामाजिक आर्थिक विकास प्रकिया को तीव्र करने हेतु प्रस्तुत शोध ग्रन्थ में इसी नीति को अपनाया गया है।

<u>अध्ययन क्षेत्र</u> :-

वर्तमान अध्ययन क्षेत्र एक प्राकृतिक इकाई है जो इलाहाबाद जनपद में स्थित मध्यवर्ती गंगा मैदान का एक विभिन्न अंग है। यह गंगा एवं यमुना नदियों के दक्षिण भाग में स्थित है अर्थात इसकी उत्तरी सीमा गंगा.यमूना नदियों द्वारा निर्धारित होती है। भौगोलिक इकाई के रूप में इसे बुन्देलखण्ड संभाग का एक भाग भी माना जाता है। इसकी भौगोलिक संरचना पांच नदियों.. गंगा, यमुना, टोंस, बेलन एवं लिपारी द्वारा निर्मित होती है। टोंस नदी इस क्षेत्र की तहसील मेजा एवं करछना की सीमा निर्धारित करती है।

प्रशासनिक दृष्टि से इसे तीन तहसीलों बारा, मेजा, करछना, तथा नौ विकास खण्डों जसरा, शंकरगढ़, मेजा, मान्डा, कोरांव, उरूआ, कौंधियारा, चाका, करछना में बांटा गया है। भौगोलिक रूप में इसे दो भागों पूर्वी एवं पश्चिमी में बांटते हैं, पूर्वी के अन्तर्गत मेजा तहसील एवं पश्चिमी में बारा तथा करछना तहसील का क्षेत्र लिया जाता है। करछना तहसील के अन्दर उत्तर में एक कूटक है जो यमुना एवं गंगा के ऊँचे कगारों से बना है। इसकी चौड़ाई 1 – 1.5 किलोमीटर से पांच किलोमीटर तक है तथा इसके सतह की मिट्टी कंकड़ों सहित हल्की बलूई है।यह कूटक अनेक खाई.खण्डों से युक्त है जिससे होकर भीतरी भाग का पानी नदियों में बह जाता है। इस कूटक के उत्तर में कछार की सकरी एक पट्टी है, जो गंगा एवं टोंस नदियों के संगम पर तथा मेजा तहसील के उत्तरी पूर्वी भाग में सुस्पष्ट हो गई है। इसके दक्षिण में पुरानी जलोढ़ मिट्टी से युक्त ऊची भूमि है, जिसमें करछना तहसील का केन्द्रीय भाग एवं मेजा तहसील का चौरासी और माण्डा हितार के भू.भाग सम्मिलित हैं। इस ऊंची जमीन के दक्षिण में विन्ध्य पर्वतमाला के तीन अनुभाग अर्थात विन्ध्यांचल, पठार और पन्ना के क्षेत्र स्थित हैं जिसमें विन्ध्यांचल सबसे नीचा है और उक्त ऊंची भूमि से यह एकदम ऊंचा हो गया है और इसकी श्रृंखला माण्डा से कोहड़ारघाट और आगे तक ऊंची.नीची फैली हुई है जो बारा तहसील के बघला में सबसे ऊंची 188.06 मीटर और मेजा में 182.88 मीटर है।

अतः प्रादेशिक संसाधनों की उपयुक्ततम उपयोग करने, क्षेत्र के सभी भागों एवं मानव वर्गों को विविध सामाजिक आर्थिक सुविधाओं को उपलब्ध कराने, तथा स्थानिक, सामाजिक एवं आर्थिक विकास की प्रक्रिया को समन्वित करने हेतु यह आवश्यक है कि क्षेत्र के सम्यक एवं सन्तुलित विकास हेतु सेवा केन्द्र नीति को अपनाया जाए। विविध सेवा केन्द्रों को पहचाना या निर्धारित किया जाए। उनके प्रभाव से क्षेत्रों का भी निर्धारण किया जाए, तभी पर्याप्त क्षैतिज एवं उर्ध्ववर्ती संबंध स्थापित हो सकेंगे तथा सम्पूर्ण क्षेत्र एक पूर्ण इकाई

के रूप में विकसित हो सकेगा। उपरोक्त उद्देश्य के कारण ही इलाहाबाद जनपद के यमुना पार क्षेत्र के विकास हेतु प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में इसी विकास नीति को अपनाया गया है।

मुख्य उद्देश्य

यमुना पार क्षेत्र के सामाजिक आर्थिक विकास के लिए स्थानिक नियोजन, एक समस्या प्रधान अध्ययन है। इस अध्ययन में विभिन्न सामाजिक आर्थिक, सांस्कृतिक एवं स्थानिक तथ्यों को खोज निकालना और अध्ययन क्षेत्र की व्यावहारिक समस्याओं और वास्तविकताओं को स्पष्ट एवं सूचीबद्ध करना है। इसका उद्देश्य इलाहाबाद जिले के यमुना पार क्षेत्र के सामाजिक आर्थिक विकास के लिए स्थानिक नियोजन के व्यापक आधारों को खोजना एवं प्रबन्ध करना है। प्रस्तुत प्रादेशिक विकास शोध प्रबन्ध के अनेक उद्देश्य हैं जो निम्न हैं :

1. अध्ययन क्षेत्र में सेवा केन्द्रों की संकल्पना का अध्ययन और परीक्षण।
2. प्रादेशिक असन्तुलन के स्वरूप का आकलन करना एवं उन्मूलन हेतु सेवा केन्द्र नीति की प्रासंगिकता स्पष्ट करना।
3. यमुना पार क्षेत्र के सेवा केन्द्र तन्त्र एवं उनके प्रभाव जाल के बीच उनके प्रभाव क्षेत्रों को निर्धारित करना तथा जनपद के कृषि औद्योगिक, सामाजिक सेवाओं, जैसे स्वास्थ्य एवं शिक्षा विकास हेतु सेवा केन्द्र नीति की उपयोगिता एवं प्रासंगिकता का परीक्षण करना।
4. यमुना पार क्षेत्र के कृषीय विकास में सेवा केन्द्रों की भूमिका को निर्धारित करना।
5. अध्ययन क्षेत्र के औद्योगिक विकास में सेवा केन्द्रों की भूमिका निर्धारित करना।

6. अध्ययन क्षेत्र में सामाजिक सेवाओं जैसे स्वास्थ्य एवं शैक्षणिक सुविधाओं के विकास में सेवा केन्द्रों की भूमिका निर्धारित करना।

परिकल्पनाएं :-

प्रस्तुत प्रादेशिक विकास शोध प्रबन्ध निम्न परिकल्पनाओं पर आधारित है.

1. यह कि अध्ययन क्षेत्र में विकास की प्रकिया और स्थानिक तन्त्र में घनिष्ठ संबंध है।
2. यह कि अध्ययन क्षेत्र में स्थानिक तन्त्रों में कमबद्धता है।
3. यह कि विकास प्रकिया में क्षेत्रीय स्थानिक पदानुकम वहां के कार्यात्मक पदानुकम के रूप में अभिव्यक्त होता है।
4. यह कि सेवा केन्द्र अध्ययन क्षेत्र में कृषि उद्योग और सामाजिक सेवाओं के विकास जैसे स्वास्थ्य शिक्षा में सार्थक भूमिका निभाता है।

विधि तन्त्र

शोध प्रबन्ध को पूर्ण करना निश्चित रूप से कठिन कार्य है जिसके अन्तर्गत अनेक कार्य सम्मिलित हैं, जैसे. सम्बन्धित साहित्य अनुशीलन एवं पुनर्रावलोकन, प्राथमिक एवं द्वितीयक आंकड़ों का संकलन, परिकल्पनाओं का निर्माण, क्षेत्रीय सर्वेक्षण तथा आंकड़ों का परिकलन एवं मानचित्रण, इस कार्य को सुसाध्य बनाने हेतु सम्पूर्ण कार्य को तीन भागों में विभाजित किया गया है.

1. पुस्तकालय अध्ययन :-

पुस्तकालय में नियमित अध्ययन से दो उद्देश्यों की पूर्ति होती है.

1. शोध प्रबन्ध से सम्बन्धित उपलब्ध साहित्य के पुनरावलोकन एवं अनुशीलन में इससे सहायता मिलती है।

2. यह विभिन्न प्रकाशित स्रोतों से द्वितीयक आंकड़े एकत्र करने में भी सहयोग करता है, जैसे. जिला गजेटियर, इलाहाबाद जिले की ग्राम.शहर निर्देशिका और जनगणना पुस्तिका, जिला सांख्यिकीय पत्रिका, जिला वार्षिक पत्रिका, मौसमी चार्ट और भारत की भौमिकीय सर्वेक्षण रिपोर्ट और जिला औद्योगिक पत्रिका आदि। साहित्य पुनर्रावलोकन अनेक ग्रन्थों, जर्नल्स ,शोध पत्रिकाओं, शोध प्रबन्धों एवं परियोजना आख्याओं के माध्यम से किया गया। इस प्रकार पुस्तकालय कार्य प्रस्तुत अध्ययन की संकल्पनात्मक स्वरूप को निर्धारित करने में बहुतायत सहयोग प्रदान करता है।

3. क्षेत्रीय अध्ययन:-

वृहद क्षेत्रीय विस्तार वाला क्षेत्र में, प्राथमिक आंकड़ों के संकलन, एकत्रण का सांख्यिकीय सूचनाओं के सत्यापन, सेवा केन्द्रों के निरीक्षण एवं सामान्य क्षेत्रीय अध्ययन हेतु एक वृहद क्षेत्रीय अध्ययन किया गया। इसके अलावा क्षेत्रीय सर्वेक्षण एवं साक्षात्कार के माध्यम से भी कुछ मौलिक मानचित्रों जैसे सेवा केन्द्रों के व्यावहारिक प्रभाव क्षेत्र एवं उपभोक्ता आचरण प्रतिरूप संबंधी प्रासंगिक सूचनाएं भी एकत्र की गई।

प्रयोगशाला अध्ययन

प्रयोगशाला अध्ययन आंकड़ों के परिकलन एवं परिणामों के मानचित्रण से सम्बन्धित रहा। शोध प्रबन्ध को पूर्ण करने हेतु विविध प्रकार के मानचित्रों एवं रेखा चित्रों को प्रयोगशाला में ही अन्तिम रूप प्रदान किया गया। इस प्रकार प्रस्तुत शोध प्रबन्ध को विविध भौतिक एवं मानसिक किया कलापों के पश्चात ही पूर्ण किया जा सका।

,,,,,,,,,,,

REFERENCES

1. Myrdal,G. 1969: Objectivity in Social Research, in Middlesex, pp 20-26.

2. Richardson, H.1973: Regional Growth Theory, London, Macmillan. P.6.

3. Davis,Kingsley, 1972: World Urbanization 1950-70 Vol.II, Univercity of California, Berkeley p.163.

4. Mayer, J.R. 1968: Regional Economics A survey In Needleman, L.(ed), Regional Analysis, Penguin Modern Economics Readings,p. 23.

5. Chand, M. and Puri, V.K. 1983: Regional Planning in India, Allied Publishers, New Delhi. P.I.

6. Misra, R.P., 1976 : Regional Development Planning in India : A New Stratagy, Vikas Publishing House, New Delhi pp 36-37.

7. Goddes, P. 1949 : Cities in Evolution, London, pp.106.

8. Rao, R.P 1960: Regional Planning, Indian statistical Institute, Calcutta, p.2.

9. Pathak,C.R.and Kundu, A. 1973: An introduction,to Regional Planning- Concepts, Theory and Practice , Hutchinson and Co. London, pp.22-23.

10. Malgavker,P.D. and Ghiara, B.M. 1972 : Regional Devlopment-where and How, in Sen . L.K. (ed.) Reading on Micro Level Planning and Rural Growth Centres, NICD,Hyderabad. P. 306.

11. Boudeville, H.R. 1955 : Problems of Regional Planning , Edinburg, university Press , p. 48.

12. Von Thunen , J.H. : De Isolierte Statt in Beziehung auf Landwirs chaft und National okonomie . Hamburg , 1826. Translated by C.M. war tenburg as ' Von Thunen's Isolated State' Oxford Book Co. 1966.

13. Christaller, W.: Central Places In South Germany (Translated by C.W. Baskin) Engle wood cliffs, N .J.: 1966.

14. Mishra, R.P., Sundram, K.V. and Prakasha Rao, V.L.S. : Regional Development Planning in India: A New Strategy, Vikash Publishing House Pvt. Ltd. 1976, Delhi, p. 173.

15. Ibid, p. 175.
16. Losch, A. : The Economics of Location, tranlated by W.H. Woglom, New Haven, 1954.
17. Mishra, R.P. et al : Op. Cit, p.179.
18. Ullman, E.L. :Trade Centres and Tributary Areas of the Phillipines, The Geographical Review, Vol. No. 2, 1960, Also Geography as Spatial Interaction, A.A. Geographers, 1954.
19. Brush, J.E. : The Hierarchy of Central Places in South Western Wisconsin, Geographical Review, Vol.XIII, NL. 3, 1953.
20. Bracy, H.E. : Towns as Rural Service Centres, Trans.Pap.Institute of British Geographers. 19, 1953, pp. 95-105.
21. Bracy, B. J.L. :Geography of Market Centres and Retail Distribution, Prentice Hall, Englewood cliffs, 1967, also Berry & W.L. Garrison :Functional Bases of the Central Place Hierarchy, Economic Geography. 34, 1958, and Berry and Prod: Central Place studies: A Bibliography of Theory and Application, Regional Science Institute, Philadelphia, Services 1, 1961.
22. Smailes, A.E.: The Urban Hierarchy in England and Wales, Geography, 29, 1944, pp. 41-45, also, Analysis and Delimitation of Urban Field, Geog. 1947, and the Geography of Towns, Hutchinson and Co., London, 1968.
23. King. L.J. : The Fundamental Roles of Small Towns in canterbury, Proc. Third N.Z. Geographical Conf. Palmerston North, 1962, also kind and Golledge, R.C., Cities, space and Behaviour: The Elements of Urban Geography, Englewood Cliffs, New jersy, 198.
24. Davis, R.J.: The South Africal Urban Hierarchy, South African Geography Journal., p.49, 1967.
25. Davies, W.K.: Centrality and the Central Place Hierarchy, Urban studies, 4, 1967, also Marphology of central places : A Case Study Annals of Association American geographers, p.58, 1968.
26. Mishra, R.P. et al : Op., pp.180-181.

27. Perroux, F.: Economic Space: Theory and Application, Quaterly Journal of Economics, 1950, also Note Sur la Notion de Pole de croissance, Economic Applique, 1955.
28. Ibid.
29. Boudevile, J.R.: Les spaces Economique, Paris. 1961, also Problems of Regional Economic Planning Pt. L, Edinburgh, 1966.
30. Hieschman, A.O. : The strategy of Economic Development, New Haven, 1958.
31. Myrdal, G. : Economic Theory land underdeveloped Regions, London, 1957.
32. Haggerstrand, T. : Diffusion of Innovation. As a spatial Process, Chicago 1967, also Propogation of Innovation Waves, Lund, 1952.
33. Mishra, R.P. and Shivalingaih, M. : Growth Pole Strategy for Rural Development in India, Journal of Institute of Economic Geography, India, 1970. pp.33-39.
34. Ibid.
35. Christaller, W. : Op. Cit.
36. Perroux, F.: op. Cit.
37. Prakash Rao, V.L.S. : Regional Planning, Indian Statistical Institute, P. 4, Calcutta 1960; also Towns of Mysore State Calcutta, Indian Statistical Institute 1964, Theoretical Framework for Regional Planning, In Regional Planning Policies, Concepts and case studies.
38. Sen, L.K.(ed.) al : Planning Rural growth centres for Integrated Area Development-A case study in Myralguda Taluka, National Institute of Community Development, Hyderabad, 1971.
39. Wanmali, S.: Hierarchy of Towns in Vidarbha, India and its significance for Regional Planning, M. Phil (ECO.) Deptt. Of Geography London School of Economics (Two parts) London, 1968.
40. Bhatt, L.S. : Aspects of Regional Planning in India, Liverpool Essays in Geography, London, 1964, also micro-level Planning: A Case Study of Karnal Area, Haryana, India, New Delhi, 1976.

41. Sundaram, K.V. : Planning Standards in Medium and Small-sized Towns in India: Institute of development Studies, University of Mysore, Mysore , 1975; also a Theorotical Frame work for the study of Urban Growth Dynamics, paper presented to the Asian symposium on Regional Development Mysore, 1974.

42. Misra B.N. 1980 : The Spatial Pattern of Service Centres in Mirzapur District U.P., Unpublised thesis A.U.

43. Misra G.K :A Methodology for Identifying Service Centre in rural area A study in Myralguda Taluka, A Service classification of rural Settlement in Myralguda Taluka; The centrality oriented connectivity of Roads in Myralguda Taluka : A case study ; and 'A land Complex Framework for 'Area development Planning' all the four papers in Behavioural Sciences and Community Development, Vol. 6, No.1, 1972.

44. Mahadev, P.D. :Concept of a city Region ; An approach with a case study, Indian, Geog. Journal., Vol.44, 1969.

45. Spait Jacob : Towns and Umlands : A review Article in Economic Geography , Vol.34, 1958, p. 362.

46. Mathur, G.D. : Rural-Urban Integration and need for Regional Development Policy, Journal of the Institute of town Planners, 61-62 December 1969. March 1970, p. 48.

47. Wanmali, S.: Regional Planning for Social Studies : A Examination of Central Place Concepts and their Application, N.I.C.D., Hyderabad , 1970.

48. Friedmann, J. 1963 : Regional Planning as a Field of study, Reprinted in Friedman, J. (ed) 1964,opd. Cit. Pp. 59-72.

49. Hilhorst, J.G.M 1971: Regional-Planning- A Sytem Approach, Rotterdam Univercity Press p.112.

50. Marriam, C.E 1963: Pacific North West Regional Planning- A Review P. IX.

51. Dror, Y. 1963: The planning Process- A Facet Design, International Review of administrative Sciences 29(1).

52. Faludi, A. 1973: Planning Theory, Pergamon Press.

53. Mishra, R.P. 1976: Op.Cit.p.2.

54.Mishra, B.N. 1990 : Ecology of Poverty in India, Rural Environment Planning Studies, Chug Publishers Allahabad.

55.Hermansen, T. 1971: Spatial Organisation and Economic development Studies, University of Mysore. p.1.

56.Lewis, A. 1966: Development Planning : The Essentials of Economic Policy, London.

57.Banfield, E.C. 1959: Ends and Means in Planning , International Social Science Journal, Vol. XI ,No.3 .p.361.

58.Musil, J. 1971 : Town Planning as a Social Process, The New Atlantis. Vol. 2.pp.20-21.

59.Friedmann, J. & Alonso, W. 1964 : Regional Development and Planning. A Reader, Cambaridge. P. 60.

60.Alden, J. and Morgan, R. 1974 : Op. Cit.p.3.

61.Mishra, R.P. 1976 : Op.Cit.p.38.

62.Alonso, W. and Friedmann, J. 1964 : Op.Cit.p.2.

63.Misra, R.P. and Sunderam, K.V. 1980 : Multilevel Planning and Rural Development in India, Horitage Publishers,New Delhi, pp.24-25.

64.Friedmann, J. and Alonso, W.1964 : Op.Cit.p.3.

65.Learnonth, A, 1959 : A Regional survey of Mysore State For Planning Purposes, Bombay, Geographical Magazine,6 & 7 (1).

66.Wood, J. 1985 : The Development of Urban and Regional Planning in India, Land Economics, 34, pp.310-315.

67.Hermansen, T. 1969 : Development Poles and Development Centres in National and Regional Development : Elements of Theoretical Framework for a Synthetical Approach, U.N. Institute for Social Development Geneva.

68.Misra, R.P. 1976 : Op.Cit.

69.Rao, V.L.S.P. 1953 : Regional Planning , Asia Publishing House 1969.

70.Chatterjee, S.P. 1940 : Place of Geography in National Planning Indian Science Congresh Presidential Address.

71.Wanmali, S. 1967 : Regional Development, Regional Planning and The Hierarchy of Towns, Bombay Geographical Magazine XV (1) pp.1-29.

72.Ahmad, E. 1955 : Geography and Planning : Some Aspects of Indian Geography, Central Book Depot,Allahabad.

73.Sen, L.K. 1972 : The Need for Micro-level Planning in India.

74.Bhatt, L.S. 1964 : Aspects of regional Planning in India.

75.Mishra B.N. 1989 : Rural Development in India Basic Issues and Dimensions, Sharda Pustak Bhawan, Allahabad.

76.Sundaram, K.V. 1977 : Urban and Regional Planning in India,Vikash Publishing House, New Delhi,Some Recent Trends in Regional Development in India, R.P. Misra,et al (ed) Op.Cit.

****

अध्याय - 2

स्थानिक नियोजन के तत्व :. क्षेत्र विश्लेषण

स्थिति एवं विस्तार :-

उत्तर भारतीय मैदान की प्रमुख नदियां - गंगा एवं यमुना इलाहाबाद जिले को तीन भौतिक इकाइयों में बांटती हैं तथा आपस में मिलकर पवित्र 'संगम 'अर्थात् दो नदियों का मिलन स्थल का निर्माण करती हैं। इन तीनों भौतिक भागों को कमशः - गंगापार, दोआब तथा यमुनापार प्रदेश अथवा 'यमुना टेक्ट ' कहा जाता है। इस प्रकार प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र यमुनापार प्रदेश एक प्राकृतिक इकाई के रूप में माना जाता है किन्तु वास्तव में जनपदीय स्तर पर यह एक प्रशासनिक इकाई भी है क्योंकि इसके अन्तर्गत जनपद की तीन-तीन तहसीलें मेजा, बारा, करछना स्थित हैं। भौगोलिक रूप में यह बुन्देलखण्ड क्षेत्र का संभाग है। इससे शंकरगढ़, जसरा एवं चाका होते हुए इलाहाबाद बांदा मार्ग तथा नैनी, करछना, मेजा रोड होते हुए इलाहाबाद मिर्जापुर मार्ग निकलता है। हावड़ा से मुम्बई रेलमार्ग भी इसके अन्दर से गुजरता है।

इलाहाबाद जिले का 'यमुनापार प्रदेश' 81^0 29′ पूर्व से 82^0 19′30′′ पूर्वी देशान्तर और 25^0 25′ 40′′ उत्तरी से 24^0 41′ 15′′ अक्षांशों के बीच स्थित है। इसकी पूर्व पश्चिम लम्बाई 81.2 कि.मी. तथा उत्तर दक्षिण चौड़ाई 68.6 कि. मी. है। इसका सम्पूर्ण क्षेत्रफल 2999 वर्ग कि.मी. है तथा सम्पूर्ण सीमा रेखा की लम्बाई 323.75 कि.मी. है। गंगा यमुना नदियों से इस क्षेत्र की उत्तरी सीमा निर्धारित होती है। तथा दक्षिणी सीमा मध्य प्रदेश राज्य के रीवा जिले की सीमा से निर्धारित होती है। इस प्रदेश की पूर्वी सीमा मिर्जापुर एवं वाराणसी जिलों से, तथा पश्चिमी सीमा बांदा जिले से परिबद्ध है।

TRANS-YAMUNA REGION
ALLAHABAD DISTRICT
LOCATION MAP
INDIA
U. P.
STUDY AREA
km
INDEX
State Boundary
District
Tahsil
Block
Nyay Panchayat
Tahsil Headquater
Block
Urban Area
Railway Line
Road
Rivers
YAMUNA RIVER
GANGA RIVER
VARANASI
MIRZAPUR
MADHYA PRADESH
Chaka
Naini
KARCHHANA
Jasra
BARA
Sirsa
Kaundhiara
Uruva
Shankargarh
MEJA
Bharatganj
Manda
Koraun
Tons River
Lapari Nadi
Belan River

Fig. 2.1

प्रशासनिक दृष्टि यमुनापार प्रदेश तीन तहसीलों - बारा, करछना, मेजा से एवं 9 विकास खण्डों शंकगढ़, जसरा, कौंधियारा, करछना, चाका, मेजा, मांडा, कोरांव, उरूवा तथा 82 न्याय पंचायतों और 726 ग्राम सभाओं एवं 1342 ग्रामों में बांटा गया है। [तालिका 2.1]

TABLE-2.1

Administrative Organization of Trans – Yamuna Region of Allahabad District –1995.

Sl. No.	Tehsils	Development Block	Number Of Villages				
			Nyay Panchayat	Gram Sabha	Total	Inhabited	Un inhabited
1.	Bara	Sankargar	10	81	211	185	26
		Jasra	09	72	114	110	05
		Chaka	08	60	131	98	33
2.	Karchhana	Karchhana	11	93	131	119	12
		Kauddhiara	08	68	83	82	-
3.	Meja	Koraon	11	119	210	203	07
		Manda	08	73	183	166	17
		Meja	09	88	159	148	11
		Uruva	08	72	120	91	29
	Region	-	82	726	1342	1202	140

Source:- *The District Statistical Bulletins-Allahabad(1995).*

गंगा-यमुना टौंस एवं उनकी सहायक नदियों द्वारा निर्मित ज्यादातर यमुना पार का मैदान समतल क्षेत्र वाला है, लेकिन मैदान का दक्षिणी भाग विन्ध्य कम की पहाड़ियां एवं रीवां कगार मिलकर एक असमतल पठार रूपी संरचना को जन्म देते हैं। मैदान का पूर्वी और उत्तर-पूर्वी भाग गंगा एवं युमना के लगातार अवसादन से बना है। अतः यह कहा जा सकता है कि इसकी सम्पूर्ण संरचना पांच प्रमुख नदियों - गंगा, यमुना, टौंस, बेलन एवं लिपारी द्वारा निर्मित होती है, जो मानचित्र 2.1 से भी स्पष्ट है।

उच्चावच एवं संरचना :-

यमुना पार प्रदेश के अग्रभाग का भूवैज्ञानिक स्वरूप साधारणतया स्थलाकृतिक एवं संरचनात्मक विशेषताओं के साथ प्रगट होता है जो उत्तर भारतीय मैदान और 'दक्कन टेप ' के संक्रमण क्षेत्र के रूप में माना जाता है। संरचनात्मक[1] दृष्टि से सम्पूर्ण यमुना पार प्रदेश उत्तर के जलोढ़ मैदान, विन्ध्यांचल का पहाड़ी भाग एवं रीवां कगार को समाहित किए है। इसमें करछना तहसील के उत्तर में 1-1.5 से 5 कि.मी. चौड़ा बलुई मिट्टी से युक्त गंगा एवं यमुना नदियों के निक्षेप से बना एक उंचा कूटक है। इस कूटक में अनेक खाई-खण्ड हैं, जिनसे होकर भीतरी भाग का पानी नदियों में बह जाता है। इस कूटक के दक्षिण करछना के केन्द्रीय भाग एवं मेजा के माण्डा हितार और चौरासी भाग में पुरानी जलोढ़ मिट्टी का एक उंचा भाग है। इस उंचे भाग के दक्षिण में विन्ध्य पर्वत माला के तीन अनुभाग विन्ध्यांचल पर्वत, विन्ध्य पठार एवं पन्ना प्रक्षेत्र स्थित है जिसमें विन्ध्यांचल सबसे नीचा है, जो माण्डा से कोहड़ार घाट तक फैला है एवं बारा तहसील में बघला ग्राम में 188 मी. और मेजा तहसील 182.88 उंचा है। [मानचित्र 2.2] विन्ध्यांचल[2] के दक्षिण में मार एवं चीका से निर्मित एक असमतल मध्यवर्ती पठार है जिसका जल निकास लपरी बेसिन द्वारा होता है। इस पठार की तीन पट्टियां उपरी स्लेटी पत्थर वाली 'झीरीशैल ' मध्यवर्ती पट्टी निचली रीवां बलुआ पत्थर और निम्नस्थ पट्टी 'पन्नाशैल ' कहलाती है।

उपरी रीवां वर्ग की शैल संरचना वाला रीवां कगार मध्यवर्ती पठार के दक्षिण में स्थित है। रीवां कगार को 'पन्ना पर्वत श्रृंखला ' जो विन्ध्य पर्वतमाला से काफी समान है और बलुआ पत्थर की चट्टानों से बना है।

निष्कर्षतः सम्पूर्ण अध्ययन क्षेत्र का ढाल दक्षिण से उत्तर की ओर है जिसे दक्षिण में रीवां कगार एवं उत्तर में गंगा एवं यमुना नदी घाटियों के रूप में देखा जा सकता है। गंगा एवं यमुना का जलोढ़ मैदान दक्षिण की ओर
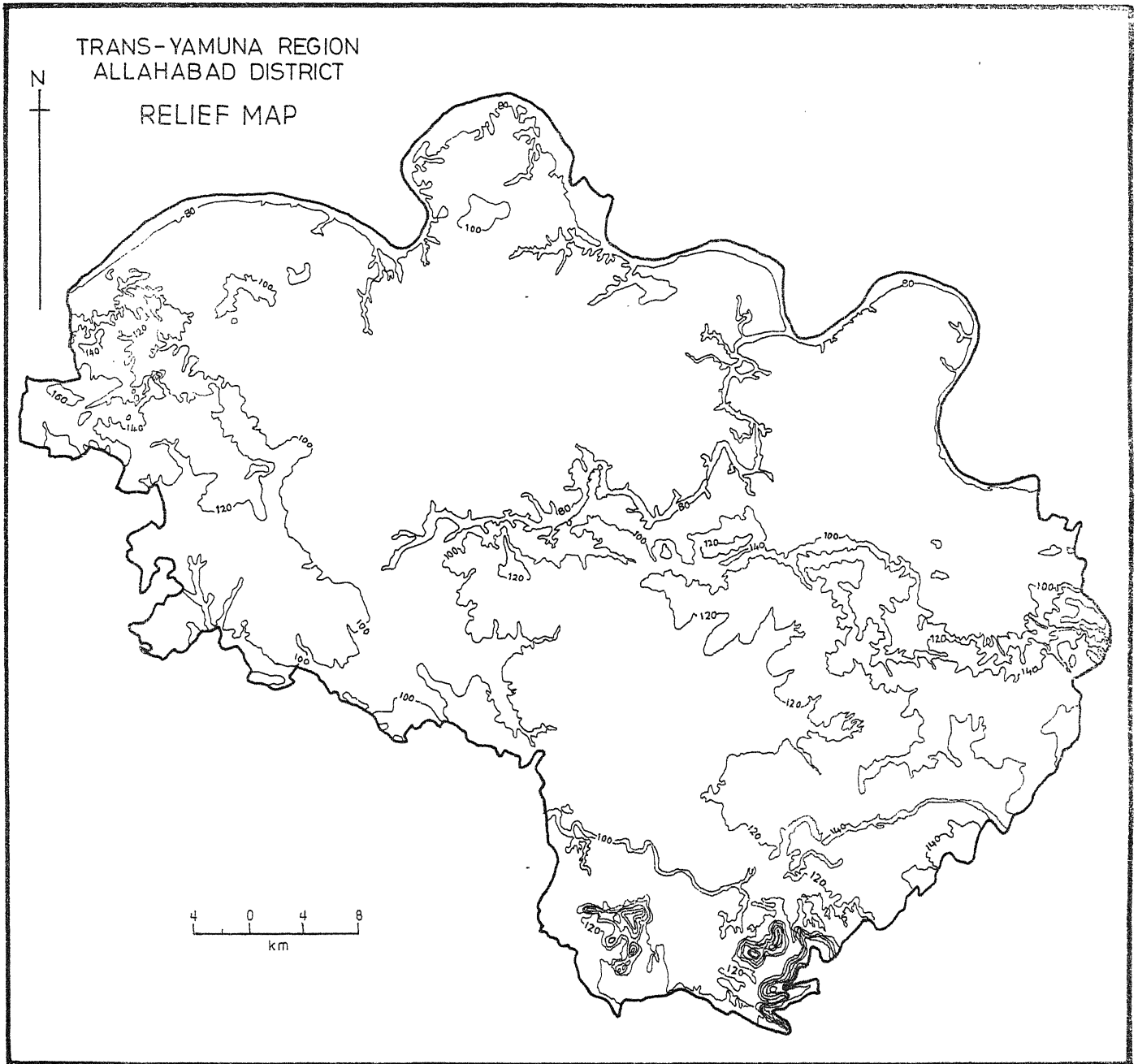
Fig. 2.2

क्रमशः उठता जाता है जिसका उत्तरी किनारा विन्ध्यांचल की जालीदार, पथरीली, उठी हुई, असमतल स्थलाकृतिक भूमि पर समाप्त होकर एक किंचित उच्च भूमि का कंकालिक चित्र प्रस्तुत करता है जो कि आगे चलकर निचले मैदान में टौंस एवं बेलन नदियों के अवसादन द्वारा भर जाता है।

यह प्रदेश सामान्यतः अवशिष्ट पहाड़ियों के रूप में जाना जाता है। अध्ययन क्षेत्र का निरपेक्ष उच्चावच गंगा एवं यमुना के किनारे पर 76 मीटर के लगभग तथा रीवां कगार के पास 371.24 मीटर है। औसत ढाल प्रवणता 4.29 मी./प्रति कि.मी. और कुल उंचाई अन्तराल 294.24 मीटर है। मानचित्र 2.2 से भी स्पष्ट है।

अपवाह-प्रणाली

किसी क्षेत्र विशेष में प्रवाहित होने वाली नदियों एवं उनकी सहायकों तथा भूमिगत जल के प्रवाह को अपवाह प्रणाली कहा जाता है जो संरचना, चट्टानों की प्रकृति, उच्चावच, जलवायु, वनस्पति आदि से निर्धारित होती है।

अध्ययन क्षेत्र 'यमुनापार ' का प्रवाह प्रतिरूप गंगा एवं यमुना नदियों के सहायकों एवं उप सहायकों द्वारा बनता है। मानचित्र 2.3 को देखने से संयुक्त रूप स्पष्ट होता है। अध्ययन क्षेत्र में एक ही मुख्य प्रवाह अक्ष है जो क्षेत्र के उत्तरी पश्चिमी भाग में पहले पश्चिम से पूर्व की ओर बहकर बाद में उत्तर-पूर्व की ओर बहकर गंगा क्रम से यमुना क्रम के प्रवाह क्षेत्र को अलग करता है।

गंगा, अध्ययन क्षेत्र की प्रमुख नदी प्रणाली है, इसकी प्रमुख सहायक यमुना एवं टौंस नदियां हैं। यमुना प्रणाली की प्रमुख अपवाह - धार, बुन्देला, देवरी, सरौली, गहेरा एवं झगरा बरिया नाला आदि हैं जबकि टौंस की सहायकों में बेलन, लापरी, पतपरी, कैथा, गोदार, खमरिया, गरवा, झुनझुना, ज्वालामुखी, बलुआ गुलारी आदि हैं। टौंस गंगा की प्रमुख सहायक है जो अध्ययन क्षेत्र को लगभग दो बराबर भागों में बांटती है। बेलन जो टौंस की

TRANS-YAMUNA REGION
ALLAHABAD DISTRICT
DRAINAGE
N
Yamuna River
Ganga
River
Tons
River
Lapri Nad
1
2
3
4
5
1. Yamuna Basin
2. Ganga Basin
3. Tons Basin
4. Belan Basin
5. Lapri Basin
4 0 4 8
km
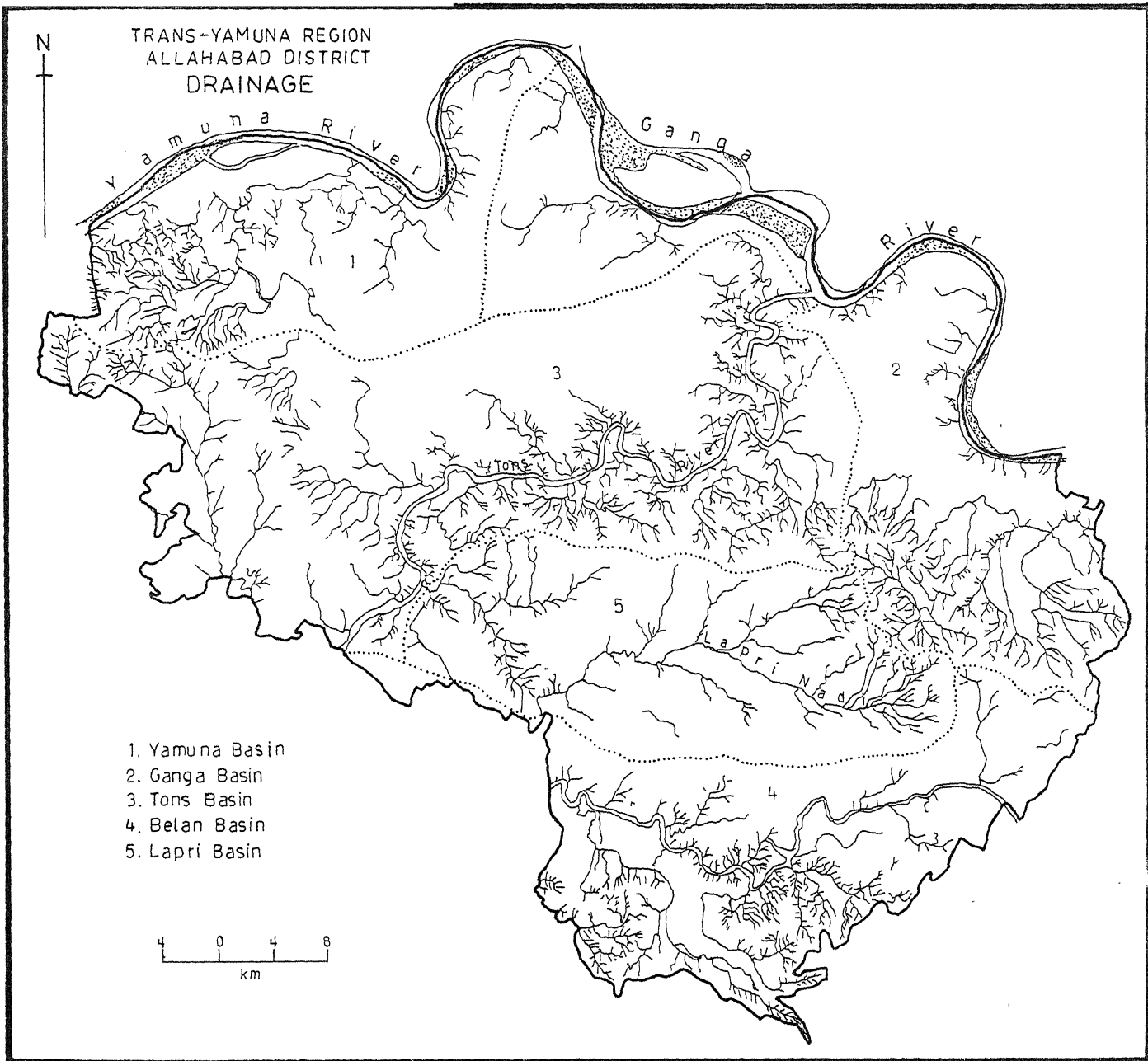
Fig. 2.3

सहायक नदी है, मेजा के दक्षिण भाग में प्रवाहित होती है जिसकी सेवती, गोरमा, लोहाण्डा, सिताला, भासमी, तुदियारी आदि सहायक नदियां हैं।

वर्तमान अध्ययन क्षेत्र में प्रवाह प्रणाली को निर्धारित करने वाले तीन निम्न प्राकृतिक जल विभाजक हैं: -

1. करछना तहसील का मध्य उत्तर पूर्वी भाग
2. मेजा तहसील का उत्तरी भाग
3. मेजा का मध्य दक्षिणी क्षेत्र

करछना तहसील का मध्य उत्तरी-पूर्वी भाग यमुना एवं टौंस नदियों के जल को अलग करता है जबकि मेजा का दक्षिणी मध्य क्षेत्र बेलन एवं लापरी नदियों के मध्य तथा मेजा तहसील का उत्तरी भाग टौंस एवं लापरी नदियों के मध्य जल विभाजक का कार्य करता है।

सम्पूर्ण अध्ययन क्षेत्र के प्रवाह प्रतिरूप को पांच निम्न कम में विभाजित किया जाता है -

1. गंगा नदी कम
2. यमुना नदी कम
3. टौंस नदी कम
4. बेलन नदी कम
5. लपरी नदी कम

जलवायु :-

यमुना पार क्षेत्र के जलवायु की मुख्य विशेषता - ग्रीष्म ऋतु लम्बी और गर्म, स्पष्ट मानसूनी वर्षा एवं ठंढी शुष्क ऋतु होती है। अतः इसे उष्ण मानसूनी (c.w.g.) प्रकार कहा जाता है। थार्नथ्वेट ने इसे CA' W तथा ट्िवाथी ने इसे CaW वर्ग की जलवायु कहा है।

तापमान :-

बमरौली इलाहाबाद जिले की एकमात्र विज्ञानशाला है जो अध्ययन क्षेत्र के कुछ दूरी पर स्थित है। यह क्षेत्र वर्ष भर उच्च तापकम प्राप्त करता है लेकिन नवम्बर में तापकम नीचे गिरता है। जनवरी वर्ष का सबसे ठंढा महीना होता है जिसमें उच्चतम 23.7 डिग्री सें0 और निम्नतम 8.6 डिग्री सें0 तापमान पाया जाता है। सामान्यतया मई वर्ष का सबसे गर्म महीना होता है जिसका अधिकतम तापमान 41.8 डिग्री सें0 और न्यूनतम 26.8 डिग्री सें.ग्रे. तापमान होता है। सम्पूर्ण अध्ययन क्षेत्र का औषत तापमान - अधिकतम 23.3 डिग्री सें. ग्रे. और न्यूनतम

19.2 डिग्री सें.ग्रे. पाया जाता है। तालिका (2.IIA) अधिक तापमान और क्षेत्र का दक्षिणी पश्चिमी भाग पथरीला होने के कारण गर्म, शुष्क और धूल भरी हवाएं, जिन्हें 'लू' कहा जाता है, क्षेत्र के वातावरण को दिन में अधिक गर्म और असहनीय बना देती है।

Table –2.II A

Temperature, Air ,Pressure and Relative Humidity.

Months	Mean Daily Temp.(in 0° C)		Highest Ever Recorded Temp	Lowest Ever Recorded Temp.	Air Pressure	Relative Humidity
	Max.	Min.	(in 0°C)	(in 0°C)	(in Mbs.)	(%)
Jan.	23.7	8.6	31.1	2.2	100.2	61
Feb.	26.3	10.7	36.1	1.1	1004.1	58
Mar.	33.3	16.3	41.7	7.2	999.0	44
Apr.	39.1	21.6	45.0	12.8	999.0	39
May	41.6	26.8	47.2	17.2	993.0	38
June	39.4	28.4	47.8	19.4	987.0	51
July	33.4	26.6	45.6	22.2	987.2	62
Aug.	31.9	25.9	40.0	21.1	987.5	65
Sep.	33.0	24.8	39.4	18.3	962.1	62
Oct.	32.4	19.6	40.6	11.6	999.1	56
Nov.	28.6	12.6	35.6	5.6	1002.2	57
Dec.	24.3	8.6	37.1	2.2	1006.5	60
Annual	32.3	19.2	-	-	996.2	54

Source:- *Allahabad Meteorological Observation Bamrauly.*

N
TRANS YAMUNA REGION
ALLAHABAD DISTRICT
TEMPERATURE & RAINFALL
Bara
Karchhana
Meja
J F M A M J J A S O N D
Rainfall (in cm) Temperature (°C)
Relative Humidity (%)
INDEX
Normal Monthly Rainfall
Maximum Monthly Temperature
Minimum Monthly Temperature
Relative Humidity
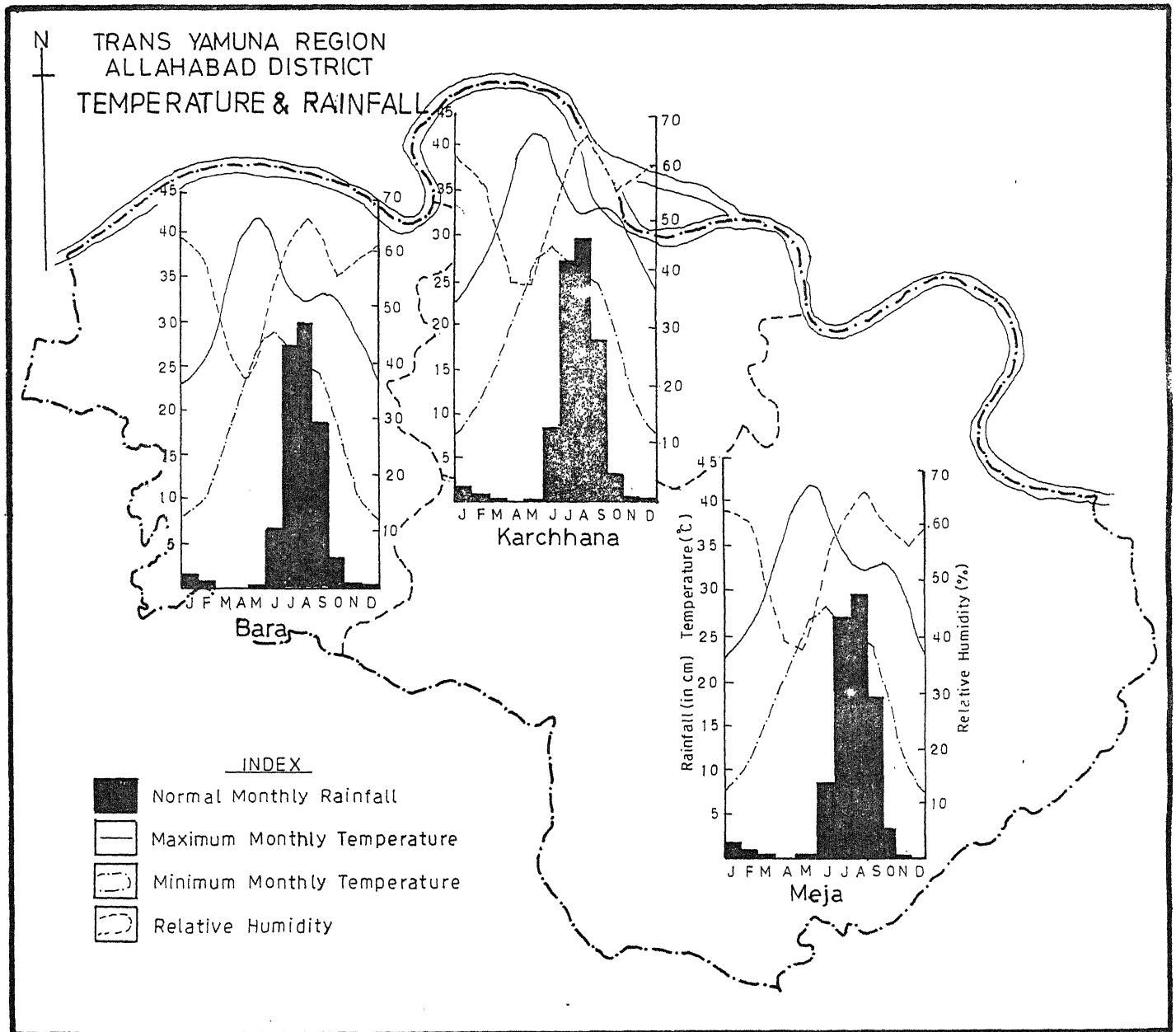
Fig. 2.4

Table-2.II B

Normal Rain Fall (in mm)

	Allahabad		Bara		Karchhana		Meja	
Months	**A**	**B**	**A**	**B**	**A**	**B**	**A**	**B**
Jan.	17.0	1.6	15.7	1.2	19.3	1.6	19.3	1.7
Feb.	21.3	2.0	11.7	1.4	20.8	1.8	21.1	1.7
Mar.	9.7	1.0	6.9	0.6	8.9	0.9	8.4	0.8
Apr.	5.3	0.6	4.3	0.4	6.9	0.7	5.3	0.5
May	7.1	0.7	9.9	0.7	9.1	0.7	12.5	0.8
June	80.3	4.6	77.5	3.9	86.1	4.5	99.3	4.6
July	307.6	14.1	276.3	13.5	296.4	13.8	343.1	14.3
Aug.	293.1	14.2	299.0	13.8	302.0	13.6	323.3	14.2
Sept.	182.2	8.5	184.4	8.0	175.5	7.6	185.9	8.0
Oct.	40.4	2.0	37.9	1.9	41.1	2.1	34.8	1.9
Nov.	8.4	6.7	7.4	0.7	7.4	0.6	6.1	0.6
Dec.	7.1	0.7	3.1	0.3	7.4	0.6	6.1	0.5
Annual	980.1	50.7	934.1	46.4	980.9	48.5	1065.2	49.6

Note: A = Normal Rain Fall in mm.
B = Average Number Of Rainy Days (Days with Rain Fall 2.5mm or More)

Source :- *Allahabad Meteorological Observation Bamrauly*

Table 2.II C

Extremes Of Rain Fall (in mm.) (Year within Bracket)

Station	**Highest Annual Rain Fall (As % of Normal)**	**Lowest Annual Rain Fall(As % of Normal)**	**Heaviest Rain Fall IN 24 Hours (Amount M.M Date)**
Allahabad	162 (1916)	62 (1941)	393.2,30th July,1875
Bara	153 (1922)	59 (1918)	282.7,9th Sep.1935
Karchhana	176 (1948)	55 (1955)	360.7,15th July,1865
Meja	218 (1948)	49 (1918)	512.1,22nd June,1916

Source- Allahabad Meteorological Observation Bamrauly ,Allahabad.

आर्द्रता :-

वर्षा ऋतु, जुलाई से अक्टूबर माह में सर्वाधिक आर्द्रता पायी जाती है। इस समय आपेक्षिक आर्द्रता 70 से 80 प्रतिशत के मध्य पायी जाती है। वर्षा ऋतु की समाप्ति पर आर्द्रता धीरे-धीरे घटती जाती है जो घटकर 20 प्रतिशत या इससे भी कम हो जाती है। अधिकतम आर्द्रता सारिणी (2.IIB) सुबह 8.30 बजे 84 प्रतिशत तथा शाम 5.30 बजे 78 प्रतिशत रिकार्ड की गई है जबकि न्यूनतम आर्द्रता अप्रैल महीने में सुबह 8.30 बजे 32 प्रतिशत तथा शाम 5.30 बजे 18 प्रतिशत अंकित की गई है।

वर्षा :-

अध्ययन क्षेत्र में बारा, करछना, मेजा बमरौली के अतिरिक्त वर्षामापी स्टेशन हैं। इस क्षेत्र की वर्षा का अधिकांश भाग दक्षिणी- पश्चिमी मानसून द्वारा अन्तिम जून से अक्टूबर के मध्य होता है।

विभिन्न वर्षामापी स्टेशनों पर वर्षा का वार्षिक औसत अलग-अलग होता है जैसे इलाहाबाद में 980.1 मि.मी. , बारा में 934.1 मि.मी., करछना में 980.9 मि.मी. एवं मेजा में 1065.2 मि.मी. प्राप्त होती है। इस तरह सम्पूर्ण अध्ययन क्षेत्र की औसत वर्षा 993.4 मि.मी. के बराबर पायी जाती है। औसत वर्षा का 88 प्रतिशत भाग जुलाई तथा अगस्त माह में होता है। जुलाई में अत्यधिक एवं अप्रैल में न्यूनतम वर्षा होती है। प्रतिदिन 2.5 मि.मी. के हिसाब से क्षेत्र में 48 दिन औसत वर्षा के होते हैं। फरवरी तथा अप्रैल में कभी-कभी ओला वृष्टि भी होती है। सारणी (2.IIB) में सन् 1901 से 1980 के बीच वर्षा का औसत देखने से स्पष्ट होता है कि 1948 में अधिकतम औसत वार्षिक वर्षा सामान्य का 218 प्रतिशत मेजा में तथा 1918 में न्यूनतम औसत वार्षिक वर्षा सामान्य का 49 प्रतिशत प्राप्त हुई। सारिणी ; (2.IIC) से वर्षा का सामान्य वर्षा से विचलन स्पष्ट होता है जो उच्चतम वार्षिक वर्षा सामान्य वर्षा से 1922 में 156 प्रतिशत बारा में, 1948 में 176 प्रतिशत करछना में तथा 1948 में 218 प्रतिशत

TRANS-YAMUNA REGION, ALLAHABAD DISTRICT
A : AVERAGE ANNUAL RAINFALL (in m.m.)
Bara 1020
1000
1050
Meja 1055
1100
1150
1200
B : SOILS
INDEX
Ganga Khadar
Recent Alluvium
Ganga Flatus
Yamuna Upland Soil
Yamuna Flatous
Heavy Black Clavey Soil
Coarse Grained
5 0 5 10
km
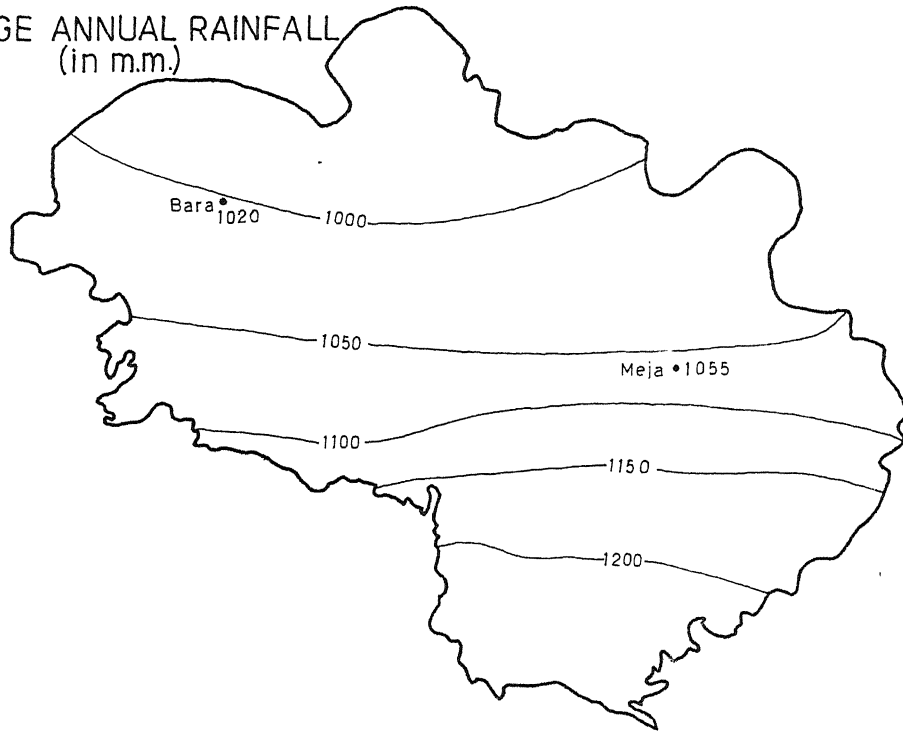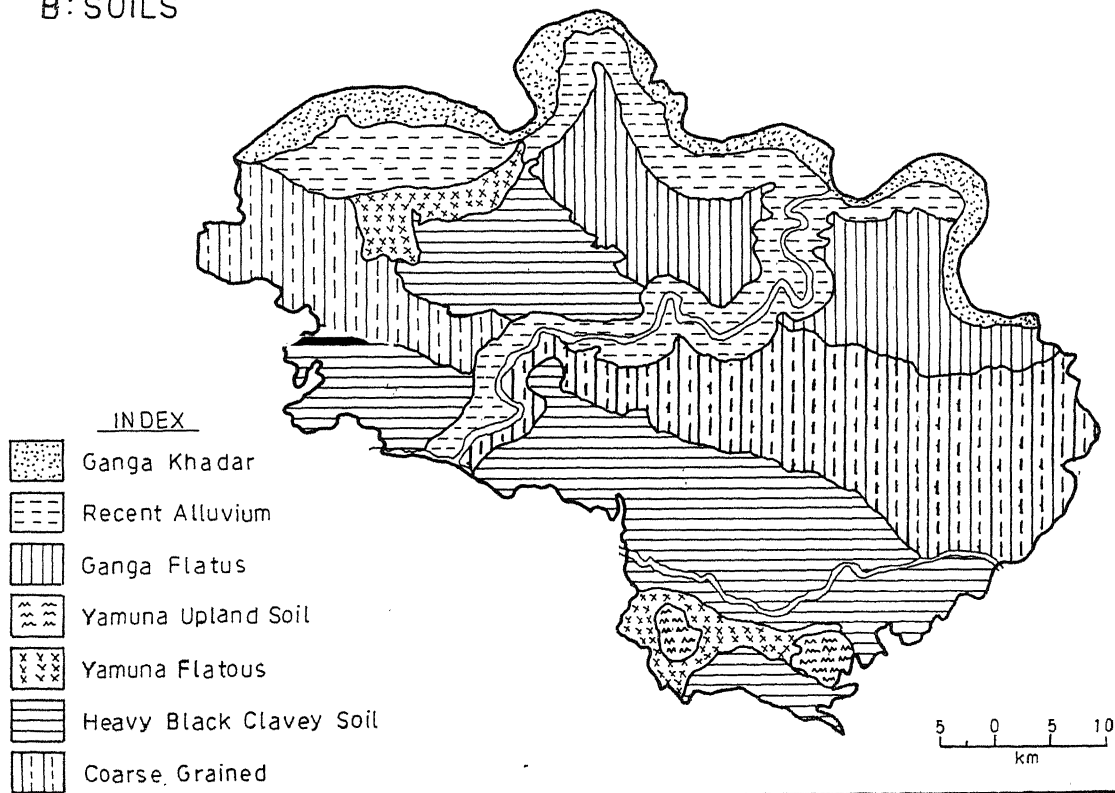
Fig. 2.5

मेजा में रिकार्ड की गई। इसी तरह अब तक की सबसे कम वर्षा 1918 में 59 प्रतिशत बारा में, 1955 में 55 प्रतिशत करछना में एवं 1918 में 49 प्रतिशत मेजा में रिकार्ड की गई। 24 घंटे में अब तक की सर्वाधिक वर्षा 30 जुलाई 1875 को 393.2 मि.मी. अंकित की गई है।

वायुदाब:-

अध्ययन क्षेत्र में वायुदाब प्रवणता अलग-अलग मौसम के अनुसार बदलती रहती है जैसे मई-जून के महीनों में दाब प्रवणता कम 987 से 994 मिलीबार के मध्य होने से धूल भरी पवनें चलती हैं, जबकि शीत ऋतु में दाब प्रवणता बढ़कर 1005 से 1008 के मध्य पहुंच कर मौसम को शान्त कर देती हैं।

पवनें :-

यमुना पार क्षेत्र में वर्ष भर हल्की पवनें प्रवाहित होती हैं किन्तु ग्रीष्म काल में इनकी गति तीव्र हो जाती है। इन पवनों की गति एवं दिशा वाष्पीकरण को प्रभावित करती है। नवम्बर से अप्रैल तक हवाएं मुख्यतया पश्चिम से अथवा उत्तर पश्चिम से चलती हैं, जबकि ग्रीष्म ऋतु में पूर्वी एवं उत्तरी-पूर्वी पवनें प्रवाहित होती हैं। इस क्षेत्र में औसत वायु गति जनवरी में 4.2, फरवरी में 5.0, मार्च में 6.0, अप्रैल में 6.6, मई में 7.6, जून में 8.7, जुलाई में 7.7, अगस्त में 6.9, सितम्बर में 6.0, अक्टूबर में 3.7, नवम्बर में 2.7 और दिसम्बर में 3.2 कि.मी. प्रतिघंटा रहती हैं। इस तरह औसत वार्षिक वायुगति 5.7 कि.मी. प्रतिघंटा अंकित की गई है।

मिट्टियां एवं उनके प्रकार

मिट्टी हमारी प्राथमिक संसाधन है। हमारे भोजन एवं प्रतिदिन की अन्य आवश्यकताएं प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से मिट्टी से पूरी होती हैं अतः निश्चित रूप से मिट्टी राष्ट की मूल्यवान सम्पत्ति है जो राष्ट की अर्थ व्यवस्था एवं उत्पादन का मूल आधार होती है। उत्पादन एवं पौधों का विकास मिट्टी मे

प्राप्त होने वाले पोषक तत्वों पर निर्भर करता है। किसी भी फसल की उत्पादन और उत्पादकता सामान्यतया किसी भी मिट्टी प्रकार की उत्पादन क्षमता, शक्ति और उर्वरता से सीधे प्रभावित होती है।

मिट्टी के विकास के लिए कई भौतिक एवं मानवीय कारक जिम्मेदार होते हैं। मात्र चट्टानें अपने भौमिकीय संरचना एवं इतिहास के साथ स्थलाकृतिक दशाओं, जलवायुविक विविधता, प्राकृतिक वनस्पति, और साथ-साथ मानवीय कियाएं मिट्टी के निर्माण और वितरण को निर्धारित करते हैं।

यमुना पार क्षेत्र में मिट्टी की अनेकों विविधताएं पायी जाती हैं, जैसे नदियों के किनारे बालम अथवा बलुई मिट्टी, और भूर मिट्टी छोटे-छोटे अवनत प्रदेशों में मटियार मिट्टी अथवा चाचर, कम उत्पादन वाली दोमट या लोम बलुई एवं चीला मिट्टी जिसे स्थानीय भाषा में 'सिगन ' मिट्टी कहा जाता है, पायी जाती है। मेजा तहसील के उपरी भागों में 'मार ' या काली कपासी मिट्टी तथा पहाड़ियों के प्रस्तरी क्षेत्रों में 'चोपर ' आदि मिट्टयां पायी जाती हैं।

स्थिति एवं रासायनिक संरचना की दृष्टि से यमुना पार क्षेत्र की मिट्टियों को निम्न भागों में बांटा जा सकता है[3] : -

1. गंगा - खादर
2. नवीन जलोढ़ मिट्टी (दोमट - चीकायुक्त)
3. गंगा समतली मिट्टी (बलुई दोमट)
4. यमुना उच्च भूमि मिट्टी (उपहार)
5. यमुना समतली मिट्टी (दोमट चीकायुक्त)
6. बड़े कणों वाली मिट्टी (दोमट)
7. काली मिट्टी (मटियार)

1.गंगा खादर मिट्टी :-

यह मिट्टी अध्ययन क्षेत्र के उत्तरी-पूर्वी भागों में गंगा नदी के सहारे बाढ़ग्रस्त क्षेत्रों में पायी जाती है। इस मिट्टी का निर्माण गंगा के अवसादन से होता है। इसका रंग हल्के भूरे से जैतूनी भूरा होता है, जल ग्रहण क्षमता कम होती है, तथा जैविक तत्वों की कमी पायी जाती है। उर्वरक क्षमता भी कम पायी जाती है। खरीब में बाजरा, ज्वार एवं रबी में गेहूं, चना आदि की खेती होती है। इसमें पशुओं की खाद एवं अन्य प्रकार के खाद प्रयोग की जाती है।

2. नवीन जलोढ़:-

गंगा यमुना एवं टौंस नदियों के किनारे-किनारे नवीन जलोढ़ मिट्टी की एक पतली पट्टी पायी जाती है, जिसकी बाहरी सीमा खादर से निर्धारित होती है। चूंकि यह प्रतिवर्ष नदियों द्वारा लाए गए नवीन अवसादों से निर्मित होती है इसलिए काफी उपजाऊ होती है। इस प्रकार की मिट्टी में Ph का मान 7 के लगभग होता है, कार्बन एवं नाइट्रोजन की मात्रा काफी कम होती है। इसमें खरीफ मौसम में बाजरा, ज्वार, मक्का, दलहन एवं रबी में गेहूं, जौ आदि उपजें होती हैं।

3. गंगा समतली मिट्टी अथवा बलुई चीका मिट्टी :-

इस प्रकार की मिट्टी करछना तहसील के मध्य पूर्व एवं मेजा तहसील के उत्तरी-पूर्वी भागों में पायी जाती है। यह परिपक्व एवं समतल क्षेत्रों वाली होती है। इसकी उपरी सतह दोमद और बलुई दोमट तथा निचली सतह भारी चीका मिट्टी से युक्त होती है। यह मिट्टी अच्छी उत्पादक होती है। अच्छे उर्वरकों के उपयोग से और अच्छी उत्पादन क्षमता की फसल उगाई जाती है। सामान्यतया इसमें ज्वार, बाजरा, अरहर, चना, मटर, गन्ना आदि पैदा किए जाते हैं।

4. यमुना उच्च भूमि :-

यमुना पार क्षेत्र के मेजा तहसील के दक्षिणी-पश्चिमी एवं दक्षिणी-पूर्वी भाग में यह मिट्टी पायी जाती है। यह समतल तल वाली मिट्टी नहीं है। इसकी उपरी सतह दोमट एवं बालू से युक्त है एवं निचली सतह में चीका युक्त मिट्टी पायी जाती है। इसमें ज्वार, बाजरा, अरहर, चना आदि की खेती होती है।

5.यमुना समतली मिट्टी :-

इस तरह की मिट्टी करछना तहसील के उत्तरी-पश्चिमी भाग में समतल रूप में पायी जाती है। यह गंगा समतली मिट्टी से काफी मिलती जुलती है। इसका स्थानीय नाम दोमट है जिसमें मोटे अनाज, दालें, मटर आदि पैदा की जाती हैं।

6. बड़े कणों वाली मिट्टी :-

यह मेजा, बारा के दक्षिणी-पश्चिमी भाग एवं करछना के दक्षिणी भाग में पायी जाती है। इसकी उत्पत्ति बेलन, सेवती, टौंस आदि नदियों के द्वारा दक्षिण के विन्ध्य क्षेत्र से बहाकर लाये गये अवसादों से हुई है। इस मिट्टी की उपरी परत दोमट और निचली परत हल्के से भारी चीका से बनी है। इसकी उत्पादन शक्ति अच्छी है किन्तु जल की कमी से उत्पादकता कम हो जाती है। सिंचाई की सुविधा के साथ चावल छोड़कर सभी फसलें हो जाती हैं।

7. गहरी काली मिट्टी :-

यमुनापार क्षेत्र में काली मिट्टी बारा तहसील के मध्य पूर्व एवं दक्षिण पश्चिम भाग में, करछना के दक्षिण पश्चिम भाग में एवं मेजा के सम्पूर्ण दक्षिणी भाग में विस्तृत है। इसका निर्माण विन्ध्यन जमाव से हुआ है। इस प्रकार की

फोटो प्लेट न0 1-अपरदन द्वारा असमतल भूमि, देवघाट बजहा गॉव, कोरांव इलाहाबाद
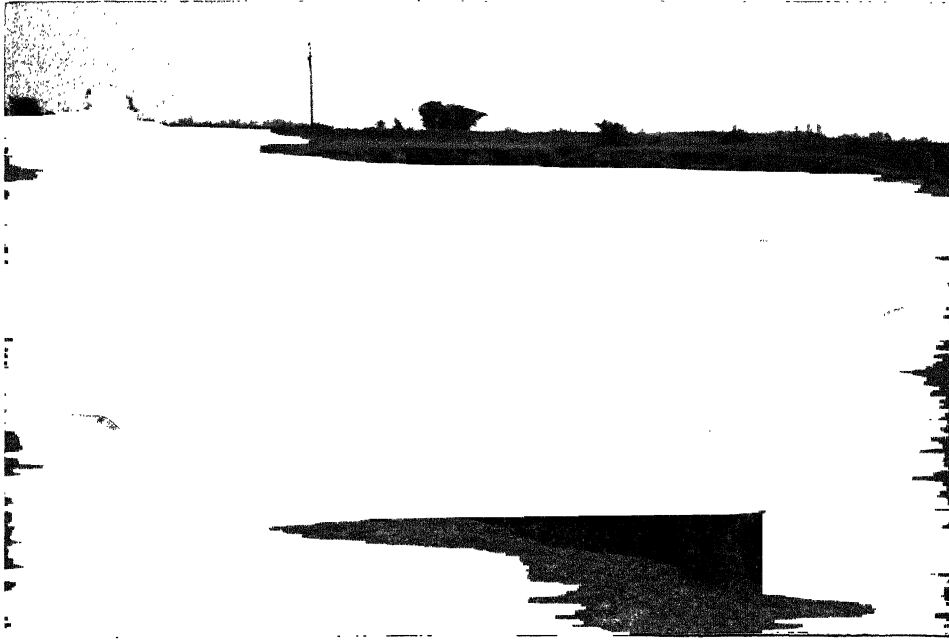
फोटो प्लेट न0 2- खड़ा कटाव, जवाइन गॉव कोरांव इलाहाबाद

मिट्टी अत्यन्त उपजाऊ होती है किन्तु बिना सिंचाई के किसी भी फसल का उत्पादन असम्भव हो जाता है। चना, मटर, गेहूं, जौ, बाजरा आदि मुख्य फसलें पैदा की जाती हैं।

मृदा अपरदन एवं मृदा संरक्षण की समस्या

यमुना पर क्षेत्र में मृदा अपरदन एक विकराल समस्या है जिसका कारण सम्पूर्ण क्षेत्र का असमतल होना एवं विभिन्न नदियों एवं नालों के बहाव क्षेत्र से युक्त होना है। मृदा अपरदन का अर्थ जल किया द्वारा किसी स्थल की मृदा का एक स्थल से उठाकर दूसरे स्थल पर ले जाना होता है। भारत में मृदा अपरदन कई जगहों पर एक गम्भीर समस्या है[4]।

इस क्षेत्र में मृदा अपरदन की समस्या मुख्यतया विभिन्न नदियों के प्रवाह क्षेत्रों में पायी जाती है और मृदा संरक्षण का कार्य केवल मात्र कृष्य भूमि में होता है। मुख्यतया इस क्षेत्र का मृदा अपरदन लपरी, बेलन, टौंस यमुना एवं गंगा नदियों एवं विन्ध्य तथा रीवां कगार क्षेत्र में होता (फोटो प्लेट न० 1,2) अध्ययन क्षेत्र में मृदा अपरदन के मुख्य कारक निम्न है-

1. भारी और मूसलाधार मानसूनी वर्षा
2. नदी किनारों का वन नाशन और ढालदार क्षेत्र
3. त्रुटिपूर्ण कृषि पवन्धन

अन्य प्रभावित क्षेत्र जिनका उपयोग पुनर्ग्रहण के पश्चात अच्छे ढंग से हो सकता है उन्हें छोड़ दिया गया है। इन क्षेत्रों में भी संरक्षण कार्य प्रभावी ढंग से प्रारम्भ किए जाने चाहिए। मृदा संरक्षण की कुछ विधियों का उल्लेख निम्न है: -

1. समोच्च रेखीय जुताई
2. फसल प्रतिरूप और फसल व्यवहार में बदलाव

3. सीढीदार बहाव नियंत्रण

4. उर्वरकों का प्रयोग बढ़ाना

5. नदी तटबन्धन

6. मिट्टी को घास और वृक्षों से ढके रहना

7. खड़े ढालों पर चट्टानी कटाव को रोकना

8. बिना सिंचाई क्षेत्रों में सिंचाई सुविधाओं के लिए पूर्वोपाय करना इत्यादि।

खनिज संसाधन

यमुना पार क्षेत्र खनिज संसाधन की दृष्टि से सम्पन्न नहीं हैं। कांच बालुका, इमारती पत्थर, ईंट बनाने की मिट्टी आदि ही यहां पाए जाने वाले प्रमुख खनिज हैं। बारा तहसील के शंकरगढ़, लोहगरा में सबसे अच्छे कांच बालुका का निक्षेप पाया जाता है, जिसमें भुर भुरे बलुआ पत्थर से सफेद बालू भी प्राप्त होता है। इस क्षेत्र का अधिकांश पत्थर गिट्टी के काम आता है तथा परतदार चट्टानों से भवन निर्माण के लिए पत्थर तथा पट्टियां आदि भी निकाली जाती हैं। नदी घाटियों में निक्षेपित बालू से भवन निर्माण का कार्य होता है। करछना तहसील में कंकड़ के अच्छे निक्षेप पाए जाते हैं।

प्राकृतिक वनस्पति

प्राकृतिक वनस्पति, जिसे 'हरा सोना ' भी कहा जाता है, प्रकृति की एक मूल्यवान देन है। प्राकृतिक रूप से स्वतः ही उगने वाले पेड़ पौधों तथा घास आदि की सघन आकृति को वन कहते हैं। अध्ययन क्षेत्र में प्राकृतिक वनस्पति पर सबसे अधिक प्रभाव जलवायु, मृदा स्थलाकृति तथा प्रकाश अवधि का पड़ा है। उच्च तापमान, पर्याप्त वर्षा, गहरी मिट्टी, लम्बी प्रकाश अवधि ही वनस्पति के विकास में सहायक हुई है।

यमुना पार क्षेत्र के वनस्पतियों के विकास में सबसे प्रमुख योगदान नदी निक्षेपों का है। इस क्षेत्र को दो वन प्रदेशों इलाहाबाद और मेजा में बांटा

TRANS-YAMUNA REGION
ALLAHABAD DISTRICT
VEGETATION
N
YAMUNA RIVER
GANGA RIVER
Tons River
Belan River
Bhilor
Pratapur
Lakhnauti
Kachari
Lohgra
Janvan
Kanchanpur
Lodai
Lakhanpur
Ossa
Beora
Juhi
Bajadi
Badiha
Singhpur
Salaiya Kala
Salaiya Khurd
Kodar
Dadri
Sukti
Meja
Manda
Munda Pela
Bilhat
Kusanda
Vedi Belt
Barokhar
Mahuli
Badua Kala
INDEX
Dry Mixed Deciduous Forest
Teak Forest
Dry Deciduous Scrub
Kharadhai Forest
Salai Forest
Palas Forest
Bamboo Forest
Protected Forest
Agricultural and Waste Land
4 0 4 8
km

Fig. 2.6

गया है[5]। इन वन क्षेत्र विभागों का 31 विकास खण्डों में बांटा गया है जिसमें 13 इलाहाबाद रेंज में एवं 18 मेजा क्षेत्र रेंज के अन्तर्गत आते है। यमुना पार क्षेत्र की 20.067 हेक्टेयर भूमि वनों ढकी है जिसमें 74 प्रतिशत अथवा 14895.5 हेक्टेयर भूमि मेजा रेंज में तथा 26 प्रतिशत अथवा 5171.5 हेक्टेयर भूमि इलाहाबाद रेंज के अन्तर्गत आती है[6]।

इलाहाबाद रेंज में करछना एवं बारा तहसील के भिलोर, जूही, बजबड़ी, जनवां व्यौरा, कचारी, लबनीपुर कंचनपुर, लेदार, वैरा, लोहगरा, लखनौती एवं प्रतापपुर, वन विकास खण्ड आते हैं, जबकि मेजा रेंज में बिलहट, दारी, खोदर, गड़रिया, बेधापट्टी, वदिदाहा, कुसान्दा, गेजा, माण्डा, मुण्ड पेला पश्चिम, मुण्ड पेल पूर्व, सलैया खुर्द, सिंहपुर खुर्द, सलैया कलां, सूक्ति, महुली एवं बड़ोखर विकास खण्ड आते हैं।

<u>वनस्पति प्रकार</u> :-

यमुना पार क्षेत्र के वनों की सामान्य विशेषता शुष्क पर्णपाती एवं मिश्रित प्रकार की है। इसे चैम्पियन एवं सेठ ने तीन मुख्य एवं नौ उप विभागों में बांटा हे जो निम्न हैं :

ए 1. शुष्क मिश्रित पर्णपाती वन।

2. सागौन वन।

3. शुष्क पतझड़ झाड़ियां।

बी 4. कराधाई वन।

5. सलाई वन।

6. ढाक व पलास वन।

7. बांस वन।

सी 8. परित्यकत वन।

9. कृषि एवं खाली भूमि।

1. शुष्क मिश्रित पतझड़ वन:-

मेजा वन क्षेत्र में बड़ोखर एवं महुली वनीय विकास खण्ड के चारों ओर 533.2 हेक्टेयर क्षेत्र में इस प्रकार के वन पाए जाते हैं। जो विन्ध्य संरचना के कैमूर सिरीज पर पाए जाते हैं। धरला पहाड़ के दक्षिणी ढाल पर भी ऐसे वन पाए जाते हैं। इसके प्रमुख वृक्ष महुआ, खैर, ऑवला, पलास, जामुन, करौदा, बेहरा, बेर, नीम, बबूल, सेमर आदि के वृक्ष पाये जाते हैं।

2. सागौन वन :-

अध्ययन क्षेत्र के मेजा वन क्षेत्र में वेदी बेल्ट ब्लाक में 157.8 हेक्टेयर क्षेत्र में इस तरह के वन पाए जाते हैं। यह प्राकृतिक रूप से नहीं उगते बल्कि कृत्रिम रूप से लगाए जाते हैं। सागौन के अलावा कहीं-कहीं साल एवं तेंदू पलास एवं ककोर भी पाए जाते हैं।

3. शुष्क पतझड़ झाड़ियां :-

यमुना पार के पथरीली सतह पर शुष्क जलवायु क्षेत्रों में इस प्रकार की वनस्पति पाई जाती है। इस तरह की वनस्पति इलाहाबाद वन क्षेत्र में 3881.4 हेक्टेयर एवं मेजा रेंज में 8444.1 हेक्टेयर क्षेत्र में फैली हुई है अर्थात दोनों वन क्षेत्रों में 12825.5 हेक्टेयर क्षेत्र घेरे हुए है। इसमें हरसिंगार, कटई, करौदा, झरबेरा आदि प्रमुख वृक्ष प्रजातियां पाई जाती हैं।

4. कराधाई वन :-

मेजा रेंज के बड़ोखर एवं महुली ब्लाक वनों में 782.0 हेक्टेयर क्षेत्र में यह वन पाये जाते हैं जो शुष्क एवं कम गहरी मिट्टी में पाएं जाते हैं।

N
TRANS -YAMUNA REGION
ALLAHABAD DISTRICT
DISTRIBUTION OF POPULATION
1991
A
YAMUNA RIVER
GANGA RIVER
Tons River
Belan R.
B
GROWTH OF POPULATION
12
11
10
9
8
7
6
5
4
3
2
1
1911 21 31 41 51 61 71 81 91 2001
Years
Urban Population
60000
20000
10000
5000
Rural Population
5000
2000
10 0 10 20
km
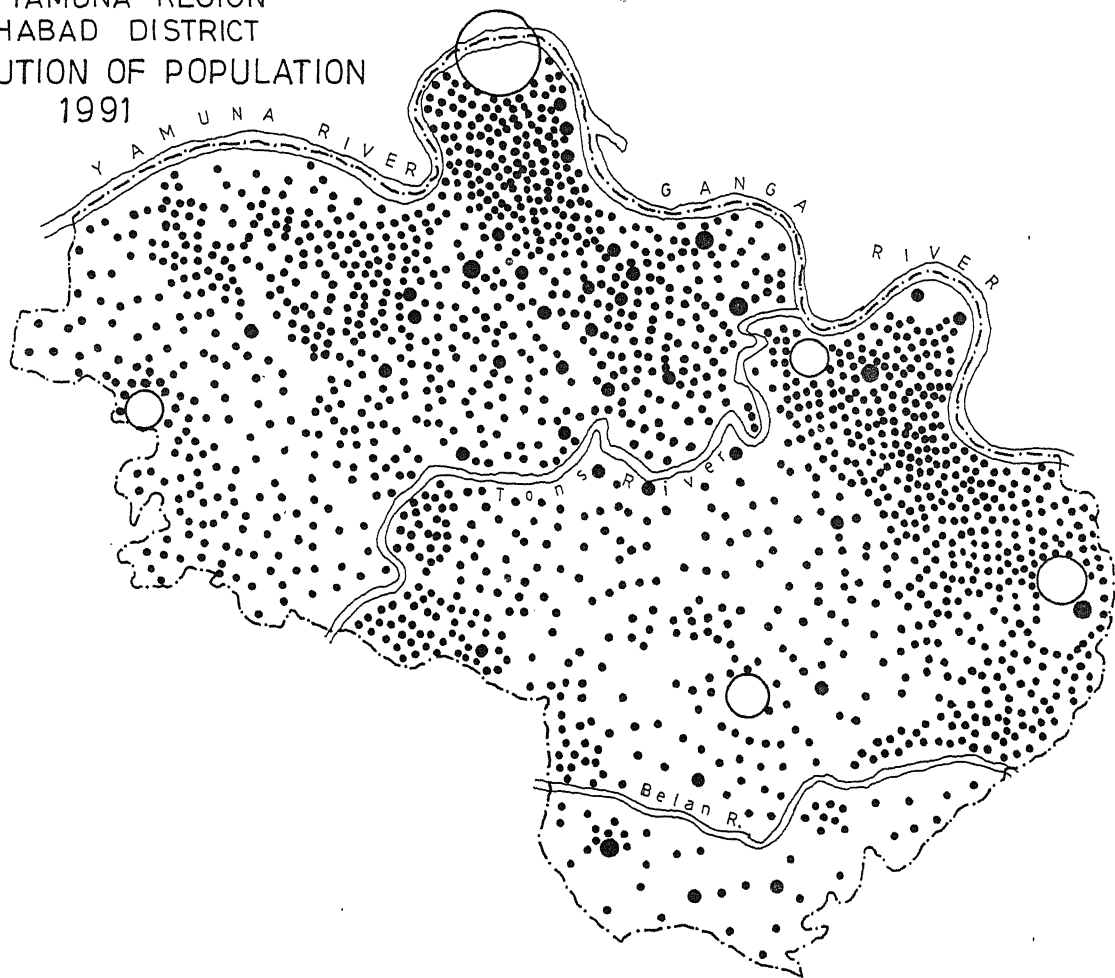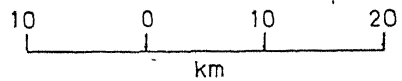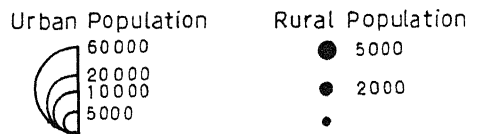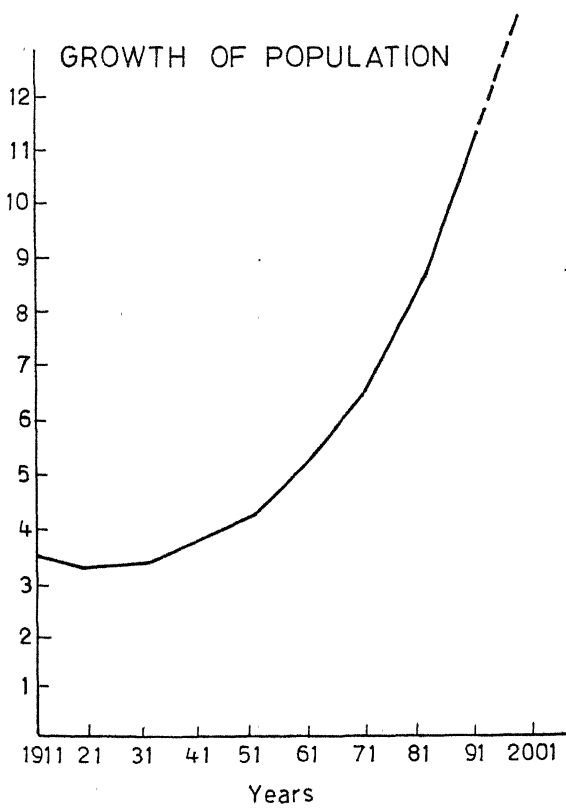
Fig. 2.7

5. सलाई वन :-

यह वन उ.प्र. एवं म.प्र. की सीमा पर पर्वतों के समतल चोटियों के ढालों पर 311 हेक्टेयर क्षेत्र में पाए जाते हैं। यह प्रमुखतः बड़ोखर ब्लाक में पाया जाता है।

6. पलास वन :-

इस प्रकार के वन मटियार मिट्टी में पाए जाते हैं। इन वृक्षें की उंचाई बहुत कम होती है। यह मेजा वन क्षेत्र में 127.8 हेक्टेयर और इलाहाबाद वन क्षेत्र में 10.8 हेक्टेयर क्षेत्र पर विस्तृत है।

7. बांस वन :-

यह इलाहाबाद रेंज के ओसा ब्लाक में तथा मेजा रेंज के सिंहपुर ब्लाक में मुख्य रूप से पाए जाते हैं। सम्पूर्ण अध्ययन क्षेत्र के 345.6 हेक्टेयर क्षेत्र में इस प्रकार के वन फेले हुए हैं।

इस प्रकार सम्पूर्ण अध्ययन क्षेत्र सामान्य रूप से पहाड़ी भागों में झाड़ीदार वृक्ष जैसे- ढाक, झरबेरी, आंवला, सलाई, काकोरी, बबूल आदि वृक्ष जबकि मैदानों में बाग के रूप में आम, नीम, शीशम, महुआ, पीपल, गूलर आदि कहीं-कहीं तेंदू वृक्षें की बहुलता पायी जाती है जिसकी पत्तनी से बीड़ी बनाई जाती है।

जनसंख्या

प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग तथा देश की औद्योगिक और व्यापारिक उन्नति के लिए जनसंख्या अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इसलिए प्राकृतिक संसाधनों के परीक्षण के बाद हमें मानवीय संसाधनों का अध्ययन करना आवश्यक है क्योंकि मानव किसी अध्ययन का केन्द्र बिन्दु होता है। पृथ्वी पर सभी कार्य-कलाप मनुष्य के ही इर्द-गिर्द घूमते हैं। प्राकृतिक संसाधनों का उत्पादन एवं उपयोग तथा देश की औद्योगिक एवं व्यापारिक उन्नति के लिए
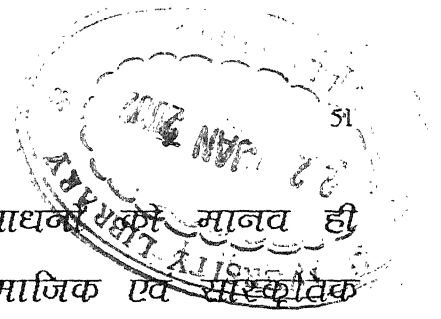
जनसंख्या का अध्ययन किया गया है। प्राकृतिक संसाधनों को मानव ही अपनी आवश्यकतानुसार दोहित कर अपना आर्थिक सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास करता है। मानव, सांस्कृतिक विकास के मूल्यांकन का सबसे प्राथमिक और शक्तिशाली तत्व है, क्योंकि किसी भी संसाधन की सार्थकता केवल लोगों के ही सन्दर्भ में, जो उसे प्रयोग करता है, निर्धारित की जाती है[7]।

यह मानवीय संसाधन लोगों की संख्या से नहीं बल्कि उसके ज्ञान क्षमता और उसके जीवनस्तर द्वारा निर्धारित होता है क्योंकि किसी विशिष्ट जनसंख्या प्रतिरूप के निर्धारण एवं स्थायीकरण में इनका मुख्य योगदान होता है[8]।

जनसंख्या की भौगोलिक व्याख्या शुद्ध जनांकिकीय अध्ययन से पृथक है क्योंकि इसके द्वारा मानव तथा उसके अधिवास के अन्तर्सम्बन्धों का ज्ञान होता है, जिससे किसी ग्रामीण अर्थव्यवस्था में जनसंख्या समस्या को समझने में सहायता मिलती है[9]।

जनसंख्या वृद्धि

जनसंख्या में धीमी वृद्धि से एक मजबूत जनशक्ति तैयार होती है जो किसी प्रदेश के आर्थिक विकास हेतु विश्वसनीय संसाधन होती है, जबकि जनसंख्या की विस्फोटक वृद्धि से किसी प्रदेश की अर्थव्यवस्था के भयावह परिणाम होते हैं। इसके द्वारा कभी-कभी घोर अभाव एवं गरीबी की स्थितियां उत्पन्न होती हैं। इस प्रकार किसी प्रदेश के सन्तुलित विकास हेतु जनसंख्या का सन्तुलित स्तर ही आवश्यक होता है।

सर्वप्रथम 1847 में पुलिस एवं राजस्व विभाग द्वारा इलाहाबाद जिले की जनसंख्या का अनुमान लगाया गया। उसके बाद 1853 और 1865 की जनसंख्या में अल्प वृद्धि हुई, लेकिन 1872 की जनगणना में दुर्भिक्ष एवं रोग के

कारण कमी हुई। अध्ययन क्षेत्र की तालिका (2.III) देखने से यह स्पष्ट होता है कि 1911 से 1921 तक ह्रास हुआ, जबकि उसके बाद लगातार वृद्धि हुई है।

अध्ययन क्षेत्र की दशकीय जनसंख्या वृद्धि देखने से स्पष्ट होता है कि 1911 से 1921 के बीच 2.43 प्रतिशत का ह्रास हुआ जिससे जनसंख्या 333273 से घटकर 1921 में 325587 हो गई। सर्वाधिक ह्रास मेजा तहसील में 4.90 प्रतिशत तथा सबसे कम ह्रास 0.7 प्रतिशत करछना तहसील में रहा। इसका कारण महामारियां जैसे प्लेग, हैजा एवं इन्फ्लुएंजा था। क्षेत्र की आर्थिक एवं स्वास्थ्य सुविधाओं में वृद्धि के साथ 1921 से 1931 के बीच जनसंख्या में 2.23 प्रतिशत की वृद्धि हुई। करछना में सर्वाधिक वृद्धि 3.9 प्रतिशत एवं मेजा में न्यूनतम वृद्धि 0.39 प्रतिशत थी।

1931 से 41 के दशक में क्षेत्र की जनसंख्या में 14.67 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई। सर्वाधिक वृद्धि करछना में 14.76 प्रतिशत जबकि मेजा में 14.56 प्रतिशत रही।

1941 से 51 के बीच पिछले दशक की तुलना में 1.13 प्रतिशत की कमी रही जबकि 1951 से 61 के दशक में वृद्धि पुनः 25.14 प्रतिशत पहुंच गयी जिसका कारण आजादी के उपरान्त मानव सुविधाओं में वृद्धि था।

1961 से 71 के बीच एक बार पुनः जनसंख्या में पिछले दशक की तुलना में 1.45 प्रतिशत की कमी रही लेकिन 1971 से 81 में पुनः प्रतिवर्ष 3.12 प्रतिशत की वृद्धि से जनसंख्या 670891 के स्थान पर 880009 हो गई।

1981 से 91 के बीच जनसंख्या बढ़कर 1144385 हो गई, जो 1981 की अपेक्षा 264376 अधिक थी। दशकीय वृद्धि 36.04 प्रतिशत थी फिर भी पिछले दशक की तुलना में 1.13 प्रतिशत कम थी। तहसील स्तर पर वृद्धि प्रतिशतांक मेजा में 30.25 एवं करछना में 29.25 रहा।

Table-2.III

Population Growth of Trans-Yamuna Region-(1911-1991)

Year	Karchhana*		Meja		Trans-Yamuna Region	
	Total Population	Growth Rate %	Total Population	Growth Rate %	Total Population	Growth Rate %
1911	170457	-	163266	-	333723	-
1921	170334	- 0.07	155253	- 4.90	325587	-2.43
1931	176979	3.90	155253	0.39	332849	2.23
1941	203118	14.76	178570	14.59	381688	14.67
1951	234585	15.49	198808	11.33	433393	13.54
1961	289889	23.57	252482	26.99	542371	25.14
1971	356218	22.88	314673	24.63	670891	23.69
1981	458992	28.85	421017	33.79	880009	31.17
1991	596002	29.85	548383	30.25	1144385	30.04
1911-1991	2656574	249.69	2388322	235.88	5044896	242.91

*- The Population of Karchhana included the Population of Bara and Karchhana Tehsil as Bara Tehsil was created in 1984.

Source-1.Census of District Allahabad (1951,1961,1971,1981)
2.Gazetteers of Allahabad District (1911-1986)
3.Census of Allahabad.

TRANS-YAMUNA REGION
ALLAHABAD DISTRICT
DENSITY OF POPULATION
RURAL
N
U. A.
Y A M U N A R I V E R
G A N G A R I V E R
INDEX
Persons/ km²
> 1000
501 — 1000
251 — 500
0 — 250
10 0 10 20
km
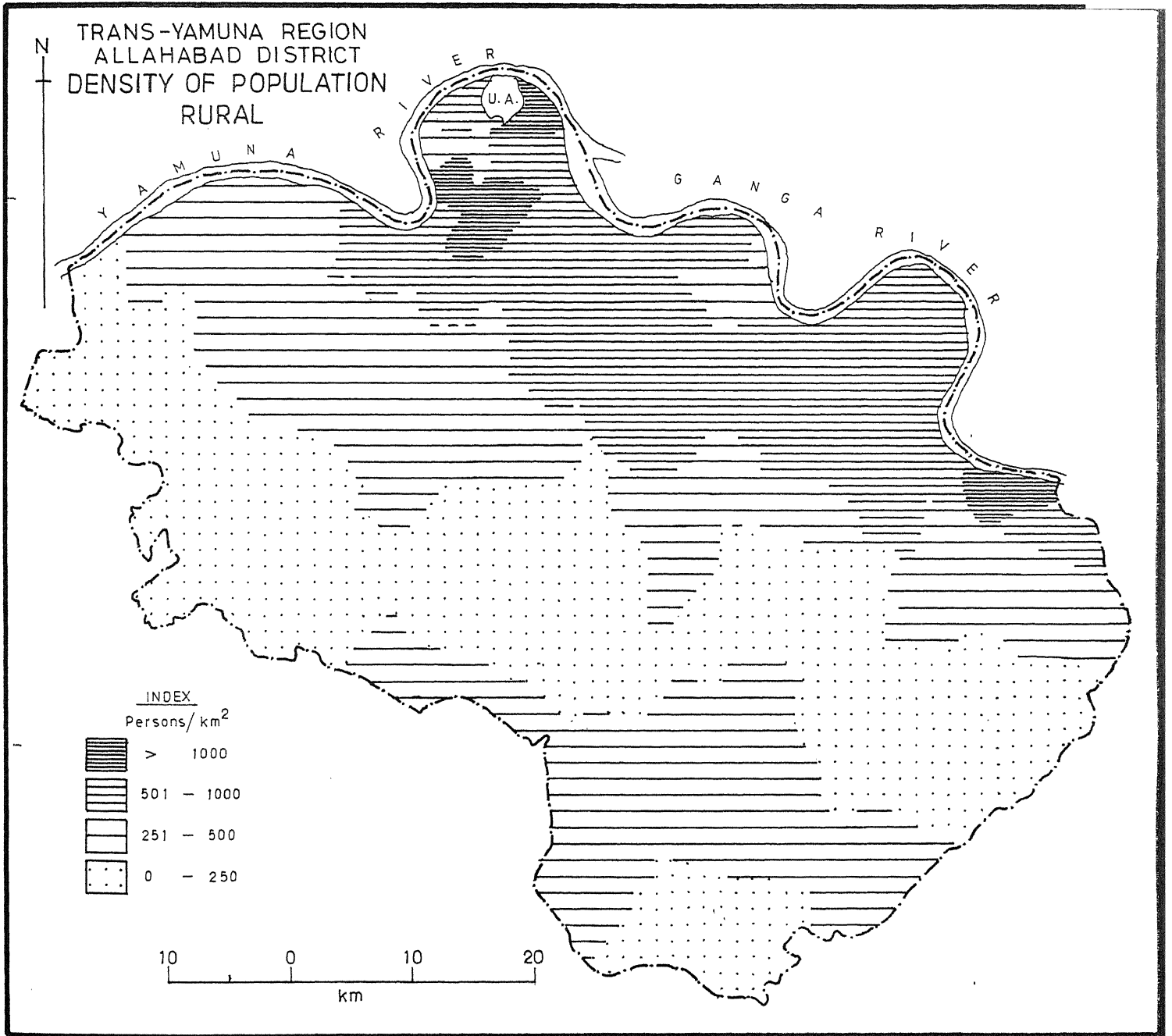
Fig. 2.8

सन् 1991 में अध्ययन क्षेत्र की ग्रामीण एवं नगरीय जनसंख्या की वितरण तालिका (2.IV) को देखने से क्षेत्र की सकल जनसंख्या 1237709 में नगरीय जनसंख्या 93324 है जिसका प्रतिशतांक भाग 7.54 प्रतिशत है। नगरीय जनसंख्या क्षेत्र के पांच कस्बों- नैनी, भारतगंज, शंकरगढ़, सिरसा एवं कोरांव में वितरित है। इनमें सबसे बड़ा केन्द्र नैनी 53436 जनसंख्या वाला एवं सबसे छोटा कोरांव 7832 जनसंख्या वाला है।

Table –2.IV

Rural And Urban Population Of Trans-Yamuna Region-1991.

Sl.No.	Name of Tehsil / Town	Population		
		Rural	Urban	Total
1.	Bara	2,14,870	10,662	2,25,532
	Shankergarh	-	10,662	
2.	Karchhana	3,81,132	53,436	4,34,568
	Naini	-	53,436	
3.	Meja	5,48,383	29,226	5,77,607
	Sirsa	-	8,929	
	Bharatganj	-	12,465	
	Koraon	-	7,832	
	Region			12,37,709

Source :-

1. Census Office, Allahabad (Unpublished).
2. Director of Census Operation, Lucknow.

Table – 2.V

Trans-Yamuna Region, Density of Rural Population-1991.

Sl. No.	Development Block	Area (Km²)	Population	Arithmetic Density	Agricultural Density
1.	Chaka	138	1,27,177	921	1183
2.	Karchhana	243	1,54,822	637	680
3.	Kaudhiara	176	99,133	563	506
4.	Jasra	253	1,12,318	444	475
5.	Shankergarh	475	1,02,552	216	335
6.	Koraon	634	1,67,574	264	265
7.	Manda	414	1,32,309	319	487
8	Meja	484	1,17,250	242	376
9	Uruva	182	1,31,295	721	754
	Region	2,999	11,44,385	381	464

Source :-

1. Census Office, Allahabad (Unpublished).

जनसंख्या का स्थानिक वितरण :-

किसी प्रदेश में जनसंख्या के वितरण प्रतिरूप के लिए भौगोलिक आकृतियां अत्यधिक जिम्मेदार होती हैं। मानव और उसका पर्यावरण सम्बन्ध सांस्कृतिक भूदृश्य बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। जैसा कि कायस्थ[10] ने भी कहा है कि जनसंख्या का वितरण अच्छी कृषि, भूमि और जल की उपलब्धता पर निर्भर होता है।

यमुना पार के सन्दर्भ में जनसंख्या का वितरण मानचित्र 2.7 देखने से यह स्पष्ट होता है कि क्षेत्र का समतल पूर्वी किनारे वाला भाग अधिक संकेन्द्रित है जबकि दक्षिणी एवं पश्चिमी भाग पहाड़ी एवं अनुपजाउ होने के कारण अल्प संकेन्द्रित है। अध्ययन क्षेत्र में कुछ स्थानों पर नगरीयता के कारण जनघनत्व अधिक है जो सारणी (2.IV) से स्पष्ट है।

आंकिक जनसंख्या घनत्व प्रतिइकाई क्षेत्रफल जनसंख्या का द्योतक है जो किसी इकाई भूमि में मानव अनुपात को व्यक्त करता है। यमुना पार क्षेत्र का औसत घनत्व 381 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. है जिसमें चाका विकास खण्ड का सर्वाधिक जनघनत्व 921 व्यक्ति/वर्ग कि.मी. है

Table-2.VI

Rural Sex Ration of Trans-Yamuna Region-1991.

Sl. No.	Development Blocks	% of Total Population		Sex Ratio Female/1000 Males
		Male %	Female %	
1.	Jasra	53.75	46.25	860
2.	Shankergarh	53.21	46.79	879
3.	Chaka	54.28	45.72	842
4.	Karchhana	53.73	46.27	861
5.	Kaudhiara	53.39	46.61	873
6.	Koraon	53.46	46.54	870
7.	Manda	52.77	47.23	895
8.	Meja	53.48	46.52	869
9.	Uruva	52.41	47.59	908
	Region	53.39	46.61	873

Source :-

Census Office, Allahabad (Unpublished).

जबकि न्यूनतम जनघनत्व शंकरगढ़ विकास खण्ड (216 व्यवित/वर्ग कि. मी.) है। तालिका (2.V)

किसी क्षेत्र का कृषि घनत्व कुल क्षेत्रफल में कृषि में लगी जनसंख्या का घोतक है। अध्ययन क्षेत्र का औसत कृषि घनत्व 464 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. है जिसमें सर्वाधिक कृषि घनत्व चाका ब्लाक का 1183 व्यक्ति/वर्ग कि.मी. है। तथा न्यूनतम कृषि घनत्व कोरांव ब्लाक का 265 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. है।

अध्ययन क्षेत्र में जनसंख्या घनत्व का न्याय पंचायत स्तर पर अवलोकनकरने से स्पष्ट होता है कि करछना तहसील के चाका विकास खण्ड में 'चकबाबुरी अलीमाबाद ' न्याय पंचायत में सर्वाधिक जनघनत्व 1494 प्रतिशत वर्ग कि.मी. है। एवं न्यूनतम जनघनत्व बारा तहसील के शंकरगढ़ ब्लाक में गोल्हैया न्याय पंचायत 160 व्यक्ति वर्ग कि.मी. है।

मानचित्र 2.8 में जनघनत्व के अनुसार अध्ययन क्षेत्र को निम्न चार वर्गों में विभाजित किया गया है -

प्रथम वर्ग 0-250 व्यक्ति/वर्ग कि.मी. से कम जनसंख्या वाले क्षेत्रों में बारा की 8 एवं मेजा तहसील की 11 न्याय पंचायतें सम्मिलित हैं। इस वर्ग के अन्तर्गत शंकरगढ़, माण्डा, मेजा, कोरांव ब्लाक के कुछ भाग सम्मिलित किए जाते हैं। इसमें क्षेत्र का 36.7 प्रतिशत भाग आता है जिसमें 19 प्रतिशत ग्रामीण जनसंख्या निवास करती है।

मध्यम वर्ग के अन्तर्गत 251 से 200 व्यवित/वर्ग कि.मी. जनसंख्या को रखा गया है जिसके अन्तर्गत बारा तहसील की 9, करछना की 7 एवं मेजा की 11 न्याय पंचायतें सम्मिलित हैं। इसमें कुछ क्षेत्रफल का 36.9 प्रतिशत भाग एवं 31.6 प्रतिशत ग्रामीण जनसंख्या निवास करती है। इसमें बारा तहसील का सम्पूर्ण जसरा, शंकरगढ़ का उत्तरी-पूर्वी भाग, कौंधियारा का अधिकांश भाग चाका करछना का कुछ भाग मध्यम जन घनत्व के अन्तर्गत आते हैं।

तृतीय वर्ग के अन्तर्गत 501 से 1000 व्यक्ति/वर्ग कि.मी. जनसंख्या को सम्मिलित किया गया है जिसमें सम्पूर्ण अध्ययन क्षेत्र का 24 प्रतिशत भाग एवं जनसंख्या का 42 प्रतिशत भाग बसा हुआ है। इसमें करछना की 16, मेजा की 12 एवं बारा तहसील की दो न्या पंचायत सम्मिलित हैं। उरुवा विकास खण्ड की लेहडी न्याय पंचायत में 998 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. पाए जाते हैं।

N
TRANS-YAMUNA REGION
ALLAHABAD DISTRICT
RURAL LITERACY
YAMUNA RIVER
GANGA RIVER
INDEX
Percentage of Total Population
> 32
32 - 29
29 - 26
26 - 23
10 0 10 20
km
RURAL SEX RATIO
YAMUNA RIVER
GANGA RIVER
INDEX
Female Per 1000 Males
> 900
900 - 881
880 - 861
860 - 840
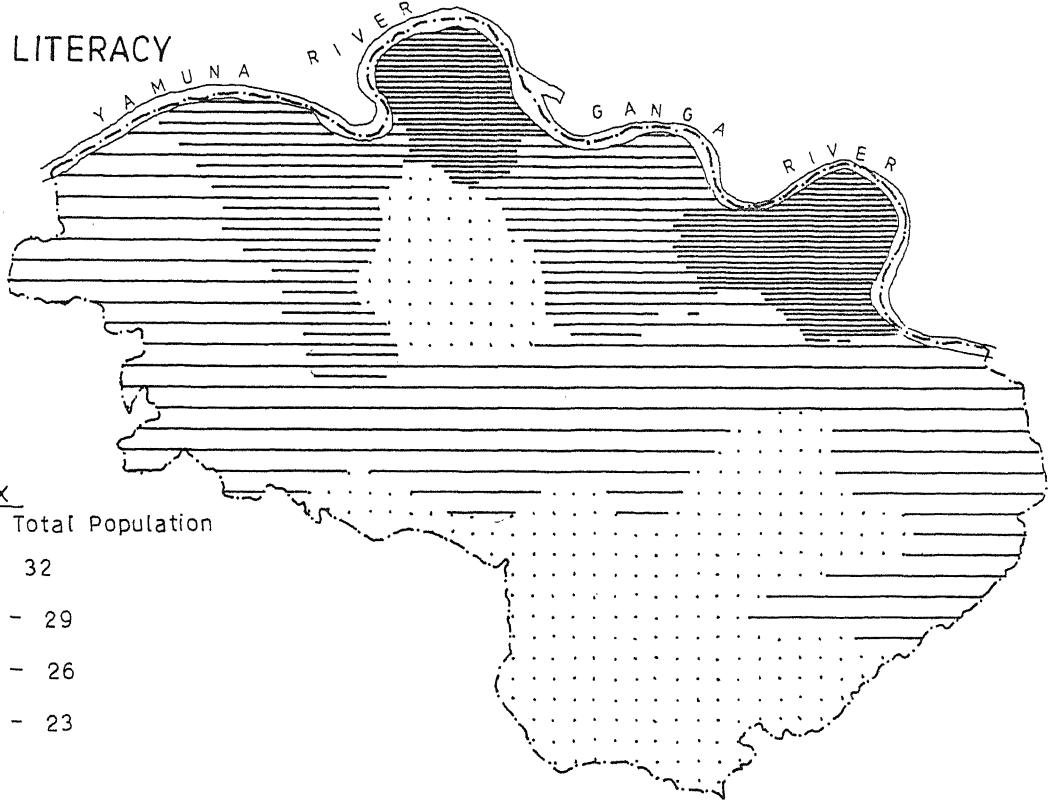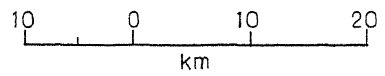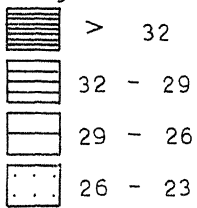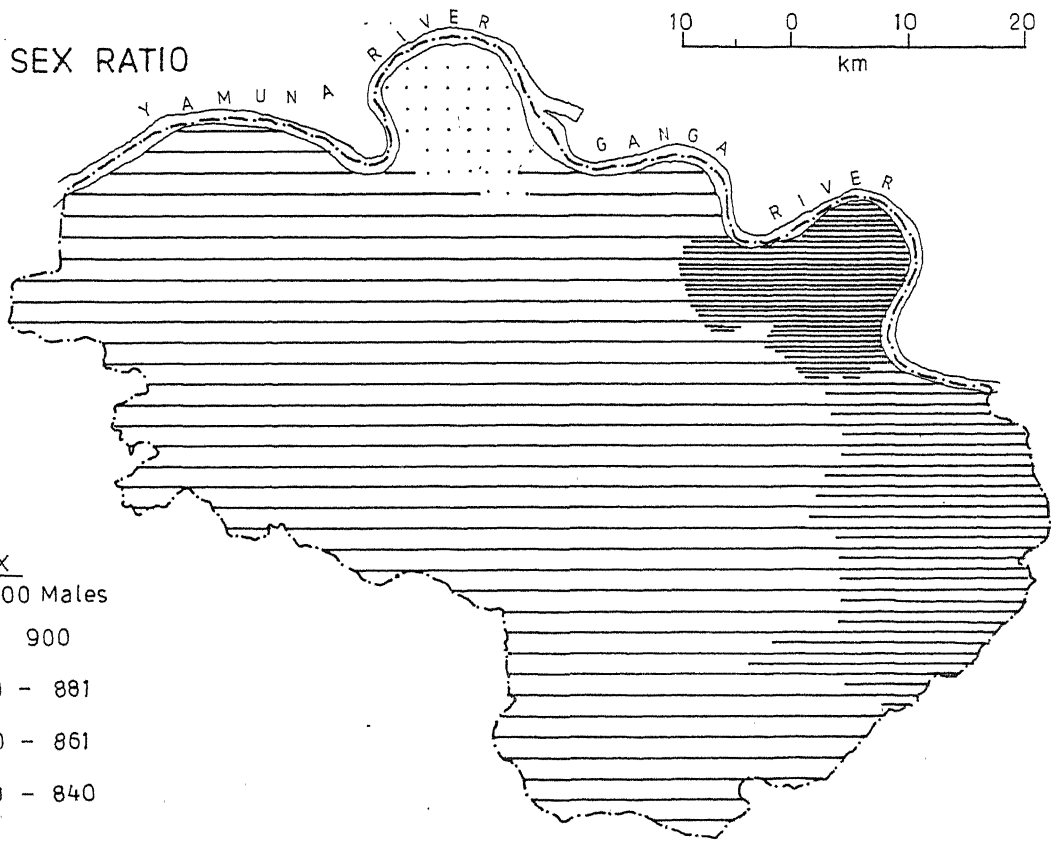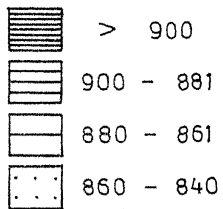
Fig. 2.9

चतुर्थ वर्ग में 1000 से उपर व्यक्ति/वर्ग कि.मी. क्षेत्र में सम्मिलित किया गया है जिसमें चाका की चार न्याय पंचायत, माण्डा की 1 न्याय पंचायत सम्मिलित हैं। इसमें सम्पूर्ण अध्ययन क्षेत्र का 2.4 प्रतिशत भाग एवं 7.3 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है। इसमें चाका की चकबाबुरी न्याय पंचायत 1494 व्यक्ति/वर्ग कि.मी. में सर्वाधिक एवं उसके बाद क्रमशः सरंगापुर 1081, देवरी तालुका 1054, बगवना 1046 एवं मेहबा कला 1010 व्यक्ति/वर्ग कि.मी. न्याय पंचायतों का स्थान है।

लिंगानुपात एवं साक्षरता

जनसंख्या की सामाजिक आर्थिक दशाओं की व्याख्या में सीधा प्रभाव डालने के लिए लिंगानुपात महत्वपूर्ण है। लिंगानुपात से हमारा सम्बन्ध पुरुष-स्त्री की संख्या में अनुपात से है। इसके अन्तर्गत प्रति हजार पुरुषों की संख्या पर स्त्रियों की संख्या की गणना की जाती है। अति लिंगानुपात सामाजिक विकास एवं उच्च साक्षरता का प्रतिफल है जबकि कम लिंगानुपात सामाजिक पिछड़ापन, अशिक्षा एवं रूढ़िवादिता का द्योतक है।

सम्पूर्ण अध्ययन क्षेत्र का औसत लिंगानुपात 873 महिला / 1000 पुरुष है इसका मुख्य कारण महिलाओं की मृत्युदर अधिक है। सम्पूर्ण ग्रामीण जनसंख्या में 53.39 प्रतिशत चाका विकास खण्ड में पाये जाते हैं जबकि सबसे कम पुरुष 52.41 प्रतिशत उरुवा उरुवा विकास खण्ड में हैं। इसके विपरीत महिलाओं की सबसे ज्यादा संख्या 47.59 प्रतिशत उरुवा विकास खण्ड में एवं सबसे कम 45.72 प्रतिशत चाका विकास खण्ड में पायी जाती है जो सारणी 2.VI से स्पष्ट है।

साक्षरता जनसंख्या का वह सामाजिक पक्ष है जिसमें उसके गुण का बोध होता है। किसी भी क्षेत्र की साक्षरता उसके तीन कारकों- आर्थिक, सामाजिक तथा धार्मिक द्वारा प्रभावित होती हैं वस्तुतः साक्षरता का सीधा सम्बन्ध उच्च स्त्री शिक्षा एवं सुदृढ़ अर्थव्यवस्थ से होता है। इसलिए ग्रामीण विकास और साक्षरता का सीधा सम्बन्ध होता है।

जहां भारत की साक्षरता 52.11 प्रतिशत है वहीं इलाहाबाद जिले की साक्षरता 42.7 प्रतिशत है जिसमें यमुना पार क्षेत्र की औसत साक्षरता केवल 28. 86 प्रतिशत ही है जो देश और जिले से काफी कम है। महिलाओं की अपेक्षा पुरुष ज्यादा शिक्षित है यथा पुरुषों की साक्षरता 81.07 प्रतिशत और महिलाओं की 18.93 प्रतिशत ही हैं तालिका 2.VII से भी स्पष्ट होता है कि यमुना पार क्षेत्र शिक्षा की दृष्टि से अत्यन्त पिछड़ा है।

Table-2.VII

Rural Literacy of Trans – Yamuna Region –1991

Sl. No.	Development Blocks	%of Total		% of Total Literates	
		Literates	Illiterates	Male	Female
1.	Jasra	29.96	70.04	78.20	21.80
2.	Shankergarh	27.06	72.94	76.47	23.53
3.	Chaka	32.37	67.63	75.90	24.10
4.	Karchhana	31.50	68.50	82.35	17.65
5.	Kaudhiara	23.00	77.00	85.78	14.22
6.	Monda	28.37	71.63	83.67	16.33
7.	Meja	27.50	72.50	83.43	16.57
8.	Koraon	23.54	76.46	83.96	16.04
9.	Uruva	35.65	64.35	80.60	19.40
	Region	28.86	71.14	81.07	18.93

Source :-

Census Office, Allahabad (Unpublished).

Table- 2.VIII

Area Based Villages- 1991.

Area Category(Km^2)	Percent of Total Number of Villages									
	Development Blocks									
	Jas.	Shan.	Cha.	Kar.	Kau.	Kor.	Man.	Mej.	Uru.	Reg.
<1	23.4	36.5	58.7	34.3	20.7	19.0	52.5	28.3	49.2	36.0
1-2	33.0	24.6	19.1	34.3	34.2	27.6	25.1	23.3	30.0	27.2
2 - 4	26.0	22.7	19.8	23.7	29.3	29.6	13.1	29.5	14.2	23.0
4 - 8	15.0	13.4	01.5	04.6	15.8	18.6	05.5	12.0	05.8	10.5
8 - 16	02.6	02.8	00.8	03.1	-	04.3	03.3	06.9	00.8	03.0
16 - 32	-	-	-	-	-	00.9	-	-	-	00.2
> 32	-	-	-	-	-	-	00.5	-	-	00.1

Source :-

Director of Census Operation, Lucknow.

विकास खण्डों में सर्वाधिक शिक्षित उरूवा में 35.65 प्रतिशत, जबकि सबसे कम शिक्षित 23.1 प्रतिशत कौंधियारा ब्लाक में हैं क्षेत्र में पुरूषों में सबसे ज्यादा साक्षरता कौंधियारा ब्लाक की 85.78 प्रतिशत है तथा सबसे कम पुरूष साक्षर चाका विकास खण्ड के 75.9 ही हैं। सर्वाधिक शिक्षित 24.1 प्रतिशत महिला चाका ब्लाक की जबकि न्यूनतम महिला साक्षरता 14.22 कौंधियारा ब्लाक में पायी जाती है।

TRANS-YAMUNA REGION
ALLAHABAD DISTRICT
N
DISTRIBUTION OF VILLAGES
(A)
YAMUNA RIVER
GANGA RIVER
Tons R.
Belan R.
10 0 10 20
km
INDEX
Inhabited
Uninhabited
Urban Area
(B)
SIZE OF VILLAGES
1991
(Based on Area)
YAMUNA RIVER
GANGA RIVER
Area Per Village km
> 3
2 – 3
1 2
(C)
SIZE OF VILLAGES
1991
(Based on Population)
YAMUNA RIVER
GANGA RIVER
Persons Per Village
> 1000
500 – 1000
< 500
10 0 10 20
km

Fig. 2.10

जनसंख्या प्रक्षेपण

जनसंख्या प्रक्षेपण वह विधि है जिससे किसी प्रदेश की निश्चित समयावधि की भावी जनसंख्या वृद्धि का अनुमान लगाया जा सकता है। प्रक्षेपण का एक दृढ़ सामाजिक आर्थिक आधार है क्योंकि यह नियोजकों एवं सरकारी तंत्र को भावी भाग एवं आपूर्ति सम्बन्धों को पूर्व में ही निर्धारित करने में सहयोग देता है तथा संसाधनों के उपयोग एवं उत्पादन तंत्र के पुनर्गठन हेतु एक यन्त्र का कार्य करता है। जनसंख्या प्रक्षेपण निम्नलिखित विधि से प्रक्रिया को पुनर्संगठित करने के लिए योजना परिकलित किया जाता है -

$$r = (P_2 - P_1)/t / (P_2 - P_1)/2 X100$$

जहां r = परिवर्तनदर

P_1 = वर्तमान जनसंख्या आकार

P_2 = भावी समय में जनसंख्या आकार

t = P_1 और P_2 के मध्य की समयावधि

यह औसत गणितीय सूत्र वार्षिक आधार पर वृद्धि दर को औसत जनसंख्या आकार के काल पर प्रतिशत के रूप में व्यक्त करता है। तथा यह परिवर्तन दर एक निश्चित समयावधि हेतु ही लागू होता है।
उपरोक्त सूत्र के अनुसा यमुनापार प्रदेश की जनसंख्या वृद्धि दर 2.69 प्रतिशत रही जिसका परिकलन निम्न है -

$$r = (P_2 - P_1)/t / (P_2 - P_1)/2 X100$$

$$r = (1144385\text{-}880009)/10 / (1144385+880009)/2 \ X \ 100$$

$$r = 26437.6/1012197 \ X \ 100$$

$r = 2.6$ % होगी ।

1991 की जनगणना के अनुसार यमुना पार क्षेत्र की जनसंख्या 1144385 है अतः 1981-91 के दौरान जनसंख्या वृद्धि दर वार्षिक 2.6 प्रतिशत है। (1981 की जनसंख्या - 880009 थी।)

Table- 2.IX

Population Based Villages- 1991.

Population Size (Persons)	Percent of Total Number of Villages									
	Development Blocks									
	Jas.	Shan.	Cha.	Kar.	Kau.	Kor.	Man.	Mej.	Uru.	Reg.
<500	30.9	55.1	29.6	26.1	25.6	35.0	51.3	42.5	19.8	37.9
500 -999	30.0	33.0	24.5	23.5	29.3	31.5	30.7	32.4	31.8	30.1
1000-1999	26.4	09.7	20.4	36.1	33.0	23.6	12.6	20.4	24.2	21.5
2000-4999	12.7	02.2	24.5	11.8	09.7	08.4	04.8	04.1	20.9	09.5
> 5000	-	-	01.0	02.5	02.4	00.5	00.6	00.7	03.3	01.0

Source :-
Director of Census Operation, Lucknow.

Table .IX B

Population Based Villages – 1991.

Population - Size	Percentage of Villages	Percentage of Population
< 500	37.9	11.2
500-999	30.1	18.3
1000-1999	21.5	34.0
2000-4999	09.5	29.1
> 5000	01.0	07.4

Source :-
Director of Census Operation, Lucknow

N
TRANS-YAMUNA REGION, ALLAHABAD DISTRICT
RURAL SETTLEMENTS
A
DENSITY OF VILLAGES
1991
YAMUNA RIVER
GANGA RIVER
INDEX
No of Villages Per 100 km2
> 75
50 – 75
25 – 50
B
SPACING OF VILLAGES
1991
YAMUNA RIVER
GANGA RIVER
INDEX
> 1.5 km
1.25 – 1.5 km
1 – 1.25 km
10 0 10 20
km
C
NATURE OF DISPERSION OF RURAL SETTLEMENTS
1991
YAMUNA RIVER
GANGA RIVER
INDEX
RN Value
< 1.2
1.2 – 1.4
1.4 – 1.6
D
RANGE OF RANDOM MATCHING
1991
Kaundhiara
Uruva
Karchhana
Meja
Jasra
Chaka
Koraon
Shankargarh
Manda
RN VALUE
1.5
1.4
1.3
1.2
1.1
1.0
0.9
0.8
0.7
0.6
0.5
0 50 100 150 200 250 300 350
NO. OF VILLAGES PER BLOCK
REGULARITY
RANDOM RANGE
CLUSTERING

Fig. 2.11

इस प्रकार जनसंख्या वृद्धि समान रूप से चक्रवृद्धि ब्याज की दर की तरह है जो निम्न सूत्र से परिगणित की जाएगी -

$$E = P(1 + r/100)^n$$

जहाँ कि

E = आकलित जनसंख्या
P = वर्तमान जनसंख्या
r = जनसंख्या की वार्षिक वृद्धि दर
n = E और P के बीच वर्षों की संख्या

इस सूत्र के अनुसार यमुनापार क्षेत्र की 2001 में अनुमानित जनसंख्या निम्न होगी -

$$E = 1144385\ (1 + 2.6/100)^{10}$$

$$= 1144385\ (102.6/100)^{10}$$

= 1517863.3 व्यक्ति

यदि वर्तमान 2.6 प्रतिशत जनसंख्या वृद्धि दर लगातार होती रही तो यमुनापार क्षेत्र की 1992-2001 में जनसंख्या बढ़कर 15.1 लाख हो जाएगी। अगर वृद्धि की यही दर चलती रही तो सन् 2011 में अध्ययन क्षेत्र की जनसंख्या 20. 12 लाख के करीब हो जाएगी, जो एक चुनौती होगी।

यदि यह तीव्र वृद्धि दर बिना रोक थाम के जारी रही तो भविष्य की सभी विकास योजनाओं को ध्वस्त कर देगी। अभी भी समय है कि मानव को इस समस्या के मूल को समझना चाहिए और अध्ययन क्षेत्र की पारिस्थितिक संतुलन के लिए संसाधनों के परिप्रेक्ष्य में प्रबन्धकीय स्तर पर जनसंख्या वृद्धि को रोकना होगा।

अधिवास प्रतिरूप

अधिवास का अर्थ मानव का गांवों एवं उसके घरों में बसाव होता है। अधिवासों के प्रकार, वितरण एवं उसके प्रतिरूप सदैव भौतिक सांस्कृतिक तत्वों से निर्धारित होते हैं। जल की उपलब्धता, उर्वरक भूमि, अच्छी स्थिति, बेहतर यातायात जाल, खनन सुविधा और औद्योगिक कारखाने आदि ऐसे तत्व हैं जो किसी प्रदेश में अधिवास के स्थानिक वितरण प्रतिरूप को विशेष रूप से प्रभावित करते हैं। सिंह[11] के अनुसार अधिवास ऐसे मुख्य मानवीय तत्व हैं जो भौतिक एवं सांस्कृतिक तत्वों से घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित हैं।

सामान्यतया किसी प्रदेश के घरों का आकार प्रतिरूप सांस्कृतिक पर्यावरण एवं स्थानिक जलवायु की दशाओं के साथ घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित होता है। अध्ययन क्षेत्र में नदियों के बसाव प्रतिरूप को उर्वर भूमि के साथ-साथ पेय जल, नदी परिवहन की सुविधा दी है जिससे यमुना नदी के किनारे पर पाली, प्रतापपुर, सेमरी, नौडिहा, मझियारी 'शोध अध्येता का पूर्व गृह ग्राम' मानपुर, कचरा, नगरवार आदि गांव रेखीय प्रतिरूप के उदाहरण हैं। इसी प्रकार गंगा नदी के किनारे पर रायपुरा (निदेशक का गृह ग्राम) तदरिया, मैढरा, मुकुंदपुर आदि गांव हैं। टौंस नदी के किनारे पर संहृत एवं विशाल गांवों में पनासा, चौकी बगहा, भड़रा, कठौली आदि ग्राम हैं। बेलन नहर एवं नदी के किनारे पर पचेरा, बरहोली, कला पाण्डेपुर, बलासिया आदि ग्राम हैं।

अध्ययन क्षेत्र में गांवों का आकार बड़ा है लेकिन उनके घनत्व में न्यूनता पायी जाती है। गांवों का औसत आकार 1.05 से 3.04 वर्ग कि.मी. के मध्य पाया जाता है। जैसा कि मानचित्र संख्या 2.10 बी से स्पष्ट है कि क्षेत्र उत्तरी पूर्वी भाग - चाका, करछना, उरूवा ब्लाक के गांवों का आकार लघु क्षेत्रीय है जबकि दक्षिणी पश्चिमी भाग, मेजा और कोरांव के गांवों का आकार बृहद क्षेत्रीय है। सम्पूर्ण क्षेत्र में सर्वाधिक 36 प्रतिशत गांव 0 से 1 कि.मी. के मध्य आकार वाले हैं जबकि न्यूनतम 0.1 प्रतिशत गांव ही 32 वर्ग कि.मी. से अधिक क्षेत्रफल वाले हैं। तालिका 2.8

जनसंख्या के आधार पर तालिका 2. IX A, B से स्पष्ट है कि औसत आकार 486 से 1209 व्यक्ति/गांव है। वृहद आकार वाले गांव कौंधियारा, करछना और उरूवा ब्लाक में जबकि न्यूनतम आकार के गांव शंकरगढ़ विकास खण्ड में पाये जाते हैं। करछना और उरूवा के गांव क्षेत्रफल में कम एवं घनत्व में अधिक हैं। 37.9 प्रतिशत गांव 500 से कम जनसंख्या वाले हैं तथा क्षेत्र के 1

N
TRANS-YAMUNA REGION
ALLAHABAD DISTRICT
RURAL SETTLEMENT TYPES
YAMUNA RIVER
GANGA RIVER
10 0 10 20
km
COMPACT
SEMI COMPACT
HAMLETED
URBAN AREA
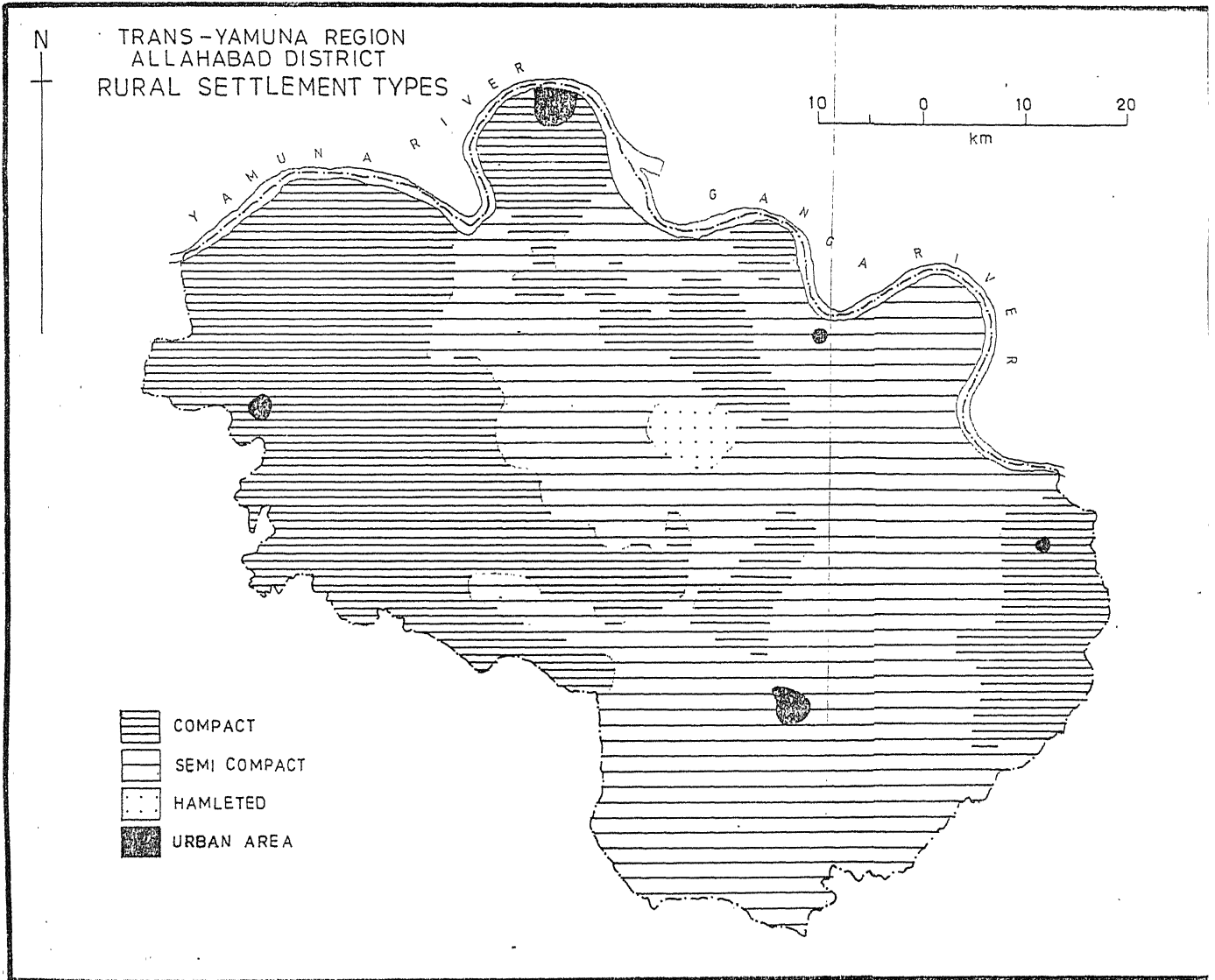
Fig. 2.12

प्रतिशत गांव ही 5000 से अधिक जनसंख्या वाले हैं। सर्वाधिक 34 प्रतिशत जनसंख्या 1000 से 1999 जनसंख्या वर्ग वाले गांवों 21.5 प्रतिशत में निवास करती है जबकि सबसे कम 7.4 प्रतिशत जनसंख्या 5000 से उपर जनसंख्या वर्ग वाले गांवों 1.0 प्रतिशत में निवास करती है।

अधिवास घनत्व की तालिका 2. को देखने स्पष्ट होता है कि चाका विकास खण्ड में गांवों का घनत्व गांव / 100 वर्ग कि.मी. सर्वाधिक 95 प्रतिशत है जबकि करछना एवं उरूवा क्षेत्र के गांव का घनत्व 50 - 80 गांव/ 100 वर्ग कि.मी. मध्यम है तथा शंकरगढ़ एवं जसरा के गांवों का घनत्व 50 से कम है।

अधिवासों का प्रकार :-

यमुना पार क्षेत्र को मुख्यतया निम्न तीन प्रकार के अधिवासों में बांटा जा सकता है :

1. सघन अधिवास
2. अर्द्ध-सघन अधिवास
3. बिखरे अधिवास

सघन अधिवास

अध्ययन क्षेत्र में इस तरह का अधिवास मुख्यतया गंगा यमुना के तटवर्ती क्षेत्रों, काली मिट्टी के क्षेत्रों एवं अन्य नदियों के खादरों में पाया जाता है। इसके अन्तर्गत शंकरगढ़, जसरा एवं चाका ब्लाक के यमुना तटवर्ती इलाके एवं चाका, करछना एवं मेजा का सुजनी समोधा क्षेत्र गंगा तटवर्ती इलाके सम्मिलित हैं। बीच बीच में काली मिट्टी एवं जल की उपलब्धता पर भी सघन अधिवास हैं।

अर्द्ध-सघन अधिवास

इस तरह के अधिवास में जसरा ब्लाक का कुछ भाग, कौंधियारा एवं करछना का आधा भाग, सम्पूर्ण उरूवा एवं मांडा ब्लाक का उत्तरी भाग सम्मिलित हैं। नदियों की नवीन जलोढ़, समतलीय काली मिट्टी के कारण इस तरह के अधिवास पाये जाते हैं। मुख्य गांव के केन्द्र में जनसंख्या वृद्धि के कारण मुख्य बस्ती से पृथक छोटे-छोटे पूर्वों के विकास से यह बस्ती प्रकार उत्पन्न हुआ है। नवीन अधिवासों का कारण परिवहन के साधनों की उपलब्धता होता जा रहा है।

Table No. 2.10
Density of settlement in Trans Yamuna region of Allahabad district-1991

S. No.	Blocks	Area in Sq. Kms.	Total Villages	Density (settlement / in 100 Sq. Kms.)
1	Chaka	138	131	94.92
2	Karchhana	243	131	53.90
3	Kaudhiara`	176	83	47.15
4	Jasra	253	114	45.05
5	Shanker Garh	475	211	44.42
6	Koraon	634	210	33.12
7	Monda	414	183	44.20
8	Meja	484	159	32.85
9	Uruva	182	120	65.93
	Region	3044	1342	44.08

Source : Allahabad Janpad, Sankhyikiya Patrika 1995

छितरे गांव

यमुना पार क्षेत्र में इस तरह के गांव काफी कम पाये जाते हैं - बाढ़ के इलाके में तथा अनुपजाउ भूमि के कारण इस तरह का अधिवास पाया जाता है। यह मुख्यतया करछना विकास खण्ड में कुचहा न्याय पंचायत में देखा जा सकता है जो बड़े कणों की अनुर्वर मिट्टी एवं जल की उपलब्धता का परिणाम हैं।

Reference

1. 1.Joshi, E.B.Ed.(1986): Uttar Pradesh District Gazetteers Allahabad (Allahabad) P.2.
2. Ibid. P.3.
3. Regional Soil Testing Labaratory, Agricultural Department U.P. (Unpublished Report).
4. Dubey, R.N. And Negi, B.S. 1968 Economic Geography of India,page 67.
5. Planning Report of Western Mirzapur Forest Department (1981-82 To 1991-92)
6. Ibid-
7. Singh R.L., O p CiT, P.9.
8. Kayastha S.C. 1964 The Himalayan Beas Basin A Study in Habitate Economy and Society B.H.U. Press, Varanasi, P.193.
9. Ahmad, E. 1976 : Some Aspect of Indian Geography, Central Book Depot, Allahabad. P.229.

10. Kayastha, S.C. 1968: Kangra Valley ,India Regional Studies, R.L. Singh (ed) 21st International Geographical Congress, Culcutta ,India. P.145.

11. Singh, Kashinath And Singh Kailashnath : 1971 Vindyachal Baghelkhand Region in R.L. Singh (ed) India: A Regional Geography,P.635.

अध्याय . 3

स्थानिक नियोजन हेतु आधरित इकाईयों (सेवा केन्द्रों) की पहचान

परिचय :. मौलिक रूप से भूगोल, धरातल के विविध रूपों की व्याख्या एवं स्पष्टीकरण से सम्बन्धित है। अतः भूगोलवेत्ता का मुख्य उद्देश्य विविध प्रकार के प्रदेशों को निर्धारित करना तथा धरातल की प्रादेशिक विभिन्नताओं का विवरण प्रस्तुत करना है। इस प्रकार भौगोलिक अध्ययन में 'प्रदेश ' के वर्णन में दो विधियां प्रयोग की जाती हैं.

1.विभिन्न तत्वों की वितरण समांगता तथा 2. स्थानीय अन्तर्क्रिया और प्रवाह।[1] पहले मापदण्ड का प्रयोग 'आकारजनक ' प्रदेशों की पहचान में, जबकि दूसरे का प्रयोग 'कार्यात्मक ' प्रदेशों की पहचान में होता है। पहले की कल्पना स्थिर है क्योंकि जिन समांगीय प्रतिरूपों द्वारा उनका निर्माण होता है वं बन्द स्वरूप के कारण न्यूनाधिक रूप से स्थायी होते हैं जबकि दूसरे का तात्पर्य एक गतिशील खुले प्रादेशिक तन्त्र से है जिसके अन्तर्गत मानव किया कलापों के स्थानिक संगठन की एकता पायी जाती है। धरातल पर कर्मोपलक्षी प्रदेशों में एक केन्द्र स्थल या गुच्छ की स्थिति होती है तथा अपने चारों ओर के ग्रामीण क्षेत्रों से परिवहन एवं संचार माध्यमों से सम्बन्धित होता है। इस प्रकार केन्द्रस्थल परिवहन जाल एवं समीपवर्ती ग्राम्य क्षेत्र, कर्मोपलक्षी प्रदेशों के प्रमुख घटक है। यघपि प्रदेशों की पहचान हेतु उपरोक्त दोनों विधियां एक दूसरे की विरोधी नहीं हैं बल्कि एक दूसरे की पूरक हें एवं भूगोलवेत्ता के लिए दोनों महत्वपूर्ण हैं।

संकल्पना :

सेवा केन्द्र और ग्रन्थिल प्रदेश की संकल्पना का मूलाधार 'किस्टालर ' द्वारा संस्थापित एवं 'लश ' द्वारा विस्तारित 'केन्द्र स्थल सिद्धान्त ' हैं। सेवा केन्द्र उन केन्द्रीय अधिवासों की तरह हैं जो नगर की आबाद जनसंख्या को सेवा प्रदान करने के साथ.साथ समीपवर्ती ग्रामीण क्षेत्रों की जनसंख्या की मांग एवं आवश्यकताओं की भी पूति करता है।

सेवा केन्द्र संयोग से नहीं उत्पन्न होते बल्कि ये अपने चारों ओर स्थित क्षेत्रों की आवश्यकता एवं मांग की पूति हेतु उत्पन्न होते हैं। जैफरसन[2] के अनुसार केन्द्र स्थल अपने आप उत्पन्न नहीं होते बल्कि ग्रामीण क्षेत्र उन्हें

उन कार्यों को करने हेतु उत्पन्न करते हैं, जो उनमें अवश्य होने चाहिए। इसके अलावा सेवा केन्द्र मात्र भौतिक रूप से ही केन्द्रीय नहीं होते बल्कि वे अपने कार्यों एवं सेवाओं के आधार पर समीपवर्ती जनसंख्या की मांग एवं आवश्यकताओं के भी केन्द्र होते हैं। इस प्रकार सेवा केन्द्रों की केन्द्रीयता मात्र भौतिक न होकर कर्मोपलक्षी है। यह सेवा केन्द्र समीपवर्ती ग्रामय क्षेत्रों हेतु रोजगार, व्यवसाय एवं व्यापार के अवसर भी प्रदान करते हैं। इस प्रकार सेवा केन्द्रों के चारों ओर उनका सेवा क्षेत्र या प्रभाव क्षेत्र स्थित होता है जिसका आकार उस केन्द्र की सेवा क्षमता पर आधारित होता है। इस प्रभाव क्षेत्र में सेवा केन्द्र द्वारा उत्पन्न मानव के विविध सामाजिक आर्थिक किया कलापों का विशाल स्थानिक संगठन एवं कर्मोपलक्षी एकता मिलती है।[3] सेवा क्षेत्र का आकार एवं विस्तार क्षेत्र विशेष की सामाजिक आर्थिक स्थिति एवं सेवा केन्द्र की कार्यात्मक स्थिति का आधारित होता है।[4]

केन्द्रापसारी एवं केन्द्राभिसारी शक्तियाँ सेवा केन्द्रों तथा उनके प्रभाव क्षेत्रों को एक विशिष्ट कर्मोपलक्षी इकाई के रूप में संगठित करती है। जिसके अन्तर्गत मानव किया कलापों का एक विशिष्ठ स्थानिक संगठन होता है।[5] इस सम्पूर्ण क्षेत्र में विविध वस्तुओं एवं सेवाओं की आपूर्ति स्थानिक उपयुक्तता एवं विपणन मूल्य के क्षेत्र में सेवा केन्द्र का एकाधिकार होता है[6]। बेरी[7] का यह कथन सत्य है कि सेवा क्षेत्रों का आकार जनसख्ंया धनत्व अथवा समीपवर्ती क्षेत्र की कय शक्ति के धनत्व के आधार पर परिवर्तित होता है। इस प्रकार सेवा केन्द्रों एवं उनके प्रभाव क्षेत्रों के अन्तरसम्बन्ध के माध्यम से सांस्कृतिक भूदृश्य की विविध पहलुओं का ज्ञान होता है। जो भूगोलवेत्ता के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इस स्थानिक अन्तरसम्बन्ध का उपयोग प्रदेश विशेष के सामाजिक आर्थिक विकास हेतु नियोजन तैयार करने में हो सकता है।

पुनर्रावलोकन :

केन्द्रीय स्थल और सेवा क्षेत्र की संकल्पना सर्वप्रथम 1826 में वानथ्यूनेन[8] द्वारा उद्भूत 'डर आइसोलीर्टेस्टैन्ट ' (पृथक प्रदेश सिद्धान्त) पर आधारित है। जब इन्होंने बाजार केन्द्र के चारों ओर वलयाकार भूमि उपयोग प्रतिरूप के आधार पर 'भौगोलिक लागत सिद्धान्त ' प्रतिपादित किया। बाद में ग्राडमैन[9] ने भी 1916 में दावा किया कि नगर की मुख्य भूमिका समीपवर्ती ग्राम्य क्षेत्रों का केन्द्र होने में तथा स्थानीय वाणिज्य को वाह्य विश्व से जोड़ने में होती है। गालपिन[10] और कोल्ब[11] ने भी ग्राम्य और शहर क्षेत्र के सेवा संबंधों के बारे में भी मिलते जुलते विचार व्यक्त किये।

सर्वप्रथम 1933 में क्रिस्टालर[12] ने दक्षिणी जर्मनी के केन्द्रीय स्थलों के अध्ययन में केन्द्रीय स्थल और सहायक क्षेत्रों के सेवा सम्बन्धों की व्याख्या और

स्पष्टीकरण के लिए व्यापक प्रयास किया। लश[13] ने 1954 में किस्टालर के कार्य ओर निष्कर्ष का प्रचलित किया। इन लोगों ने 1954 में सेवा केन्द्रों एवं उनके समीपवर्ती क्षेत्रों के मध्य प्रभावी कार्यात्मक अन्तरकिया हेतु न्यून स्तर से लेकर उच्च स्तर तक सेवा केन्द्रों एवं उनके प्रभाव क्षेत्रों की स्थानिक पदानुकम को प्रस्तुत किया। आर० ई० डिकिन्सन[14] तथा स्मेल्स[15] ने भी पूर्वी एग्लिमा तथा इंगलैंड और वेल्स में नगर तथा ग्राम्य क्षेत्रों के अन्तर्सबंधों की व्याख्या हेतु केन्द्र स्थलों पर उपलब्ध कार्यात्मक अवसरों को ही आधार बनाया। कैरोल[16] ने पूर्व अफ्रीका और स्वीटजरलैंड में सेवा केन्द्रों के सात श्रेणियों के निर्धारण हेतु सेवाओं एवं संस्थानों की संख्या को ही आधार बनाया। बुश और ब्रेंसी[17] ने माना कि पश्चिम विकान्सिन ओर दक्षिणी इंगलैंड में ग्राम्य सेवा केन्द्रों के निर्धारण हेतू केन्द्रों के कार्यात्मक विशेषताओं को ही आधार बनाया। कारटर[18] ने वेल्स में केन्द्र स्थलों के त्रिस्तरीय निर्धारण हेतु इसी प्रकार के चरों को आधार बनाया। एफ पेरोकस[19] ने 1955 में आर्थिक तंत्रों के मूल्यांकन हेतु अपना 'विकास ध्रुव सिद्धान्त ' प्रतिपादित किया तथा भावात्मक आर्थिक धरातल पर स्थित नगरों को विकास ध्रुव की संज्ञा दी। टी हसमान सेन[20] ने नगरीय केन्द्रों को केन्द्र स्थल ही माना और कहा कि नगर विविध आर्थिक सामाजिक, सांस्कृतिक एवं संस्थात्मक परिवर्तनों हेतु केन्द्र का कार्य करते हैं। कोल्ब[21] ने विस्कांसिन में विविध सेवा केन्द्रों के निर्धारण हेतु कुछ विशिष्ट संस्थाओं जैसे हाईस्कूल, सार्वजनिक पुस्तकालय, किराना की दूकान, चर्च, अस्पताल आदि को आधार बनाया। जानसन[22] ने इंगलैंड में केन्द्रीय स्थलों की पहचान के लिए कार्यात्मक अधिशेष को ही एक मानक आधार माना। अन्य विभिन्न विद्वान जिन्होंने केन्द्रीय स्थल के विभिन्न पहलुओं, सहायक क्षेत्रों के कार्य किये, उनमें स्टफर्ड[23], बेरी[24], बेरी और गैरीसन[25], गाडलुंड[26], ग्रीन[27], करुदर[28], लूमिस बीगिल[29] आदि मुख्य हैं।

भारत में केन्द्रीय स्थल अध्ययन की परम्परा काफी पुरानी है किन्तु नये अध्ययन साधारणतया केवल नियतकालिक बाजारों के प्रभावी वितरण, बाजार केन्द्रों और मेलों पर छोओ शोध पत्रों के रूप में तैयार हुए। केन्द्र स्थलों के अध्ययन में मुख्य योगदान किसमान[30], नाटेसन[31], देशपाण्डे[32], पटनायक[33], पटेल[34], टामसर[35] और खेर[36] आदि भातीय विद्वानों द्वारा किया गया। बाद में केन्द्रीय स्थल के विविध पहलुओं पर कुछ व्यौरेवार विवरण और संशोधित अनुसंधान.प्रकाशराव[37], मण्डल[38], बराई[39], गुहा[40], तीरथ और लाल[41], मुखर्जी[42], बनमाली[43], के०एन० सिंह[44] आदि द्वारा हुआ। द्विवेदी[45], सिंह[46], कायस्थ[47], सिंह[48] और मिश्रा[49] आदि प्रमुख भारतीय भूगोलवेत्ताओं द्वारा भी कस्बों.नगरों के कुछ केन्द्र स्थलीय अध्ययन किये गये।

फिर भी भारत में केन्द्रीय स्थल पर ज्यादातर समेकित और विस्तारित कार्य भारत में 1970 के बाद हुआ। प्रमुख लेख सेन[50], मिश्रा[51], राय और पाटिल[52], भट्ट[53] ने दिया। इन लोगों ने देश के विभिन्न भागों में विकास संबंधी व्यावहारिक समस्याओं पर महत्वपूर्ण योगदान किया। इन्होंने अपने शोध क्षेत्रों में स्थानिक नियोजन हेतु केन्द्र स्थल नीति को ही अपनाया। तथापि यह परम्परा विभिन्न लब्ध प्रतिष्ठित विद्वानों ने जारी रखते हुए आगे बढ़ाया, इनमें डी0 बांगर[54], जी0 सिंह[55], कुमार और शर्मा[56], बी0एन0शर्मा[57], बी0एन0मिश्रा[58], गुप्ता और फौजदार[59] आदि प्रमुख हैं।

कुमार और शर्मा (राज्य नियोजन संस्थान लखनऊ उ0प्र0) ने अपने अलग पेपर में सुझाव दिया कि केन्द्रीय स्थलों एवं नियोजन प्रदेशों की पहचान के लिए सेवा सम्भावनाओं की उपलब्धता मुख्य मानक है। प्रो0 आर0पी0मिश्रा का कार्य सर्वप्रमुख है इन्होंने 1970 में केन्द्रीय स्थल के पंचपदीय अनुकम विकास धुव, विकास केन्द्र, विकास विन्दु सेवा केन्द्र और केन्द्रीय ग्राम को अपने विकास केन्द्र सिद्धान्त में प्रस्तुत किया।

नियोजन इकाइयों की पहचान

धरातल पर मानव किया कलापों के स्थानिक संगठन का प्रतिरूप सेवा केन्द्रों एवं उनके प्रभाव क्षेत्रों के आपसी कार्यात्मक अन्तर्किया द्वारा निर्धारित होता है। सेवा केन्द्रों का वितरण जितना ही समान होता है उनके तथा उनके प्रभाव क्षेत्रों के मध्य उतना ही घनिष्ठ कार्यात्मक सम्बन्ध होता हैं तथा मानव किया कलापों का संगठन भी उतना ही दृढ़ होता है। अतः किसी क्षेत्र में मानव किया कलापों के कुशल स्थानिक संगठन हेतु तथा उसके सन्तुलित सामाजिक आर्थिक विकास हेतु सेवा केन्द्रों की स्थानिक संरचना का पुनर्संगठन आवश्यक होता है। नियोजित एवं नीतिगत विधि से सेवा केन्द्र तंत्र का निर्धारण इस दिशा में अधिक उपयोगी होता है। इसीलिए किसी क्षेत्र के विकास हेतु सेवा केन्द्रों एवं उनके प्रभाव क्षेत्रों का निर्धारण आवश्यक होता है। इसका उपयोग स्थानिक विकास नियोजन में अनिवार्य हो जाता है। यद्यपि नियोजन इकाइयों के निर्धारण में व्यावहारिक स्तर पर अनेक समस्याएं आती हैं लेकिन उनका समाधान असम्भव नहीं है।

अतः यमुना पार क्षेत्र की सामाजिक आर्थिक विकास हेतु नियोजन इकाइयों (सेवा केन्द्रों) के निर्धारण में निम्नलिखित तीन तथ्यों पर विचार किया गया है:

1. किसी सेवा केन्द्र पर स्थित केन्द्रीय कार्यों एवं सेवाओं का प्रकार एवं संख्या।
2. सेवा केन्द्रों हेतु उपभोक्ता व्यवहार एवं स्थानिक वरीयता स्तर।
3. सेवा केन्द्रों की सम्बद्धता सूचकांक।

केन्द्रीय कार्य और सेवाएं :..

केन्द्रीय कार्य वास्तव में प्राथमिक कार्य है जो चारों ओर क्षेत्र की मांगों एवं आवश्यकताओं की पूर्ति करता है एवं सार्वभौमिक नहीं होता। अनेकों विद्वानों ने केन्द्रीय कार्य एवं सेवाओं की पहचान के बारे में अपने मत व्यक्त किये हैं। भट्ट[60] के अनुसार जो कार्य एवं सेवाएं अपने विकास हेतु सरकारी तंत्र पर आधारित होती हैं उन्हें भी केन्द्रीय कार्य एवं सेवाएं माना जाना चाहिए। राव[61] ने सुझाव दिया कि केन्द्रीय कार्यों एवं सेवाओं की पहचान मात्र उनकी दुर्लभता या सुलभता पर नहीं होनी चाहिए बल्कि उत्पादकों एवं उपभोक्ताओं की वरीयता के आधार पर होनी चाहिए। यद्यपि सभी क्षेत्रों हेतु केन्द्रीय कार्य एवं सेवाओं की कोई विशिष्ठ संख्या एवं प्रकार नहीं है क्योंकि यह क्षेत्र विशेष के सामाजिक आर्थिक विकास स्तर के आधार पर बदलता रहता है एक क्षेत्र एवं एक समय में माने जाने वाला केन्द्रीय कार्य एवं सेवा दूसरे क्षेत्र या दूसरे समय में अपना केन्द्रीय स्तर खो सकते हैं।

इलाहाबाद जिले के यमुना पार क्षेत्र में केन्द्रीय कार्यों एवं सेवाओं की पहचान के लिए कुल 1202 आबाद अधिवासों पर विचार किया गया। सर्वप्रथम इलाहाबाद जिले की 'ग्राम. शहर निर्देशिका ' और 'जनसंख्या जनगणना पुस्तिका ' से प्रत्येक अधिवास में उपलब्ध केन्द्रीय कार्यों की संख्याओं और प्रकारों को अंकित किया गया। अन्य कार्यों एवं सेवाओं को अन्य स्रोतों से, जो ज्यादातर नीतिपरक कार्य थे, प्राप्त किया। इसके पश्चात नीतिपरक कार्यों का सत्यापन तथा अन्य कार्यों एवं सेवाओं जिनका उल्लेख द्वितीयक स्रोतों में नहीं था, का निर्धारण क्षेत्रीय सर्वेक्षण एवं साक्षात्कार तथा प्रश्नावलियों के माध्यम से किया गया।

क्षेत्र सर्वेक्षणों एवं प्रेक्षणों के दौरान यह देखा गया कि जो कार्य कार्यात्मक पदानुक्रम के न्यून स्तर पर थे वे अति सुलभ एवं सार्वभौमिक थे। अतः शोध क्षेत्र में उन्हें केन्द्रीय कार्य का दर्जा नहीं दिया गया। क्योंकि कार्यों का सापेक्ष महत्व उनकी स्थिति आवृत्ति के विरोधी अनुपात में होती है। यह पूर्णरूपेण प्रासंगिक है। अतः शोध क्षेत्र में सेवा केन्द्रों की पहचान हेतु न्यून स्तरीय एवं सार्वभौमिक कार्यों को छोड़ दिया गया तथा अपेक्षाकृत अधिक महत्वपूर्ण कार्यों एवं सेवाओं को ही चुना गया। देशपाण्ड[62] ने भी इसका समर्थन करते हुए कहा है कि सेवा केन्द्रों के निर्धारण हेतु छोटे कार्यों को पृथक कर एवं अपेक्षाकृत अधिक महत्वपूर्ण कार्यों का चयन कर सेवा केन्द्रों के निर्धारण की समस्या का समाधान किया जा सकता है। इससे बिना शुद्धता भंग किए अधिक से अधिक महत्वपूर्ण कार्यों एवं सेवाओं पर विचार किया जा सकता है। इस तरह अत्यधिक सर्वसुलभ कार्यों जैसे पान और बीड़ी की दुकान, जूते एवं छाता मरम्मत, काली लोहार खाना, बढ़ईगीरी, आटा पिसाई, नाई की दुकान आदि को निकालकर इलाहाबाद जिले के यमुना पार क्षेत्र में

ALLAHABAD DISTRICT
DISTRIBUTION OF FIRST ORDER FUNCTIONS AND SERVICES
YAMUNA RIVER
GANGA RIVER
N
Chaka
Jasra
BARA
KARCHHANA
Sirsa
Shankargarh
Kaundhiara
Uruva
MEJA
Bharatganj
Manda
Koraon
INDEX
DEGREE COLLEGE
T TELEIPHON EXCHANGE
BUS JUNCTION RAILWAY STATION
P POST AND TELIGRAPH
GODOWNS
B BIG HOSPITALS
H BUS STATION
V AGRI. IMPLI DISTRI CENTER
Δ CINEMA HALL
AUTO REPAIR CENTER
HARD WAIR SHOP
Sp SUB POST OFFICE
WATER SUPPLY
W WHOLE SALE REGULATED MARKET
G GLASS WARE AND POTTERY
10 0 10
km
TRANS YAMUNA REGION
ALLAHABAD DISTRICT
DISTRIBUTION OF SECOND ORDER FUNCTIONS AND SERVICES
YAMUNA RIVER
GANGA RIVER
Chaka
Jasra
BARA
KARCHHANA
Shankargarh
Kaundhiara
Uruva
MEJA
Manda
Koraon
INDEX
SEED AND FERTILIZER DIST CENTRE
G GENERAL PROVISION STORE
C CHEMIST AND DRUGGIST
W WEEKLY MARKETS
RETAIL DAILY MARKET
M DISTRICT BIG MONDI
X RADIO AND WATCH REPAIR CENTER
BLOCK HEADQUATERS
DISTRICT CO OPERATIVE BANK AND L.D.B.
H HOTEL AND RESTO RANT
R RETAIL CLOTH SHOP
BOOKS AND STATIONARY
TAHSIL HEADQUATER
T TECHNICHAL COLLEGE
ARTIFICIAL INCEMINATION CENTER
N NATIONALIZED BANK
10 0 10
km
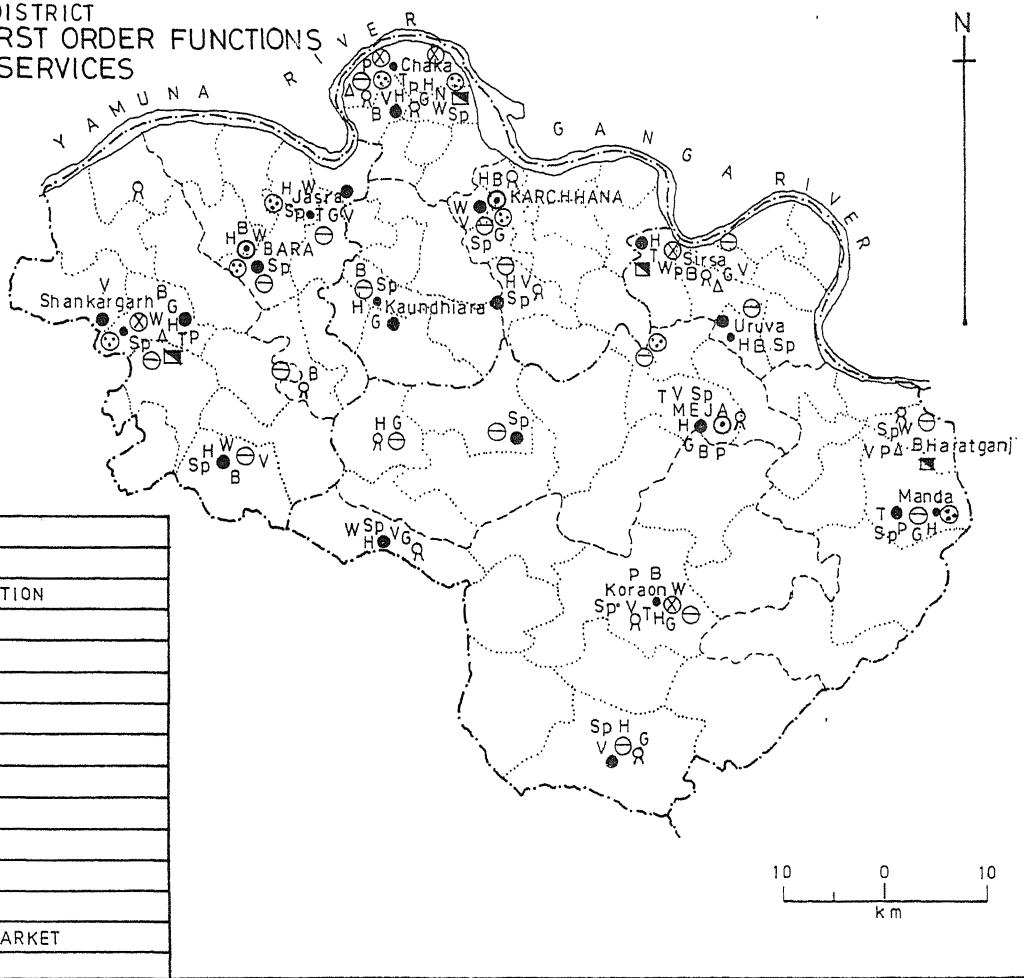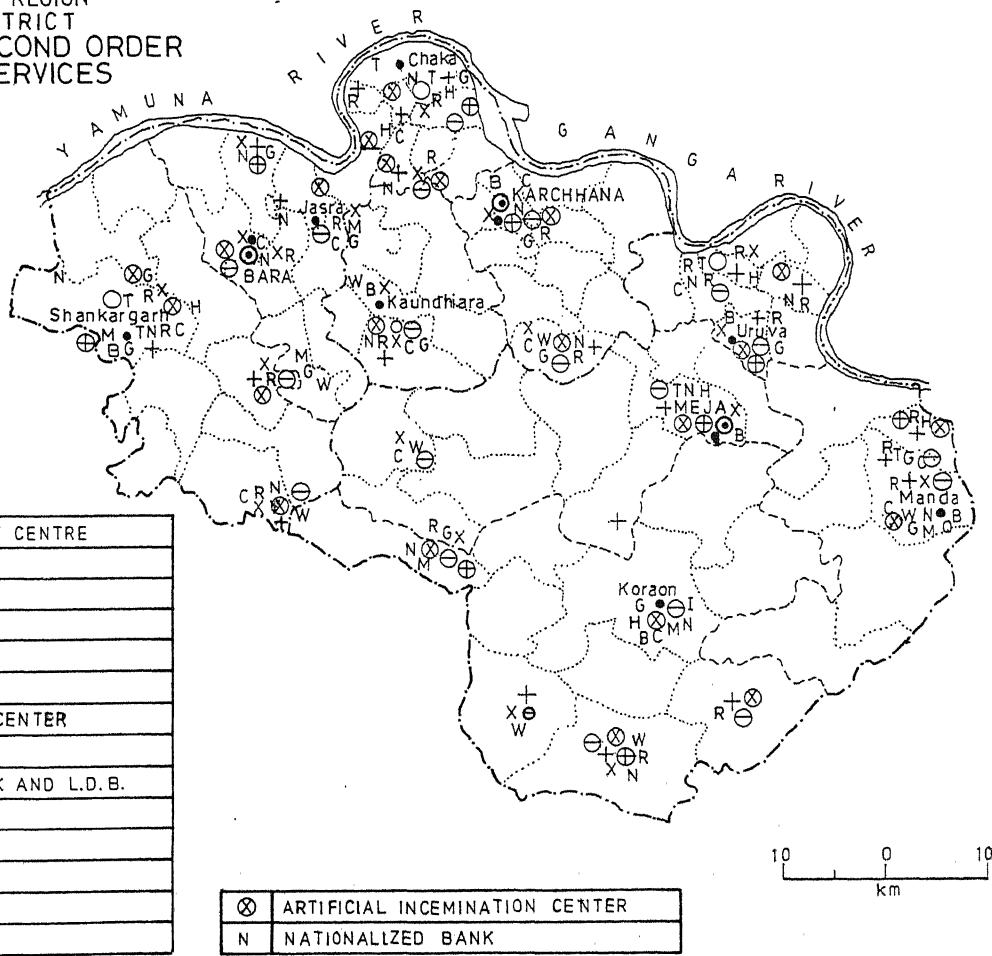
Fig. 3.1

कार्यों एवं सेवाओं की 45 मुख्य श्रेणियां मानी गई हैं। इसके अतिरिक्त क्षेत्र में उपभोक्ताओं के सामान्य व्यवहार एवं आर्थिक स्तर पर भी विचार किया गया है। राष्ट्रीय महत्व के अति दुर्लभ एवं उच्च स्तरीय कार्यों जैसे. भारी उद्योग एवं कारखानों को भी इसमें सम्मिलित नहीं किया गया। मांग माध्यन्यून स्तर पर ये 45 चयनित केन्द्रीय कार्य एवं सेवाएं क्षेत्रीय उपभोग सामान्य प्रतिरूप के अभिन्न अंग हैं तथा क्षेत्र से केन्द्राप्रसारी तथा केन्द्राभिसारी शक्तियों को भी उत्पन्न करते हैं। यह केन्द्रीय कार्यों एवं सेवाओं के निम्नलिखित रूप से सम्बद्ध तालिका 3.1 और मानचित्र 3.1 ए, बी,सी से भी स्पष्ट है

Table No.-3.1

Identified Central Function Along With Their Entry Points , Saturation Points And Median Thresh Holds .

Sl.No.	Centra Function &Services	Entry Points	Saturation Points	Median Thresh Holds
	I-Education			
1.	Middle School	581	1529	1055
2.	High School	518	1983	1350.5
3.	Inter Collage	733	1837	1285
4.	Degree Collage	11165	11165	11165
5.	Technical Institute	2162	2680	2421
	II-Health			
6.	P.H.C	574	1645	1109.5
7.	Small Hospital	659	1896	1277.5
8.	Family Planning Central And M.C.W.L	544	2176	1360
9.	Dispensary	461	2209	1335
10.	Big Hospital	10022	10022	10022
	III-Transport			
11.	Bus Stop	343	2258	1300.5
12.	Bus Station	8929	10662	9795.5
13.	Bus Junction/Railway Station	10662	10662	10662
	IV-Communication			
14.	Branch P.O	214	2407	1310
15.	Sub. P.O	3548	10662	7105
16.	Post and Telegraph	10662	10662	1066.2
17.	Telephone Exchange	10662	10662	10662
	V-Credit and Finance			
18.	Agri . and Co-op.Society	876	1454	1165
19.	Distt.Co-op.Bank and L.D.B	1645	3540	2592.5

20.	Nationalized Bank	753	3470	2111.5
21.	Rural Bank	533	1988	1270.5
	VI-Extention Services			
22.	Artificial Insemination	1202	3540	2371
23.	Vet.Hospital	553	2037	1295
24.	Seeds Fertilizer	2014	6127	4070.5
25.	Agri.Impliment Distribution	8929	10662	9795.5
	VII-Trade Facility			
26.	Weekly Market	623	6805	3714
27.	Retail Daily Market	2091	5153	3602
28.	Whole Sale Regulated Market	3540	8929	6234.5
29.	Big Mandi	3470	3518	3494
	VIII-Administrative Services			
30.	Police Station	523	2014	1268.5
31.	Block Head Quarter	1645	3540	2592.5
32.	Tahsil Head Quarter	2214	2794	2504
	IX-Retail Services			
33.	Retail Cloth	1645	3518	2581.5
34.	Book's Stationery	1645	3518	2581.5
35.	Hard Ware Shop	3540	10662	7101
36.	Gen. Provision Shop	1045	6999	4022
37.	Radio and Watch Repair	2023	3518	2770.5
38.	Auto Repair Shop	3540	10662	7101
39.	Chemist and Druggist	1045	6505	3775
40.	Hotel and Restorent	1645	3540	2592.5
41.	Glassware and Pottery	1413	10662	6037.5
	X-Recreation Services			
42.	Cinema Hall	7305	8929	8117
	XI-Other Services			
43.	Cold Storage	779	1951	1365
44.	Water Supply	2182	10662	6422
45.	Godowns	10022	10022	10022

कार्यात्मक पदानुक्रम

अधिवास की कम व्यवस्था में विविध सेवाओं और कार्यो का महत्व बराबर नहीं होता क्योंकि उनमें कुछ अत्यधिक विशिष्ट होती है जो बड़े अधिवासों में पाई जाती है और कुछ कम विशिष्ट होती हे जो छोटे अधिवासों में पाई जाती है। इसलिए एक प्रदेश में उनके सापेक्ष महत्व के आधार पर केन्द्रीय कार्यो एवं सेवाओं में एक कोटि कम होता है। अध्ययन क्षेत्र में केन्द्रीय कार्यो का पदानुक्रम निर्धारित करने के लिए विविध कार्यों के 'न्यूनतम जनसंख्या स्तर' पर विचार किया गया है। प्रत्येक केन्द्रीय कार्य या सेवा हेतु 'प्रवेश बिन्दुओं '(ENTRY POINT) (न्यूनतम जनसंख्या स्तर जिसपर कार्य विशेष क्षेत्र में पाया जाता है)। एवं संतृप्त बिन्दुओं (SATURATION POINT) (उच्च जनसंख्या स्तर जिसपर कोई कार्य या सेवा लगभग सभी अधिवासों में समान रूप से पाया जाता है) का परिकलन किया गया है। प्रवेश बिन्दु (ENTRY POINT) और संतृप्त बिन्दु (SATURATION POINT) के मध्य के अन्तराल को 'प्रवेश क्षेत्र ' माना गया है।[63] विविध कार्यो एवं सेवाओं को माध्यन्यूनतम जनसंख्या के आधार पर अनेक वर्गो में रखा गया। माध्यन्यूनतम जनसंख्या का परिकलन प्रवेश बिन्दु एवं संतृप्त बिन्दु की जनसंख्या को जोड़कर तथा उसे दो से विभाजित कर प्राप्त किया गया है। अर्थात माध्यन्यूनतम जनसंख्या, प्रवेश बिन्दु एवं संतृप्त बिन्दु के मध्य का बिन्दु होता है। माध्यन्यूनतम जनसंख्या को ऐसा स्तर माना जाता है जो किसी भी क्षेत्र में विविध कार्यो एवं सेवाओं के सतत पोषण हेतु पर्याप्त होता है। साथ ही यह जनसंख्या स्तर विविध कार्यो एवं सेवाओं हेतु न्यूनतम उपभोग एवं मांग स्तर की भी आपूर्ति करता है। विविध कार्यो एवं सेवाओं के कोटि कम निर्धारित करने हेतु भी माध्य जनसंख्या स्तर का ही प्रयोग किया गया है। प्रकीर्ण आरेख के माध्यम से इस तथ्य की सम्पुष्टि भी की गई। इस प्रकार जो अधिवास माध्यन्यूनतम जनसंख्या के आधार पर तीन या तीन से अधिक कार्यो एवं सेवाओं में पर्याप्त जनसंख्या स्तर प्राप्त करते हैं उन्हीं को सेवा केन्द्र माना गया तथा अन्य अधिवासों को छोड़ दिया गया।

उपभोक्ता व्यवहार और स्थानिक वरीयता

विविध केन्द्रीय कार्यो एवं सेवाओं के पदानुक्रम के सत्यापन तथा सेवा केन्द्रों के पहचान एवं निर्धारण हेतु विविध कार्यो एवं सेवाओं के लिए उपभोक्ता व्यवहार एवं स्थानिक वरीयता का भी निर्धारण किया।

A CORRELATION BETWEEN FUNCTIONAL UNITS AND POPULATION OF SERVICE CENTRES
No. of Central Functional Units
Population of Service Centres
I st ORDER
III ORDER
B CORRELATION BETWEEN CENTRAL FUNCTIONS AND MEDIAN THRESH HOLD
Median Thresh Hold Value in '000
Central Functions
I st ORDER
II nd ORDER
III ORDER
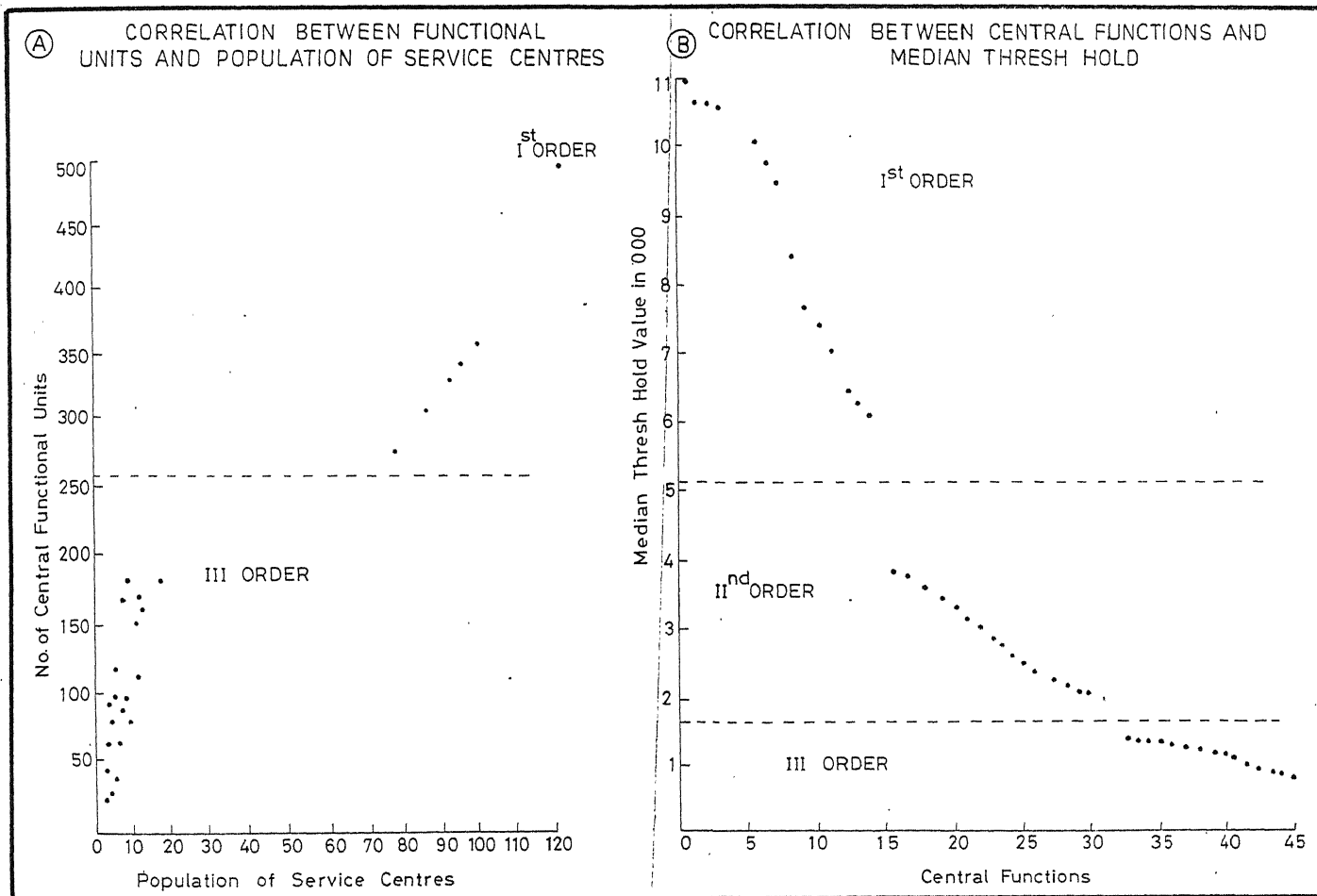
Fig.3.2

Table-3.2

Order of Central Functions With Median Thresh Holds And Weightage.

Sl. No.	Central Function	Median Thresh Holds	Weightage
	Ist Order		
1.	Degree Collage	11165	10.58
2.	Telephone Exchange	10662	10.10
3.	Bus Junction / Railway Station	10662	10.10
4.	Post and Telegraph	10662	10.10
5.	Godowns	10022	9.49
6.	Big Hospital	10022	9.49
7.	Bus Station	9795.5	9.28
8.	Agri. –Implement Distribution Centre	9795.5	9.28
9.	Cinema Hall	8117	7.69
10.	Auto Repair Shop	7101	6.73
11.	Hardware Shop	7101	6.73
12.	Sub- Post Offfice	7101	6.73
13.	Water Supply	6422	6.08
14.	Whole Sale Regulated Market	6234.5	5.90
15.	Glassware and Pottery	6037.5	5.72
	II- Order		
16.	Seed and Fertilizer Distribution Centre	4070.5	3.85
17.	Genral Provision Store	4022	3.81
18.	Chemist and Druggist	3775	3.57
19.	Weekly Market	3714	3.52
20.	Retail Daily Market	3602	3.43
21.	District Big Mondi	3494	3.31
22.	Radio and Watch Repair Centre	2770.5	2.62
23.	Block Head Quarters	2592.5	2.45
24.	District Co-op. Bank and L.D.B	2592.5	2.45
25.	Hotel and Restaurant	2592.5	2.45
26.	Retail Cloth Shop	2581.5	2.44
27.	Books and Stationary	2581.5	2.44
28.	Tahsil Head Quarter	2504	2.37
29.	Technical Collage	2421	2.29
30.	Artificial Insemination Centre	2371	2.24
31.	Nationalized Bank	2111.5	2.00
	III-Order		
32.	Cold Storage	1365	1.29
33.	Family Planning Centre and M.C.WC	1360	1.28
34.	Dispensary	1335	1.26
35.	Branch Post Office	1310.5	1.24
36.	Bus Stop	1300.5	1.23
37.	Vet. Hospital	1295	91.22
38.	Inter Mediate Collage	1285	1.21

39.	Small Hospital	1277.5	1.401.21
40.	Rural Bank	1270.5	1.20
41.	Police Station	1268.5	1.19
42.	High School	1250.5	1.18
43.	Agri. Credit and Co-Op. Society	1165	1.10
44.	P.H.C	1109	1.05
45.	Middle School	1055	1.00

TRANS-YAMUNA REGION
SPATIAL PREFERENCE OF SERVICE CENTRES
YAMUNA RIVER
GANGA RIVER
N
NAINI
Iradatganj
Jasra
Karma
Karchhana
BARA
Sirsa
Ramnagar
Uchdeeh
Akoda
Baroav
Kaundhiara
Meja Road
Uruva
Shankargarh
Jari
Kohdar Ghat
MEJA
Chilbila
Bharatganj
Nari Bari
Khiri
Manda
Lediari
Koraon
Barokhar
First Order
Second Order
Third Order
10 0 10
km
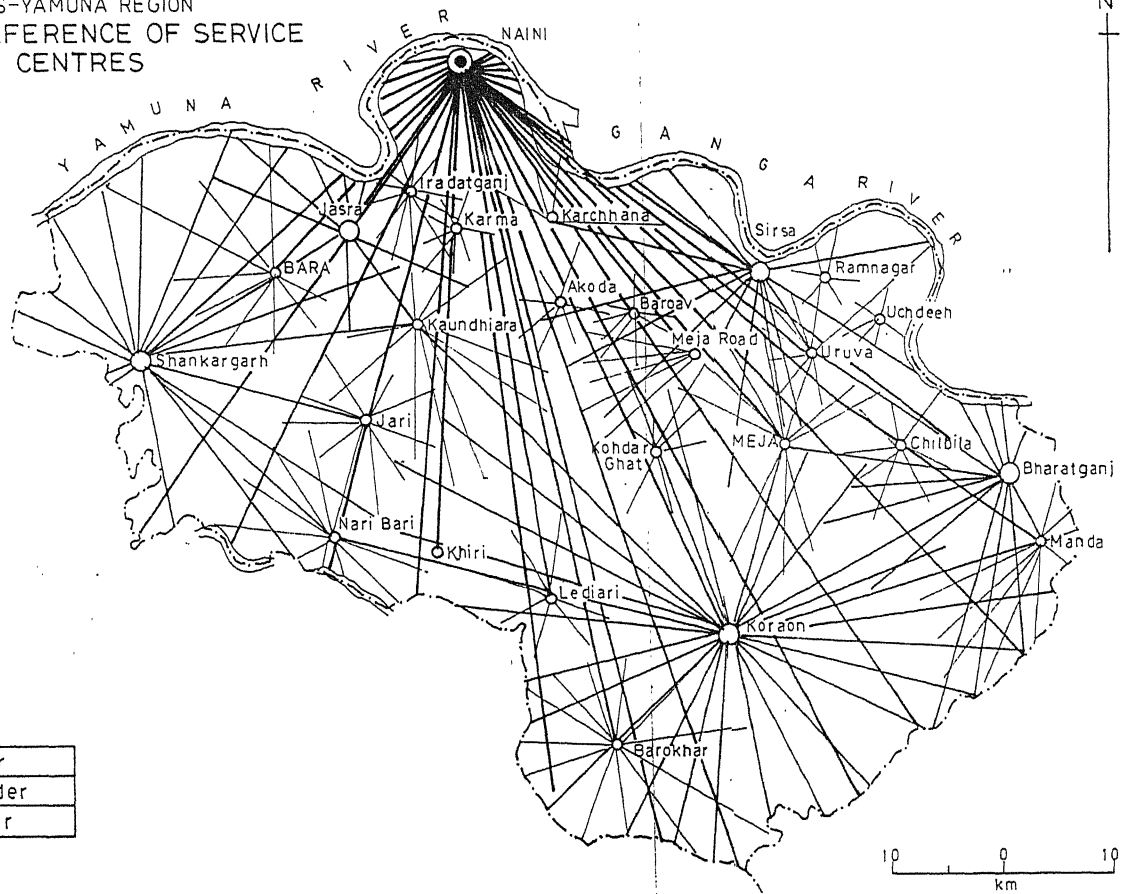
Fig.3.3

गया। उपभोक्ता व्यवहार पर विचार करने हेतु दो प्रमुख तत्वों को लिया गया.
1. धरातल पर उपभोक्ताओं का विविध अधिवासों से अन्तर्सम्बन्ध।
2. विविध समयों में उनके द्वारा विविध कार्यों एवं सेवाओं की मांग।

प्रथम तत्व के अन्तर्गत उपभोक्ताओं को आवास से अधिवास तक जाने हेतु दूरी, समय एवं मूल्य देना पड़ता है। जबकि दूसरे अन्तर के तत्व के अन्तर्गत अधिवास में उपलब्ध केन्द्रीय कार्यों एवं सेवाओं के प्रकार एवं स्तर द्वारा स्थानिक वरीयता का निर्धारण होता है। इन्हीं के आधार पर किसी क्षेत्र विशष में विविध कार्यों एवं सेवाओं हेतु उपभोक्ता व्यवहार एवं उनकी स्थानिक वरीयता निर्धारित होती है।[64]

क्रिस्टालर ने भी अपने केन्द्रीय स्थल सिद्धान्त में प्रतिपादित किया कि सभी अधिवासों पर सभी केन्द्रीय कार्य एवं सेवाएं उपलब्ध नहीं होते हैं। असार्वभौमिक एवं विशिष्ट कार्य बड़े केन्द्रों में ही पाये जाते हैं और इन केन्द्रों की संख्या कम होती है लेकिन यह बृहद क्षेत्र एवं जनसंख्या की सेवा करते हैं। जबकि सामान्य एवं न्यूनस्तर के कार्य छोटे अधिवासों में पाये जाते हैं जिनकी संख्या अधिक होती है तथा जो अपेक्षाकृत छोटे क्षेत्र एवं जनसंख्या की सेवा करते हैं। मध्यम प्रकार की कार्य एवं सेवाएं मध्यम आकार के केन्द्रों पर ही पाये जाते हैं। विविध कार्यों एवं सेवाओं की उपलब्धता में पाये जाने वाले इस अवस्थिति सम्बन्धी अन्तर के कारण उपभोक्ताओं के व्यवहार एवं विशिष्ट केन्द्रों हेतु उनके चयन एवं वरीयता में भी अन्तर आ जाता है। सामान्यतया उपभोक्ता न्यूनस्तरीय कार्य एवं सेवाओं हेतु न्यूनस्तरीय सेवा केन्द्रों पर तथा विशिष्ट एवं उच्चस्तरीय कार्य एवं सेवाओं हेतु बड़े केन्द्रों पर जाया करते हैं।[65] इस प्रकार केन्द्रीय कार्य एवं सेवाओं के विविध स्तर के कारण सेवा केन्द्रों के भी विविध स्तर हो जाते हैं।

इलाहाबाद जिले के यमुनापार क्षेत्र में विभिन्न कार्यों एवं सेवाओं के लिए लोगों की स्थानिक वरीयता और उपभोक्ताओं के व्यवहार की व्याख्या अन्तर्सम्बन्धों के आधार पर की गई है। इस मानचित्र (3.3) में विविध कार्यात्मक पदानुक्रमीय स्तरों पर विविध सेवा केन्द्रों पर आश्रित अधिवासों को सीधी रेखाओं द्वारा संयोजित किया गया है। अन्तर्सम्बन्ध मानचित्र हेतु आंकड़ों का संकलन क्षेत्र में जाकर प्रश्नावलियों के माध्यम से प्राप्त किया गया है। ग्राम्य क्षेत्रों से सीधे सेवा केन्द्रों पर आने वाले उपभोक्ताओं की दूरी को उपभोक्ताओं से साक्षात्कार कर ही निर्धारित किया गया है। यदि किसी गांव के 50 प्रतिशत उपभोक्ता किसी निश्चित कार्यात्मक स्तर पर किसी केन्द्र विशष पर जाते हैं तो उस गांव को उस सेवा केन्द्र से सीधे जोड़ दिया गया है।(मानचित्र 3.3)

फोटो प्लेट न0 3-बरांव बाजार, करछना इलाहाबाद
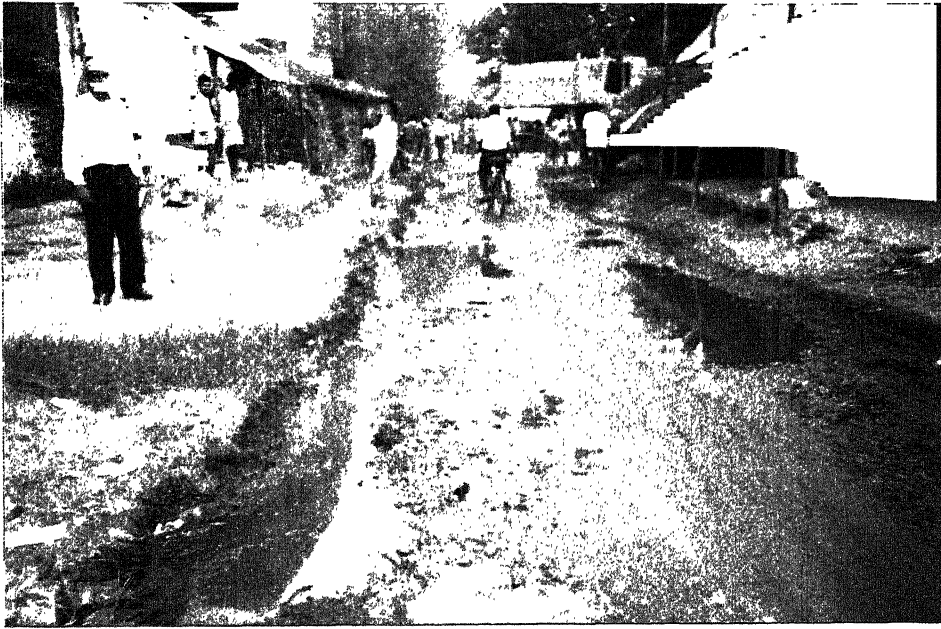
फोटो प्लेट न0 4 सड़क जलभराव उरुवा ब्लॉक इलाहाबाद

इस प्रकार विविध कार्यात्मक स्तरों पर विविध सेवा केन्द्रों से आश्रित गांवों को जोड़कर उपभोक्ता व्यवहार मानचित्र तैयार किया गया है। यह मानचित्र धरातल पर विविध कार्य स्तरों हेतु स्थानिक प्रतिरूप प्रस्तुत करता है। साथ ही विविध कार्यात्मक स्तरों हेतु विविध केन्द्र एवं श्रेणियां हो गई हैं।

प्रथम कोटि के कार्य एवं सेवाओं के लिए क्षेत्र के लोग ज्यादातर नगरपालिका वाली बाजारों में सबसे बड़ी 'नैनी ' जो एक औद्योगिक स्टेट भी है, का प्रयोग करते हैं। यहाँ से थोक एवं फुटकर दोनों प्रकार की खरीददारी उच्च स्तर पर करते हैं। थोक वस्तुओं की इस क्षेत्र में कमी होने पर नैनी से लगे हुए 'इलाहाबाद 'शहर से भी लोगों को सामान मिल जाता है जो कि सेवा क्षेत्र के प्रथम कोटि के नगर 'नैनी ' से सीमावर्ती नदी 'यमुना ' को पार करते ही पड़ता है। कभी.कभी अध्ययन क्षेत्र के सीमावर्ती लोग पड़ोसी शहरों जैसे मिर्जापुर, बांदा एवं रीवां से भी खरीद फरोख्त करते हैं जो कि औसतन काफी कम मात्रा में होता है।

द्वितीय कोटि की सेवाओं और कार्यों के लिए लोगों द्वारा स्थानीय बड़ी बाजारों का जो कि ज्यादातर म्यूनिसिपैलिटी एरिया भी है जैसे. शंकरगढ़, भारतगंज, कोरांव, सिरसा एव जसरा का प्रयोग करते हैं।
इन स्थानीय वरीयता वाले केन्द्र नियमित स्थायी बाजार हैं जो लोगों की मांग एवं आवश्यकताओं की पूर्ति करती हैं। इस कोटि के कस्बों की वरीयता लोगों एवं उपभोक्ताओं द्वारा गमनागमन की सुविधा एवं दूरी के अनुसार की जाती है।

तृतीय कोटि के कार्य एवं सेवाओं की पूर्ति लोगों द्वारा स्थानीय बाजारों जैसे इरादतगंज, बारा, कर्मा, कौंधियारा, करछना, अकोढ़ा, बरांव,(फोटो प्लेट न03) कोहडारघाट, खीरी, लेड़ियारी, बड़ोखर, मांडा, मेजा, मेजा रोड, उरुवा, रामनगर, उंचडीह, चिलबिला, नारीबारी, जारी आदि बाजारों द्वारा की जाती है। जैसा कि मानचित्र 3.3 से भी स्पष्ट है। तृतीय कोटि के सेवा केन्द्र स्थानीय उत्पाद और आपूर्ति द्वारा सेवा करते हैं। इन सेवा केन्द्रों को कोटिक्रम के अनुसार तथा स्थानीय वरीयता के द्वारा बसाव प्रतिरूप को उपभोक्ता व्यवहार मानचित्र में भी स्पष्ट रूप से दर्शाया गया है। उरुवां ब्लाक में सडक जल भराव की अति विकट समस्या है, जो लोगों के आवागमन में बाधा पहुचाती है। (फोटो प्लेट न04)

Table – 3.3

Connectivity Index

Sl. No.	Service Centre	No. Of Connection	Connectivity Scores
1.	Naini	13	45
2.	Shankergarh	10	34
3.	Koraon	8	32
4.	Bharatganj	7	29
5.	Sirsa	7	27
6.	Manda	7	27
7.	Jasra	8	28
8.	Meja	6	26
9.	Bara	6	21
10.	Karcchana	6	22
11.	Naribari	6	14
12.	Meja Road	6	19
13.	Iradatganj (Ghoorpur)	6	18
14.	Urua	5	18
15.	Barokhar	4	16
16.	Kohdarghat	4	15
17.	Karma	4	20
18.	Kaudhiara	3	15
19.	Ramnagar	3	15
20.	Unchdeeh	3	15
21.	Jari	3	15
22.	Akodha	3	11
23.	Khiri	3	13
24.	Baroan	3	11
25.	Lediari	3	13
26.	Chilbila	2	10

TRANS-YAMUNA REGION ALLAHABAD DISTRICT
CONNECTIVITY OF SERVICE CENTERS
N
YAMUNA RIVER
GANGA RIVER
NAINI
Iradatganj
Karchhana
Jasra
Bara
Ramnagar
Sirsa
Unchdeeh
Uruva
From Banda
SH 44
Kaundhiara
Akoda R
Barav
Meja Road
From Manikpur
Shankargarh
To Mirzapur
Jari
TONS RIVER
Kohdar Ghat
Meja
Chilbila
Bharatganj
NH-27
MDR 121
Manda
Nari Bari
Khiri
MRD 141
Lediari
Koraon
BELAN RIVER
MDR 146
Barokhar
To Hanumanganj
RAILWAY LINE
NH, SH, AND PWD ROADS
DISTRICT BOARD AND OTHER R D ROADS
10
0
10
km

Fig.3.4

सम्बद्धता सूचकांक:

सम्बद्धता सूचकांक का तात्पर्य विभिन्न सेवा केन्द्रों से जुड़ी विविध राजमार्गों एवं रेलमार्गों को उनके महत्त्व के अनुसार भार मूल्य देकर सम्बद्धता अंक निर्धारित करने से है।[66] अध्ययन क्षेत्र में तीन प्रकार के संयोजन जैसे रेल मार्ग, राष्ट्रीय राज्य एवं प्रमुख जिला मार्ग और जिला परिषदीय एवं अन्य जिला मार्ग को सम्मिलित किया गया है। 'भार ' इन संयोजनों की लंबाई के आधार पर निर्धारित किया जाता है। अध्ययन क्षेत्र में रेल, राष्ट्रीय.राज्य एवं प्रमुख जिला मार्गों एवं जिला परिषदीय मार्गों एवं अन्य जिला मार्गों की लम्बाई कमश: 100.2 कि0मी0, 323 कि0मी0 एवं 488 कि0मी0 है जो कमानुसार 1: 3: 5 का अनुपात प्रदर्शित करता है।सम्बद्धता मानचित्र 3.4 इन संयोजनों के जाल को दिखाता है। यह अनुपात अलग.अलग संयोजनों के लिए भार की तरह प्रयोग होता है। उदाहरण के लिए 1 अंक रेल संयोजकता, 3 अंक राष्ट्रीय.राज्य.प्रमुख जिला माग्र की संयोजकता के लिए प्रयोग हुआ है जैसे वह एक एक से तीन के अनुपात में स्थित है जबकि 5 अंक जिला परिषदीय एवं अन्य जिला मार्गों के लिए निर्धारित है जिसकी सम्पूर्ण लम्बाई 488 कि0मी0 है। अत: यह रेल संयोजन से लगभग 5 गुना है।

संयोजकता सूचकांक के लिए वही अधिवास लिए गए हैं जो एक या एक से अधिक संयोजनों द्वारा जुड़े हुए हैं। इस प्रकार एक अधिवास की सम्बद्धता गणना (CI) उस अधिवास पर मिलने वाले मार्गों के प्रकार के निर्धारित अंकों को जोड़कर तैयार की जाती है। उदाहरण के लिए माना कि किसी अधिवास में एक रेल मार्ग एक राज्य या जिला मार्ग तथा दो जिला परिषदीय मार्ग मिलते हैं तो इन मार्गों की संयोजकता के अनुसार सम्पूर्ण गणना 'संयोजन भार '(1X1+1X3+ 2X5=14) को जोड़कर 14 निर्धारित होगी। इस प्रकार अध्ययन क्षेत्र में अधिवासों के सम्पर्क मार्गों के आधार पर सम्बद्धता सूचकांक तैयार किया गया है जिसमें मार्गों की संख्या 2 से 13 के मध्य है जबकि 'संयोजकता अंक ' 45 से 10 के बीच है। सम्बद्धता अंक 45 है जबकि न्यूनतम मार्ग संख्या 2 वाला चिलबिला केन्द्र है जो एक जिला परिषदीय मार्ग पर स्थित है। ज्यादातर निम्नस्तरीय केन्द्र 3 अंकों के साथ प्रमुख एक रेल मार्ग एवं एक राष्ट्रीय मार्ग पर स्थित है। विभिन्न अधिवासों की संयोजकता अंक तालिका 3.3 में प्रदर्शित है। क्षेत्र में जिन अधिवासों का संयोजकता अंक 10 या उससे अधिक है उसी को सेवा केन्द्र के रूप में माना गया है अन्य को नहीं। तालिका 3.3 में प्रदर्शित संयोजकता अंक के आधार पर भी सेवा केन्द्र विभिन्न श्रेणियों में विभक्त हो जाते हैं। 'नैनी ' सबसे उपर प्रथम आर्डर केन्द्र पर 13 अंकों के साथ स्थित है जबकि पांच शहर शंकरगढ़, कोरांव, भारतगंज, सिरसा एवं जसरा कमश: 10, 8, 7, 7, 7 बिन्दुओं के साथ द्वितीय कम पर स्थित हैं,

तथा तृतीय कम केन्द्र जो संख्या में 20 हैं की संयोजकता मार्ग संख्या क्रमशः 6 से 2 के बीच है।

सेवा केन्द्र :-

इस प्रकार वही अधिवास 'सेवा केन्द्र ' के रूप में पहचाने गये हैं, जो निम्न तीन आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं.

1. एक अधिवास जिसमें कमानुसार न्यूनतम माध्यजनसंख्या (TRESHOLD) के आधार पर कम से कम तीन केन्द्रीय कार्य सम्पन्न होते हैं।

2. उपभोक्ता व्यवहार एवं स्थानीय वरीयता मानचित्र के आधार पर और

3. सम्बद्धता सूचकांक में कम से कम 10 अंकों पर।

अध्ययन क्षेत्र में केवल 26 अधिवास ही उपरोक्त आपूर्ति को पूर्ण कर पाये इसलिए ये 26 अधिवास 'सेवा केन्द्र' के रूप में पहचाने गये। इन केन्द्रों को तालिका 3.4 में अंकित किया गया है और मानचित्र 3.5 में दिखाया गया है। अध्ययन क्षेत्र में केवल नैनी ही प्रथम कम सेवा केन्द्र के रूप में पाया गया है जो प्रथम कम की सेवाओं और कार्यों के रूप में विशेषीकृत है और अपने से निम्न कम के सेवा केन्द्रों को सभी प्रकार के कार्य और सेवाओं के लिए सुविधा प्रदान करता है एवं बाजार के लिए थोक एवं फुटकर आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति करता है। अध्ययन क्षेत्र में 5 द्वितीय कम के एवं 20 तृतीय कम के सेवा केन्द्र के रूप में पहचाने गये हैं।

कार्यात्मक केन्द्रीयता :-

केन्द्र स्थलों के सापेक्षिक महत्व को परिभाषित करने के लिए वाल्टर किस्टालर ने सर्वप्रथम 'केन्द्रीयता ' शब्द का प्रयोग किया। वास्तव में एक केन्द्रीय स्थल प्रणाली में सभी केन्द्रों का बराबर कार्यात्मक महत्व नहीं होता, किन्तु वह एक दूसरे से कार्यों की जटिलता और आश्रित अधिवासों की संख्या तथा जनसंख्या के आधार पर एक दूसरे से पृथक होते हैं। इसलिए सापेक्षिक महत्व में विभिन्नता कई प्रकारों से मापी जाती है एवं प्रादेशिक सेवा प्रणाली, सेवा केन्द्रों का अनुकम प्रतिपादित करती है। एक केन्द्र की जनसंख्या के आधार पर मापी गई केन्द्रीयता विशुद्ध चित्र नहीं प्रतिपादित करती इसलिए केन्द्रीयता के विश्वसनीय माप में इसका अकेला प्रयोग नही होता है। वाल्टर किस्टालर ने एक स्थान की जनसंख्या और उसके उपयोगिता को स्पष्ट तथा श्रेणीबद्ध किया है और कहा है कि. जनसंख्या आकार उस सापेक्ष महत्व में योगदान तो कर सकता है किन्तु उसके बराबर नहीं हो सकता। सेवा केन्द्रों के जनसंख्या आकार एवं कार्यात्मक आकार में सकारात्मक सम्बन्ध होता है। अतः केन्द्रीय कार्यों के आधार पर परिगणित केन्द्रीयता में केन्द्रों की जनसंख्या एवं कार्यात्मकता दोनों आकार सम्मिलित होते हैं, जो कि सेवा केन्द्र प्रत्यक्ष रूप से केन्द्रीय कार्यों एवं सेवाओं के ही प्रतिफल हैं। अतः उनका आकार एवं गुणवत्ता तथा सेवा केन्द्रों पर आश्रित अधिवासों की संख्या केन्द्रीयता मापन के लिए

TRANS-YAMUNA REGION, ALLAHABAD DISTRICT
IDENTIFIED SERVICE CENTRES
N
YAMUNA RIVER
GANGA RIVER
Naini
Iradatganj
JASARA
Karma
Karchhana
SIRSA
Ramnagar
Uchdeeh
Kaundhiara
Bara
Akodha
Baroav
Uruva
Meja Road
Jari
SHANKARGARH
Meja
Kohdar Ghat
Chilbila
BHARATGANJ
Nari Bari
Manda
Khiri
Lediari
KORAON
ORDER
First Order
Second Order
Third Order
Barokhar
10
0
10
km
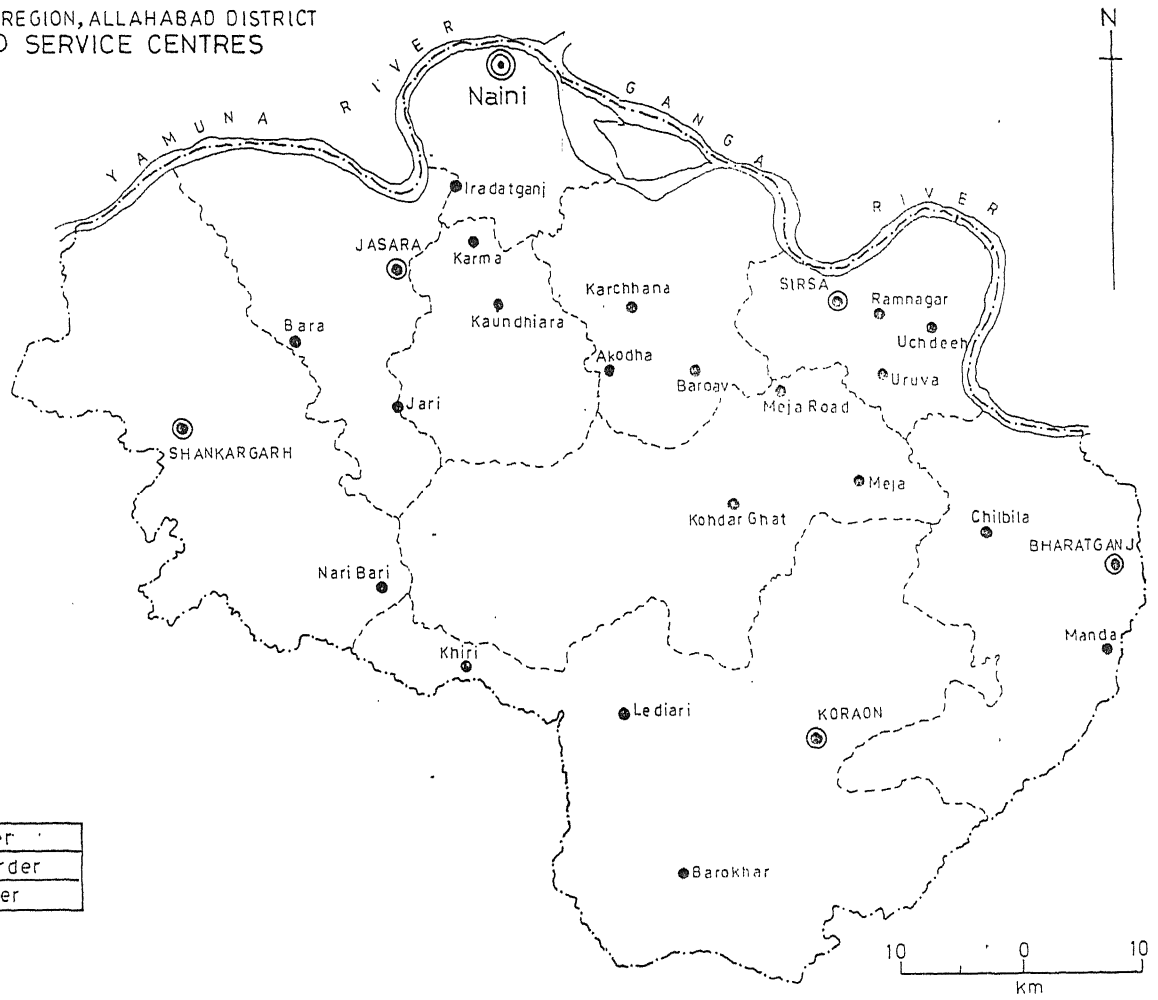
Fig. 3.5

विश्वसनीय आधार है। इसके अतिरिक्त केन्द्रों की कार्यात्मक जटिलता का सहज परिणाम आश्रित अधिवासों की संख्या के रूप में व्यक्त होता है। अतः किसी केन्द्र पर स्थित केन्द्रीय कार्यों की संख्या एवं प्रकार ही केन्द्रीयता मापन के प्रमुख तत्व हैं। किस्टालर के अनुसार केन्द्रस्थलों पर विविध कार्यों एवं सेवाओं के सम्पादन से ही केन्द्रीयता उत्पन्न होती है।केन्द्रीय कार्यों एवं सेवाओं के पदानुकम के आधार पर ही सेवा केन्द्रों में भी पदानुकम उत्पन्न हो जाता है। परिणाम स्वरूप केन्द्रीयता के आधार पर कुछ केन्द्र अपेक्षा कृत अधिक महत्व वाले तथा कुछ केन्द्र कम महत्व वाले हो जाते हैं। इसीलिए प्रस्तुत शोध ग्रन्थ में केन्द्रीयता मापन हेतु सेवा केन्द्रों के कार्यात्मक स्वरूप को ही आधार बनाया गया है।

शोध क्षेत्र के सेवा केन्द्रों की केन्द्रीयता का परिगणन करने हेतु निम्नलिखित सूत्र का प्रयोग किया गया है-

WFI= MtI / MtL

जहाँ WFI = कार्य I के लिए वांछित भार

MtI = कार्य की न्यूनतम जनसंख्या

MtL = श्रेणी में सबसे निचली माध्य न्यूनतम जनसंख्या।

उपरोक्त सूत्र की सहायता से यमुना पार क्षेत्र में कुल 45 केन्द्रीय कार्यों एवं सेवाओं को भार मूल्य आबंटित किया गया है, जो अपने आदर्श भार तालिका 3.2 के कम में श्रेणीबद्ध किया गया है। इस प्रकार केन्द्रीय कार्यों के तीनों स्तरों हेतु तीन स्तर के ही भार मूल्य प्राप्त हुए।

प्रथम श्रेणी के केन्द्रीय कार्यों को उच्चस्तरीय भार तथा न्यून स्तर के कार्यों को न्यून मूल्य भार प्राप्त हुए (ता० 3.2)

सेवा केन्द्रों की केन्द्रीयता स्कोर निकालने के लिए एक कार्यात्मक मैट्रिक्स तैयार की गई जिसमें सेवा केन्द्र पंक्तियों में तथा केन्द्रीय कार्य एवं सेवा स्तम्भों में रखे गए हैं। इस प्रकार इस सारिणी के माध्यम से केन्द्रीयता सूचकांक डा० बी० एन० मिश्र द्वारा प्रतिपादित निम्नलिखित सूत्र से निकाला गया है.

CI = (Fu1 X Wh1)+(Fu2 X Wh2)------(Fun X Whn)

जहां CI = वांछित केन्द्रीयता सूचकांक।

FU = 1 से लेकर n तक कार्यात्मक इकाइयों की संख्या।

Wh = विविध कार्यों के 1 से लेकर n तक भार मूल्य।

केन्द्रीयता सूचकांक परिगणित करने के बाद कुल 26 सेवा केन्द्रों को केन्द्रीयता गणना के कम में व्यस्थित किया गया। परिणाम स्वरूप तीन स्तरीय केन्द्रीय कार्यों एवं सेवाओं के आधार पर सेवा केन्द्रों का भी तीन स्तरीय

पदानुक्रम बन गया। इसे तालिका 3.4 से भी स्पष्ट किया गया है। केन्द्रीय कार्यों एवं सेवाओं के पदानुक्रम के आधार पर ही सेवा केन्द्रों में भी पदानुक्रम उत्पन्न हो जाता है। परिणाम स्वरूप केन्द्रीयता के आधार पर कुछ केन्द्र अपेक्षाकृत अधिक महत्व वाले तथा कुछ केन्द्र कम महत्व वाले हो जाते हैं। इसीलिए प्रस्तुत शोध ग्रन्थ में केन्द्रीयता मापन हेतु सेवा केन्द्रों के कार्यात्मक स्वरूप को ही आधार बनाया गया है।

शोध क्षेत्र के सेवा केन्द्रों की केन्द्रीयता का परिगणन एवं विविध कार्यों को करने हेतु डा0 बी0 एन0 मिश्र द्वारा प्रतिपादित सूत्र का प्रयोग किया गया है। सेवा केन्द्रों के पदानुक वैधता की जांच के लिए चार प्रकीर्ण आरेख (मानचित्र 3.2 A,B और 3.6 A,B) तैयार किये गये।

इन प्रकीर्ण आरेखों से भी सेवा केन्द्रों के त्रिस्तरीय पदानुकम ही प्राप्त हुए हैं। इन तीन प्रकार के सेवा केन्द्रों का अपना अलग.अलग प्रभाव क्षेत्र या सेवा क्षेत्र है जिनके साथ सेवा केन्द्रों का घनिष्ठ कार्यात्मक सम्बन्ध है।

CENTRALITY SCORES AGAINST SERVICE CENTERS RANKED ON POPULATION BASIS
Ⓐ
CENTRALITY SCORE
SERVICE CENTRES RANKED ON POPULATION BASIS
I st ORDER
II nd ORDER
III rd ORDER
CORRELATION BETWEEN CONNECTIVITY SCORES AND POPULATION OF SERVICE CENTRES
Ⓑ
CONECTVITY SCORE'S
POPULATION OF SERVICE CENTER in (000)
I st ORDER
II nd ORDER
III rd ORDER
N
Sh
K
JS
Bh
Si
Jari
Mya
Ma
Kar
Bara
U
MER
Ira
Uch
Kau
Koh
Nari
Khi
Ra
Le
B
Chi
A
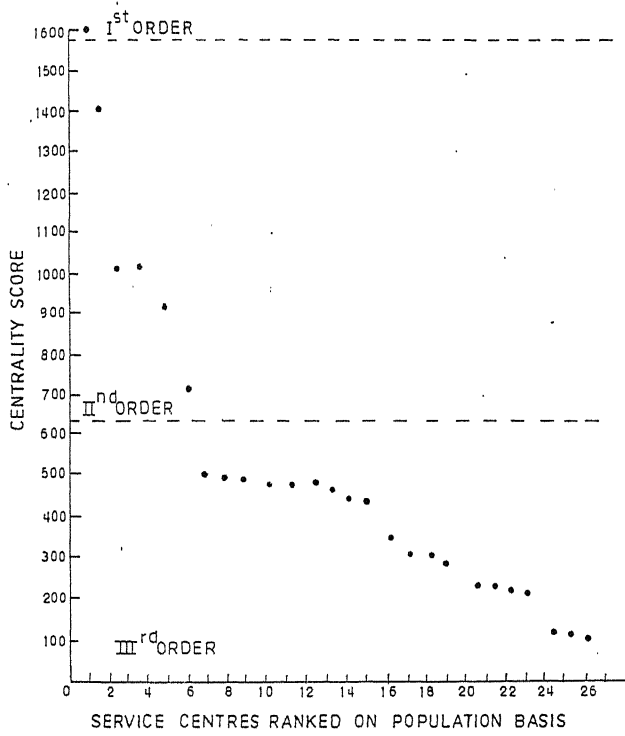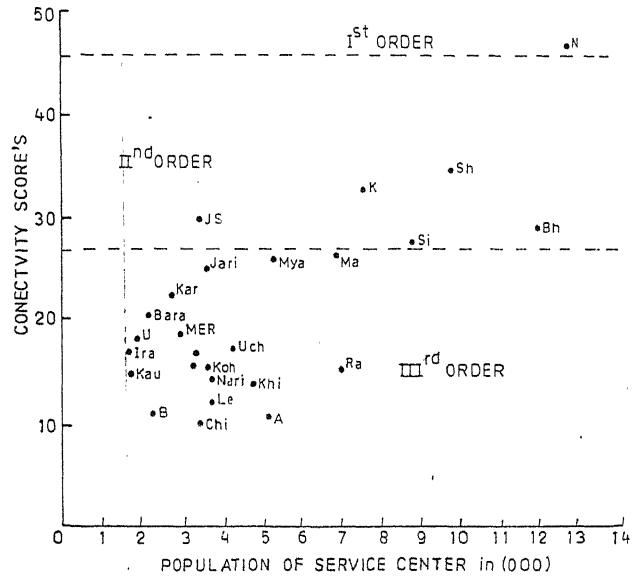
Fig. 3.6

Table-3.4

Service Centre With Type , Number of Function and Centrality Score/ Points.

Sl. No.	Service Centre	Type Function	No. of Function	Centrality Score (Points)
1.	Naini	44	469	1607.71
2.	Shankergarh	38	342	1446.93
3.	Bharatganj	33	302	1091.29
4.	Koraon	30	327	1059.17
5.	Sirsa	30	228	929.31
6.	Jasra	30	220	747.85
7.	Karma	25	192	528.72
8.	Jari	24	190	521.34
9.	Mejaroad	16	170	513.32
10.	Meja	19	172	495.76
11.	Karcchana	15	150	486.29
12.	Iradatganj (Ghoorpur)	23	185	450.48
13.	Ramnager	18	191	439.76
14.	Naribari	20	180	423.58
15.	Chilbila	12	115	325.78
16.	Kaundhiara	10	55	307.35
17.	Lediari	17	103	298.83
18.	Khiri	20	70	295.46
19.	Barokhar	12	103	283.38
20.	Manda Khas	15	90	248.39
21.	Kohdarghat	12	75	243.67
22.	Akorah	13	95	240.53
23.	Baraon	10	90	229.37
24.	Unchdeeh	10	48	161.63
25.	Bara	9	27	122.86
26.	Uruva	9	25	115.36

फोटो प्लेट न0 5-घुमक्कड़ जाति 'नट' बसाव स्थल - नैनी सेवा केन्द्र चाका, इलाहाबाद

फोटो प्लेट न0 6 कूड़ा-कचरा ढेर - नैनी सेवा केन्द्र, चाका इलाहाबाद

सेवा केन्द्रों का पदानुकमः .

सेवा केन्द्रों को सम्बद्धता गणना उपभोक्ता प्रतिरूप और कार्यात्मक केन्द्रीयता गणना की विशेषताओं के आधार पर विविध पदानुकमीय समूहों में श्रेणीबद्ध किया गया है। यद्यपि यहां तीनों प्रकार के पदानुकम में कोई परिपूर्ण अनुरूपता नहीं है। कुछ केन्द्रों की स्थिति में न्यूनाधिक परिवर्तन अवश्य है लेकिन अन्ततः तीनों प्रकार के पदानुकमों में सेवा केन्द्र एक ही श्रेणी में स्थित है। अतः सेवा केन्द्रों के तीनों आधारों पर निर्धारित पदानुकमों की तुलना एवं समानता के आधार पर शोध क्षेत्र के सेवा केन्द्रों को तीन पदानुकमीय श्रेणी में रखा गया है। चारों प्रकीर्ण आरेख इस तथ्य की सम्पुष्टि भी करते हैं। मानचित्र 3.2 A,B और 3.6 A,B। स्थानीय वरीयता और उपभोक्ता व्यवहार मानचित्र 3.3 भी सेवा केन्द्रों के त्रिस्तरीय पदानुकम को सम्पुष्ट करता है।

अध्ययन क्षेत्र में 'नैनी टाउन एरिया ' प्रशासनिक स्तर तथा उच्च श्रेणी के कार्यो तथा सेवाओं द्वारा सेवा केन्द्रों के पदानुकम में सर्वोच्च स्थान है तथा अध्ययन क्षेत्र का यह केन्द्र जैफरसन के प्राथमिक नगर संकल्पना (Primary City Concept) के अनुरूप है तथा इसको सत्यापित करता है।'नैनी' टाउन एरिया प्रथम स्तर कार्यो एवं सेवाओं के लिए विशेषीकृत है जो पूरे अध्ययन क्षेत्र के निम्नस्तरीय सभी छोटे केन्द्रों को विविध प्रकार की कार्यात्मक सेवाएं प्रदान करता है। कार्यात्मक पदानुकम का सबसे बड़ा नगर होने के नाते यह अन्य केन्द्रों की सेवा थोक बाजार एवं फुटकर बाजार के रूप में सम्पूर्ण क्षेत्र की मांग के अनुसार करता है। यह राष्टीय मार्ग नं0 27, राजमार्ग सं0 44 और प्रमुख जिला मार्गो द्वारा जुड़ा हुआ है तथा इनके द्वारा इलाहाबाद, कलकत्ता, पटना, जबलपुर, मुंबई, दिल्ली आदि प्रमुख शहरों से भी रेल मार्गो से सम्बद्ध है। अतः यह कहा जा सकता है यह केन्द्र अध्ययन क्षेत्र के सम्पूर्ण क्षेत्र से सड़क एवं राज्य मार्गो से जुड़ा है। इसलिए इस केन्द्र से क्षेत्र की सामाजिक आर्थिक एवं अन्य प्रकार के उद्‌देश्यों की पूर्ति होती है। इस सेवा केन्द्र का देश के विविध क्षेत्रों से व्यापारिक आदान.प्रदान होता है। इलाहाबाद जिले का 'औघोगिक स्टेट' होने के कारण इस केन्द्र का कार्यात्मक महत्व और अधिक बढ़ जाता है। तालिका 3.4 से भी इस केन्द्र में केन्द्रीय कार्यों एवं सेवाओं की इकाइयों की संख्या और प्रकार स्पष्ट होता है। अध्ययन क्षेत्र का सबसे बड़ा जंक्शन होने के कारण देश के सभी भागों से आयात एवं निर्यात होता है, देश के पूर्वी एवं दक्षिणी भागों में जाने वाली रेलगाड़ियों का अलगाव स्थल भी है।जो (Fig. 3.4) मानचित्र से भी स्पष्ट है। नैनी में कार्यों का प्रकार 44 तथा कुल कार्य इकाई 469 एवं केन्द्रीयता स्कोर 1607.71 निकाला गया है।नैनी सेवा केन्द्र के आसपास काफी मात्रा में घुमक्कड जाति 'नट' वृक्षों के नीचे बसे हुए हैं (फोटो प्लेट न0 5) । जो आदिम निवास का उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। इसी तरह इस केन्द्र पर नगरीय मलिन बस्ती भी देखी जा सकती है। साथ ही रोड

के किनारे कूडे कचरे का ढेर भी शहरी समस्या को प्रगट करता है।(फोटो प्लेट न0 6)

अध्ययन क्षेत्र में पांच द्वितीय कोटि के सेवा केन्द्र जैसे शंकरगढ़, भारतगंज, कोरांव, सिरसा एवं जसरा निर्धारित किए गए हैं। **शंकरगढ़** नगरपालिका क्षेत्र द्वितीय कम के सेवा केन्द्रों में सबसे बड़ा है। इसकी जनसंख्या 10662 जनगणना 1991 है। इसमें कार्यों के प्रकार की संख्या 38 और कुल कार्यों की इकाई 242 है तथा केन्द्रीयता स्कोर 1446 93 है। इस केन्द का सम्बद्धता सूचकांक स्कोर 34 है। यह दक्षिण की ओर जाने वाले प्रमुख रेलमार्ग पर स्थित है। औघोगिक कच्चा माल जैसे बालू, पत्थर, गिट्टी, पटियां आदि के उत्पादन का बहुत बड़ा केन्द्र है। सिलिका सैन्ड खनन एवं गिट्टी तोड़ना यहां की जीविका का प्रमुख साधन है। यह सेवा केन्द्र काफी दूर तक के ग्रामीणों की सेवा करता है। इस केन्द्र पर हर तरह की सुविधाएं उपलब्ध हैं। औघोगिक सामग्री, कच्चा माल उत्पादन केन्द्र होने के कारण महंगाई अधिक है। राज्य मार्ग संख्या 44 थोड़ा सा उत्तर की ओर से गुजरता है। अतः रेल एवं सड़क मार्ग पर होने के कारण भी उत्तम सेवा प्रदान करता है। इस टाउन एरिया में मच्छर का प्रकोप अधिक है। अतः मलेरिया का प्रकोप ज्यादा है तथा खनन कार्य में लगे हुए मजदूरों को टी0बी0 का रोग भी 90 प्रतिशत तक है।

'भारतगंज' म्यूनिसिपैलिटी द्वितीय कोटि के सेवा केन्द्रों में दूसरा स्थान रखता है। इसकी जनसंख्या 12465 जनगणना 1991 है तथा कार्यों का प्रकार 33, कुल कार्यात्मक इकाई 302 तथा केन्द्रीयता स्कोर 1091.29 है। भारतगंज का सम्बद्धता स्कोर 29 है। यह राज्य मार्ग 44 से थोड़ा सा दक्षिण जिला मार्गो एवं अन्य मार्गो से सम्बद्ध है। यह अध्ययन क्षेत्र का सीमावर्ती सेवा केन्द्र है। यहां प्रमुख रुप से कपड़े का थोक एवं खुदरा विकय किया जाता है जो प्लेट नं0 7 से भी स्पष्ट है। कद्दू,टमाटर, प्याज, आलू आदि सब्जियों का थोक विकय केन्द्र भी है।(फोटो प्लेट न0 8) इस सेवा केन्द्र से लगभग 60 कि0मी0 चारों ओर देहात की सेवा कय विकय द्वारा की जाती है। गौर करने की बात है कि यहां पर कोई एस.टी.डी. (S.T.D) सुविधा नहीं है लेकिन छोटे स्तर पर दरी एवं गलीचा उघोग काफी सम्पन्नता के साथ अपनाया गया।

पदानुकम कोटि के द्वितीय कम का तीसरा सेवा केन्द्र 'कोरांव' म्युनिसिपैलिटी है। यह अध्ययन क्षेत्र के दक्षिणी पूर्वी भाग में स्थित है। इसकी कुल जनसंख्या 7832 जनगणना 1991 है। कार्यों का प्रकार 30 एवं कार्यों की कुल इकाई 327 है तथा केन्द्रीयता स्कोर 1059.17 है। इस सेवा केन्द्र का सम्बद्धता सूचकांक 32 है। यह केन्द्र प्रमुख जिला मार्गो एवं अन्य मार्गो पर स्थित होकर चारों तरफ ग्रामीण क्षेत्रों की सेवा करता है। यह पदानुकम कोटि के प्रथम नगर नैनी से सर्वाधिक दूर का द्वितीय कम सेवा केन्द्र है। यह एक मेजा तहसील का ब्लाक हेडक्वार्टर है तथा आगे इसे तहसील हेडक्वार्टर बनाने की योजना है। इसके ब्लाक हेडक्वार्टर में कृत्रिम गर्भाधान केन्द्र है। यह केन्द्र अपने चारों ओर 60 - 70 कि0मी0 के ग्रामीणों की सेवा करता है। कोरांव एक
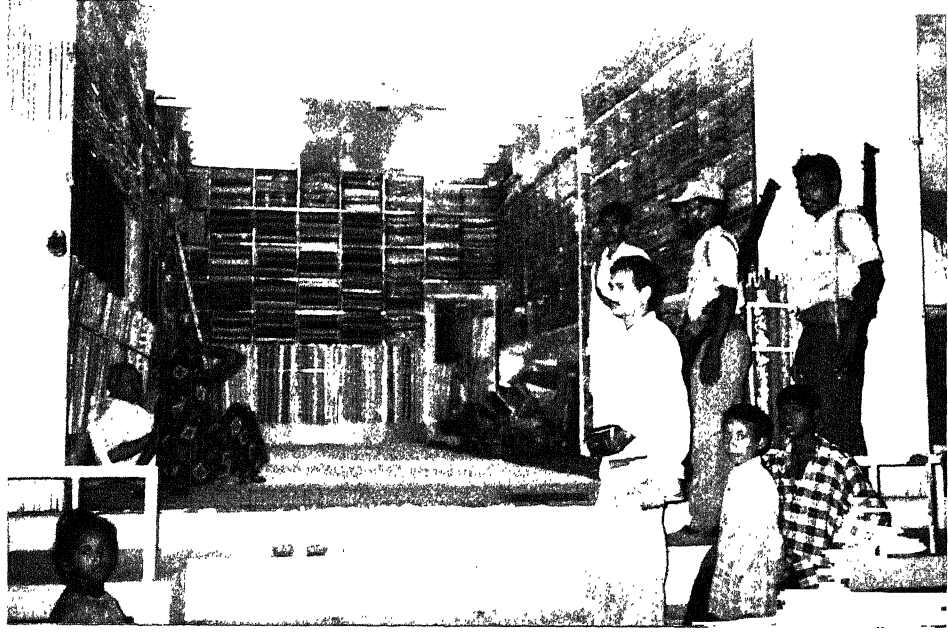
फोटो प्लेट न0 7- कपड़ा विक्रय केन्द्र, भारतगंज सेवा केन्द्र, माण्डा इलाहाबाद

फोटो प्लेट न0 8 सब्जी बाजार, भारतगंज सेवा केन्द्र, माण्डा इलाहाबाद

ऐसा सेवा क्षेत्र है जहां 10000 मजदूरी पेशा लोग बिहार से आकर स्थानीय जमीन खरीदकर स्थायी रूप से बस गये हैं। यहां पर लगभग सभी सुविधाएं उपलब्ध हैं। 'इन्दिरा गांधी राष्टीय मुक्त विश्वविघालय कोरांव' क्षेत्रीय लोगों को शैक्षणिक सुविधा प्रदान करता है।

'सिरसा ' म्यूनिसिपैलिटी क्षेत्र पदानुकम कोटि के द्वितीय कम का चौथा सेवा केन्द्र है। यह अध्ययन क्षेत्र के उत्तरी किनारे पर गंगा नदी के तट पर स्थित है। इसकी जनसंख्या 1991 की जनगणना के अनुसार 8929 है। यहां कार्यों का प्रकार 30 एवं कुल कार्यात्मक इकाई 327 है। यहां का केन्द्रीयता स्कोर 929.31 है तथा इसका सम्बद्धता सूचकांक 27 है। सेवा केन्द्र सिरसा लगभग 50 कि.मी. चारों ओर सेवा करता है। यहां की बाजार बुधवार को बन्द रहती है। इसे क्षेत्र में एक शैक्षणिक केन्द्र के रूप में भी माना जाता है। यहाँ प्रमुख रूप से स्वर्णाभूषणों की दुकानें हैं जिससे क्षेत्रीय जनता की सम्पन्नता दिखाई पड़ती है। यहां पर कोल्ड स्टोरेज एवं थोक घी आदि की आपूर्ति क्षेत्रीय लोगों को होती है। जल मार्ग से भी इस केन्द्र पर आयात एवं निर्यात किया जाता है।

'जसरा ' सेवा केन्द्र द्वितीय कम के पदानुकम का पांचवां केन्द्र है। यह अध्ययन क्षेत्र के पश्चिमी किनारे पर स्थित है। यहा राज्य मार्ग 44 और हावड़ा जबलपुर रेल मार्ग पर स्थित है। इसकी जनसंख्या 1991 की जनगणना के अनुसार 3545 है। यह ब्लाक हेडक्वार्टर है। इसके कार्यों की संख्या 30 तथा कुल कार्य इकाई 220 है तथा इसकी केन्द्रीयता गणना 747.85 है। इस सेवा क्षेत्र का सम्बद्धता सूचकांक 28 है। यह क्षेत्र अपने चारों ओर 30-35 कि.मी. क्षेत्र की सेवा करता है। क्षेत्रीय लोगों के लिए यह केन्द्र स्वास्थ्य, शिक्षा एवं व्यापार के लिए इस केन्द्र का विशेष महत्व है लेकिन इसके पास घूरपुर या इरादतगंज का विकास इसके विकास को प्रभावित कर रहा है। बड़ी-बड़ी राइस मिल होने के कारण देहात क्षेत्र का महत्वपूर्ण सेवा केन्द्र है।

तृतीय कोटि के सेवा केन्द्रों की संख्या 20 निश्चित की गई है जिनमें बारा, करछना तथा मेजा तहसील हेडक्वार्टर एवं कौंधियारा, उरूवा, मांडा, ब्लाक हेडक्वार्टर हैं। शेष 14 सेवा केन्द्र स्थानीय ग्रामीण बाजार हैं जो अपने चारों ओर के देहात की सेवा करते हुए उनसे आर्थिक, सामाजिक, प्रशासनिक कार्य एवं सेवाओं से भिन्न हैं। ये सेवा केन्द्र- इरादतगंज या घूरपुर, कर्मा, (फोटो प्लेट न0 9) जारी, नारीबारी, खीरी, (फोटो प्लेट न0 10) लेड़ियारी, बड़ोखर, कोहड़ारघाट हैं। ये सेवा केन्द्र आसानी से ग्रामीण सड़क मार्गों द्वारा अनुगम्य पहुंच के अन्दर आते हैं जो प्रतिदिन की आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। इन तृतीय कोटि के सेवा केन्द्रों का कार्य प्रकार 24 से 9 के बीच में और कुल कार्य इकाइयां 192 से लेकर 25.36 तक निर्धारित हुई हैं। इनकी केन्द्रीयता स्कोर 528.72 से लेकर 115.36 तक निर्धारित हुआ है। इन तृतीय कम सेवा केन्द्रों में सबसे उपर कर्मा है जिसकी केन्द्रीयता गणना 528.72 अंकित हुई है। एवं 115.36
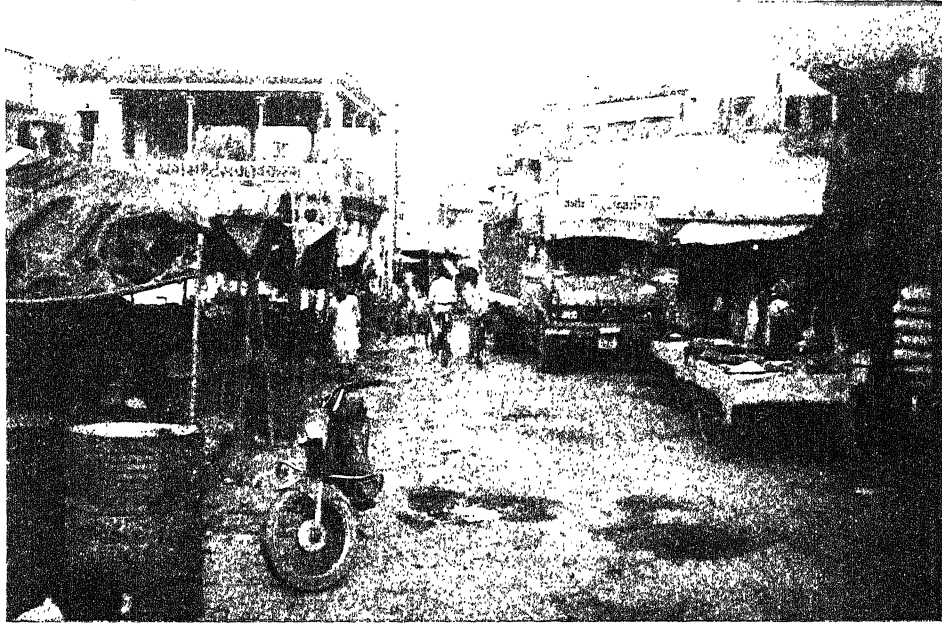
फोटो प्लेट न0 9- करमा बाजार सेवा केन्द्र, कौंधियारा इलाहाबाद

फोटो प्लेट न0 10- खीरी बाजार सेवा केन्द्र, कोरांव इलाहाबाद

केन्द्रीयता गणना के साथ उरुवा सबसे निचले स्थान पर है। उपरोक्त सेवा केन्द्र अपने-अपने चारों ओर तृतीय श्रेणी के कार्यों द्वारा ग्रामीणों की सेवा करते हैं।

सेवा केन्द्रों का स्थानीय प्रतिरूप :-

यमुना पार प्रदेश इलाहाबाद जिले का एक उच्चावचीन प्रदेश है। यह मुख्य रूप से गंगा-यमुना एवं गौण रूप से टौस, बेलन, लपरी, झगरा बरिया नाला आदि नदियों द्वारा वाहित क्षेत्र है। अध्ययन क्षेत्र का उच्चावच सेवा केन्द्रों के स्थानिक प्रतिरूप को निर्धारित करता है, फिर भी सेवा केन्द्र का वितरण प्रतिरूप जो कि मानचित्र 3.5 में कम या अधिक यादृच्छिक प्रतिरूप में दिखाया गया है जिसमें न तो पूर्णरूपेण एकत्रण हे और न ही पूर्णरूपेण समानता है। यह सुस्पष्ट है। एवं निकटतम पड़ोसी मूल्य द्वारा (1.05) से भी स्पष्ट है कि यमुनापार क्षेत्र सेवा केन्द्रों का सम्पूर्ण वर्तमान प्रतिरूप यादृच्छिक है किन्तु एक समानता की ओर बढ़ने की प्रवृत्ति दिखाता है। निकटतम विश्लेषण तालिका 3.5 क्षेत्र में सेवा केन्द्रों का स्थानीय सांख्यिकीय प्रतिरूप प्रस्तुत करता है तथापि अध्ययन क्षेत्र में सेवा केन्द्रों का वितरणीय प्रतिरूप ज्यादातर रेखीय है जो कि सम्बद्धता मानचित्र में एक घटना की तरह है। सेवा केन्द्रों का प्रथम रेखीय प्रतिरूप - इलाहाबाद मिर्जापुर मार्ग के बीच एवं द्वितीय रेखीय प्रतिरूप इलाहाबाद बांदा मार्ग के बीच है। उल्लेखनीय है कि इन दोंनो सड़क मार्गो के साथ-साथ रेलमार्ग भी समानान्तर स्थिति में हे। सेवा केन्द्रों की तीसरी रेखीय व्यवस्था राष्टीय मार्ग संख्या 27 पर देखी जा सकती है जिसपर नैनी, इरादतगंज घूरपुर जारी एवं नारी बारी सेवा केन्द्र स्थित है। अध्ययन क्षेत्र में सेवा केन्द्रों के स्थानीय वितरण प्रतिरूप को देखने से यह स्पष्ट होता है कि जहां भी रेल एवं राजमार्गो का विकास हुआ है वहां पर सेवा केन्द्रों का भी विकास हुआ है अथवा यह कहा जा सकता है कि क्षेत्र में सेवा केन्द्रों का विकास रेल एवं राजमार्गो के जाल का अनुसरण करता है (तालिका 3.5) ।

Table-3.5

Nearest Neighbour Statistics.

1. Observed average spacing of service centres ($\bar{d}$ o) = 11.63
2. Expected average spacing ($\bar{d}$ E) = 10.73
3. Nearest neighbour value (Rn) = 1.05
4. Standard error (SdE) = 65.58
5. Significance measure of Rn value (C) = 1.57
6. Departure of observed pattern from hexagonal Pattern ($\bar{d}$u) = 0.100
7. Density of service cetre / 100 Km^2 = 8.66

Statistics formulas which use for above values :-

1. ($\bar{d}$o) = Σdi/n
2. ($\bar{d}$E) = 1/2$\sqrt{}$A/N
3. (Rn) = do/dE
4. (SdE) = 0.26136/$\sqrt{}$N(N/A)
5. (C) = (dE-do)/SdE
6. ($\bar{d}$u) = 1.0746/$\sqrt{}$A/N
7. Density of service centres = Service Centres/Area.

सेवा क्षेत्र :-

विभिन्न कोटि के सेवा केन्द्रों का सेवा क्षेत्र उपभोक्ता वरीयता आंकड़ों के आधार पर पहचाना जाता है जो क्षेत्र के सभी 1342 गांवों और मानचित्र (नं 3.7) में दिखाया गया है। सेवा केन्द्रों का सेवा क्षेत्र निर्धारित करने के लिए एक विशेष सेवा केन्द्र पर आधारित गांवों की संख्या (मानचित्र 3.3 में सीधी रेखाओं द्वारा दिखाया गया है)। उस केन्द्र के सेवा क्षेत्र को निर्धारित करने वाली लाइन से जोड़ते हुए ली गई है। सेवा क्षेत्रों की परिशुद्धता की सत्यता के लिए उपभोक्ता वरीयता के आधार पर 'रैली ' के फुटकर गुरुत्वाकर्षण नियम जो न्यूटन के गुरुत्वाकर्षण सिद्धान्त पर आधारित किया गया है। पी.कनवर्स ने इसे परिष्कृत कर 'अलगाव बिन्दु ' समीकरण प्रस्तुत किया था। इसी के आधार पर सेवा केन्द्रों का प्रभाव क्षेत्र या सेवा क्षेत्र निर्धारित किया गया है। सामान्य दशाओं में नगर आपस में छोटे मध्य शहर से खुदरे व्यापार को अपनी जनसंख्या के अनुपात में सीधे और दूरी के वर्ग के अनुपात में विपरीत आकर्षित करते हैं। इस सूत्र की सहायता से दो शहरों के बीच का 'अलगाव बिन्दु ' (अर्थात ऐसा बिन्दु जहां तक एक शहर के फुटकर व्यापार का प्रभाव अपेक्षाकृत अधिक है तथा जिसके आगे दूसरे शहर के फुटकर

SERVICE AREAS OF SERVICE CENTRES
IN
TRANS-YAMUNA REGION OF ALLAHABAD
DISTRICT
N
YAMUNA RIVER
GANGA RIVER
NAINI
Iradatganj
JASRA
Karma
Karchhana
SIRSA
Ramnagar
Unchdeeh
Bara
Kaundhiara
Akodha
Barav
Meja Road
Uruva
SHANKARGARH
Jari
Meja
Chilbila
Kohdar Ghat
BHARATGANJ
Nari Bari
Manda
Khiri
Lediari
KORAON
Barokhar
Service Centres
ORDER
Service Areas
First Order
Second Order
Third Order
10
0
10
km
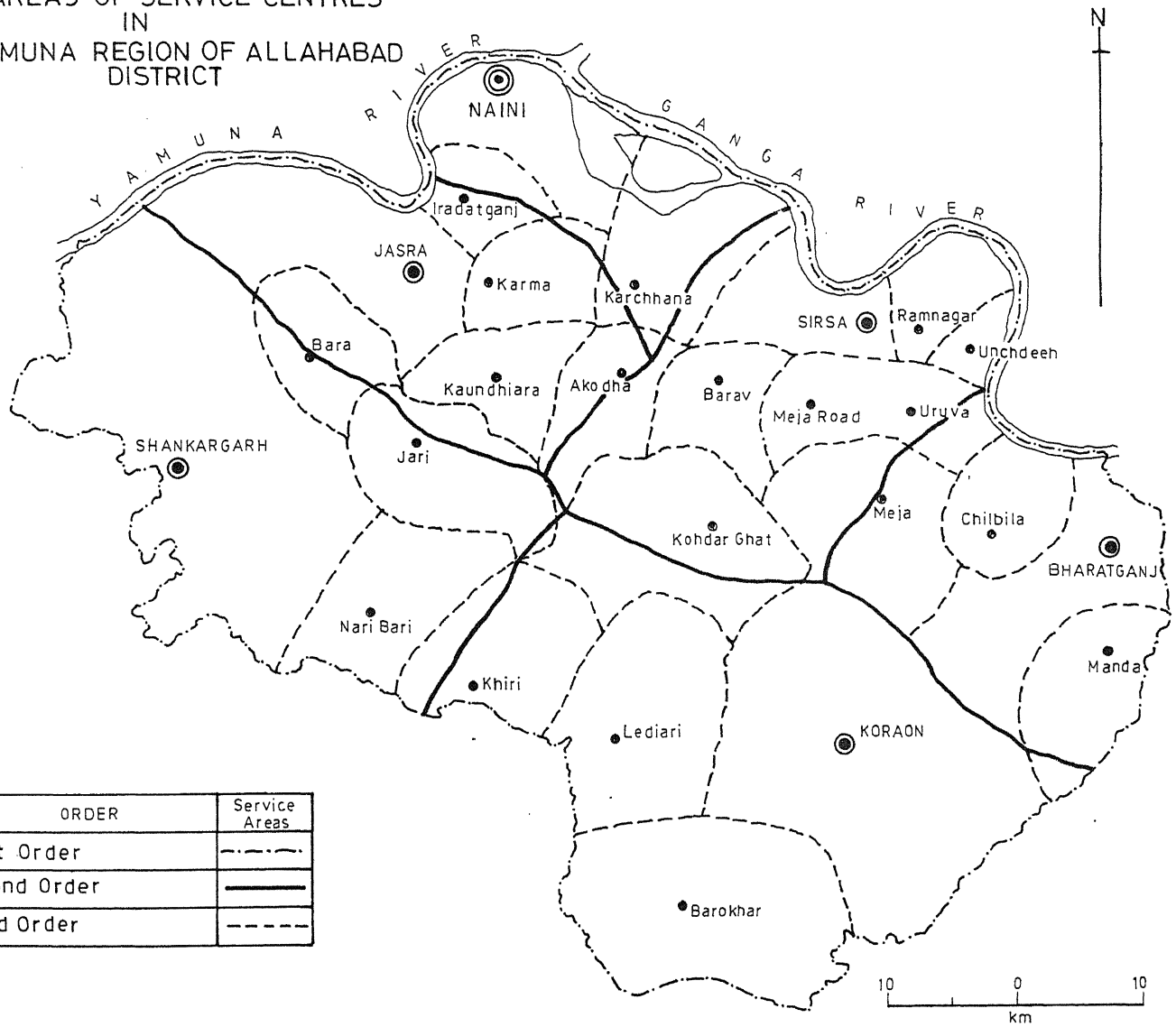
Fig.3.7

व्यापार का प्रभाव अपेक्षाकृत बढ़ जाता है) वहां होगा जहां S_1/S_2 का मूल्य 1/1 होगा। रेली के नियम का सूत्र इस प्रकार है

$$S_1/S_2 = (P_1/P_2 \times D_2/D_1)^2$$

जहां S_1 और S_2 , किसी मध्यस्थ नगर से दो सम्बन्धित नगरों द्वारा फुटकर व्यापार।

P_1 और P_2 दो प्रतिस्पर्धी नगरों की संख्या।
P_1 बड़े नगर की संख्या।
P_1 छोटे नगर की संख्या।

जबकि D_1 और D_2 स्थान से दोनों केन्द्रों के मध्य स्थित नगर से दोनों नगरों की दूरी।

'कनवर्स ' ने उपरोक्त सूत्र को परिष्कृत किया और 'अलगाव बिन्दु ' (Break Point) के रूप में निम्न सूत्र प्रस्तुत किया-

$$B = d/1+\sqrt{P_1/P_2}$$

जहां पर
B = छोटे केन्द्र से कि.मी. अथवा मील में अलगाव बिन्दु
d = दो केन्द्रों के बीच की दूरी
P_1= दो केन्द्रों में से सबसे बड़े केन्द्र की जनसंख्या
P_2= दो केन्द्रों में से सबसे छोटे केन्द्र की जनसंख्या

जबकि 'अलगाव बिन्दु ' सेवा क्षेत्र में दो बिन्दुओं के बीच के योग को इस सूत्र की सहायता से निकाला गया अलगाव बिन्दु की स्थिति सभी प्रमुख मार्गों से निर्धारित होता है जो विभिन्न दिशाओं में विभिन्न केन्द्रों से विकीरित होता है तथा अलगाव बिन्दु उन रेखाओं से जुड़े होते हैं जिनसे सीमाएं या सेवा केन्द्रों के सेवा क्षेत्र निर्धारित होते हैं सेवा क्षेत्र उपरोक्त व्यवहार से उसी तरह निर्धारित होते हैं जैसे अलगाव बिन्दु के आधार पर सूत्र की तुलना की जाए और अन्तर बहुत छोटा और महत्वहीन हो एवं उपभोक्ता वरीयता और व्यवहार मानचित्र के उपलक्ष्य में संशोधित हो। क्योंकि सेवा क्षेत्र उपभोक्ता व्यवहार और वरीयता से निर्धारित होते हैं जो नियोजन उद्देश्य के लिए अत्यन्त वास्तविक और अनुकूल होते हैं । तब से 'अलगाव बिन्दु' सूत्र के आधार पर निर्धारित होते हैं। इसलिए विभिन्न कम के सेवा केन्द्रों को सेवा क्षेत्र अन्तिम रूप से (मान0 3.7)अध्ययन क्षेत्र का खींचा गया। मानचित्र, सेवा क्षेत्रों का एक जालीनुमा प्रतिरूप उत्पन्न

करता है जो कि स्थानिक वास्तविकता है क्योंकि सेवा प्रदेशों के क्षेत्रों में छोटे सेवा केन्द्र बड़े सेवा केन्द्रों के सेवा क्षेत्रों में सन्निहित हो जाते हैं।

सेवा क्षेत्र : नियोजन प्रदेश:.

प्रादेशिक नियोजन का तात्पर्य स्थानिक पुनर्संगठन एवं संसाधनों से या निवेश के उपयोग एवं पुनर्वितरण से सम्बन्धित है। इस प्रकार का नियोजन इस कार्य को इस सन्तुलन के साथ करने का प्रयास करता है जिससे सम्बन्धित मानव समाज को अपने परिवर्तनशील सामाजिक तकनीकी पर्यावरण के साथ सामन्जस्य स्थापित करने हेतु नए अवसर यन्त्र प्राप्त हो । साथ ही उनका अधिकतम कल्याण सुनिश्चित हो सके।

सेवा क्षेत्र जो कि सेवा केन्द्रों के द्वारा संचालित होता है, वास्तव में एक स्थानिक सत्ता है जो सामाजिक आर्थिक तत्वों की एकता और स्थानिक संगठन को समरूपता के आधार पर स्पष्ट तथा प्रमाणित है यह वास्तव में एक कार्यात्मक और केन्द्रीय या गुच्छीय प्रदेश के रूप में पहचाना जाता है। न्यूनाधिक रूप में सेवा क्षेत्र कर्मोपलक्षी प्रदेश ही हैं जो आपूर्ति मांग उपभोक्ता व्यवहार एवं सामाजिक संगठन के क्षेत्र में समान प्रकार की स्थितियां प्रस्तुत करते हैं। यह सामाजिक और आर्थिक एकता इस क्षेत्र को एक विशिष्ट स्थानिक स्वरूप प्रदान करती है जिससे भूगोलवेत्ता एवं नियोजक विकास नियोजन प्रकिया हेतु इन क्षेत्रो की ओर आकर्षित हुए हैं। यही कारण है कि पिछले चार दशकों से इन क्षेत्रों को नियोजन प्रदेश के रूप में उपयोग किया जा रहा है। विशेष रूप से विकासशील देशें में नियोजन हेतु इन सेवा केन्द्रों का महत्व बढ़ गया है क्योंकि ये अपने केन्द्रों से सामाजिक आर्थिक एवं प्रशासनिक दृष्टि से अभिन्न रूप से जुड़े हुए हैं। अतः सेवा क्षेत्र जैसे कर्मोपलक्षी प्रदेशों को नियोजन प्रदेश के रूप में चयन करना अत्यन्त समीचीन, तर्कसंगत एवं वैज्ञानिक है।

जैसा कि अवस्थिति एवं विकास सिद्धान्तों द्वारा प्रमाणित किया जा चुका है कि वृहद स्तर से लेकर लघु स्तर तक विविध स्तर के सेवा केन्द्रों द्वारा प्रमाणित इन सेवा क्षेत्रों का एक गुच्छित पदानुकम है। सेवा क्षेत्रों का यह सोपानी पदानुकम किसी देश या प्रदेश के सम्पूर्ण धरातल को पूर्णरूपेण आवृत्त कर लेता है। ऐसे स्थानिक तन्त्र में विकास तरंगों का प्रसरण एवं निवेश का आबंटन प्रभावशाली एवं समान ढंग से विविध केन्द्रों के माध्यम से सम्प्रेषित किया जा सकता है। विकास की गति तीव्रतर करने हेतु इन सेवा केन्द्रों में विविध स्तरीय विकास किया कलापों एवं संस्थाओं का स्थापित होना आवश्यक होता है। जिससे लाभ सामान्य रूप से प्राप्त हो सके। इस प्रकार सेवा क्षेत्र न्यून स्तर से लेकर उच्च स्तर तक एक ऐसा स्थानिक पदानुकम प्रस्तुत करते हैं जो कार्यात्मक आधार पर अपने सेवा केन्द्रों से जुड़े हुए होते हैं। इस स्थानिक

पदानुक्रम के माध्यम से संचालित विकास प्रक्रिया ग्राम्य स्तर तक विकास के लाभ को पहुंचाने में सक्षम होती हैं। साथ ही उत्पादन एवं उपभोग प्रक्रिया को उपभोक्ता से जोड़ती है। ग्रामीण क्षेत्र के लोगों को विकास प्रक्रिया में सहभागिता देती है तथा विकास सम्बन्धी राष्टीय लक्ष्यों एवं उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक होती है। इस प्रकार की स्थानिक क्षेत्रीय तन्त्र में विकास प्रक्रिया एवं विविध सामाजिक 'आर्थिक क्रिया कलापों का पूर्ण विकेन्द्रीकरण होता है। वस्तुओं विचारों एवं 'व्यक्तियों का भौगोलिक धरातल पर पूर्ण गतिशीलता होती है तथा श्रम एवं संसाधन का अधिकतम उपयोग होता है। इसके अलावा सेवा क्षेत्रों को नियोजन प्रदेशों के रूप में स्वीकार करने पर प्रशासनिक सीमाओं तथा वास्तविक सामुदायिक इकाइयों के मध्य का विवाद भी समाप्त हो जाता है। उपरोक्त गुणों एवं विशेषताओं के आधार पर सेवा क्षेत्र विकास नियोजन हेतु उपुयुक्ततम स्थानिक इकाई प्रस्तुत करते हैं।

नियोजन प्रभाविता :-

किसी भी प्रदेश के सामाजिक आर्थिक विकास हेतु किए जाने वाले नियोजन के अन्तर्गत आधारभूत सुविधाओं एवं विकास क्रिया कलापों की उपयुक्ततम अवस्थिति सम्बन्धित निर्णय सम्मिलित होते हैं। सेवा केन्द्र तथा उनके सेवा क्षेत्र जो पहले से ही उस प्रदेश को सेवा प्रदान कर रहे हैं इस प्रकार के अवस्थिति नियोजन हेतु उपयुक्ततम स्थानिक तन्त्र प्रस्तुत करते हैं। सेवा केन्द्रों के स्थानिक वितरण के समान न होने के कारण प्रदेश विशेष के कुछ क्षेत्र 'सेवा रिक्त क्षेत्र' हो जाते हैं तथा कुछ क्षेत्रों से को 'सेवा परिब्याप्त क्षेत्र' हो जाते हैं। पहली समस्या का समाधान प्रतिस्पर्धी सेवा केन्द्रों में पूरक क्रिया कलापों को स्थापित कर दूर किया जा सकता है जबकि दूसरी समस्या का समाधान सेव रिक्त क्षेत्रों में नए सेवा केन्द्र खोल करके किया जा सकता है। नए सेवा केन्द्रों में उपयुक्त स्तरीय आधारभूत सुविधा को एवं क्रिया कलापों को सीापित होना भी आवश्यक है। सेवा केन्द्र अपने स्थानिक अन्तर्क्रिया एवं कार्यात्मक सम्बद्ध के आधार पर विकास नियोजन हेतु एक आदर्श स्थानिक इकाई प्रस्तुत करते हैं। अतः सेवा केन्द्रों एवं उनके सेवा क्षेत्रों की पहचान एवं निर्धारण के पश्चात विकास प्रक्रिया के सन्तुलन एवं एवं तीब्रतर होने की सम्भावना बढ़ जाती है। इस कर्मोपलक्षी क्षेत्रों के कार्यात्मक एवं क्रमबद्ध समन्वित स्वरूप के कारण विकास प्रक्रिया और प्रोत्साहित हो जाती है तथा ग्राम्य क्षेत्रों से विकास प्रक्रिया के सीधे सम्बन्ध हो जाते हैं। यदि विकास क्रिया कलाप सेवा केन्द्रों पर स्थापित हो जाते हैं तो ग्रामीण क्षेत्रों में उनकी अनुकूल प्रतिक्रिया होती है। परिणामस्वरूप दोनों में कार्यात्मक अन्तर्सम्बन्ध तीब्र हो जाते हैं। विकास का लाभ गांवों को मिलना प्रारम्भ हो जाता है। ग्रामीण क्षेत्रों के संसाधनों का उचित उपयोग होने लगता है तथा विकास प्रक्रिया तीब्र से तीब्रतर हो जाती है।

किसी भी प्रकार के विकास नियोजन में विकास किया कलापों की उपयुक्त अवस्थिति काफी महत्वपूर्ण होती है। चूंकि विकास नियोजन प्रकिया में अवस्थिति ही मूल प्रश्न होता है। इसीलिए इन कर्मोपलक्षी सेवा क्षेत्रों को मौलिक नियोजन इकाई कहा जाता है। अतः उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि शोध क्षेत्र में निर्धारित किए गए तीन पदानुकमीय स्तरों के सेवा केन्द्र क्षेत्र के विकास प्रकिया को तीव्रतर करने हेतु उपयुक्ततम स्थानिक इकाई प्रस्तुत करते हैं।

तृतीय कम केन्द्र छोटे सेवा क्षेत्रों को नियंत्रित करते हैं अतः इनका उपयोग तृतीय कम के कार्यों एवं सेवाओं के स्थानीयकरण के लिए होता है जैसे कृषि, वाह्य संरचनात्मक सुविधाएं - बीजों, उर्वरकों, कीटनाशकों, यन्त्र वितरण और मरम्मत सेवाएं, बीज भण्डारण, छोटे भण्डार गृह, कृषि उत्पादों का उत्पादन एवं विकय (केवल कम मात्रा में) ग्रामीण एवं हस्तनिर्मित वस्तुओं का विकय एवं खरीददारी, ग्रामीण शिल्पकारों एवं कारीगरों की सेवाएं आदि स्थापित किये जा सकते हैं।

प्रथम एवं द्रितीय कम के सेवा केन्द्र तुलनात्मक रूप से बड़े सेवा क्षेत्रों को नियंत्रित करते हैं और इनमें स्थानीय संयोजनों गतिशील प्रतिरूप का उच्च स्तर होता है। अतः इन सेवा केन्द्रों की क्षमता बड़े निवेशों और उच्च कम के कार्य एवं सेवाएं जो कि ज्यादातर उघोगों से, यातायात से एवं सामाजिक सुविधाओं से सम्बन्धित होते हैं। वास्तव में इन सेवा केन्दों में बड़ी कृषीय इकाइयां स्थापित होती हैं।

द्रितीय कम सेवा केन्द्र जैसे - शंकरगढ़, भारतगंज, कोरांव, जसरा, सिरसा, प्रतिदिन के बाजारीय केन्द्र हैं। इसलिए इन केन्द्रों में कार्यों एवं सेवाओं जैसे कृषि आधारित उघोगों का माल गोदाम, छोटे स्तर के खाघ पदार्थ से सम्बन्धित निर्माणाधीन प्लांट, इंजीनियरिंग पेपर इत्यादि स्थापित किए जा सकते हैं।

प्रथम कम सेवा केन्द्र 'नैनी ' फुटकर एवं थोक विकय केन्द्र है जिसका सेवा क्षेत्र सबसे बड़ा है। यमुनापार क्षेत्र के आन्तरिक भागों की तुलना इसके पास सबसे बड़ा सेवा क्षेत्र है। इस बड़े सेवा केन्द्र में नगर की सभी सुविधाएं, उच्च अंश सम्बन्धता एवं अच्छी आन्तरिक एवं बाह्य संयोजकता है। नैनी सम्पूर्ण केन्द्र के लिए एक व्यापारिक नाभि केन्द्र है इसलिए सभी प्रथम श्रेणी के कार्य एवं सेवाएं जैसे उघोग, यातायात, शिक्षा, स्वास्थ्य, वित्त एवं लेखा की सभी सुविधाएं प्रमुख रूप से इस केन्द्र पर स्थापित की जा सकती हैं। वृहद सेवा क्षेत्र की जनसंख्या की मांग की पूर्ति हेतु इसमें विविध उच्च स्तरीय मरम्मत सेवाओं की विविधता, मनोरंजन सेवाएं, परामर्शीय सेवाएं आदि भी स्थापित की जा सकती हैं।

इस प्रकार त्रिस्तरीय सेवा केन्द्र एवं उनके सेवा क्षेत्र, उद्योग, परिवहन एवं कृषि से सम्बन्धित विविध प्रकार की आधारभूत सुविधाएं एवं विकास कार्यों की अवस्थिति हेतु एक प्रभावशाली एवं कमबद्ध स्थानिक कम पस्तुत करते हैं। अतः प्रस्तुत शोध ग्रन्थ में शोध क्षेत्र में कृषि, औद्योगिक, स्वास्थ्य एवं शैक्षिक क्षेत्र के विकास हेतु वांछित विविध कार्यात्मक इकाइयों को इन्हीं सेवा केन्द्रों पर स्थापित करने का सुझाव दिया गया है। शोध के क्षेत्र के विकास नियोजन हेतु इन्हीं सेवा क्षेत्रों को आधारभूत इकाई के रूप में माना गया है। अतः कार्यात्मक इकाइयां स्थानिक नियोजन के लिए कृषि, उद्योग, स्वास्थ्य, शिक्षा आदि किया कलापों का विशेष अध्यायों में उपयोग होगा।

REFERENCES

1. Ullman, E.L., 1953 : Human Geography and Area research, A.A.A. Geography Vol. XXIII, p. 58.
2. Jefferson, M. 1931 : The Distribution of World City Folk- A Study in Comparative Civilization Geographical Review Vol. 21, p. 453.
3. Nath, V. 1962 : The Concept of Umland and its Delimitation, The Deccan Geographer, Vol: I, No.1 p. 333.
4. Mishra, B.N. 1980 : The spatial Pattern of Service Centres, in Mirzapur District- U.P., Unpublished thesis, University of Allahabad, p.372.
5. Northam, R.M. 1975 : Urvban Geography, John Wiley and sons, New York, p. 108.
6. Getis, A. and Getis J. : Christaller's Central Place theory in a Geography : of Urban Places (Eds) Putnum, R.G.,Taylor, F.J. and Kettle, P.G.
7. Berry, B.J.L. 1959 : Ribbon Development in the Urban Business Pattern, Annals A.A.G. Vol.XXIX.
8. Von Thunen, J.H 1826 :'Der Isolirte Staat' in Bezie hung of Landwirschaft and National okonomie Hamburg.
9. Grademan, R. 1916 : Schwabische stadte, Z. Ges. Erdk. Berlin.
10. Galpin, C .J. 1919 : The Socical Anatomy of an Agricultural Community Univer. Wis. Agri. Exp. Stat. Res. Bulletin 34.
11. Kolb, H.J. 1923 : Service Relation of Town & Country, Univer. Wis. Agri. Exp. Stat. Res. Bulletin 54.
12. Christaller, W. 1933 : Central Places in Southern Germany (Translated by C.W. Baskin in 1966) Engle Wood Cliff New Jersey.
13. Losh, A. 1954 : The Economics of Location (Translated by W.H.Woglom) New Haven.
14. Dickinson, R.E. 1932 : The Distribution and Function of the Small Urban Settlements of East Anglia, Geography, Vol. VII, pp. 19-31.
15. Smailes, A.E. 1944 : The Urban Hierarchy in England and Wales, Geography, XXIX, pp. 41-51.
16. Works of H. Carol and Other German Scholars are Reviewed; in spelt Jocob's 'Town and Umland' Economic Geography, Vol. 34, 1958, pp 362-69.
17. Brush, J.E. and Bracey, H.E. 1967 : Rural Service Centres in Southern Wisconsin and Southern England, in Readings in Urban Geography, Mayer, H.M. and Kohn, C.F. pp. 210-17.
18. Carter, H. 1955 : Urban Grades and Spheres of influence in South West Wales, Scottish Geographical Magzine, XXXI. Pp. 43-56.
19. Perroux, F. 1955 : Note Sur La Notion de Pole de Croissance Economic Applique, quated in Regional Development Planning in India. A New Strategy, Mishra, R.P. 1974.
20. Harmansen, T. 1962 : Development Poles and Development Centres in National and Regional Development : Elements of a Theoretical Framework for a Synthetic: Approach, The U.N.D. Institute for Social Development Geneva.
21. Kolb, H.J. 1933 : Trends of Country Neighbourhood, Research Bulletin Number 117, p. 28.
22. Johnson, L.J. 1971 : The Spatial Uniformity of a Central Places Distribution in New England, Economic Geography Vol. 47 No. 2, p. 158.

23. Stufford, H.A 1963 : Functional Bases of Small Towns Economic Geography, Vol. 39, pp. 165-75.
24. Berry, B.J.L. op. Cit.
25. Berry, B.J.L. & Garrison, W.L. 1957 : The Functional Bases of Central Place Hierarchy in Reading in Urban Geography, Mayer and Kohn (Eds.). pp. 218-27.
26. Godlund, S. 1956 : The Function and Growth of Bus traffic within sphere of Urban Influence, Lund Studies, in Geography, series B, No. 18, pp.13-14.
27. Green, F.H.W. 1948 : Motor Bus Centres in South West England Trans. Inatitute of British Geographers, No.14, pp. 59-68.
28. Carruthers, W.I. 1957 : The Classification of Service Centres , in England and Wales , Geographical Journal, 123, pp.371-85.
29. Loomis, C.P. and Beegle, J.A. 1950 : Rural Social System, New York.
30. Krishnan, K.C.R. 1932 : Fairs and Trade centres of Madras and Ramnand , Madras , geographical Journal, Vol.7, pp. 237-249.
31. Natesan, S. 1931 : Early European Trade Centres of Malabar, Madras Geographical Journal, vol. No. 6, pp. 215-18.
32. Despande, C.D. 1941 : Market villages and Periodic fairs of Bombay, Karnataka Indian Geographical Journal , Vol. 16, pp.327-39.
33. Pattnaik, N. 1953 : Study of Weekly Markets at Barpoli, Geographical Review of India, Vol. 15, pp. 19-31.
34. Patel, A.M. 1963 Rural Market of Rajshahi District, The oriental Geographer, Vol. 8, pp.140-151.
35. Tamaskar, B.G. 1966 : The Weekly Market of Sager : Damoh Plateu, The national Geographical Jouranal of India, Vol.12, pp. 38-50.
36. Kar, N.R 1960 : Urban Hierarchy and Cetral Functions Around lower West Bangal, India and their significance, proceedings of The I.G.U. Symposium in Urban Geography land, pp. 253-74.
37. Rao, V.L.S.P. 1964 : Towns of Mysore State; Indian Statistical; Institute.
38. Mandal , R.B. 1955 : Central Place Hierarchy in Bihar Plain N.G.J.I., Vol. XXI. Pt. 2, pp. 120-26.
39. Barai, D.C. 1955 : Rank Size Relationship and Spatial Distribution of Centros In Tamil Nadu.G.J.I., Vol. XXI. Pt. 2, pp. 246-56.
40. Guha, B. 1967 : The Rural Service Centres of Hoogly District, Geographical Review of India , Vol. 39, pp. 47-53.
41. Tritha, R. and Lall, 1967 : A Service Centres in Western Himalayas, the Journal of Tropical Geography, Vol. 25, pp. 58-68.
42. Mukherjee, S.P. 1968 : Commercial Activity and Market Hierarchy in a part of Eastern Himalayas , darjeeling, The National Geographical Journal of India, Vol. 14. Pp. 186-199.
43. Wanmall, S. 1968 : Hierarchy of Towns in Vidarbha, India and its Significance for Regional Planning, M.Phil (Eco.) Deptt. Of Geography ,London School of Economics (Two Parts) London, 1968.
44. Singh, K.N. 1966 : Spatial Pattern of central places in Middle Gangas Valley, The National Geographical Jouranal of India, Vol, 12.
45. Dwivedi, R.L. 1958 : Allahabad , A Study of Urban Geography , Unpublished D. Phil, Thesis, University of Allahabad.
46. Singh, R.L. 1955 : Banaras, A Study of Urban Geography Ph.D. Thesis.

47. Kayastha, S.L. 1964 : Kangra, A Himalayan Town, N.G.J.I., 1958,pp. 89-94. Also The Himalayan Beas Basin, A Study of Habitate, Economy and Society , B.H.U. Varanasi.
48. Singh, V. 1958 : Allahabad A Study of Urban Geography Ph.D. Thesis.
49. Mishra, H.N. 1975 : Urban Centres in The Umland of Allahabad, D. Phil, Thesis, University of Allahabad.
50. Sen, L.K. et al 1971 : Planning Rural Growth Centres for Integrated Development : A Studt in Myralagude Taluka, N.I.C.D. Hydrabad.
51. Mishra , R.P. 1976 : Regional Development Planning in India: A New Strategy, Vikash Publishing House, New Delhi,pp.36-37.
52. Roy, P. and Patil, B.R. 1977 : Manual for Block Leveal Planning , pp.24-34.
53. Bhat, L.S. 1976 : Micro Level Planning : A Case Study of Kaknal Area , Haryana, India ,New Delhi, p.11.
54. Bronger, D. 1978 : Central Place System , Regional Planning and Development Countries : Case in India in Transformation of Rural Habitat : A Geographical Dimension, R.L. Singh, et al (Eds.), N.G.J.I., No. 19 Varanasi, pp. 134-164.
55. Singh, G. 1973 : Service Centres : Their Function and Hierarchy, Ambla District, Punjab. Ph.D. Thesis, University of Cincinati.
56. Kumar, A.. and Sharma, N. 1977 : Rural Centres of Services : A case study of Sindega, Geographical Review of India, vol. 39, no.1.
57. Sharma, P.N. 1979 : Theoretical Framework for Identification of Growth Centres , Research Paper (Unpublished), Area Planning Division, State Planning Institute, U.P. Lucknow.
58. Mishra, B.N 1980 : Op. Cit. P. 262.
59. Gupta, B.S. and Faujdar, M.S. 1979 : Methodology for Spatial Planning Identification of Central Places , Research paper (Unpublished), The Area Planning Division, State Planning Institute, U.P. Lucknow.
60. Bhat, L.S. 1972 : Discussions in The Seminar on the Problems of Microlevel Planning , Behavioural Science and Community Development, Special Issue, Hydrabad, p. 151.
61. Rao, V.L.S.P. 1964 : Op.Cit.p.151.
62. Deshpande, C.D. : Op. Cit.p.151.
63. Mishra, B.N. 1980 : Op.Cit.p.262.
64. Ibid, P. 431.
65. Ibid, p. 432.
66. Mishra G.K. 1972 : The Centrality Oriented Connectivity of Roads in Miryalguda Taluka.A case study (Research paper)Behavioural science and Community Development Hyderabad, Vol.6. no.1.

****

अध्याय - 4

कृषि विकास हेतु स्थानिक नियोजन

कृषि पर आवश्यकताओं एवं मांगों का दबाव बढ़ती जनसंख्या के कारण बहुत तेजी से बढ़ रहा है। विकासशील देशों में जब तब कृषि क्षेत्र का उचित रूप से प्रबन्धन न किया जाएगा एवं जनसंख्या नियंत्रण उपायों को लागू न किया जाएगा तब तक जनसंख्या, कषि सम्बद्ध जो पहले से ही असन्तुलित है, वह पुनः बिगड़ता हुआ भयावह रूप धारण कर लेगा [1]।

कृषि, फसलोत्पादन एवं पशु पालन से मौलिक रूप से सम्बन्धित है जिनके द्वारा जीवन की मौलिक आवश्यकताएं जैसे - भोजन, पेय एवं वस्त्र की आपूर्ति होती है। मानव इतिहास में कृषि मुख्य किया कलाप रहा है अतः भूगोलवेत्ता के लिए यह विशेष महत्व का है। विविध एतिहासिक कालों ने क्षेत्रीय आधार पर कृषि का स्वरूप बदलता रहा है तथा इसके माध्यम से कृषकों एवं पशुपालकों ने पर्यावरण में वृहद स्तरीय परिवर्तन किए हैं, जिससे धरातल पर निर्मित सांस्कृतिक भूदृश्य का अधिकांश भाग कृषि भूदृश्य ही बन गया है [2]।

अन्य आर्थिक किया कलापों की अपेक्षा कृषि विविध भौगोलिक चरों जैसे- मौसम, जलवायु और मिट्टी की संरचना आदि से सघन रूप से जुड़ा हुआ है। लेकिन लगभग समान दशाओं में विकसित एवं अविकसित राष्ट्रों की अपेक्षा प्रतिभूमि इकाई अधिक उत्पादन लेते रहे हैं। कृषि के विकास में भौतिक कारकों के साथ-साथ सांस्कृतिक कारकों का भी बड़ा महत्व है। भौतिक पर्यावरण की सीमाओं को लांघने तथा उनके साथ समायोजन स्थापित करने की विधियां विविध देशों एवं प्रदेशों के संस्कृति के आधार पर अलग-अलग रही हैं इसीलिए विविध प्रदेशों के कृषकों में भौतिक पर्यावरण का ज्ञान विविध स्तरीय रहा है तथा उनमें परिवर्तन एवं संशोधन करने की उनकी तकनीकी क्षमता में भी अन्तर रहा है। भौतिक पर्यावरण में परिवर्तन क्षमता की इन सीमाओं के कारण कृषक अपने दृष्टिबोध के आधार पर विविध उपलब्ध विकल्पों एवं विधियों में अपने लिए अनुकूल विधि का चुनाव करते रहे हैं [3]।

भारत गांवों एवं ग्रामवासियों का देश है जिनका मुख्य पेशा कृषि है। कृषि हमारी अर्थव्यवस्था में प्रमुख क्षेत्र है तथा देश की कुल राष्टीय आय में कृषि का भाग 29 प्रतिशत है [4]। कृषि मानव जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति करती है इसीलिए इसे प्राथमिक खण्ड कहा जाता है। यह उद्योगों के लिए प्राथमिक निवेश उपलब्ध कराती है एवं निर्यात की वस्तुओं हेतु भी आधार प्रदान करता है। किसी भी देश की आर्थिक संरचना तथा उसके विकास की विशेषता एवं संभाव्यता का स्वरूप मात्र उत्पादनों की मात्रा पर ही आधारित नहीं है बल्कि उस अर्थव्यवस्था में किस प्रकार के उत्पादन होते हैं, तथा उनका वितरण किस प्रकार होता है इस पर निर्भर करता है। उदाहरण के लिए किसी

भी देश की आर्थिक विकास की दर तीव्रतर करने हेतु औघोगिक निवेश के उत्पादन पर दिया गया बल अनावश्यक कृषि क्षेत्र को क्षति पहुंचा सकता है तथा खाद्यान्नों का अभाव उत्पन्न कर सकता है। यह स्थिति विशेष रूप से सभी के मध्यम और अल्प आय वर्ग को प्रभावित करती है। अतः ऐसी सरकारें जो लोकतान्त्रिक समाजवाद की संकल्पना में विश्वास करती हैं, वे कृषि उत्पादन की मात्रा एवं गुणवत्ता की अनदेखी नहीं कर सकती है [5]। निकोल्स [6] ने सुझाव दिया कि कृषि उत्पादन में उन्नति सामान्य आर्थिक विकास के लिए एक महत्वपूर्ण योगदान देता है तथा कुछ निश्चित सीमा के अन्तर्गत यह स्वपोषित आर्थिक विकास के पूर्व की आवश्यक शर्त है।

किन्तु विविध भौतिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, प्रशासनिक, तकनीकी कारणों एवं नीतिगत सीमाओं के कारण कृषि क्षेत्र भारत में प्रत्याशित वृद्धि नहीं कर रहा है[7]। परिणामस्वरूप राष्ट्रीय आय में कृषि की हिस्सेदारी 1949-50 में 48 प्रतिशत, 1983-84 में 36.7 प्रतिशत तथा वर्तमान में 1996-97 में 29.1 प्रतिशत हो गई है [8]। लेकिन आज भी यह हमारी अर्थव्यस्था का महत्वपूर्ण अंग है क्योंकि यह मात्र भोजन खाद्यान्न का कच्चा माल का ही उत्पादन नहीं करता बल्कि जनसंख्या के एक बड़े भाग को रोजगार भी देता है। अतः इसके विकास को तीव्रतर करने हेतु तथा राष्ट्रीय विकास प्रकिया को सुदृढ़ करने के लिए बचत उत्पादन हेतु एक वृहद पूंजी की आवश्यकता है। इतिहास से यह स्पष्ट है कि कृषि विकास ने ही अन्य क्षेत्रों के तीव्र औघोगिक, परिवहन एवं अन्य प्रकार के किया कलापों के विकास में योगदान किया है [9]।

प्रादेशिक परिदृश्य :-

अध्ययन क्षेत्र 'यमुना पार प्रदेश' मध्य गंगा मैदान की भू आकृतिक इकाई है तथा भौगोलिक रूप से बुन्देलखण्ड क्षेत्र का एक उपभाग है। यह एक सघन जुताई का क्षेत्र है। इस क्षेत्र का सघन एवं अवसादित भाग बहुत बड़ी क्षेत्रीय जनसंख्या को स्थायी रूप से आश्रय देता है। गंगा, यमुना, टौंस, बेलन एवं लिपारी नदियों के द्वारा उर्वरता एवं जलोढ़युक्त अवसादित एवं संरचित भाग बड़ी जनसंख्या का भरण- पोषण करती है। तथापि प्रादेशिक तंत्र की कुछ मुख्य विशेषताएं हैं :-

1. क्षेत्र में कृषि पेशा पिछली कई शताब्दियों से स्थायी रूप से चल रहा है। वास्तव में इस क्षेत्र में विश्व के विकसित भागों की नकल से यह पेशा कुछ मूल समस्याओं- जैसे भूमि स्खलन, भूमि खनन, भूसमापन, भूअपरदन आदि से घिरता जा रहा है इसलिए क्षेत्र में कृषि की प्रणाली सन्तुलित पारिस्थितिकीय प्रणाली के विपरीत होती जा रही है।
2. देश के अन्य भागों की तरह अध्ययन क्षेत्र में भी संयुक्त परिवार का बड़ी तेजी से विखण्डन हो रहा है[10] जिससे भू अधिग्रहण की संरचना विखण्डित
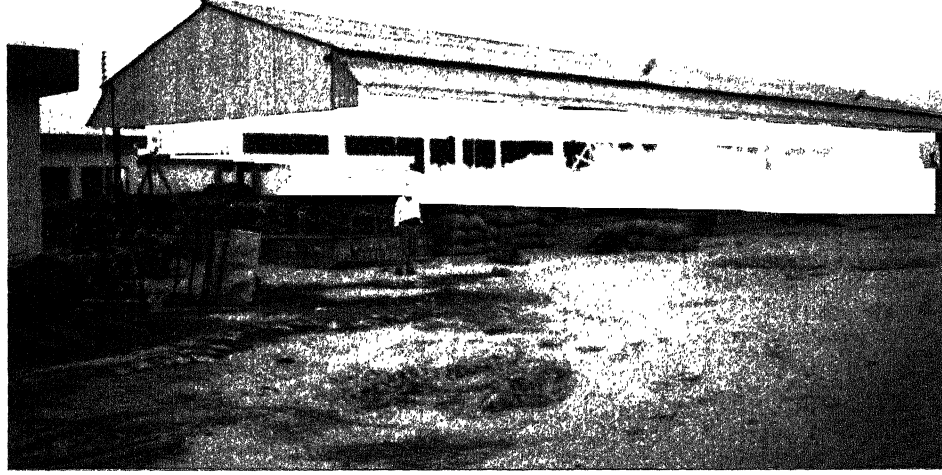
फोटो प्लेट न0 11- थोक मण्डी, 'चावल' लेड़ियारी कोरांव इलाहाबाद
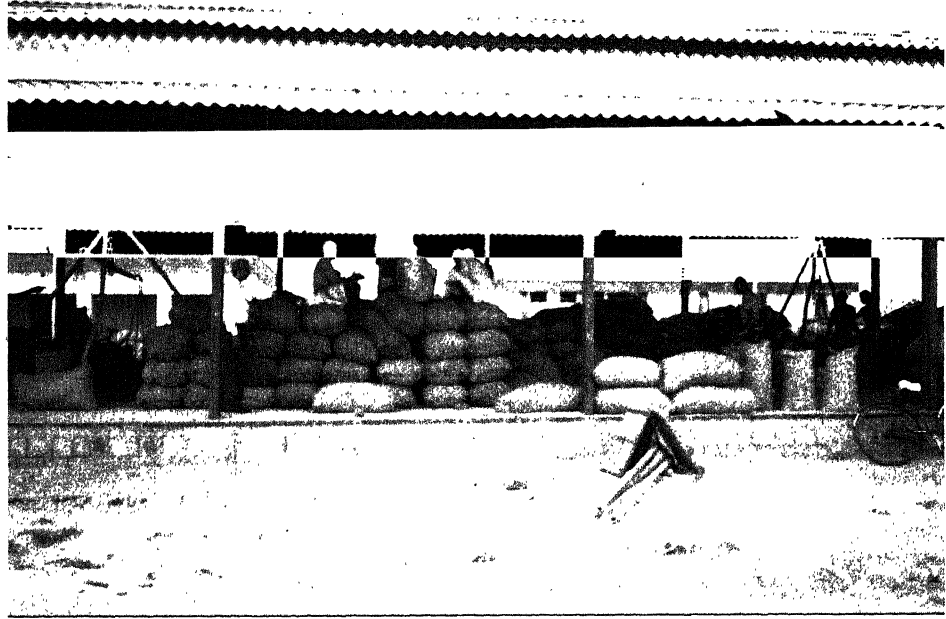
फोटो प्लेट न0 12- थोक मण्डी - 'गेहूँ' लेड़ियारी, कोरांव इलाहाबाद

होकर छोटे-छोटे प्लाटों में विशेषीकृत हो रही है। ये विखण्डित प्लाट एक उदास और निस्तेज आन्तरिक कृषि भूदृश्य की तरह लगते हैं।

3. कृषि प्रणाली में आधुनिक फार्म तकनीकी और आन्तरिक कृषि का महत्व निश्चय ही बहुत कम है जिसका प्रमाण है कि वर्तमान में यह धीरे-धीरे उठ रहा है। यह परम्परागत यन्त्र जैसे लकड़ी का हल, पांटा, कुल्हाड़ी, हंसिया, दंतारी, फावड़ा, खुरपी, खैंती आदि और परम्परागत विधियां जैसे जुताई, मड़ाई, विक्रय आदि आज भी प्रयोग हो रहा है जो निश्चित रूप से क्षेत्र में कृषि-दृश्य के प्रतिकूल है।
4. पूंजी, कुशलता और उद्यम आदि की कमी ऐसे तत्व हैं जो क्षेत्र में कृषि दक्षता और भूमि श्रम तथा भूमि-पूंजी उत्पादकता पर विपरीत प्रभाव डालते हैं।
5. सघन जीवन निर्वहन कृषि प्रणाली व्यापक व्यापारिक कृषि की अपेक्षा अधिक है क्योंकि- 1. कुल कृषि उत्पाद का 80 से 90 प्रतिशत खाद्य वस्तुएं हैं, 2. कृषि उत्पादकता का मुख्य भाग घरेलू उपयोग के लिए है एवं अत्यल्प भाग का ही व्यापार होता है। 3. अधिकांश लागत किसान स्वयं करता है इसीलिए यह परिवार आधारित कृषि तन्त्र ही है।
6. यद्यपि पशुपालन कृषि की आन्तरिक क्रिया का प्रमुख भाग है लेकिन अध्ययन क्षेत्र में इसकी भूमिका कृषि अर्थव्यवस्था में बहुत उत्साहजनक नहीं है।
7. निष्कर्ष रूप में क्षेत्र में कृषि विपणन प्रणाली का विकास अभी तक नहीं हो सका है सेवा केन्द्रों का एक जाल अवश्य है लेकिन इनमें बहुत कम कृषि विपणन सुविधाएं उपलब्ध हैं।अध्ययन क्षेत्र में केवल दो थोक मंडी समिति ही सरकारी रूप से कार्य कर रही हैं, तो क्षेत्रीय विस्तार से काफी कम हैं(फोटो प्लेट न0 11,12) इन केन्द्रों पर अधिकांशतः उपभोक्ता आधारित फुटकर व्यापार होता है।
8. सिंचाई भू उपयोग प्रतिरूप के निर्धारण तथा कृषि क्रिया कलापों के संगठन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है[11]। लेकिन क्षेत्रीय कृषि भूदृश्य अधिकांशतः विस्तारवादी जीवन निर्वाह कृषि ही है लेकिन छुटपुट रूप से सिंचित क्षेत्रों एवं सेवा केन्द्रों के समीपवर्ती क्षेत्रों में गहन कृषि भी पायी जाती है।

भू उपयोग प्रतिरूप :-

सामान्यतया किसी एक विशेष क्षेत्र में भू उपयोग प्रतिरूप अधिकतर प्रकृति से निर्धारित होता है लेकिन क्षेत्र में भू उपयोग प्रतिरूप निर्धारण में जितनी भूमिका भौतिक तत्वों की है उतनी ही सांस्कृतिक तत्वों की भी है। प्राथमिक भौतिक कारक जैसे- जलवायु, धरातलीय आकृति, मिट्टी की संरचना, भूमि की क्षमता आदि है, उसी तरह मानवीय तत्वों जैसे- क्षेत्र की अधिवासता अवधि, जनसंख्या घनत्व, सामाजिक आर्थिक कारकों विशेषकर भू-काश्तकारी

TRANS-YAMUNA REGION OF ALLAHABAD DISTRICT
LAND-UTILIZATION PATTERN
1985
A
YAMUNA RIVER
GANGA RIVER
N
0.9%
1.01%
3.09%
5.31%
5.74%
5.89%
6.05%
10.30%
59.05%
1990
B
0.17%
3.38%
4.98%
5.49%
6.18%
6.41%
10.19%
62.04%
NET SOWN AREA
NON AGRICULTURAL USE
CURRENT FALLOW
FOREST
OTHER FALLOW
CULTIVABLE WASTE
USAR AND UNCULTIVABLE WASTE
TREE AND GROVES
PASTURES
1995
C
3.04%
4.99%
5.10%
6.50%
6.94%
10.78%
58.69%
10 0 10 20
km
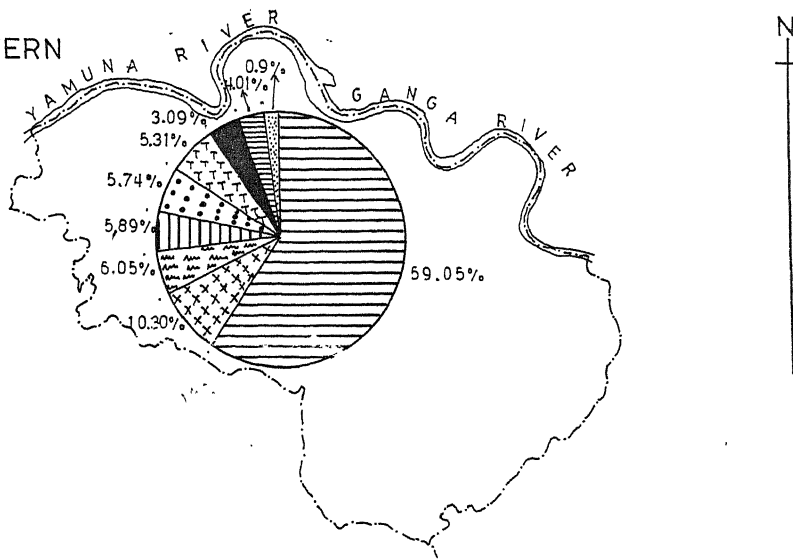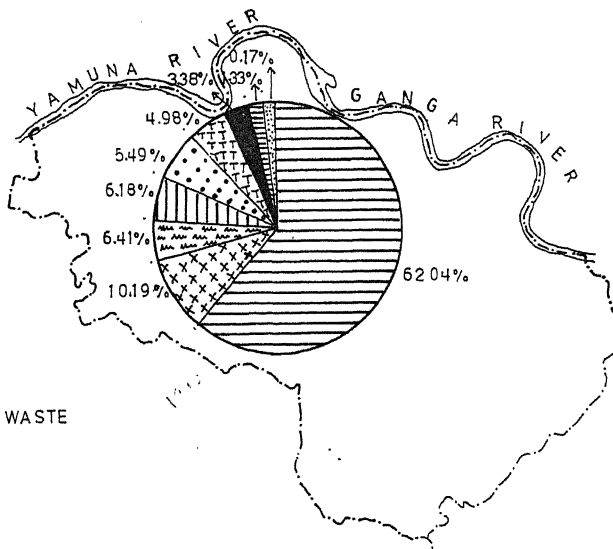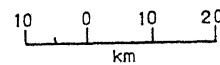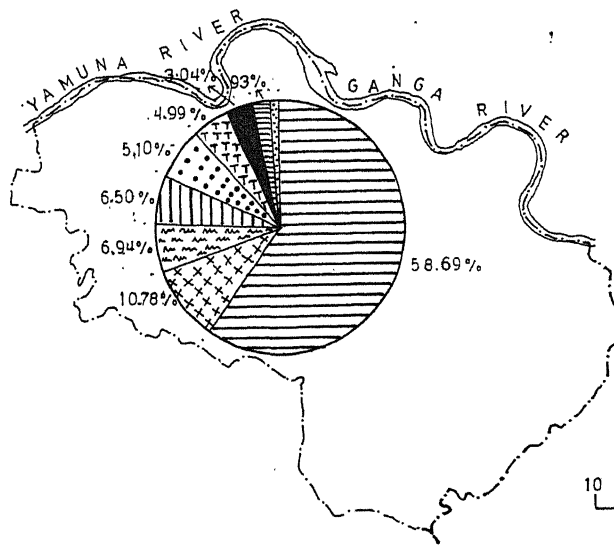
Fig.4.1

प्रणाली और लोगों का तकनीकी स्तर आदि जो भू-उपयोग क्षमता के पर्याप्त अंश के भौतिक विस्तार को निर्धारित करता है[12]।

यमुना पार प्रदेश भू-सांस्कृतिक तत्वों का एक सम्मिश्रित प्रतिरूप प्रस्तुत करता है जो क्षेत्र में एक विविध भू-उपयोग प्रतिरूप के विकास के लिए वृहद रूप से सहयोग करता है। भू-उपयोग के लिए कुल प्रतिवेदित क्षेत्र 301878 हेक्टे. तालिका संख्यां 4.1 और मानचित्र 4.1 एवं 4.2 में सुस्पष्ट रूप से शुद्ध कृषित क्षेत्र 58.69 प्रतिशत के एक आकारीय भाग से घिरा हुआ है। कृषि योग्य परती भूमि एवं वन का विस्तार 6.94 प्रतिशत है जबकि कृषि योग्य बंजर भूमि एवं वन का विस्तार 4.99 एवं 6.50 प्रतिशत भाग को घेरे हुए है। अतिरिक्त उपयोग में लायी गई भूमि 10.78 प्रतिशत है जबकि क्षेत्र में वृक्ष एवं अन्य बागों के अन्तर्गत 0.93 प्रतिशत भूमि ही है। फिर भी इस क्षेत्र में भू-उपयोग प्रतिरूप में बहुत हल्का कालिक और स्थानिक अन्तर पाया जाता है, जो तालिका संख्या 4.1 और मानचित्र 4.1 एवं 4.2 से भी स्पष्ट होता है।

Table – 4.1

Land Use Pattern in Trans-Yamuna Region of Allahabad District 1995-96 (in Hectares).

Sl. No.	Types of Land Use	1985		1990		1995	
		Area In Hectare	%	Area in Hectare	%	Area in Hectare	%
1.	Total Reported Area	300489		300184		301878	
2.	Forest	19744	6.57	19253	6.41	19628	6.50
3.	Cultivable Waste	15985	5.31	17375	5.78	15081	4.99
4.	Current Fallow	17707	5.89	14959	4.98	20961	6.94
5.	Others Fallow	17276	5.74	16505	5.49	15402	5.10
6.	Usar and Cultivable Area	9291	3.09	10169	3.38	9188	3.04
7.	Non Agricultural Area	30969	10.30	30616	10.19	32549	10.78
8.	Pastures	279	0.09	536	0.17	1195	0.39
9.	Trees and Groves	3235	1.07	4006	1.33	2824	0.93
10.	Net Shown Area	177439	59.05	186236	62.04	177188	58.69
11.	Double Cropped Area	45512	15.14	60217	20.06	72097	23.88
12.	Total Shown Area	232481	7736	246453	82.10	257268	85.22

Source – District Sankhkiya Patrika 1985,1990,1995.

TRANS YAMUNA REGION
OF
ALLAHABAD DISTRICT
AGRICULTURAL AREA
1995
N
YAMUNA RIVER
GANGA RIVER
TONS RIVER
BELAN RIVER
INDEX
Agricultural Area
Rivers
Roads
10
0
10
km
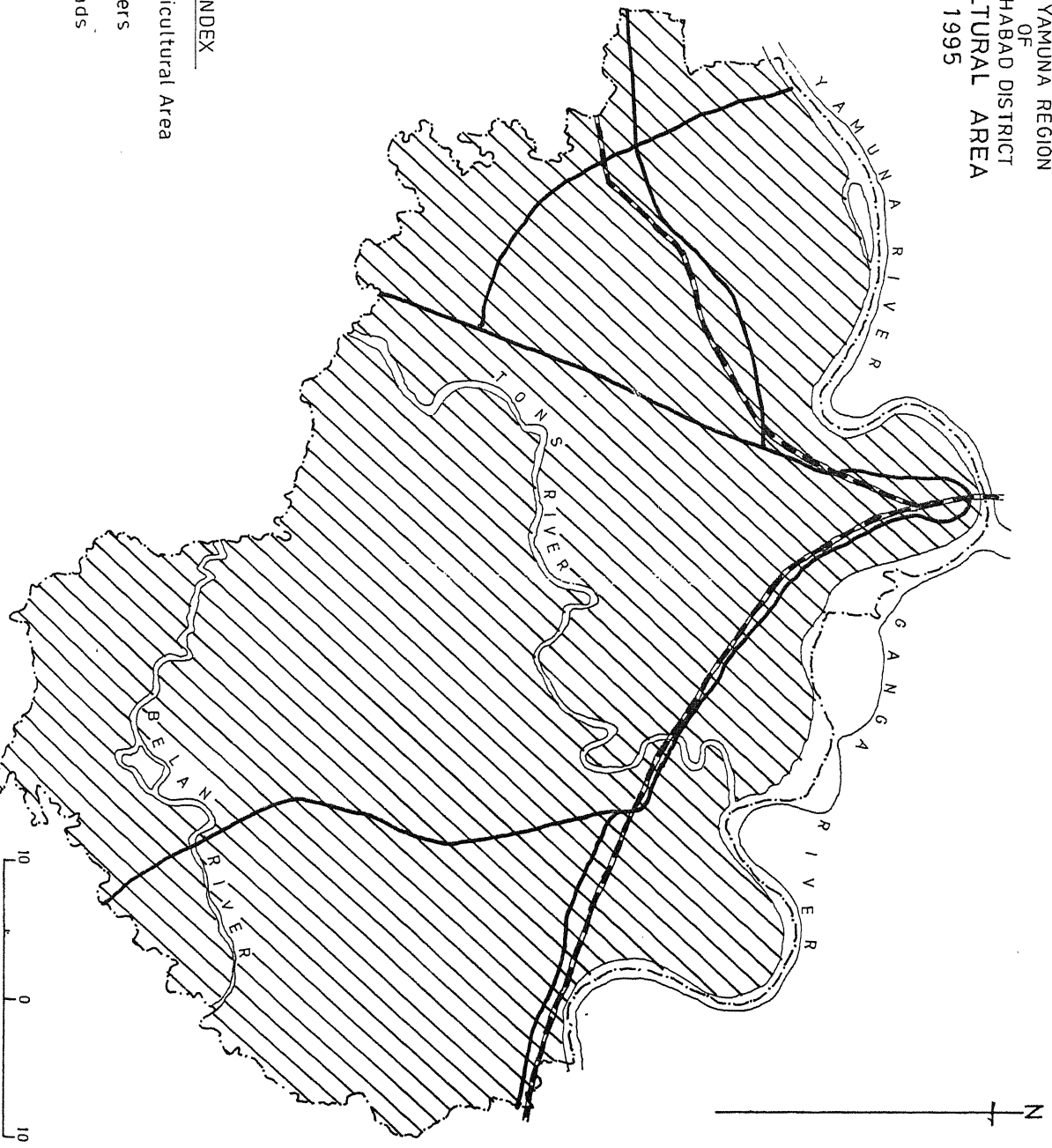
भू-जोत प्रतिरूप :-

किसी प्रदेश की भौतिक प्रगति वहाँ के कुशल एवं प्रगतिशील अर्थव्यवस्था द्वारा ही संभव है जो अंततः कृषि क्षेत्र पर ही आधारित होती है। एक वृहद कृषि भूमि जोत इस क्षेत्र में एक अनिवार्य सहयोगी कारक है जो किसी भी क्षेत्र को प्रगतिशील रूप प्रदान करने में सहयोग प्रदान करता है। अपेक्षाकृत बड़े खेत कृषकों को विविध कृषि कार्यों जैसे- जुताई, पाटा, सिंचाई आदि में सीधा सहयोग करते हैं तथा किसान को अपना पूरा श्रम एवं पूंजी निवेश करने हेतु प्रोत्साहित करते हैं [13]।

अध्ययन क्षेत्र में भू-जोत जो तालिका संख्या 4.2 और 4.3 से स्पष्ट है , एक पिछड़ी अर्थव्यवस्था को दर्शाती है क्योंकि 91.89 प्रतिशत भाग छोटी जोतों 2 हेक्टेयर तक कम के अन्तर्गत आता है जबकि बड़ी भू-जोत का भाग 1.48 प्रतिशत ही है। अन्य भू-जोत आकार 2 से 5 हेक्ट. के अन्तर्गत 6.6 प्रतिशत भाग ही आता है तथापि अध्ययन क्षेत्र में भू-जोतों के बंटवारे की सहगामी प्रकिया और भूमि पर बढ़ती जनसंख्या के दबाव के कारण विशेषतया छोटी जोतों के पक्ष में 1985 से 1995 तक भू-जोतों के प्रतिरूप में बहुत हल्का बदलाव आया है[14]।

Table – 4.2

Land Holding Pattern 1995-96.

Sl. No.	Size of Holdings (in Hectares)	Numbers	Area (in Hectare)	% of total Land Holdings
1.	0-1	220339	78859	79.43
2.	1-2	34580	46853	12.46
3.	2-3	10956	26097	3.94
4.	3-5	7392	27175	2.66
5.	>5	4131	36549	1.49
Total		277398	215533	100.00

Land Holding Pattern 1990-91.

Sl. No.	Size of Holdings (in Hectares)	Numbers	Area (in Hectare)	% of total Land Holdings
1.	0-1	190169	42375	77.50
2.	1-2	32421	44198	13.21
3.	2-3	10813	33701	4.40
4.	3-5	7501	27794	3.05
5.	>5	4474	38850	1.82
Total		245378	186918	100.00

Land Holding Pattern 1985-86.

Sl. No.	Size of Holdings (in Hectares)	Numbers	Area (in Hoctare)	% of total Land Holdings
1.	0-1	170567	58515	74.87
2.	1-2	32694	43648	14.35
3.	2-3	11369	26630	4.99
4.	3-5	7956	29111	3.49
5.	>5	5217	47187	2.29
Total		227803	205091	100.00

Source :-

The District Statistical Bulletins ,Allahabad,State Planning Institute U.P. 1995,1990,1985.

Table –4.3

Agricultural Population in Trans –Yamuna Region of Allahabad District.

Sl. No.	Items	1971	1981	1991	1995
1.	Cultivators	16546	143590	142860	169335
2.	Agricultural Labourers	81213	79199	78058	220445
3.	Animal Husbandry and Tree Plantation	1803	1725	1573	2302
4.	Others	40356	37703	30906	23318

Source :-
The District Statistical Bulletins ,Allahabad,State Planning Institute U.P. 1971, 1981, 1991, 1995.

कृषि विकास में सेवा केन्द्रों की भूमिका :-

कृषि खण्डों के विकास की प्रक्रिया विविध स्तरों से होकर गुजरती है। कभी-कभी यह धीमी गति एवं कभी कभी तीव्र गति वाली होती है। सतत एवं सुदृढ़ विकास प्रक्रिया कृषि क्षेत्र में आशातीत उपलब्धियां प्रदान करती है। सतत विकास प्रक्रिया को प्रोत्साहित करने वाले कारकों ने शोध क्षेत्र के विविध सेवा केन्द्रों पर कृषि सेवाओं एवं कार्यों की उपयुक्त स्थिति है। कृषकों के निकटतम सेवा केन्द्रों पर उपलब्ध कृषि सुविधाओं के कारण समय, लागत एवं उर्जा लागत न्यूनतम होती है तथा कृषक उपलब्ध सेवाओं के उपयोग हेतु भी प्रोत्साहित होते हैं। अतः विविध सेवा केन्द्रों पर कृषि की विविध कार्यों एवं सेवाओं का स्थानिक संगठन कृषि भूगोल का एक महत्वपूर्ण विषय है। शोध क्षेत्र के कृषि विकास का विवेचन निम्नवत् है:

फसल प्रतिरूप :-

अध्ययन क्षेत्रों का शस्य प्रतिरूप विकासशील अर्थव्यवस्था का द्योतक है क्योंकि ज्यादातर कृषि भूमि खाद्यान्न फसलों के अन्तर्गत है, जो अधिकांश स्थानीय उपभोग में खपत होता है जिसमें मुद्रादायी फसलों का प्रतिशत नगण्य है। यहाँ पर तीन फसल ऋतुएं - रबी, खरीफ एवं जायद हैं किन्तु पहली दो क्षेत्रीय कृषि अर्थव्यवस्था में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती हैं। शीघ्र उत्पन्न होने वाली 'भदई' फसलें जैसे- चावल, ज्वार, मक्का, सॉवा आदि गरीब लोगों

TRANS YAMUNA REGION OF ALLAHABAD DISTRICT
AGRICULTURAL FUNCTIONS AND SERVICES
YAMUNA RIVER
GANGA RIVER
N
NAINI
Chaka
Jasra
Bara
Karchhana
Kaundhiara
Sirsa
Shankargarh
Jari
Uruva
Meja
Bharatganj
Manda
Koraun
LAND DEVELOPMENT BANK
DISTRICT CO-OPERATIVE BANK
ARTIFICIAL INSEMINATION CENTRE
VET. HOSPITAL
STOCK MAN CENTRE
SEED & FERTILIZER DISTRIBUTION
AGRICULTURAL IMPLEMEN DISTRIBUTION
AGRICULTURAL CO-OPRATIVE SOCIETY
BLOCK HEAD QUATER
COLD STORAGE
MANDI SAMITI
GO-DOWNS
WEEKLY MARKET
RETAIL DAILY MARKET
WHOLE-SALE REGULATED MARKET
10 0 10
km
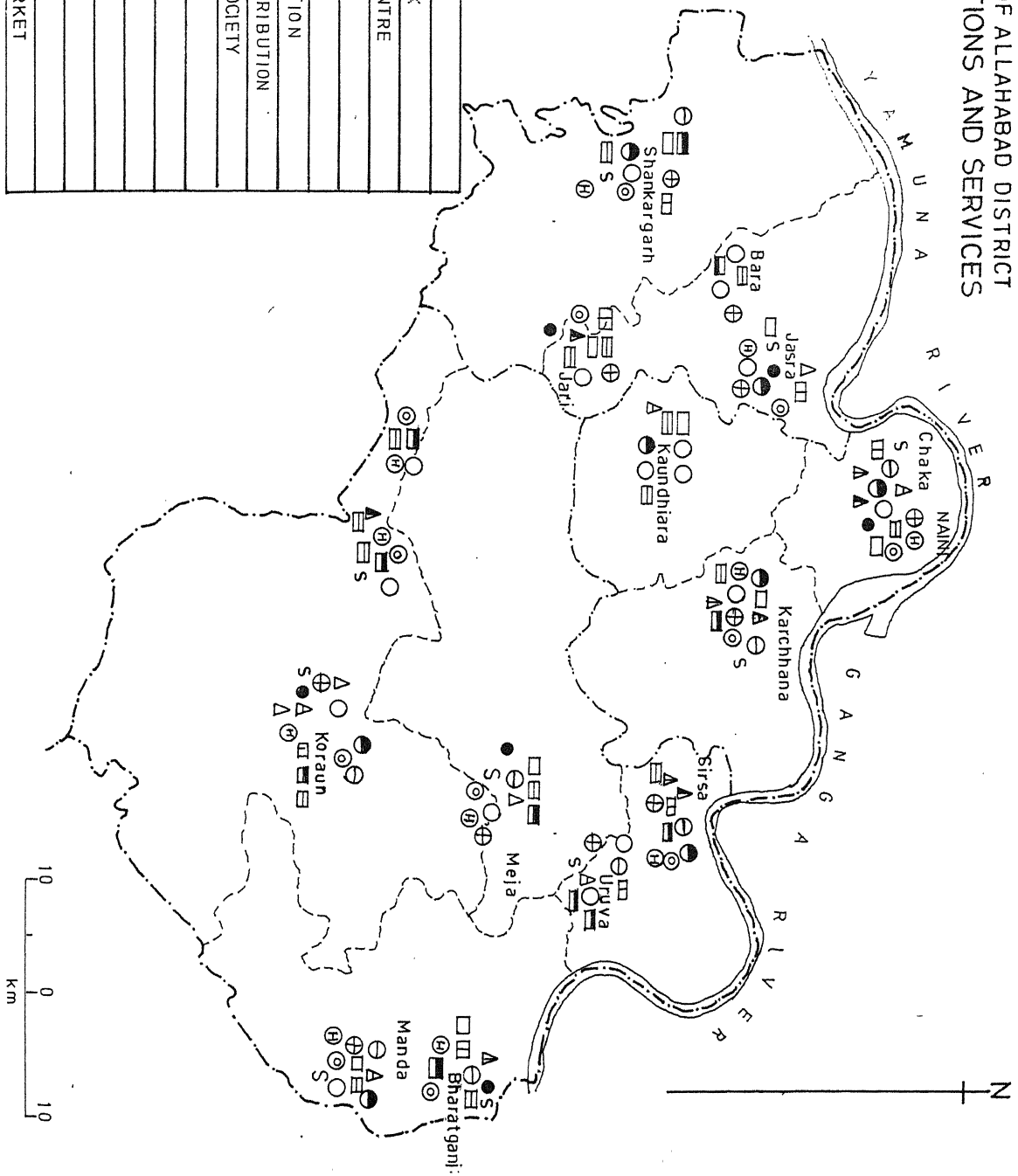
फोटो प्लेट न0 13-धान कृषि लेहड़ी गॉव, उरूवा इलाहाबाद

फोटो प्लेट न0 14- बाजरा अरहर मिश्रित कृषि चितौरी ग्राम,
जसरा
इलाहाबाद

की दैनिक आहार प्रणाली में प्रधान भोज्य पदार्थ हैं जो संकट में लोगों को सहयोग करती हैं[15]।

खरीफ ऋतु फसलें :-

अध्ययन क्षेत्र में खरीफ फसलें साढ़े चार माह- जुलाई से शुरू होकर मध्य नवम्बर तक होता है। क्षेत्र में आने वाली खरीफ की प्रमुख फसलें- धान, बाजरा, ज्वार, मक्का, मूँग, उर्द, अरहर इत्यादि हैं। रबी की तुलना में खरीफ फसल की उत्पादन कीमत वस्तुतः कम होती है इसलिए इनमें बीज, उर्वरक, और अन्य निवेश आदि की भी कम मात्रा में आवश्यकता होती है एवं वर्षा के समय से हो जाने पर सिंचाई की भी आवश्यकता नहीं होती है। सम्पूर्ण क्षेत्र में कुल फसली क्षेत्र के 41.8 प्रतिशत भाग पर खरीफ फसलें उगाई जाती हैं।(फोटो प्लेट न0 13)

खरीफ फसलों के शस्य प्रतिरूप की स्थानीय वैविध्य तालिका संख्या 4.4 से स्पष्ट होती है जो कि एक मिश्रित कृषि प्रतिरूप को दर्शित करती है। क्षेत्र में धान का सबसे ज्यादा क्षेत्रफल मेजा में 11568 हेक्ट. है जबकि सबसे कम क्षेत्रफल कोरांव ब्लाक में 2400 हेक्ट. एवं सबसे कम क्षेत्रफल चाका ब्लाक 309 हेक्ट. है। बाजरा एवं अरहर का उच्च क्षेत्रफल 2086 हेक्ट. करछना ब्लाक में सबसे कम क्षेत्रफल कोरांव ब्लाक में है। सम्पूर्ण क्षेत्र की तालिका समयानुसार देखने से स्पष्ट होता है कि 1985 से 1995 के बीच में धान का क्षेत्रफल लगातार तेजी से बढ़ा है जबकि ज्वार, बाजरा एवं अरहर का सम्पूर्ण क्षेत्रफल घटता एवं बढ़ता रहा है।(फोटो प्लेट न0 14)

Table –4.4

Cropping Pattern of Kharif Season in Trans –Yamuna Region of Allahabad District ,1995-96 (in Hectares).

Sl. No.	Blocks	Paddy	Jwar	Bajara	Maize	Arher
1.	Jasra	7138	746	1381	-	641
2.	Shankergarh	8727	490	733	-	972
3.	Chaka	1726	309	1097	-	640
4.	Karchhana	3958	535	2086	-	1336
5.	Kaudhiara	8244	602	356	-	518
6.	Uruva	3578	396	1619	-	628
7.	Meja	11568	684	1135	01	993
8.	Koroan	26099	2400	556	63	254
9	Monda	7205	407	1002	13	837
	Total	78243	6569	9965	77	6819
		1991-92				
	Total	60755	13082	16462	-	5819
		1985-86				
	Total	55373	9690	16193	92	9069

Source :-

The District Statistical Bulletins ,Allahabad,State Planning Institute U.P. 1985, 1991, 1995.

TRANS-YAMUNA REGION OF ALLAHABAD DISTIRICT
(A)
NET IRRIGATED AREA
1995-96
N
YAMUNA RIVER
GANGA RIVER
NET IRRIGATED AREA IN PER CENT
> 60
50 — 60
40 — 50
10 0 10 20
km
(B)
TOTAL IRRIGATED AREA
1995-96
YAMUNA RIVER
GANGA RIVER
TOTAL IRRIGATED AREA IN PERCENT
> 70
50 — 70
30 — 50
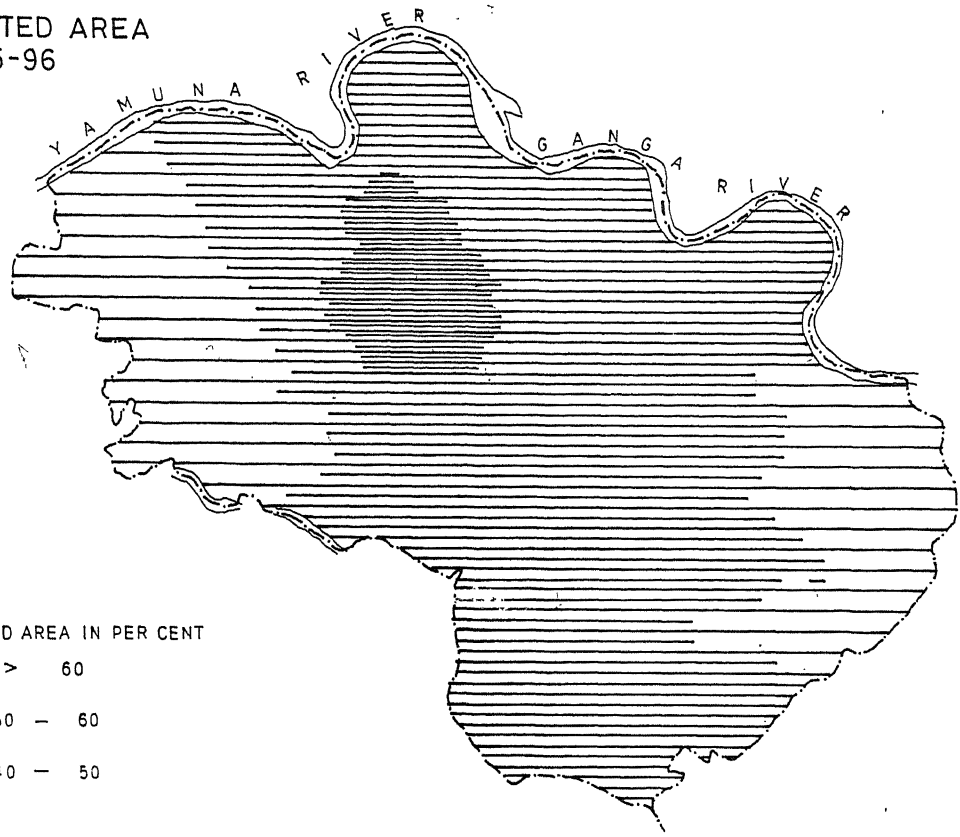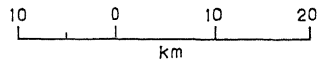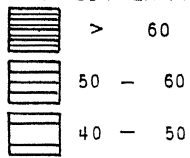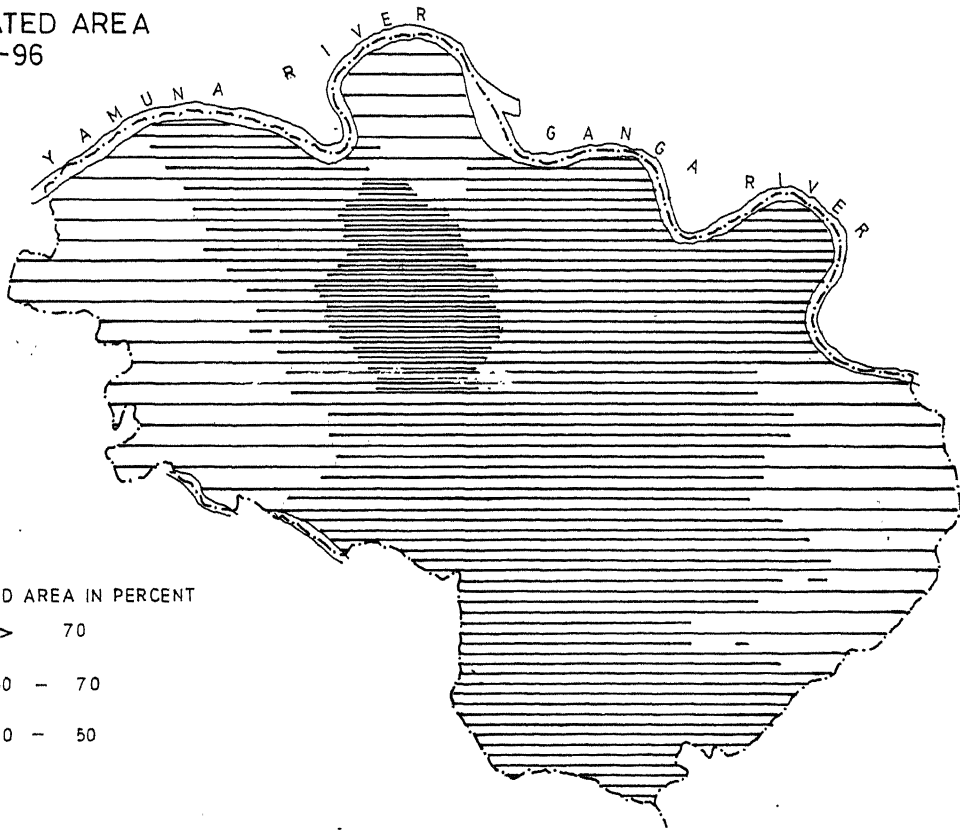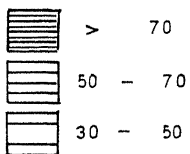
Fig. 4.4

रबी फसलें :-

रबी फसलों का समय मध्य नवम्बर से शुरू होकर अन्तिम मार्च तक चलता है इसलिए रबी फसल की आन्तरिक प्रकिया अर्थात जुताई एवं मड़ाई साढ़े चार मास तक समाप्त होती है। बुवाई के लिए खेतों की जुताई अन्तिम अक्टूबर से मध्य नवम्बर तक लगातार चलती है किन्तु प्रमुख रबी फसल जैसे गेहूँ, जौ, चना आदि की बुवाई सामान्यतया नवम्बर के प्रथम एवं द्वितीय सप्ताह में की जाती है। खरीफ फसल से भिन्न रबी की फसलों के लिए खेतों की तैयारी में अत्यधिक सिंचाई की जरूरत होती है और फसल के उगने तक भूमि के उपरी भाग में उच्च आर्द्रता आवश्यक होती है। अध्ययन क्षेत्र में यह तैयारी 'पलेवा' कही जाती है जिसका अर्थ खेत के उपरी सतह में हल्का जल भरना होता है। रबी फसलों की वास्तविक बुवाई मध्य नवम्बर से सम्पूर्ण दिसम्बर तक मानी जाती है। कभी कभी खरीफ की फसल देर से कटने के कारण सिंचाई की समस्या हो जाती है। रबी फसलों में गेहूं, जौ, चना, सरसों, आलू, मसूर आदि मुख्य फसलें हैं। अध्ययन क्षेत्र के कुल फसली क्षेत्र के 57.8 प्रतिशत भाग पर रबी फसलें उगाई जाती है। गेहूँ अध्ययन क्षेत्र की मुख्य फसल है। रबी फसलों का स्थानीय प्रतिरूप देखने से तालिका 4.5 स्पष्ट होता है कि गेहूँ का सर्वाधिक क्षेत्रफल कोरांव 25736 हे0 उरूवा 13292 हे0 एवं शंकरगढ़ में 111443 हे0 पाया जाता है एवं सबसे कम क्षेत्रफल चाका ब्लाक 219 हे0 है। चना में सर्वाधिक क्षेत्रफल कोरांव ब्लाक में 8545 हे0 एवं सबसे कम क्षेत्रफल चाका ब्लाक 521 हे0 में पाया जाता है।

1985 से 1995 तक की समयानुसार तालिका देखने से स्पष्ट होता है कि गेहूं का क्षेत्रफल लगातार तजी से बढ़ा है एवं अन्य फसलों का क्षेत्रफल घटता-बढ़ता रहा है। तालिका 4.5

Table –4.5
Cropping Pattern of Rabi Season in Trans –Yamuna Region Allahabad District ,1995-96 (in Hectares).

Sl. No.	Blocks	Wheat	Barley	Gram	Potato
1.	Jasra	9193	1075	2592	96
2.	Shankergarh	11443	1700	4712	10
3.	Chaka	4114	219	521	158
4.	Karchhana	8458	1742	2068	324
5.	Kaudhiara	9514	208	895	227
6.	Uruva	6031	339	1570	405
7.	Meja	13292	1298	4300	146
8.	Koroan	25736	1993	8545	114
9	Monda	8588	332	2581	206
	Total	96369	8906	27784	1686
		1991-92			
	Total	92204	13082	25982	1768
		1985-86			
	Total	81383	17706	33344	1335

Source :-

The District Statistical Bulletins ,Allahabad,State Planning Institute U.P. 1985, 1991, 1995.

TRANS-YAMUNA REGION OF ALLAHABAD DISTRICT
CROPPING INTENSITY PATTERN
1985-86
A
YAMUNA RIVER
GANGA RIVER
N
CROPPING INTENSITY
HIGH > 150
MEDIUM 125 - 150
LOW 100 - 125
CROPPING INTENSITY PATTERN
1990-91
B
YAMUNA RIVER
GANGA RIVER
CROPPING INTENSITY
HIGH > 150
MEDIUM 125 - 150
LOW 100 - 125
CROPPING INTENSITY PATTERN
1995 96
C
YAMUNA RIVER
GANGA RIVER
CROPPING INTENSITY
HIGH > 150
MEDIU M 125 - 150
LOW 100 - 125
10 0 10 20
km
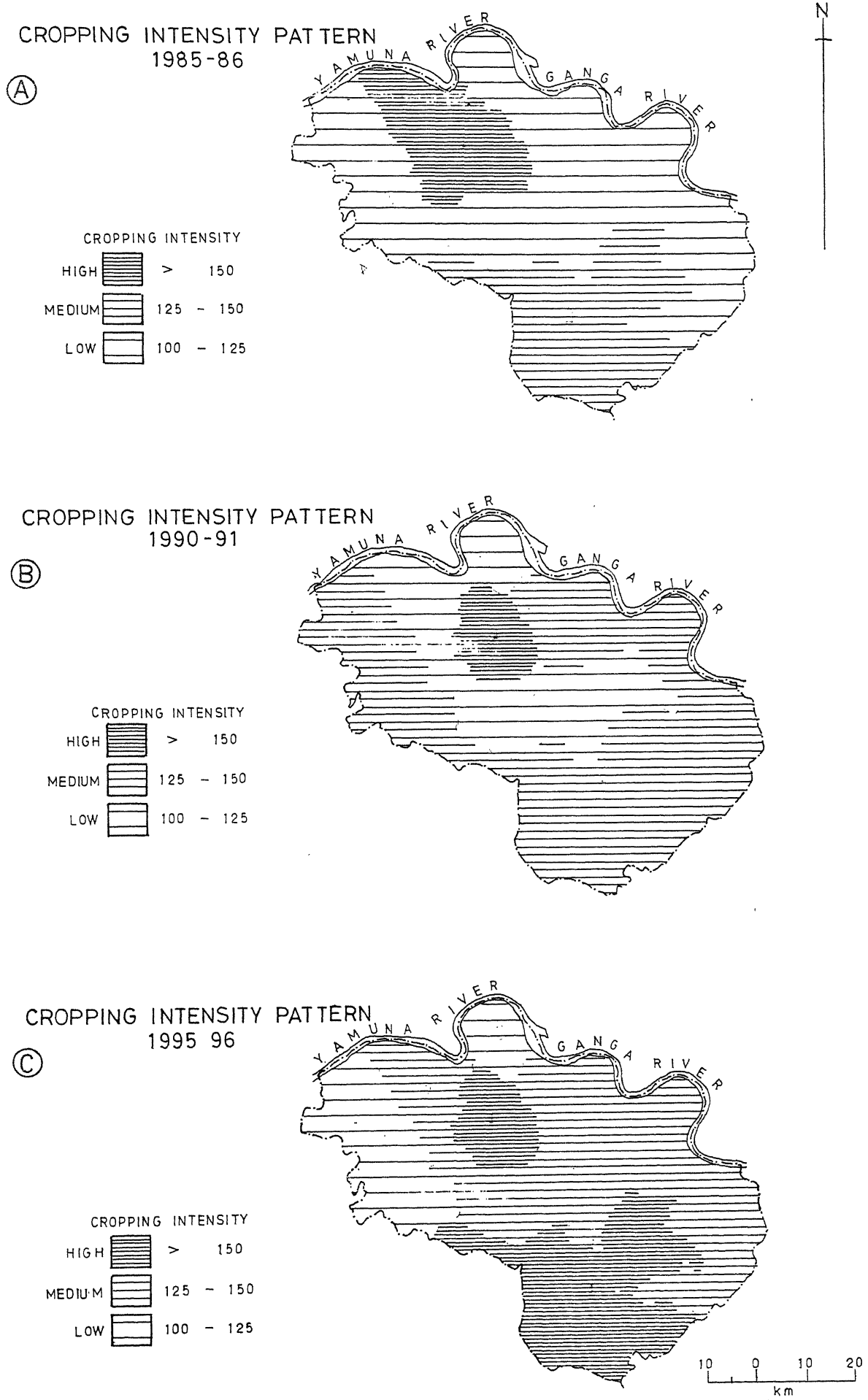
Fig. 4.5

जायद फसल :-

यह फसल अप्रैल से जून तक का होती है। जायद की प्रमुख फसलें मक्का, सांवा, मूंग, उर्द तथा कई प्रकार की सब्जियां आदि हैं जो कुल मिलाकर 0.5 प्रतिशत कुल फसली क्षेत्र का घेरे हुए है। इस फसल चक का सम्पूर्ण कृषित भाग नहर, कूप ट्यूबवेल आदि द्वारा सींचा जाता है। जायद फसल का क्षेत्रफल ज्यादातर नगण्य है किन्तु पिछले कई वर्षो से सेवा केन्द्रों में जनसंख्या आकार एवं कार्यात्मक बहुलता के कारण इन फसलों के क्षेत्रफल में वृद्धि हुई है। जो स्पष्ट रूप से सेवा केन्द्रों के चारों ओर संकेन्द्रित है। इसे देखने पर यह प्रमाणित होता है कि सेवा केन्द्रों ने अपनें प्रभावित क्षेत्रों में जायद फसल की उन्नति में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। धान, गेहूं आदि के क्षेत्रफल में धान, गेहूँ, आलू आदि के क्षेत्रफल में वृद्धि अध्ययन क्षेत्र में फसल प्रतिरूप के प्रभाव में सेवा केन्द्रों की धनात्मक भूमिका प्रमाणित करता है क्योंकि इन फसलों से सेवा केन्द्रों के और उनमें बसी जनसंख्या वृद्धि की बढ़ती मांगों की प्रश्नात्मक एवं स्थितिपथ्य पूर्ति होती है।

उन्नतशील बीज, उर्वरक एवं यन्त्रों का प्रयोग :-

बीज कृषि किया का प्राथमिक निवेश है। बीज का गुण पौधों के उगने एवं वृद्धि के साथ ही साथ फसलों की उत्पादन एवं उत्पादकता निर्धारित करता है। फसलों के उत्तम अंकुरण में वृद्धि और उत्पादकता में परिष्कृत और एच.वाई.वी. बीज सामान्य बीजों से बिल्कुल विपरीत होता है। एक कृषि क्षेत्र में अच्छी पैदावार के लिए इसका प्रयोग उपयोगी होता है। अध्ययन क्षेत्र में 'उन्नतशील बीज' का प्रयोग और वितरण 1985 से 1995 तक लगातार बढ़ा है जो तालिका 6.6 ए से स्पष्ट होता है। उन्नतशील बीजों का वितरण नैनी, शंकरगढ़, चाका, जसरा, मेजा, सिरसा, भारतगंज, कोरांव आदि सेवा केन्द्रों पर नियमित होता है। (तालिका 4.7)

Table –4.6(A)

H.Y.V. Seeds and Fertilizers Stores in Trans –Yamuna Region, Allahabad District ,1995-96 (in Hectares).

Sl. No.	Blocks	Seeds Stores		Fertilizers Stores	
		Nos.	Capacity(M.T.)	Nos.	Capacity(M.T.)
1.	Jasra	10	246	8	1400
2.	Shankergarh	9	310	11	1100
3.	Chaka	9	188	3	300
4.	Karchhana	9	365	9	1900
5.	Kaudhiara	3	83	6	600
6.	Uruva	8	161	6	600
7.	Meja	8	161	10	1100
8.	Koroan	8	198	7	700
9	Monda	8	186	11	1100

Source :-

The District Statistical Bulletins ,Allahabad,State Planning Institute U.P. 1995-96.

Table –4.6(B)

Use of Fertilizers in Trans –Yamuna Region, Allahabad District .

Sl. No.	Blocks	Kg/ Hectare		
		85-86	90-91	95-96
1.	Jasra	53.0	66.92	96.0
2.	Shankergarh	23.4	38.63	56.64
3.	Chaka	131.9	166.30	151.47
4.	Karchhana	58.9	73.36	102.93
5.	Kaudhiara	58.1	80.26	102.90
6.	Uruva	101.4	152.89	150.14
7.	Meja	19.4	54.78	63.63
8.	Koroan	19.4	28.15	42.49
9	Monda	45.9	70.64	92.51
	Total Average	56.82	81.32	95.41

Source :-

The District Statistical Bulletins ,Allahabad,State Planning Institute U.P. 1985-86, 1990-91, 1995-96.

Table –4.7

Distribution of Fertilizers in Trans –Yamuna Region Of Allahabad , District ,1995-96 (In M.T.) .

Sl. No.	Blocks	N.	P.	K.
1.	Jasra	1980	414	97
2.	Shankergarh	1417	282	69
3.	Chaka	1092	327	100
4.	Karchhana	1751	387	78
5.	Kaudhiara	1887	328	75
6.	Uruva	1917	338	78
7.	Meja	1777	470	60
8.	Koroan	2291	636	52
9	Monda	1848	338	71
	Total Average	15960	3520	680

Source :-

The District Statistical Bulletins ,Allahabad,State Planning Institute U.P.

खाद और बीज का प्रयोग मिट्टी में उसी प्रकार सम्बन्धित होता है जैसे शरीर को भोजन पुष्ट करता है वैसे ही खाद एवं उर्वरक अच्छी पोषित मृदा के लिए सर्वाधिक उपयोगी होती है [16]। चूँकि भूमि सीमित है, अतः इस समय खेतों में अधिक उर्वरता एवं एवं घर परिवार में कम सन्तानोत्पत्ति को उच्च प्राथमिकता देने की आवश्यकता है [17]। सीमित कृषि योग्य भूमि और जनसंख्या के उच्च दबाव के कारण फसल के प्रति एकड़ उपजों में वृद्धि अनिवार्य हो गई है। हरी खाद अथवा पशु खाद मिट्टियों की भौतिक दशाओं में स्पष्ट रूप से सुधार करता है जब कि रासायनिक उर्वरक मिट्टी के नाइट्रोजन, फासफोरस, पोटास आदि आवश्यक पोषक तत्वों की कमी पूरा करते हैं [18]। अतः कहा जा सकता है कि क्षेत्र में मिट्टी की अच्छी फसलों के उत्पादन के लिए कई खादों का प्रयोग आवश्यक है।

तालिका संख्या 4.6 बी देखने से स्पष्ट होता है कि रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग 1985 में 56 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर से बढ़कर 1995 में 95 कि. ग्रा. प्रति हेक्टेयर हो गया है। इस तथ्य की पुष्टि नाइट्रोजन, फास्फोरिक एवं पोटैशिक उर्वरकों का विविध ब्लाकों में वितरण तालिका 4.7 से स्पष्ट है। साथ ही मानचित्र 4.3 में विभिन्न सेवा केन्द्रों के वितरण बिन्दु दर्शाए गए हैं।

सामान्यतया कृषि यन्त्रों के उपयोग में पूरे वर्ष वृद्धि हुई है और विभिन्न सेवा केन्द्रों पर उनका वितरण हुआ है। (तालिका 4.8) लेकिन यह एक छोटी आवश्यकता की पूर्ति करता है तथापि यमुना पार क्षेत्र में एच.वाई.बी. बीजों, रासायनिक उर्वरकों तथा यन्त्रों के निधिवत प्रयोग में एक नियंत्रित भूमिका अदा हुई है।

Table –4.8

Use and Availability ofAgricultural Implement in Trans –Yamuna Region of Allahabad,District, 1995-96.

Sl. No.	Blocks	Plough Wooden	Plough Iron	Sprayer	Threshing Machine	Tractor
1.	Jasra	9473	1952	135	763	178
2.	Shankergarh	14708	2825	244	511	108
3.	Chaka	4342	1023	143	1503	52
4.	Karchhana	5905	1505	214	710	151
5.	Kaudhiara	6801	1421	99	450	72
6.	Uruva	4005	363	313	1324	155
7.	Meja	10762	1209	192	1313	180
8.	Koroan	15121	1995	155	1462	309
9	Monda	9927	1201	180	819	185
	Total Average	81044	13494	1695	8855	1390

Source :-

The District Statistical Bulletins ,Allahabad,State Planning Institute U.P.1995-96 .
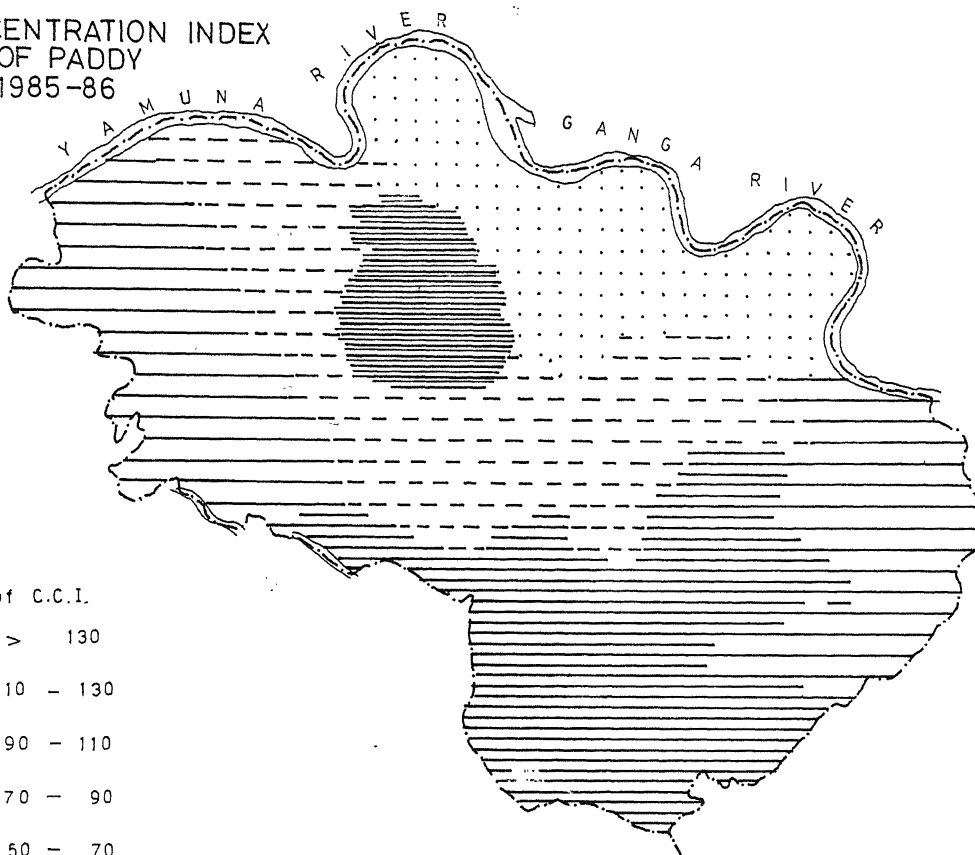
TRANS-YAMUNA REGION OF ALLAHABAD DISTRICT
CROP CONCENTRATION INDEX
OF PADDY
1985-86
YAMUNA RIVER
GANGA RIVER
N
Value of C.C.I.
VERY HIGH > 130
HIGH 110 - 130
MEDIUM 90 - 110
LOW 70 - 90
VERY LOW 50 - 70
10 0 10 20
km
CROP CONCENTRATION INDEX
OF PADDY
1995-96
YAMUNA RIVER
GANGA RIVER
Value of C.C.I.
VERY HIGH > 110
HIGH 95 - 110
MEDIUM 80 - 95
LOW 65 - 80
VERY LOW 50 - 65
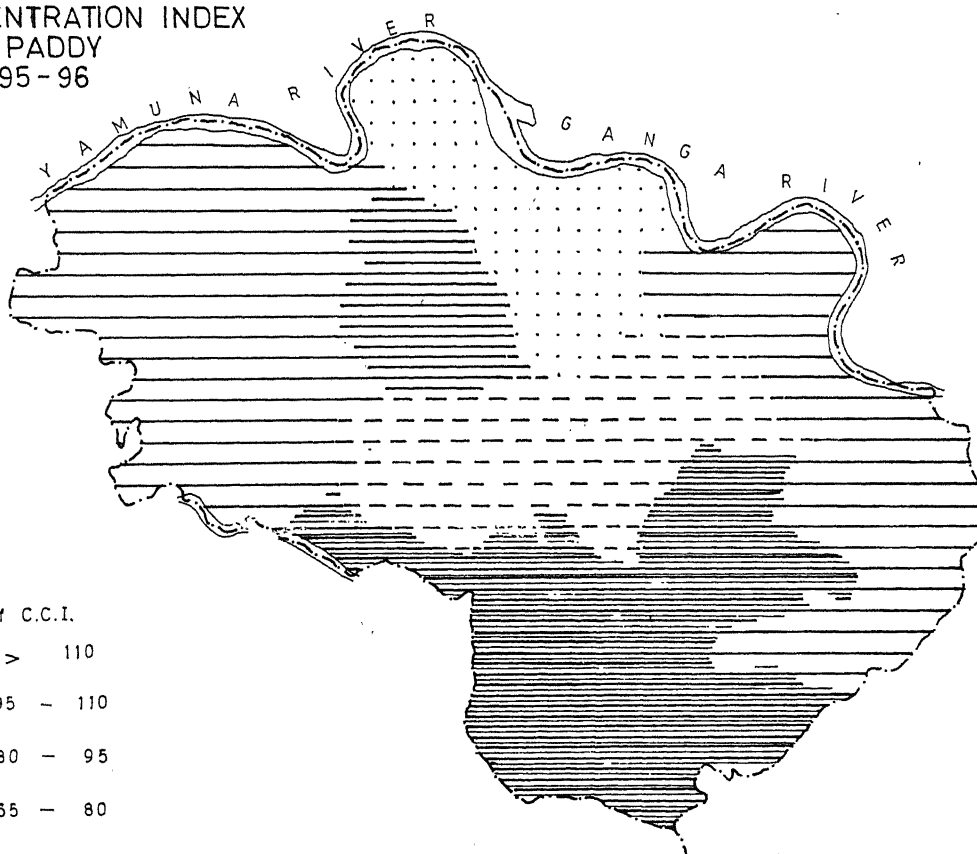
Fig. 4.6

Table –4.9

LAND Irrigation by Different Sources in Trans-Yamuna Region of Allahabad District – 1995-96.

Sl. No.	Irrigation Source	Irrigated Area (in Hectare)	% Of Total Irrigated Area
1.	Canals	75232	74.23
2.	Tubewells(Ps+Sc Govt .)	18220	19.97
3.	Wells	4609	4.54
4.	Tanks,Ponds,Lakes	1529	1.5
5.	Others	1750	1.72
	Total	101340	100.00

1991-92

Sl. No.	Irrigation Source	Irrigated Area (in Hectare)	% Of Total Irrigated Area
1.	Canals	58583	73.87
2.	Tubewells(Ps+Sc Govt .)	14729	18.57
3.	Wells	3089	3.89
4.	Tanks,Ponds,Lakes	1006	1.26
5.	Others	1895	2.38
	Total	79302	100.00

1985-86

Sl. No.	Irrigation Source	Irrigated Area (in Hectare)	% Of Total Irrigated Area
1.	Canals	57832	84.00
2.	Tubewells(Ps+Sc Govt .)	6457	9.37
3.	Wells	2266	3.29
4.	Tanks,Ponds,Lakes	1010	1.46
5.	Others	1277	1.85
	Total	68842	100.00

Source:-
The District Statistical Bulletins, Allahabad .State Planning Institute ,U.P.-1985,1990,1995.

सिंचाई :-

अध्ययन क्षेत्र में वर्षा की मात्रा और वितरण की अनिश्चितता फसलों को कृत्रिम जलापूर्ति की आवश्यकता को जन्म देती हैं। कृषि अर्थव्यवस्था में सिंचाई निरपवाद रूप से एक निर्णायक भूमिका अदा करती है क्योंकि यह दो उद्देश्यों की पूर्ति करती है पहली मानसून वर्षा के असफल हो जाने पर फसलों की क्षतिपूर्ति करती है एवं विनाश के खिलाफ रक्ष कवच का काम करती है तथा साथ ही साथ उस वर्ष में पैदावार को बढ़ाती है[19]।

जिले में अध्ययन क्षेत्र का सम्पूर्ण सिंचाई क्षेत्र 1985-86 में 66842 हेक्टेयर सो बढ़कर 1995-96 में 101340 हेक्टेयर हो गया है जो सम्पूर्ण बोये गये क्षेत्र का 52.36 प्रतिशत है (तालिका 4.9) । सिंचित क्षेत्र का स्थानिक प्रतिरूप तालिका 4.10 और मानचित्र 4.4 में दर्शाया गया है। क्षेत्र में नहर सरकारी एवं व्यक्तिगत ट्यूबवेल प्रमुख सिंचाई के साधन हैं जो सम्पूर्ण सिंचित क्षेत्र का 95 प्रतिशत सिंचित करते हैं।सिंचाई के अन्य स्रोतों में कुएं, तालाब तथा अन्य साधन हैं जो सिंचित क्षेत्र का कमशः 4.54 प्रतिशत, 1.50 प्रतिशत एवं 1.72 प्रतिशत भाग सिंचित करते हैं। तालिका संख्या 4.9 देखने से स्पष्ट होता है कि 1985 से 1995 तक सरकारी एवं प्राइवेट ट्यूबवेलों का प्रतिशत बहुत तेजी से बढ़ा है जबकि नहरों का सिंचित प्रतिशत कम हुआ है। साथ ही साथ यह भी उल्लेखनीय है कि क्षेत्र में विश्व बैंक के ट्यूबवेलों के स्थापित हो जाने पर इसके द्वारा सिंचित क्षेत्रफल एवं प्रतिशत दोनों में वृद्धि अति तीव्र होगी।

अध्ययन क्षेत्र में सम्पूर्ण वर्षों में सिंचित क्षेत्रों एवं सिंचाई सुविधाओं के जाल का विस्तार सामान्यतया दो कारणों से हुआ है-

1. जनसंख्या के बढ़ते दबाव के कारण कृषि बीज, सब्जियां तथा खाद्य पदार्थों की मांग बढ़ रही है।
2. क्षेत्र में विभिन्न सरकारी योजनाओं के अन्तर्गत कुछ सेवा केन्द्रों पर ही सिंचाई सुविधाएं उपलब्ध हैं जो व्यक्तिगत सिंचाई अधिष्ठापन के लिए वांछित स्तर पर पर्याप्त नहीं है। अध्ययन क्षेत्र में सेवा केन्द्रों की भूमिका व्यापारिक कृषि सिंचाई में महत्वपूर्ण है।

TRANS-YAMUNA REGION OF ALLAHABAD DISTRICT
A
CROP CONCENTRATION INDEX
OF WHEAT
1985-86
YAMUNA RIVER
GANGA RIVER
N
Value of C.C.I.
HIGH > 100
MEDIUM 90 - 100
LOW 80 - 90
VERY LOW 70 - 80
10 0 10 20
km
B
CROP CONCENTRATION INDEX
OF WHEAT
1995-96
YAMUNA RIVER
GANGA RIVER
Value of C.C.I.
VERY HIGH > 100
HIGH 95 - 100
MEDIUM 90 - 95
LOW 85 - 90
VERY LOW 80 - 85
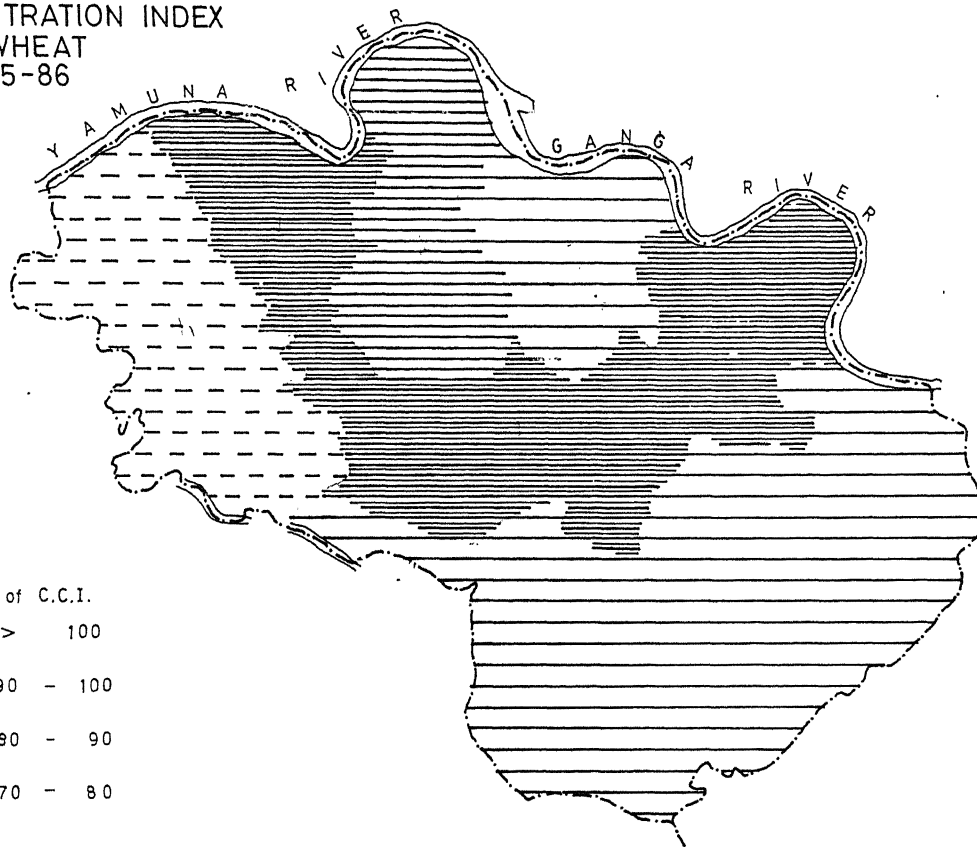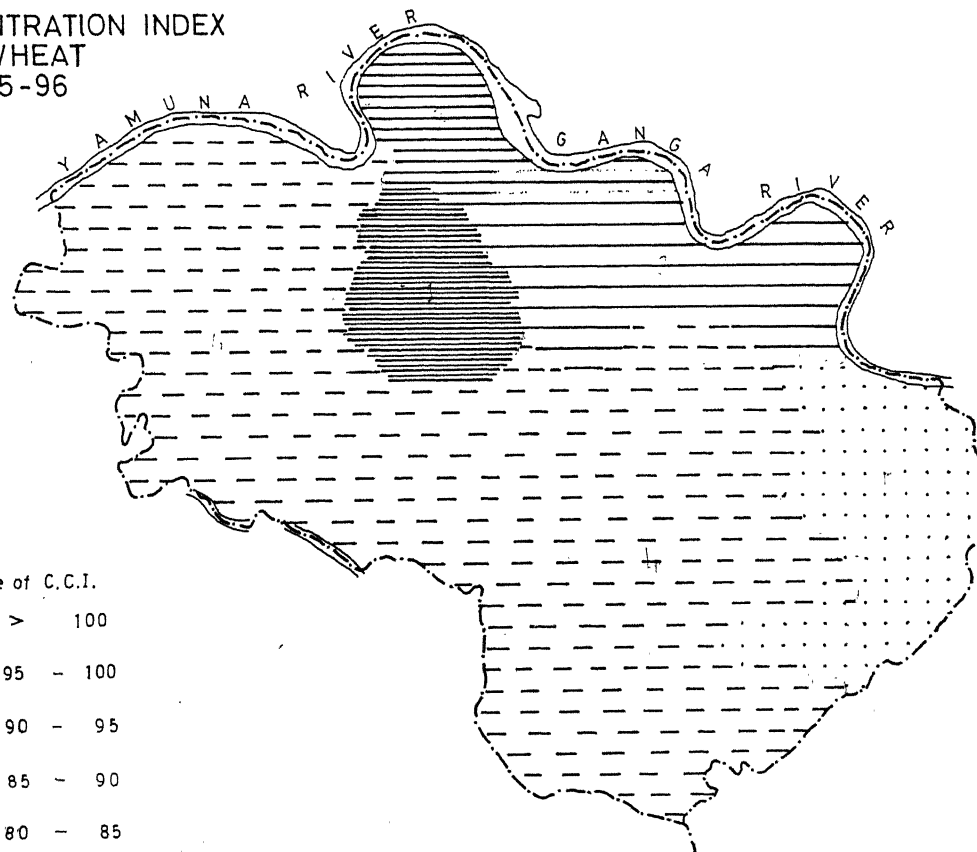
Fig. 4.7

Table –4.10(A)

Irrigated Area in Trans –Yamuna Region of Allahabad,District, 1995-96.

Sl. No.	Blocks	Total Shown Area (in Hectare)	Net Irrigated Area	As % Of N.S.A.	Total Irrigated Area	As % Of T.S.A.
1.	Jasra	26968	10557	55.86	14709	54.54
2.	Shankergarh	46374	10926	43.44	14306	30.84
3.	Chaka	15359	4780	59.44	5875	38.25
4.	Karchhana	23281	8616	53.31	12012	51.59
5.	Kaudhiara	20050	11176	75.92	17805	88.80
6.	Uruva	16891	6387	51.49	9448	55.93
7.	Meja	44694	13133	50.78	23525	52.63
8.	Koroan	73512	25837	55.96	47955	65.23
9	Monda	34741	7502	40.35	11626	33.46

Note :- (1055700)/(18899)=Net Irrigated Area/Net Shown Area.

Table –4.10(B)

Net Irrigated Area (Percentage of N.S.A.)

Sl. No.	Category	Class	Blocks
1.	Low	40-50	Monda ,Shankergarh
2.	Medium	50-60	Meja, Koroan ,Uruva , Karchhana,Chaka, Jasra
3.	High	Above 60	Kondhiara

Total Irrigated Area As Percentage of T.S.A.

Sl. No.	Category	Class	Blocks
1.	Low	30-50	Monda, Chaka, Shankergarh
2.	Medium	50-70	Jasra, Karchhana,Uruva,Meja, Koroan
3.	High	Above 70	Kondhiara

Source :-

The District Statistical Bulletins ,Allahabad,State Planning Institute U.P.1995-96 .

अध्ययन क्षेत्र में कृषि क्षेत्र के विकास के लिए कुछ सेवा केन्द्र विविध बाजारीय सेवाएं, स्टोर सुविधाएं वित्तीय सहायता आदि अन्य सेवाओं एवं कार्यों की एक विविधता भी प्रतिपादित करते हैं (मानचित्र 4.3)
तथा कुछ सेवा केन्द्रों पर स्थित अनेकों संस्थाएं एवं एजेन्सियां सामान्य कृषक वर्ग के लिए सेवाएं देती हैं। अध्ययन क्षेत्र में यदि इन केन्द्रों को नियोजित किया जाए तो ये कृषि के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकते हैं।

बहु फसली कृषि एवं फसल गहनता :-

बहु फसली कृषि की संकल्पना और पद्धति का आशय उस फसल क्षेत्र से है जिस पर एक फसल वर्ष में एक से अधिक फसलें उगाई जाती हैं। उच्चतर शस्य गहनता वास्तव में कृषि के उच्चतर तीव्रीकरण को प्रदर्शित करती हैं अर्थात शुद्ध बोये गए क्षेत्र का उच्चतर अनुपात उसी कृषि वर्ष की अवधि में एक बार से अधिक बोया जाता है। शस्य गहनता भूमि उपयोग की योग्यता को बताती है। इसके द्वारा ठोस कृषि की मूलभूत संरचना, श्रमिक और वांछित निवेश की उपलब्धता, फार्म प्रबन्धन एवं आवश्यक कुशलता को सम्भव बनाती है। बहुफसली कृषि का बड़ा क्षेत्र उत्पादकता एवं उत्पादन बढ़ाता है और उतना ही कृषक की आय को सुदृढ़ करता है एवं कृषक समुदाय के जीवन स्तर और अर्थव्यवस्था में उन्नति करता है। शस्य गहनता को निम्न सूत्र से समझा जा सकता है-

शस्य गहनता = कुल बोया गया क्षेत्र / शुद्ध बोया गया क्षेत्र X 100

यमुना पार में सबसे ज्यादा शस्य गहनता कोरांव और कौंधियारा ब्लाक में 153.5 एवं 151.1 प्रतिशत एवं सबसे कम शस्य गहनता शंकरगढ़ एवं चाका ब्लाक में 124.1 एवं 124.7 प्रतिशत पायी जाती है। शस्य गहनता का स्थानिक प्रतिरूप मानचित्र संख्या 4.5 A,B,C एवं तालिका संख्या 4.11 में दर्शित होता है। शस्य गहनता के स्थानीय प्रतिरूप मानचित्र को ध्यानपूर्वक देखने से स्पष्ट होता है उच्च मध्य एवं निम्न तीन स्तर शस्य गहनता के हैं, जिनका मूल्य 124.1 से 153.5 तक है (तालिका 4.11) क्षेत्र में कोरांव, माण्डा एवं मेजा का शस्य गहनता विचरण 1985 से 1995 के बीच धनात्मक है एवं अन्य विकासात्मक ब्लाकों की शस्य गहनता उच्च श्रेणी धनात्मक,ऋणात्मक होती रही है।कोरांव ब्लाक की शस्य गहनता उच्च श्रेणी धनात्मक यथा 1985 में 132.6 प्रतिशत से बढ़कर 1995 में 153.5 प्रतिशत हो गई है। इस ब्लाक में उच्च शस्य

गहनता का कारण बड़ी संख्या में प्राइवेट सरकारी ट्यूबवेल एवं नहर आदि सिंचाई के साधनों का विकास है। दूसरे शब्दों में विभिन्न प्रकार की वस्तुओं अनाजों एवं धान्यों की बढ़ती हुई मांगों के साथ-साथ विशेषकर सेवा केन्द्रों के चारों ओर अनेकों प्रकार की सब्जियों की मांग आदि बहुलित फसलों को उत्साहित करती हैं, जिससे प्रमुख ब्लाकों में शस्य गहनता बढ़ रही है।

Table –4.11

Cropping intensity in Trans –Yamuna Region of Allahabad,District.

Sl. No.	Blocks	Cropping intensity (Percent)		
		1985-86	1990-91	1995-96
1.	Jasra	157.17	123.1	137.2
2.	Shankergarh	106.79	128.2	124.1
3.	Chaka	107.62	119.9	124.7
4.	Karchhana	123.56	133.5	133.2
5.	Kaudhiara	153.50	134.3	151.1
6.	Uruva	123.91	143.8	125.5
7.	Meja	101.71	121.4	140.1
8.	Koroan	132.62	137.4	153.5
9	Monda	119.30	145.4	131.2
	Total Average	125.13	132.3	135.4

Note :- (G/N)X100 =(Total Shown Area/Net Shown Area.)X100

Cropping intensity Pattern

1995-96

Sl. No.	Category	Class	Blocks
1.	Low	100-125	Chaka ,Shankergarh
2.	Medium	125-150	Meja, Monda,Uruva , Karchhana, Jasra
3.	High	Above 150	Korovan Kondhiara

1990-91

Sl. No.	Category	Class	Blocks
1.	Low	100-125	Jasra, Chaka, Meja
2.	Medium	125-150	Shankergarh,Karchhana,Uruva, Monda, Koroan, Kondhiara
3.	High	Above 150	-

1985-86

Sl. No.	Category	Class	Blocks
1.	Low	100-125	Chaka,Meja,Karchhana, Shankergarh, Monda, Uruva.
2.	Medium	125-150	Koroan,
3.	High	Above 150	Jasra, Kondhiara

शस्य केन्द्रीकरण :-

अध्ययन क्षेत्र में विभिन्न फसलों के स्थानिक वितरण का विश्लेषण और चित्रण केवल गुणात्मक है। यह विभिन्न भागों के विभिन्न फसलों के संकेन्द्रण अंशों का सही एवं वास्तविक चित्रण नहीं करती है। विविध फसलों के स्थानिक प्रतिरूप का गुणात्मक वर्णन विविध फसलों एवं कृषि प्रकारों के वितरण प्रतिरूप को समझने में ही सहायक होता है लेकिन यह कृषि प्रदेश के कृषि नियोजन के उपयोगी नहीं है क्योंकि इसमें फसल वितरण के शुद्ध आंकड़ों की आवश्यकता होती है। अतः किसी प्रदेश में विविध फसलों के शुद्ध वितरण प्रतिरूप को वस्तुनिष्ठ एवं संख्यात्मक स्तर पर मापन करने हेतु फसल केन्द्रीकरण संकल्पनला का प्रयोग किया गया है। फसल केन्द्रीकरण संकल्पना किसी समान धरातल पर विविध फसल वितरणों की तुलना एवं आकलन करने में सहयोग करता है। इस विधि से किसी क्षेत्र के फसल भूगोल का सार्थक सामान्यीकरण किया जा सकता है। इसके माध्यम से अत्यन्त स्थानीकृत या केन्द्रीकृत फसलों एवं दूर-दुर तक बिखरी हुई फसलों के वितरण प्रतिरूप का मापन किया जा सकता है [20]। विविध सुविख्यात विद्वानों जैसे फ्लोरेन्स[21], चिशोल्स[22], भाटिया[23] आदि द्वारा प्रयुक्त सबसे लोकप्रिय विधि 'स्थानीकरण' गुणांक का प्रयोग हुआ है। 'स्थानीकरण गुणांक' प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र के विभिन्न फसलों के केन्द्रीकरण या मापन हेतु सिंह द्वारा संशोधित 'अवस्थिति गुणक' विधि का प्रयोग किया गया है । इसे फसल केन्द्रीकरण सूचकांक कहते हैं जो निम्न है-

$$C1 = (Pae)/(Par) \times 100$$

जहां पर C1 = शस्य केन्द्रीयकरण सूचकांक या अवस्थिति गुणक

Pae = सम्बन्धित क्षेत्रीय इकाई e'ई' में फसल 'अ' का सम्पूर्ण फसल क्षेत्र से प्रतिशत

Par = सम्पूर्ण क्षेत्र में सम्पूर्ण फसली क्षेत्र से फसल 'अ' का प्रतिशत

उपरोक्त सूत्र का प्रयोग ध्ययन क्षेत्र के सभी ब्लाकों के लिए विविध फसलों का 'फसल केन्द्रीकरण सूचकांक' निर्धारित करने के लिए हुआ है जो टेबल संख्या 4.12 और 4.13 में स्पष्ट होता है।

TRANS-YAMUNA REGION OF ALLAHABAD DISTRICT
(A)
CROP CONCENTRATION INDEX
OF GRAM
1985-86
N
YAMUNA RIVER
GANGA RIVER
Value of C.C.I.
VERY HIGH > 120
HIGH 100 - 120
MEDIUM 80 - 100
LOW 60 - 80
VERY LOW 40 - 60
10 0 10 20
km
(B)
CROP CONCENTRATION INDEX
OF GRAM
1995-96
YAMUNA RIVER
GANGA RIVER
Value of C.C.I.
VERY HIGH > 110
HIGH 90 - 110
MEDIUM 70 - 90
LOW 50 - 70
VERY LOW 30 - 50
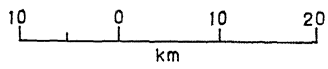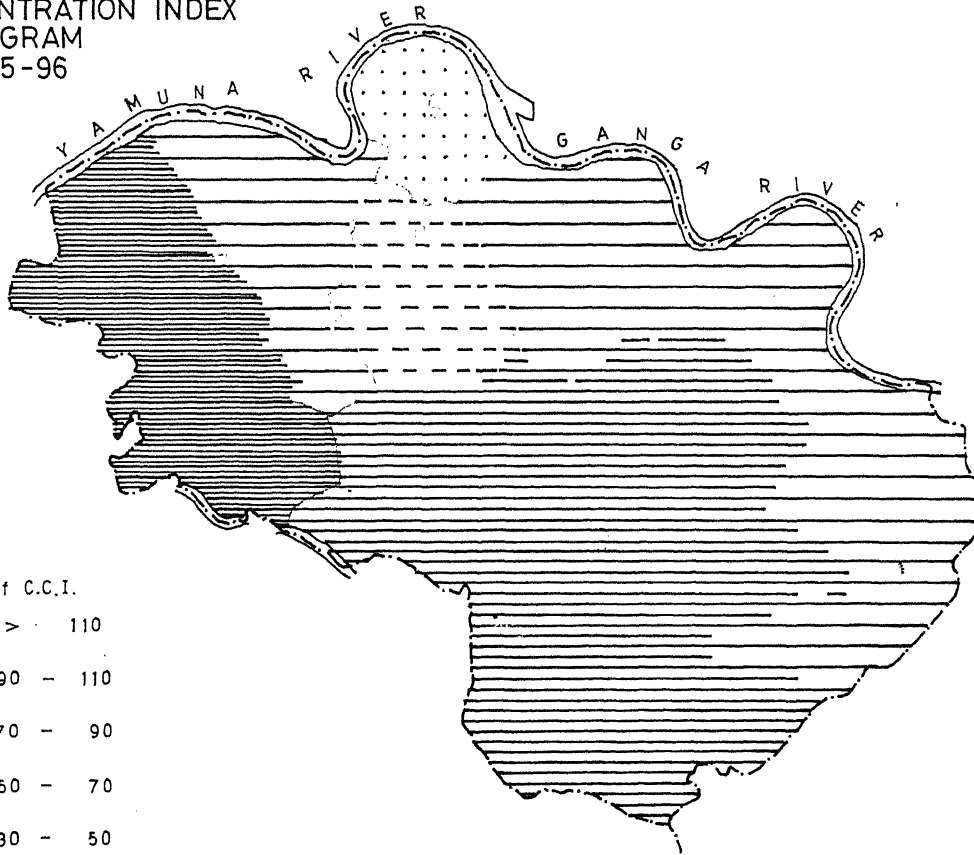
Fig. 4.8

Table –4.12

Crop Concentration Index of Various Crops in Trans –Yamuna Region of Allahabad,District, 1985-86 (in percent)

Sl. No.	Blocks	Wheat %	Paddy %	Gram %	Bajara %
1.	Jasra	102.80	82.56	123.22	67.50
2.	Shankergarh	77.68	101.35	86.93	88.74
3.	Chaka	93.03	60.37	76.92	265.29
4.	Karchhana	82.40	56.69	108.11	222.20
5.	Kaudhiara	98.78	154.67	40.14	43.84
6.	Uruva	100.49	69.03	97.22	266.74
7.	Meja	104.16	72.26	136.5	92.43
8.	Koroan	87.19	126.84	116.36	23.12
9	Monda	88.42	106.87	78.57	113.84

Source :-

The District Statistical Bulletins ,Allahabad,State Planning Institute U.P.1985-86 .

चार प्रमुख फसलों - धान, गेहूं, चना, बाजरा के संकेन्द्रण का स्थानीय प्रतिरूप और कालिक विचलन मानचित्र 4.9 और तालिका 4त्र12 एवं 4.13 में सचित्र उदाहरण सहित स्पष्ट है।

अध्ययन क्षेत्र में भाटियां द्वारा प्रादेशिक केन्द्रीकरण ज्ञात करने के लिए प्रयुक्त निम्न सूत्र से भी उपरोक्त स्थिति स्पष्ट होती है

'अ' शस्य की सान्द्रता = (('अ' शस्य की क्षेत्रीय इकाई में क्षेत्रफल) /(क्षेत्रीय इकाई में सभीशस्यों का क्षेत्रफल)) / (('अ' शस्य का देश में क्षेत्रफल)/(सभी शस्यों का देश में क्षेत्रफल))

तालिका 4.13 देखने से स्पष्ट होता है कि गेहूं का सबसे ज्यादा संकेन्द्रण कौंधियारा 103.13 प्रतिशत ब्लाक में एवं सबसे कम संकेन्द्रण माण्डा ब्लाक 84.92 प्रतिशत पाया जाता है। धान में सर्वाधिक संकेन्द्रण कोरांव 111.03 प्रतिशत एवं कौंधियारा 110 प्रतिशत ब्लाक में है जबकि सबसे कम संकेन्द्रण चाका ब्लाक में 51.14 प्रतिशत पाया जाता है। चना में सर्वाधिक संकेन्द्रण शंकरगढ़ ब्लाक में 126.29 प्रतिशत एवं सबसे कम संकेन्द्रण कौंधियारा ब्लाक में पाया जाता है। बाजरे का सर्वाधिक संकेन्द्रण चाका 255.21 प्रतिशत, उरूवा 242. 55 प्रतिशत एवं करछना ब्लाक 226.19 प्रतिशत में पाया गया है जबकि सबसे कम संकेन्द्रण 18.5 प्रतिशत कोरांव ब्लाक में एवं 37.32 प्रतिशत कौंधियारा ब्लाक में पाया जाता है। गेहूँ का संकेन्द्रण 1985 से 1995 में करछना, कौंधियारा, शंकरगढ़, कोरांव, माण्डा, मेजा, उरूवा ब्लाकों में बढ़ा है जबकि जसरा एवं चाका ब्लाक में घटा है। धान का संकेन्द्रण 1985 से 1995 के बीच केवल मेजा में बढ़ा है शेष सभी ब्लाकों में घटा है। चने का संकेन्द्रण सभी ब्लाकों में 1985 से 1995 के बीच निरन्तर घटाव की ओर अग्रसर है जबकि बाजरे का संकेन्द्रण 1985 से 1995 के बीच जसरा एवं कौंधियारा में बढ़ा है एवं शेष अन्य ब्लाकों में घटा है।

फिर भी इन उपरोक्त फसलों का संकेन्द्रण दिखाता है कि 1985 से 1995 के बीच विकास उन्नति जिन ब्लाकों में हुई है वहां सेवा केन्द्र अपने जनांककीय और कार्यात्मक आयाम में एक बड़ी वृद्धि दिखाता है। अध्ययन क्षेत्र विभिन्न सेवा केन्द्रों में विविध फसल पूर्व एवं फसल पश्चात् की उपलब्ध सुविधाओं में उन फसलों का उच्च संकेन्द्रण होता है जिनका सम्पूर्ण क्षेत्र में प्रधान होता है।

Table –4.13

Crop Concentration Index of Various Crops in Trans –Yamuna Region of Allahabad,District, 1995-96 (in percent)

Sl. No.	Blocks	Wheat %	Paddy%	Gram %	Bajara%
1.	Jasra	85.50	81.77	83.61	124.21
2.	Shankergarh	88.44	83.06	126.29	54.71
3.	Chaka	98.96	51.14	43.47	255.21
4.	Karchhana	94.77	54.62	80.37	226.29
5.	Kaudhiara	103.13	110.00	33.65	37.32
6.	Uruva	93.43	68.44	84.36	242.55
7.	Meja	88.44	94.80	99.24	73.03
8.	Koroan	88.56	111.02	102.01	18.50
9	Monda	94.92	87.75	88.62	95.82

Source :-

The District Statistical Bulletins ,Allahabad,State Planning Institute U.P.1995-96 .

Table –4.14

Crop Diversification in Trans –Yamuna Region of Allahabad District – 1

Sl. No.	Blocks	1995-96		1985-86	
		Total Area 'N' CROPS	Crop Diversification	Total Area 'N' CROPS	Crop Diversification
1.	Jasra	25937	11.43	21397	13.08
2.	Shankergarh	31218	10.34	32729	8.91
3.	Chaka	10028	10.39	9743	8.96
4.	Karchhana	21529	11.14	20734	10.29
5.	Kaudhiara	22254	12.59	19679	12.76
6.	Uruva	15572	10.45	16308	10.32
7.	Meja	36254	11.67	26572	8.47
8.	Koroan	24395	10.93	22813	9.94
9	Monda	70098	12.79	65569	10.05

Source :-

The District Statistical Bulletins Allahabad, State Planning Institute, U.P.1985, 1995 & 1996.

DIVERSIFICATION PATTERN 1995-96

CATEGORY	CLASS	BLOCKS
Low	10-11	Monda, Uruva, Chacka, Shankargarh
Medium	11-12	Jasra, Karchhana, Meja
High	> 12	Korovan, Koundhiara

1985-86

CATEGORY	CLASS	BLOCKS
Low	8-10	Shankargarh, Chacka, Meja, Monda.
Medium	10-12	Korovan, Uruva, Karchhana
High	> 12	Jasra, Koundhiara.

Ⓐ
TRANS-YAMUNA REGION OF ALLAHABAD DISTRICT
CROP CONCENTRATION INDEX
OF BAJRA
1985-86
N
YAMUNA RIVER
GANGA RIVER
Value of C.C.I.
VERY HIGH > 200
HIGH 150 - 200
MEDIUM 100 - 150
LOW 50 - 100
VERY LOW 0 - 50
10 0 10 20
km
Ⓑ
CROP CONCENTRATION INDEX
OF BAJRA
1995-96
YAMUNA RIVER
GANGA RIVER
Value of C.C.I
VERY HIGH > 200
HIGH 150 - 200
MEDIUM 100 - 150
Low 50 - 100
VERY LOW 0 - 50
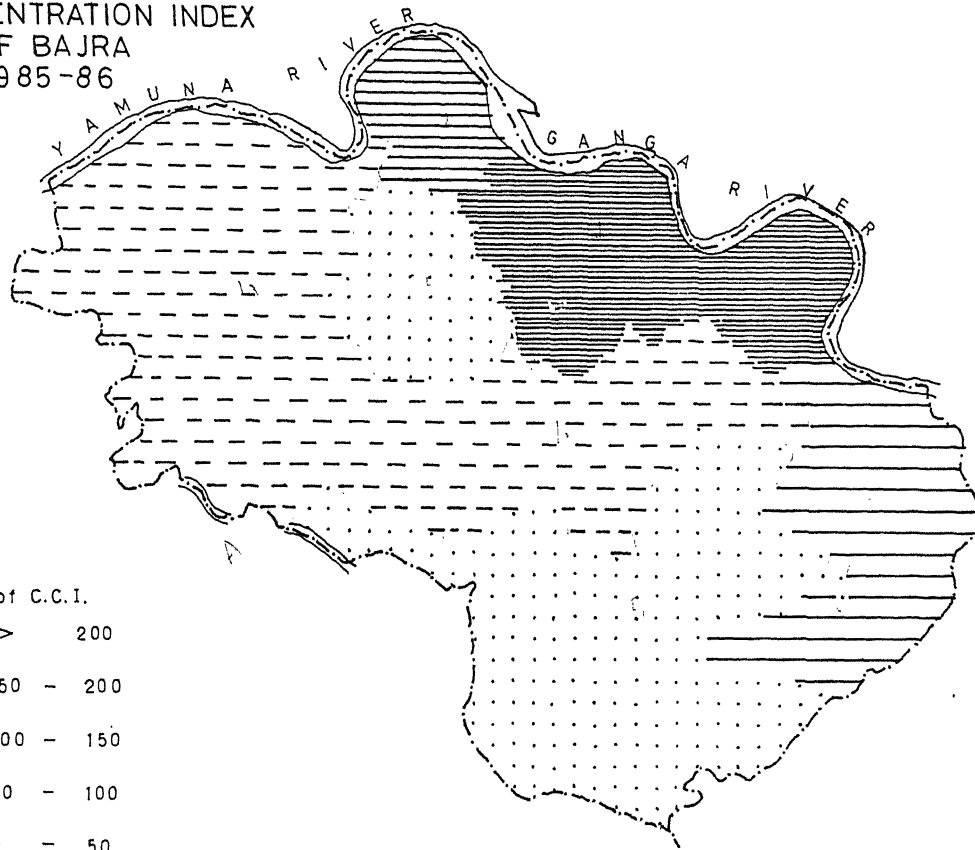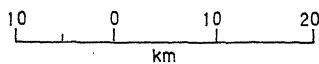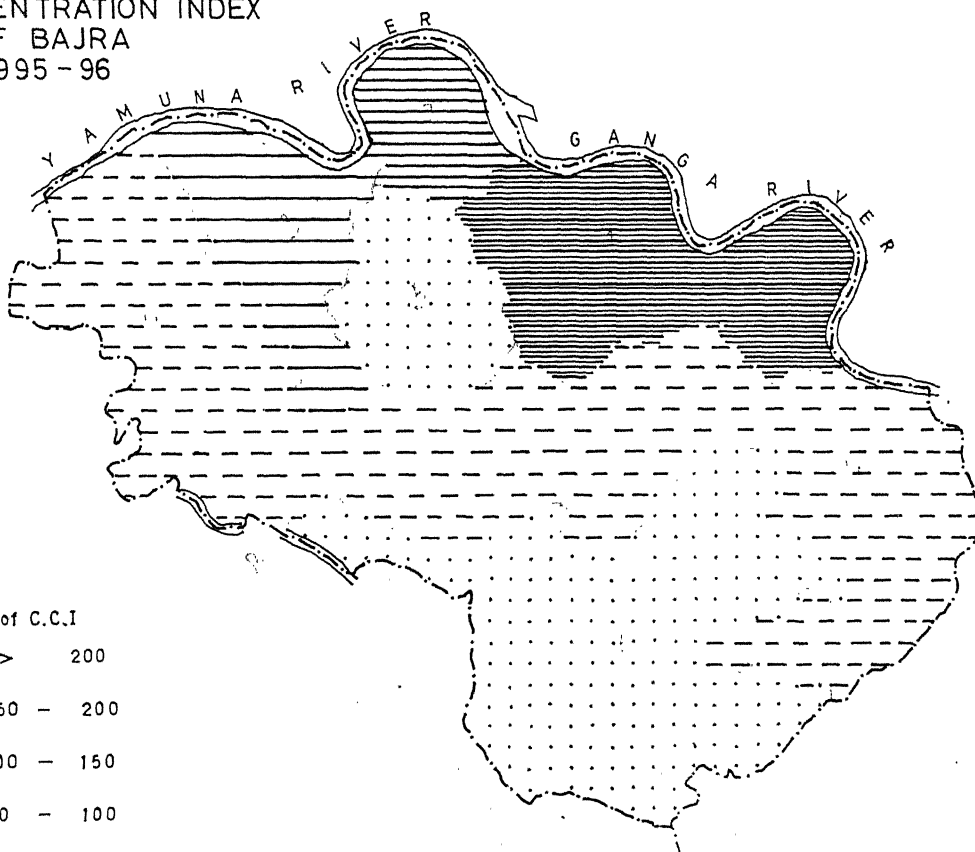
Fig. 4.9

शस्य विविधता :-

शस्य विविधता की संकल्पना शस्य विशेषीकरण अथवा एकात्मक कृषि का विरोधी विचार है जिसमें क्षेत्र में एक निश्चित फसल अथवा कृषि क्रिया कलाप का एकाधिकार समाविष्ट होता है। फसलों की विविधता एक विशेष क्षेत्र अथवा प्रदेश में बहुलित फसलों की खेती दिखाता है। आजकल कृषि विविधता, विश्व की एक स्थायी और प्रगतिशील कृषि प्रणाली में महत्वपूर्ण तथ्य की तरह स्वीकार की जाती है। सामान्य तौर पर कृषि विविधता भौतिक, सामाजिक एवं आर्थिक तथ्यों की वैविध्य से विकसित हुई है किन्तु विशेष तौर से यह आधुनिक सिंचाई, उन्नतशील बीज, उर्वरकों, कीटनाशकों, आधुनिक मशीनों एवं फार्म कृषि के प्रयोग से सम्भव हुई है। इसके तहत अन्य अनेक कारकों जैसे मौसम की अनिश्चितता, कृषि पर बहुत सी आवश्यकताओं के लिए कृषकों की आश्रितता तथा किसानों की परम्परागत शास्त्र सम्मत एवं सनातनी व्यवहार आदि भारत में कृषि विविधता फार्म कृषि निवेश की लागत में तीव्र उन्नति के विचार में भी महत्वपूर्ण होता है। शस्य विविधता के परिणाम मापन में शस्यों की संख्या महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है जिसके साथ ही साथ अभीष्ठ क्षेत्र में उसके द्वारा अपनाए गए क्षेत्रफल का भी ध्यान रखा जाता है। यहां पर कृषि शस्य विविधता के स्थानीय प्रतिरूप को निकालने में सिंह द्वारा परिमार्जित सूत्र का प्रयोग किया गया है - इस समीकरण को 'शस्य विविधता सूचकांक' के रूप में जाना जाता है -

$$D1 = (\sum Pan) / N$$

अथवा शस्य विविधता सूचकांक = (फसलों के अन्तर्गत कुल कृषि क्षेत्र का प्रतिशत)/ (फसलों की संख्या)

जहॉ D1 = विविधता का सूचकांक है।

Pan = n फसल के अन्तर्गत कुल कृषीय भूमि का प्रतिशत है और
N = विचाराधीन फसल की संख्या है।

TRANS-YAMUNA REGION OF ALLAHABAD DIST.
A
CROP DIVERSIFICATION
1985-86
N
Value of C.D.I.
HIGH > 12
MEDIUM 10 – 12
LOW 8 – 10
10 0 10 20
km
B
CROP DIVERSIFICATION
1995-96
Value of C.D.I.
HIGH > '12
MEDIUM 11 – 12
LOW 10 – 11
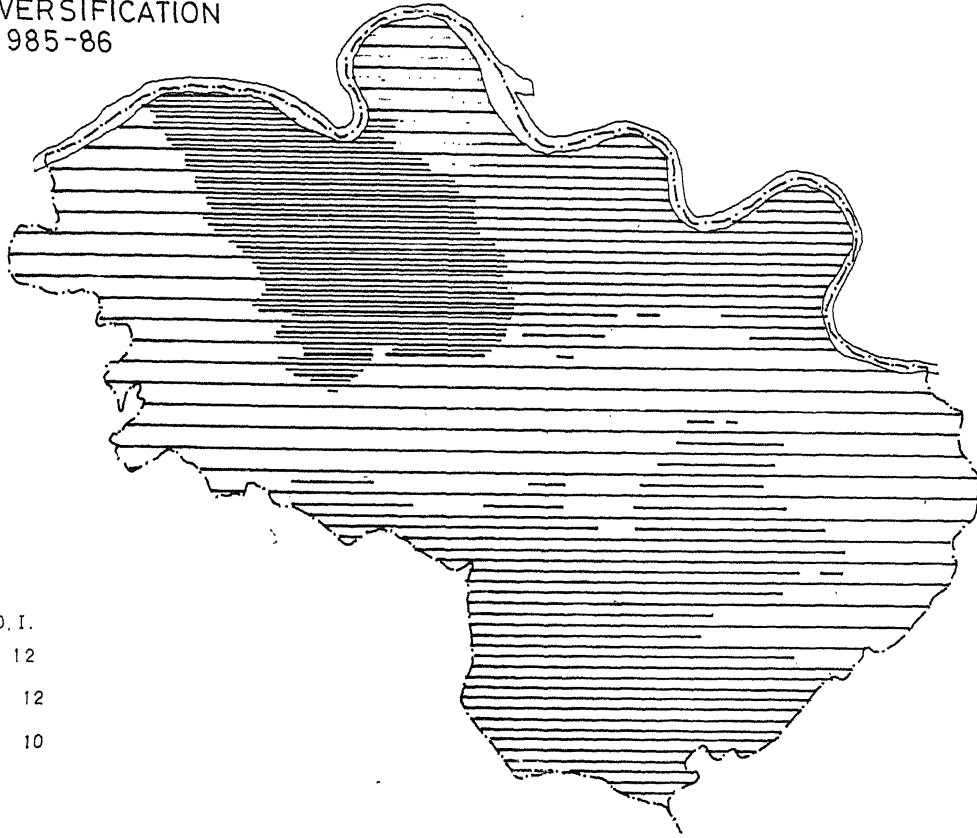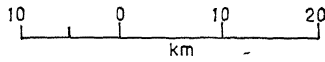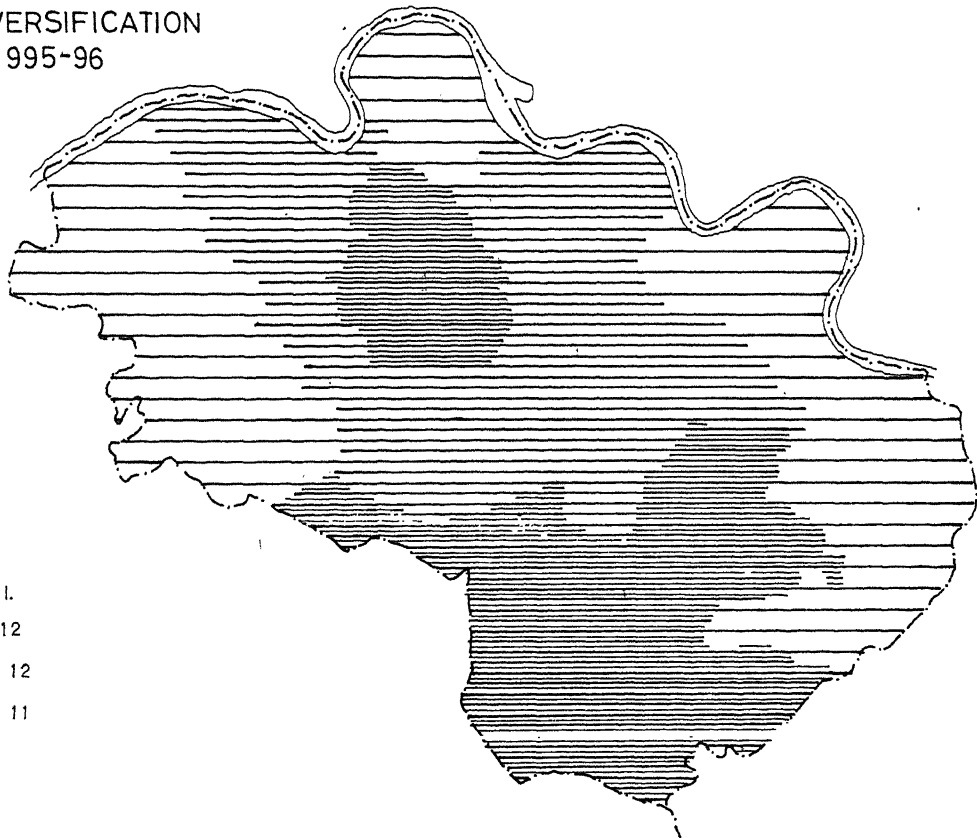
Fig 4.10

TABLE No.4.15

Production of Major Crops in Trans-Yamuna Region of Allahabad District (in M.Tonnes)

Sl.No.	Crops	1985-86	1990-91	1995-96
1	Paddy	107983	110815	111320
2	Jwar	1085	9370	9980
3	Bajara	13230	12989	13950
4	Maize	490	520	510
5	Arhar	22516	19292	18185
6	Whcat	133830	157870	156600
7	Barley	50000	52000	54000
8	Gram	47390	43870	40520
9	Peas	2813	2770	2850
10	Masoor	2653	2783	2343
11	Mustard	713	685	697

Source :- District Statistical Bulletins Allahabad, State Planning Institute, U.P.1985, 1986, 1990 & 1995.

यह कहा जा सकता है कि निम्न सूचकांक का मूल्य, उच्च शस्य विविधता और उच्च विशेषीकरण का स्तर। जितना ही सूचकांक का मान कम होगा फसल विविधीकरण उतना ही अधिक होगा।

शस्य विविधता मूल्य में स्थानिक प्रतिरूप और कालिक अन्तराल मानचित्र 4.10 और तालिका 4.14 में स्पष्ट होता है जो दिखाती है कि उच्च विविधता मूल्य केवल कोरांव एवं कौंधियारा ब्लाक में है शेष जसरा, करछना, मेजा मध्य विविधता वाले एवं शंकरगढ़, चाका, उरूवा, माण्डा निम्नविविधता वाले ब्लाक हैं। 1885 से 1995 के बीच विविधता का स्तर उंचा हुआ है जैसा 1985 में विविधता 8.17 प्रतिशत से शुरू होकर 13.08 प्रतिशत तक जाती है वहीं 1995 में 10.34 प्रतिशत से विविधता 12.79 प्रतिशत तक स्पष्ट होती है।

तथापि यह कहा जा सकता है कि विविधता मूल्य सेवा केन्द्रों पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं दिखाता है यद्यपि भोजन, अनाज एवं सब्जी की बढ़ती मांग की पूर्ति सेवा केन्द्र सीधे क्षेत्र में कई प्रकार की फसलों को उत्पन्न करके करते हैं।

उत्पादन एवं उत्पादकता :-

एक क्षेत्र में फसल की उत्पादन एवं उत्पादकता विभिन्न भौतिक एवं सांस्कृतिक तथ्यों जैसे - उच्चावच, प्रवाह, जलवायु, मिट्टी, जनांककीय आकार, विशेषताएं, कौशल, तकनीकी, आय आदि तथ्यों से निर्धारित होती है फिर भी क्षेत्र में विभिन्न फसलों की उत्पादन और उत्पादकता तालिका संख्या 4.15 और 4.16 तथा मानचित्र 4.11 और 4.12 में दिखाया गया है। तालिका और मानचित्र स्पष्ट करते हैं कि धान, गेहूं, बाजरा एवं अरहर मानक रूप से 1985 से 1995 के बीच बढ़े हैं जबकि वे फसलें जो नकारात्मक विकास वाली रही हैं उनमें ज्वार, चणा, सरसों, जौ आदि हैं। यह परिवर्तन विशेष रूप से सेवा केन्द्रें और सामान्य रूप से जिले में अनाज, खाद्य पदार्थ, तेल एवं सब्जियों की बढ़ती हुई मांग के कारण हुआ है। अतः इन फसलों के लिए अनेकों सुविधाएं सेवा केन्द्रों में उपलब्ध होती हैं और वे क्षेत्र में उच्च मांग में उपरोक्त फसलों की पैदावार में उन्नति करते हैं। अध्ययन क्षेत्र में सेवा केन्द्र अपने चारों ओर आधुनिक और नवाचारित आकार तकनीकी के प्रचार से फसलों की उत्पादन एवं उत्पादकता को बढ़ाने में भी सहयोग करते हैं।

TABLE No.4.16

Production of Major Crops in Trans-Yamuna Region of Allahabad District (in Quintal / Hectare)

Sl.No.	Crops	1985-86	1990-91	1995-96
1	Paddy	15.3	17.69	19.70
2	Jwar	8.2	9.3	10.1
3	Bajara	5.0	5.5	6.1
4	Maize	9.4	10.85	11.5
5	Arhar	15.49	15.10	14.47
6	Wheat	14.2	16.59	17.2
7	Barley	15.5	18.38	17.87
8	Gram	15.8	13.39	12.98
9	Peas	10.26	10.58	11.82
10	Masoor	11.5	10.38	9.15
11	Mustard	7.53	7.13	6.63

Source :- District Statistical Bulletins Allahabad - 1985, 1990 & 1995.
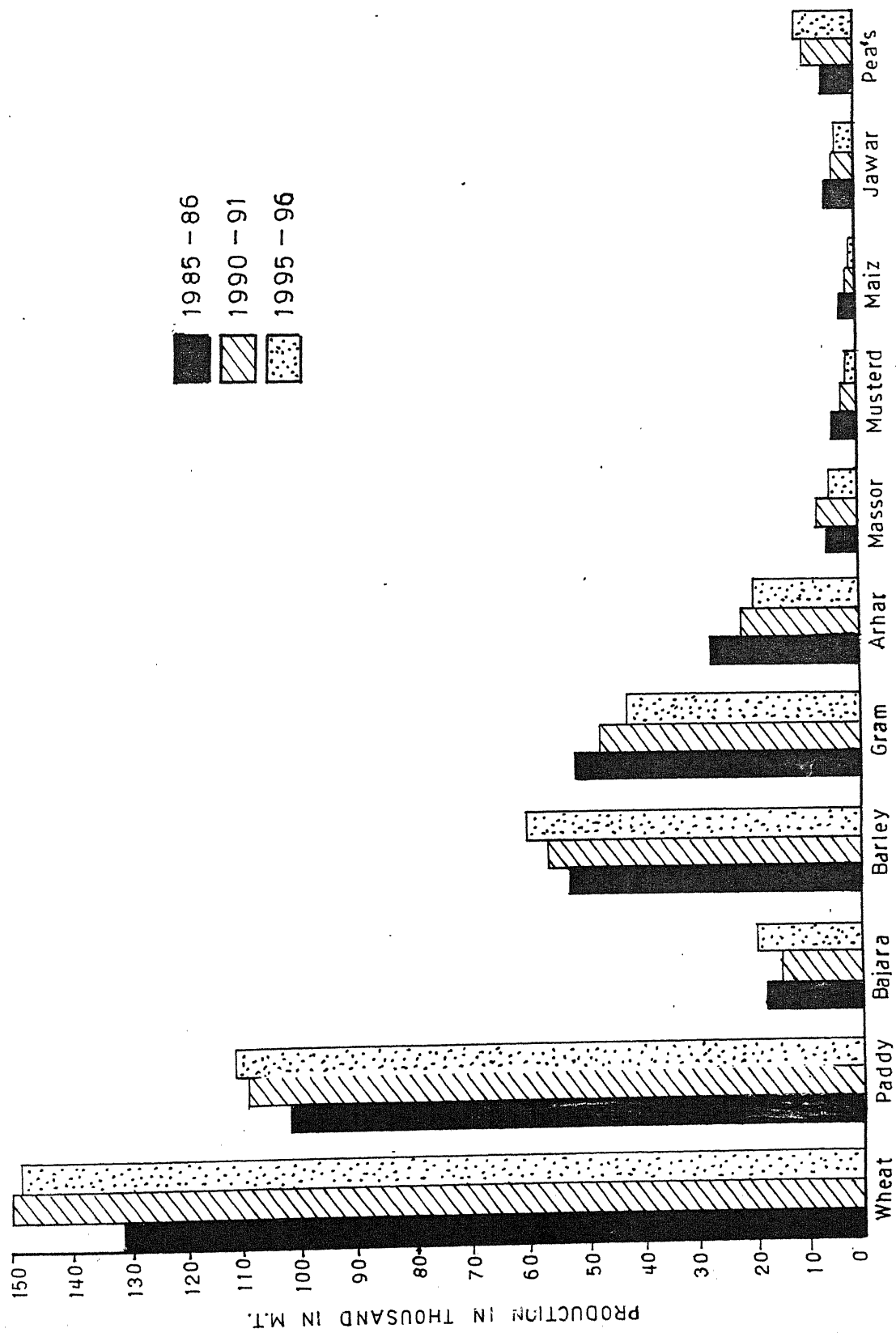
कृषि विकास में सरकार समर्थित कार्यक्रम :-

जिले में सरकार के द्वारा विविध कृषि विकास कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। इनका प्रथम उद्देश्य यह होता है कि विभिन्न फसलों की उत्पादन और उत्पादकता बढ़े, किसानों की निवेश उपलब्धता निश्चित हो, वानिकी, मत्स्यकी, डेयरी, पशुपालन आदि के विकास की वाह्य सुविधाएं उपलब्ध करना आदि। अध्ययन क्षेत्र में- जवाहर रोजगार योजना, पंचायती राज, एस.एफ.डी.ए.(Small Farmers Development Agency) आई.आर.डी.पी. आदि के अन्तर्गत विभिन्न योजनाएं काम कर रही हैं। फिर भी इन विकास कार्यक्रमों के अन्तर्गत प्राप्तियां वाछित (अनुमान) अपेक्ष से काफी दूर और पूर्णरूपेण अपर्याप्त होती हैं। वस्तुओं को समयानुसार न पहुंचाने, विभिन्न अभियांत्रिक दबाव और मार्गावरोध जैसे- शासकीय आयोजन की उदासीनता, नौकरशाही, केन्द्रीयता, राजनैतिक हस्तक्षेप, शासकीय और लाभ ग्राहियों के बीच अन्तर्सम्बन्ध का अभाव, अधिकारियों का भ्रष्टाचार, किसानों में कौशल एवं उघम की कमी, वित्तीय समानता की कमी आदि के कारण कार्यक्रम असफल हो रहे हैं।

कृषि विकास की समस्याएं :-

यमुना पार प्रदेश में कृषि के विभिन्न पक्षों का स्थानिक एवं कालिक विश्लेषण करने पर यह स्पष्ट होता है कि यह उपखण्ड धीरे- धीरे विकसित हो रहा है किन्तु बढ़ती जनसंख्या के बढ़ती मांग के सन्दर्भ में कृषि विकास की प्रगति सन्तोषजनक नहीं है। यहां पर अनेक समस्याएं एवं उदासीनताएं हैं जो कृषि के विकास में अवरोध उत्पन्न करती हैं। इन समस्याओं को निम्नवत् देखा जा सकता है -

1. यद्यपि इस क्षेत्र में कृषि क्षेत्र उच्च प्रतिशत में है किन्तु भौतिक समस्याओं जैसे- भूमि अपरदन, भूमि क्षरण, उसरीकरण, जलभराव, कौशल, अवसादन आदि के साथ इसका असमतल आकार इसको पंगु बना देता है। सम्पूर्ण कृषित भूमि उपयोग के कारण कृषि भूमि की वृद्धि में बहुत पुरानी और परम्परागत कृषि पद्धतियां आज भी प्रयोग हो रही हैं।

2. प्रायः प्रतिवर्ष बाढ़, सूखा, पाला, पत्थर आदि प्राकृतिक आपदाएं खड़ी फसल को नष्ट कर देती हैं। इन आपदाओं की प्रभावकारी रोकथाम और पूर्वानुमान कृषि क्षेत्र में सार्थक परिणाम दे सकता है किन्तु क्षेत्रीय कृषकों के द्वारा इन मौसम दशाओं पर ध्यान न देना समस्याओं को बढ़ा देता है।

3. निवेश सुविधाएं जैसे- परिष्कृत बीज, कीटनाशक, उर्वरक और कृषि यन्त्र कुछ ही सेवा केन्द्रों पर महंगे दामों में प्राप्त होते हैं जिससे गरीब किसान उनका प्रयोग कठिनाई से कर पाता है।

फोटो प्लेट न0 15- भेड़ पालन गौहानी ग्राम, जसरा इलाहाबाद

फोटो प्लेट न0 16- कुक्कुट पालन बरौली ग्राम, कौंधियारा इलाहाबाद

TRANS-YAMUNA REGION OF ALLAHABAD DISTRICT

A PRODUCTIVITY GRAPH OF MAJOR CROPS
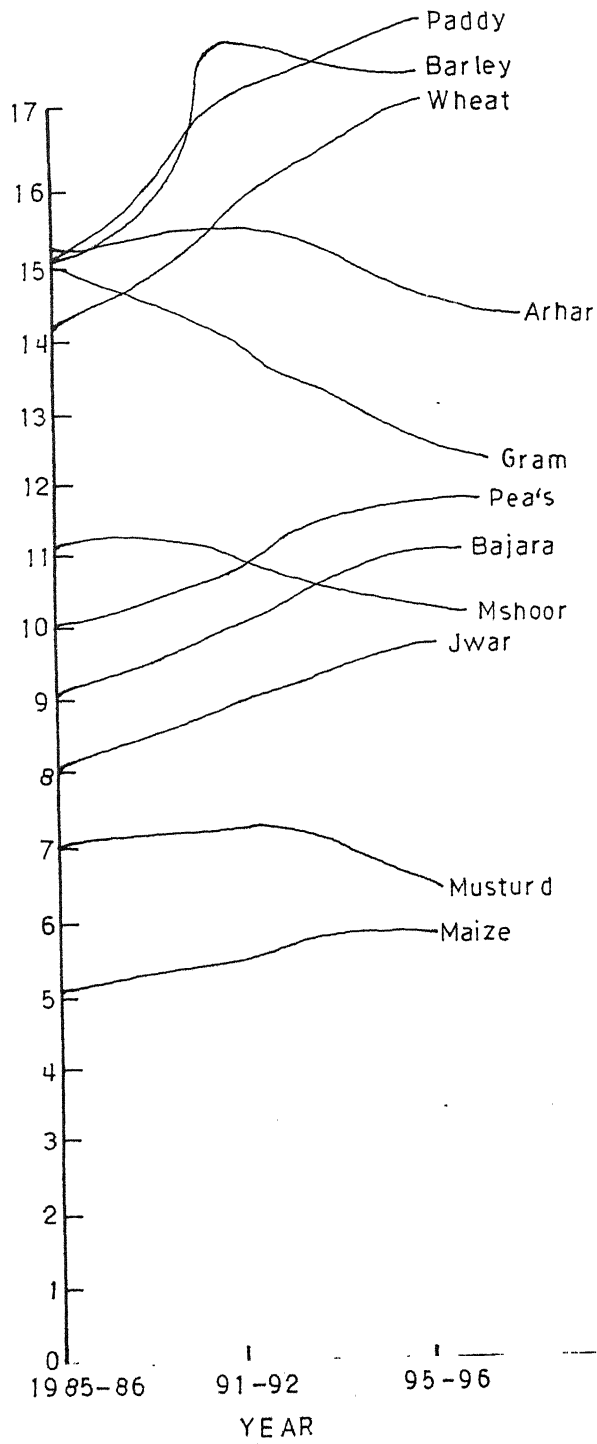
Fig. 4.12

4. क्षेत्र में कुल कृषि भूमि का 53 प्रतिशत भाग ही सिंचित है जबकि 47 प्रतिशत भाग असिंचित है जिससे कृषि उत्पाद एवं उत्पादकता दोनों कम हो जाती हैं।

5. मूलभूत सुविधाएं जैसे उर्जा पूर्ति, कृषीय ऋण एवं वित्त, ग्रामीण बैंक, भूमि विकास बैंक, गोदाम, कोल्ड स्टोर, कृषि बाजार आदि सुविधाओं की कमी के कारण क्षेत्र में कृषि क्षेत्र विरोधी रूप से प्रभावित हुआ है।

6. कुछ कृषि सेवा केन्द्रों का निर्धारण हुआ है किन्तु वे ग्रामीण क्षेत्रों की प्रभाविता के साथ सेवा नहीं करते हैं।

7. शस्य गहनता एवं कृषि दक्षता यद्यपि क्रमशः सतत् बढ़ रही है किन्तु वे मांग के अनुरूप अत्यल्प हैं जबकि भूमि पूंजी उत्पादकता भी बहुत कम हैं।

8. बढ़ती जनसंख्या के कारण श्रमिक शक्ति का दबाव बढ़ रहा है किन्तु वे कठिनता से कृषि क्षेत्र में अल्प कालिक रोजगार प्राप्त करते हैं जिससे वे ज्यादातर रोजगार और कार्य की खोज में शहरी क्षेत्रों में स्थानान्तरित हो रहे हैं।

9. अध्ययन क्षेत्र में पशुपालन,भेड पालन, कुक्कुट पालन दुग्धपालन, मत्स्य पालन, वानिकी, मुर्गी पालन आदि की स्थापना भी हुई है किन्तु इनमें पशुओं की खराब नस्लें, खराब पशु खाद्यान्न, पशु पालन की खराब दशा, नवीन तकनीकों का प्रयोग न करना आदि के कारण इनका समुचित विकास नहीं हो पा रहा है। (फोटो प्लेट न0 15,16)

10. किसानों में उद्यम, कौशल एवं शिक्षा की कमी भी इस क्षेत्र की कृषि विकास के पिछड़ेपन का बहुत बड़ा कारण हैं।

11. अध्ययन क्षेत्र में काफी कृषि योग्य भूमि पर जल भराव एवं खरपतवार वृद्धि की समस्या है, जिसमें कुछ भी नही हो पाता है, इससे क्षेत्र का काफी बडा भाग बिना बोये रह जाता है।(फोटो प्लेट न0 17)

कृषि विकास के लिए स्थानीय नियोजन :-

उपरोक्त परिचर्चा से यह स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र में कृषि विकास के लिए अत्यधिक सम्भावना है। किन्तु सम्भाव्यता के उपयोग के लिए विशेषकर कृषि भू उपयोग प्रतिरूप, फसल प्रतिरूप, खेती करने का ढंग, निवेश

और मूलभूत सुविधाएं, कृषकों के रहन-सहन और व्यवहार आदि में कुछ आवश्यक परिवर्तन एवं सुधार करना होगा, नियोजन इकाइयों के जाल जैसे सेवा केन्द्रों और उनके सेवित क्षेत्रों का अध्ययन, क्षेत्र में विविध कृषि कार्यों और सेवाओं का स्थानीय नियोजन में लाभदायक एवं हितकर उपयोग करना होगा।(फोटो प्लेट न० 18) अतः क्षेत्र में कृषि विकास की समस्याओं के सन्दर्भ में यहां पर कुछ उपयुक्त एवं व्यावहारिक नीतिपरक सुझाव तथा कृषि किया कलापों के अवस्थापन हेतु स्थानिक कृषि विकास योजना प्रस्तुत की जा रही है। यदि उसे सच्चाई से लागू किया जाए तो कृषि क्षेत्र के अवरोधों एवं समस्याओं का उन्मूलन होगा तथा कृषि एवं सम्बद्धता किया कलापों की विकास प्रकिया तीब्र होगी। कृषि विकास सम्बन्धी स्थानिक योजना निम्नलिखित हैं-

1. अध्ययन क्षेत्र में कृषि विकास प्रकिया तीब्र करने के लिए पहली और प्रमुख प्राथमिकता यह है कि ज्यादा से ज्यादा भूमि को समाहित करके कृषि क्षेत्र का विस्तार करना जिससे कि जन्तु बाधाओं, जलभराव, भूमि अपक्षरण, भूमि अपरदन आदि अवरोधों से युक्त बेकार पड़ी हुई भूमि का अधिकाधिक प्रयोग कृषि कार्य में हो सके। इन समस्याओं को तुरन्त रोकने की आवश्यकता है ताकि भूमि कृषि प्रयोग के लिए पुनः उपयुक्त हो जाए। दूसरी ओर मिट्टी में अपेक्षित खनिज तत्वों एवं पोषक तत्वों की कमी को और उनके उर्वरता स्तरों को अध्ययन क्षेत्र की विभिन्न भागों की मिट्टियों का सही एवं उचित परीक्षण होना चाहिए एवं उस कमी को हरी खाद, कम्पोष्ट खाद, मात्रिकों एवं कृत्रिम खादों के प्रयोग द्वारा कृषित मिट्टियों की उर्वरता को पुनः प्राप्त करना चाहिए।
2. सिचाई सुविधाओं की वर्तमान प्रणाली को वर्तमान एवं भविष्य की मांगों के अनुसार नई नहरों एवं उनकी वितरिकाओं को खोलकर एवं नए ट्यूबवेलों की बोरिंग करके पम्प सेटों की स्थापना एवं कुंआ तालाब खोदकर जहां सम्भव एवं आवश्यकता हो विस्तार करना चाहिए।

3. वर्तमान भू-उपयोग प्रतिरूप को विविध मिट्टियों की उर्वरता एवं सिंचाई सुविधाओं की उपलब्धता तथा सामान्य रूप से उपभोग और मांग प्रतिरूप लागत लाभ सम्बद्ध के परिप्रेक्ष्य में भी परिवर्तन एवं संशोधित होना चाहिए। इससे मिट्टियों एवं सिंचाई के साधनों का उपयोग बेहतर होगा तथा कृषकों की आय एवं उत्पादन में वृद्धि होगी।

4. इसी प्रकार मिट्टी की गुणवत्ता, सिंचाई, फसल उपलब्धता तथा सिंचाई की मांग के अनुसार ही खरीफ, रबी एवं जायद फसलों में भी परिवर्तन किया जाए।

5. क्षेत्र में भूमि के भौतिक गुणों मृदा के सही उपयोग एवं जल की उपलब्धता के परिप्रेक्ष्य में फसल पेटियों का निर्धारण होना चाहिए।[25] अच्छी भूमि तथा

फोटो प्लेट नं० 17- जलभराव एवं वलीना विकास, कौंधियारा ब्लाक, इलाहाबाद
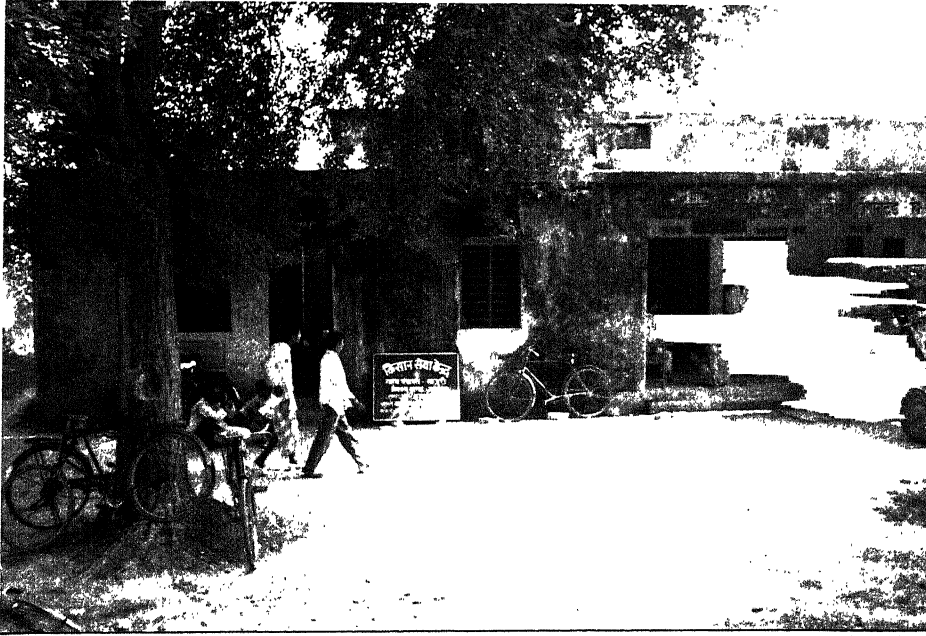
फोटो प्लेट नं० 18- किसान सेवा केन्द्र- खजुरी गाँव, कोरांव, इलाहाबाद

TRANS YAMUNA REGION
OF
ALLAHABAD DISTRICT
PROPOSED AGRICULTURAL
FUNCTIONS AND SERVICES
YAMUNA RIVER
GANGA RIVER
N
Chaka
Jasra
Karchhana
Bara
Kaundhiara
Shankargarh
Uruva
Meja
Manda
Koraon
L. D. B.
VETERINARY HOSPITAL
SEED & FERTILIZER
AGRICULTURAL IMPLEMENTS
AGRICULTURAL CO-OPRATIVE SOCIETY
COLD. STORAGE
MANDI SAMITI
GO DOWNS
10
0
10
km
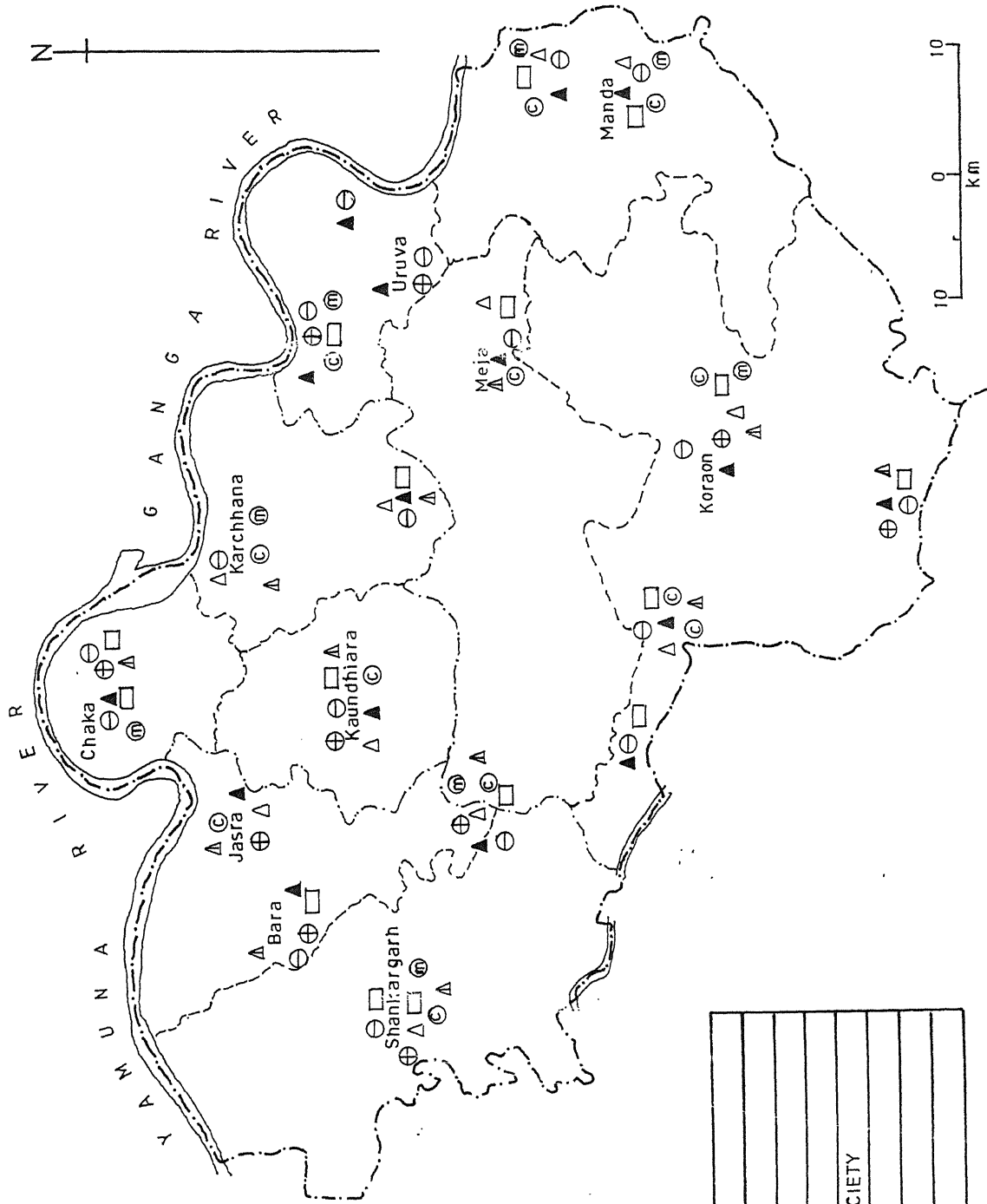
Fig. 4.13

मृदा एवं अधिक जल की मात्रा वाली फसलों को उच्च श्रणी के मृदा जल पेटी में उगाया जाना चाहिए। अध्ययन क्षेत्र के जिन भागों में पर्याप्त जल की मात्रा उपलब्ध नहीं है तथा मृदा उर्वरा भी अच्छी नहीं है वहां मोटी फसलें जैसे- ज्वार, बाजरा एवं मक्का उगाया जाना चाहिए। क्षेत्र हेतु एक उपयुक्त शस्य संयोजन एवं शस्य चक का विकास होना चाहिए।

6. संशोधित रूप के निवेशों जैसे उन्नतशील बीजों, रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों, परिष्कृत एवं कृत्रिम यन्त्रों आदि के प्रयोग में किसानों को शिक्षण एवं प्रशिक्षण देने के साथ-साथ उत्साहित भी करना चाहिए। निवेश की वर्तमान वितरण प्रणाली असमान, असन्तुलित एवं अपर्याप्त है। किसान इन निवेश सुविधाओं को प्राप्त करने के लिए लम्बी दूरी की यात्रा करता है जिसमें उसकी अत्यधिक श्रम, समय, पूंजी और शक्ति लगती है जिससे गरीब किसान उसे प्राप्त नहीं कर पाता है। इस लिए यह सुझाव दिया जाता है कि अध्ययन क्षेत्र में इनकी पर्याप्त मात्रा में उपलब्धता नजदीकी सेवा केन्द्रों पर होनी चाहिए।

7. पर्याप्त सिंचाई सुविधाएं, भण्डारण एवं विपणन सुविधाओं के माध्यम से भूमि एवं मानव संसाधन का अधिकतम उपयोग करते हुए मुद्रादायिनी एवं बहुफसली कृषि को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। इससे किसानों की आय एवं रहन सहन के स्तर में वृद्धि होगी। साथ ही कृषि क्षेत्र अपनी एवं औद्योगिक क्षेत्रों की मांगों की पूर्ति भी कर सकेगा।

8. कृषि मूल्य निर्धारण सफल और कारगर होनी चाहिए और मध्यस्थ व्यापारियों एवं सौदागरों द्वारा किसानों का शोषण रोक देना चाहिए।[26] नजदीकी सेवा केन्द्रों पर कृषि उत्पादों के विकय और खरीददारी के लिए पर्याप्त बाजारीय सुविधाएं उपलब्ध करानी चाहिए।जिससे किसान अपनी उपजों से पर्याप्त लाभ और पारिश्रमिक प्राप्त कर सके।

9. मूलभूत सुविधाएं जैसे माल गोदाम बाजारीय शाख एवं वित्तीय परामर्श आदि भी काफी कम हैं तथा वर्तमान मांग और उनका वितरण भी असमान है जबकि विभिन्न कम के सेवा केन्द्रों में इन सुविधाओं की स्थापना एवं प्राप्ति होनी चाहिए जिससे वहां पर के किसानों को आसानी से सस्ते दामों में प्राप्त हो सके। कृषि के लिए पर्याप्त ऋण-शाख और वित्त की पर्याप्त सुविधाएं निश्चित स्थानों पर सरकारी एजेन्सियों द्वारा किसानों को उपलब्ध होनी चाहिए। अध्ययन क्षेत्र में विभिन्न सेवा केन्द्रों में अवस्थिति कय और वांछित ऋणों, शाख सुविधाएं भी आसानी से मुहैया होनी चाहिए।

10. इलाहाबाद जिले के यमुना पार क्षेत्र में कृषि विकास के एक आदर्श स्थानिक नियोजन के लिए यह अनुशंसित है कि सभी कृषि वृद्धि लाने की कियाएं

वाह्य संरचना, निवेश, फसल कटाई के बाद की सुविधाओं में विस्तार किया जाए तथा उन्हें उपयुक्त सेवा केन्द्रों पर स्थापित किया जाए। चूंकि सेवा केन्द्र अपने समीपवर्ती भागों से कार्यात्मक स्तर पर अन्तर्सम्बन्धित होते हैं अतः उन सेवा केन्द्रों पर कृषि विकास सुविधाओं को स्थापित करने से क्षेत्रीय स्थानिक किया तीब्रतर होगी तथा विकास प्रकिया भी तीब्रतर होगी। साथ ही सम्बद्ध वृद्धि पूरक कियाओं की स्थिति केन्द्रों एवं सेवा केन्द्र विविध कृषि उत्पादों के कय एवं विकय हेतु उपयुक्ततम बाजार प्रस्तुत करेंगे। इस प्रकार क्षेत्र में सेवा केन्द्रों का जाल कृषि के सन्तुलित विकास हेतु आवश्यक है। क्षेत्र में विविध सेवा केन्द्रों पर कृषि विकास हेतु प्रस्तावित विधि कार्यों एवं सुविधाओं को मानचित्र में प्रदर्शित कर कृषि विकास सम्बन्धी स्थानिक योजना प्रस्तुत की गई है।(फिग.4.13)

REFERENCE

1. Zimolzak, C.E. and Stanfield, C.A. 1979 : The Human Land-Scape-Geography and Culture, Merrill Publishing Company, London, p.259.
2. Mishra, B.N. and Tripathi, S.N. 1989 : Level of Agricultural Development and its Contribution To Regional Economy in Basti District, National Geographer, Vol XXVI, No.2 Allahabad, p.97-108.
3. Thoman, R.S. and Corbin, P.B., 1974: The Geography of Economic Activity, McGraw Hill Book Company, London, p.72.
4. Mishra, B.N. and Tripathi, S.N. 1985 : Population Growth and Agricultural Development - A case study of Basti District U.P., University of Allahabad Studies Vol.17 (N.S.) No.4, Allahabad p.291-301.
5. Jordan, T.G. and Rowntree, L. 1982: The Human Mosaic – A Thematic Introduction to Cultural Geography, Harper and Row, 3rd Edition, New York, p.69
6. Rabenstein, J.M. and Bacon, R.S. 1990 : The Cultural Landscape – An Introduction to Human Geography, Prentice Hall of India Pvt. Ltd., New Delhi, p.264.
7. Mishra, B.N. 1984 : Impact of Irrigation on Farming in Mirzapur District of U.P., The Geographical Review of India, Vol.46, No.4, Calcutta p.25-33.
8. Sharma, D.P. and Desai, V.V. 1980: Rural Economy of India, Vikas Publishing House Pvt. Ltd., New Delhi, p.29.
9. Nicholas, W.H. 1970: The Place of Agriculture in Economic Development, C.K. Eicher and Lawrence W. Will, p.13.
10. Mishra, B.N. 1992: Agricultural Management and Planning in India, Chug Publications, Allahabad.
11. Mishra, S.K. and Puri, V.K. 1986: Development and Planning – Theory and Practice, Himalaya Publishing House, Bombay.
12. National Commission on Agriculture, 1976: Report, Part II Policy and Strategy, Government of India, New Delhi, p.1.
13. Mishra, B.N. 1992: Role of Agriculture in the Rural Development – A case of Mirzapur District U.P., Geographical Review of India, Calcutta, Vol..54, No.1 pp.37-49.
14. Mishra, B.N. 1980: The Spatial Pattern of Service Centres in Mirzapur District, U.P. Unpublished Thesis, University of Allahabad, Allahabad.

15. Dantwala, M.L. and Donde, W.B. 1965: The Economic Cultivator, Indian Journal of Agricultural Economics (1940-64) Selected Readings, p.37.

16. Dubey, R.N. and Negi, B.S.: Economic Geography of India, Kitab Mahal, Allahabad, 1968, p.175.

17. Singh, R.L. (Edited): India: A Regional Geography, National Geographical Society of India, Varanasi, 1971.

18. Mishra, B.N. 1992: Indian Agriculture – The Progress & the Predicament, National Geographer Vol.XXVII, No.2, pp85-99.

19. Kayastha, S.L., Himachal Region in India: A Regional Geography, Singh, R.L. (Edited), Varanasi, 1971 p.421.

20. Dubey, R.N. and Negi, B.S.: Op Cit, p.191.

21. Spate, O.H.K. and Learmonth, A.T.A.: India and Pakistan: General and Regional Geography, London, 1967, p.786.

22. Dubey, R.N. and Negi, B.S.: Op. Cit., p.141.

23. Soate, O.H.K. and Learmonth, A.T.A.: Op Cit. P.517.

24. Singh, Jasbir and Dhillon, S.S. 1991: Op Cit. P.126.

25. Mishra, B.N. 1992: Agricultural Management and Planning in India, Chug Publications, Allahabad.

26. Ibid.

अध्याय - 5

औद्योगिक विकास हेतु स्थानिक नियोजन

उद्योग, किसी विकासशील देश के अर्थव्यवस्था की धुरी होता है। भारत जैसे बड़े एवं विकासशील देश में इसका महत्व सभी क्षेत्र में अत्यन्त सुदृढ़ एवं सुव्यस्थित है। भारत में उद्योगों की परम्परा बहुत पुरानी है जिसे ऐतिहासिक रूप से सिन्धु घाटी की सभ्यता के काल का माना जाता है। प्राचीन काल में भारत अपने सुनहरे दिनों में अच्छी किस्म के सूती वस्त्र, पेटी, कांस्य वस्तुएं एवं हस्तनिर्मित वस्तुएं बनाकर प्रयोग करता था। दिल्ली में कुतुबमीनार के पास खड़ा जंगरहित लौह स्तम्भ प्राचीन कालीन धातु प्रयोग का अच्छा उदाहरण प्रस्तुत करता है। अठारहवी शताब्दी तक भारत जहाज निर्माण में अग्रगणी था। भारतीय अच्छे कपड़े, धात्विक तारों, मसालों आदि अन्य वस्तुओं के बदले विश्व के अनेक भागों से स्वर्ण वाहित करता था जो इसकी पहचान का महत्वपूर्ण कारण था। अतः भारत में वर्तमान औद्योगिक वस्तुएं प्राचीन कालीन वस्तुओं से गुण और श्रेणी में सुदृढ़ हो सकती हैं।

भारतीय गांवों के इतिहास की लहरदार धारा ग्रामीण धन सम्पत्ति एवं ग्राम्य उद्योगों की उन्नति जैसे- कारीगरी, पत्थरगीरी, बढ़ईगीरी, धात्विक नक्कासी, बरतन भांड़ा बनाना, हथियार बनाना, स्वर्णकारी आदि के बारे में एक स्थायी साक्ष्य उत्पन्न करती हैं। ये कियाएं वास्तव में तत्कालीन शुद्ध आर्थिक व्यवसाय उत्पन्न करती थीं किन्तु आज वे हमारे राष्टीय सांस्कृतिक ढांचे एवं सामान्य जीवन का सुन्दर समाकलन प्रस्तुत करती हैं। ये हमारी परम्पराओं की वाहक और मूल्य प्रणाली के सिद्धान्तों की धारक होती थीं। इन उद्योंगों के परिष्कृत उत्पाद आज भी विश्व के प्रमुख संग्राहलयों में सुन्दरता एवं विशिष्टता का मूर्तिमान आदर्श प्रस्तुत करते हैं। किन्तु देश में ईष्ट इंडिया कम्पनी का आधिपत्य स्थापित हो जाने के बाद ग्रामीण उद्योगों की चमत्कारपूर्ण परम्पराएं उपेक्षा और अरुचि का सामना करने लगीं, आगे चलकर 19वीं शताब्दी के मध्य भारी उद्योगों की शुरुआत के साथ इसे एक गजब का झटका लगा जिसका परिणाम यह हुआ कि इन वस्तुओं की मांगें क्षीण होने लगीं [1]।

उद्योग और क्षेत्रीय विकास :-

भारत जैसे कृषित देश में, जहां की लगभग 70 प्रतिशत जनसंख्या सीधे कृषि क्षेत्र पर आश्रित हो कृषि का विकास प्राविधिक एवं संगठित होना चाहिए क्योंकि यह अपने आप औद्योगिक क्षेत्र का विकास करता है। किन्तु इस सन्दर्भ में अग्रगामी और पश्चगामी सम्बन्धों तथा बराबर पुनर्निवेशों की

अधिकता के कारण इसका विकास लम्बे समय में परिकल्पना के विपरीत छितर जाता है जो अन्य क्षेत्रों - आर्थिक एवं सामाजिक पर प्रभाव डालता है। उद्योग आर्थिक विकास का अग्रदूत माना जाता है एवं सामाजिक विकास सामान्य सम्वृद्धि प्रतिपादित करता है। किसी देश के आर्थिक विकास की सामान्य प्रकिया को स्वतः बढ़ाकर उसे प्रबन्धित और नियोजित करता है। उद्योग केवल वृद्धि ही नहीं बल्कि सामाजिक आर्थिक समस्याओं को हल करता है, उनको पूर्ण करता है तथापि कम से यह उद्योग अपने आप स्थायी वृद्धि एवं विकास को बढ़ाता है। पुनर्निवेशों की मात्रा को स्पष्ट रूप से परिभाषित करता है। सांस्थानिक, संगठनात्मक और अभियानिक तथ्यों को सावधानी पूर्वक नियोजित करता है तथा औद्योगिक विकास, वृद्धि एवं विकास की सामान्य प्रकिया के आन्तरिक भाग को बनाता है।

इस प्रकार देश के वर्तमान संसाधन आधार तथा समाज की सामाजिक आर्थिक स्थिति के संदर्भ में सचेष्ट रूप से नियोजित एवं संगठित औद्योगिक विकास संसाधनों के उपयुक्ततम विकास को प्रोत्साहित करता है। रोजगार अवसरों की वृद्धि करता है, लोगों की आय एवं रहन-सहन केस्तर में वृद्धि करता है। ग्राम्य नगरीय स्थानान्तरण को रोकता है, प्रादेशिक असन्तुलन को कम करता है तथा क्षेत्र में प्रादेशिक विकास प्रकिया को तीव्रतर करता है[2]।

उपयुक्ततम औद्योगिक विकास जो किसी प्रदेश में स्वपोषित विकास प्रक्रिया उत्पन्न करता है, का तात्पर्य औद्योगिकीकरण के उस स्तर से है जो पर्यावरण में बिना प्रतिकूल प्रभाव जैसे- प्रदूषण, आपदा, अवनयन आदि के उत्पन्न किए स्थानिक संसाधन आधार का पूर्ण उत्पादक उपयोग करता है।

उद्योगों की विविधता विभिन्न संसाधनों जैसे- जल, वनस्पति, खनिज तत्व, कृषि, मानव शक्ति, मिट्टी आदि जो या तो कम प्रयोग हुई हैं या हुई ही नहीं हैं के उपयोग के लिए कई सम्भावनाएं प्रतिपादित करती हैं।

मूल रूप से प्राथमिक क्षेत्र जीविका निर्वाह आवश्यकताओं पर आधारित होता है किन्तु उपरोक्त संसाधनों के औद्योगिक प्रयोग से केवल उनका प्रति इकाई मूल्य ही नहीं बढ़ता, बल्कि उन परिष्कृत वस्तुओं की मांग भी बढ़ती है तथा उनके उत्पादित वस्तु की मांग भी बढ़ती है जो उनके मूल्य के पुनः बढ़ाने में सहयोग करती है। परिणामस्वरूप संसाधन स्वामी को उचित मूल्य मिलता है। औद्योगिक विकास अप्रयुक्त एवं गतिहीन संसाधनों जैसे जल भूमि, जल का तालाब, झील, नदी और खनिजों का व्यापारिक उपयोग कर उन्हें मूल्यवान सम्पत्ति में बदल देता है।

जहां तक कृषि संसाधनों का प्रश्न है उनमें तथा औद्योगिक क्षेत्र के बीच एक सहजीवी सम्बन्ध है। कृषि क्षेत्र उद्योगों के लिए कच्चा माल प्रदान

करता है और औद्योगिक क्षेत्र कृषि के लिए निवेशों की आपूर्ति करता है। राज चक्रवर्ती और विघानाथन ने औद्योगिक उत्पादनों के धीमे विकास की व्याख्या करते हुए उसे कृषि क्षेत्र की असंतोषजनक कार्यप्रणाली से सम्बन्धित किया है। जनशक्ति दोहरी भूमिका निभाती है-

1. उत्पादन अभिकरण के रूप में और
2. एक देश की अर्थव्यवस्था में वस्तुओं के उपभोक्ता के रूप में।

किसी अर्थव्यवस्था के विकास के लिए ये दोनो भूमिकाएं महत्वपूर्ण हैं तथा ये विकास गति एवं दर दोनों का निर्धारण करती हैं। विकासशील देशों में जहां विकास दर अत्यन्त न्यून होती है, जनशक्ति का अधिकांश भाग कृषि में तथा अत्यल्प भाग उघोगों में लगा है। साथ ही इस जनशक्ति को पूर्ण कालिका रोजगार भी नही प्राप्त हो पाता है[3]।

अतः यह प्रमाणिक सत्य है कि आर्थिक रूप से कम विकसित देश अधिकांशतः कृषि पर आधारित है, जबकि विकसित देशों में कृषि में लगी जनसंख्या अत्यल्प है। भारत के संदर्भ में भी जनशक्ति का अधिकांश भाग कृषि में लगा है जो उनकी सम्पूर्ण क्षमता एवं कुशलता का उपयोग नहीं कर पाता। इस प्रकार औद्योगिक विकास इन देशों की जनशक्ति की क्षमता एवं कुशलता का उचित उपयोग करने हेतु प्रचूर अवसर प्रदान करता है। कृषि पर बढ़ती हुई जनसंख्या का भार सीमा पार कर चुका है तथा मानव भूमि अनुपात अत्यन्त असंतुलित है। ग्रामीण क्षेत्रों में जनशक्ति का एक बड़ा भाग वर्ष भर अक्रियाशील एवं बेरोजगार रहता है, तथा परिवार की अल्प आय में ही जीवन यापन करता है जिससे गरीबी एवं रहन-सहन का स्तर निरंतर गिरता जाता है। ऐसी दशाओं में औघोगीकरण एक वरदान है क्योंकि यह ग्रामीण क्षेत्र के लोगों को रोजगार का अवसर प्रदान करता है। ग्राम्य क्षेत्रों के विकास हेतु यह एक बड़ा एवं महत्वपूर्ण योगदान है। अतः यदि ग्रामीण क्षेत्रों में उघोगों का विकेन्द्रीकरण किया जाए, तो उससे लोगों को रोजगार एवं आय में वृद्धि होने के साथ ही साथ ग्रामीण विकास, राष्टीय विकास एवं देश की आर्थिक विकास की प्रक्रिया तीव्रतर और मजबूत होगी।

शहरी क्षेत्रों में अधिक पूंजी निवेश के द्वारा रोजगार उत्पन्न करने की आशा बहुत सफल नहीं है। आज कल ग्रामीण बेरोजगारी की बढ़ती समस्या को रोकने के लिए केवल एक विकल्प यह है कि सघन जनसंख्या वाले क्षेत्रों में श्रम, तकनीकी दक्षता का विकल्प खुला रखा जाए[4]। इसके अलावा ग्रामीण उघोगों के अन्य फायदे ये हैं कि प्राकृतिक रूप से उनके निजी स्थानों पर रोजगार की बढ़ोत्तरी होती है जो कि आर्थिक विचार की तरह सामाजिक रूप से भी बहुत महत्वपूर्ण है। ग्रामीण क्षेत्रों में औद्योगिक विकास ग्रामीणों के जीवन स्तर और आय को बढ़ाने में सीधे सहायक भी होता है। इस तरह औघोगीकरण से ग्रामीण क्षेत्रों की गरीबी, भुखमरी, कुपोषण, शोषण आदि में

सुधार की प्रकिया तीव्र होती है। अन्य रूपों से ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा, साक्षरता, कौशल आदि के कारण भी लोगों की आय में वृद्धि होती है और ग्रामीण लोगों की कारीगरी, कला प्रवीणता तथा अन्तर्निहित क्षमताओं के विकास के लिए सम्भावनाएं परस्तुत करती है। अतः यह कहा जा सकता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में औद्योगिकीकरण से बड़ी संख्या में श्रमिक शक्तियों का ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी क्षेत्रों में स्थानान्तरण प्रभावशाली तरीके से रोका जा सकता है एवं शहरी मलिन बस्तियों और जनसंख्या वृद्धि जैसी समस्याओं से बचा जा सकता है।

ग्रामीण क्षेत्रों में औद्योगीकरण से ग्रामीण संसाधनों का बराबर उपयोग, रोजगार अवसरों में वृद्धि, शिक्षा की प्रकिया में वृद्धि और सुधार से लोगों के जीवनस्तर और आय में सुधार, स्वास्थ्य और सांस्कृतिक विकास, क्षेत्रीय आर्थिक असंतुलन को कम करने के प्रभावकारी सुधार आज के लिए विभिन्न अवसर उत्पन्न करता है। क्षेत्र के सभी सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं सामाजिक संघर्षों के कारणों की पहचान करता है एवं उन्हें दूर करने का प्रयत्न करता है।

क्षेत्र में औद्योगिक विकास की सम्भावनाएं :-

यमुनापार प्रदेश औद्योगिक विकास की प्रचुर सम्भावनाओं से युक्त है क्योंकि इसके अन्दर विभिन्न प्रकार की औद्योगिक संसाधनों जैसे चट्टानी उत्पाद 'बालू, चटिया, बोल्डर, मिट्टी, मोरंग आदि' वनीय उत्पाद, कृषीय उत्पाद, पशुपालन उत्पाद, बड़ी जनसंख्या एवं मूलभूत सुविधाएं इत्यादि प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं।

इन प्राकृतिक सम्पदाओं की स्थाई निधि से क्षेत्र में स्थानीय संसाधनों के आधार पर ग्रामीण और लघु स्तरीय उद्योगों आदि के लिए एक उज्जवल मार्ग प्रशस्त करता है। जबकि विभिन्न राजकीय संस्थानों एवं विभागों द्वारा दी गई मूलभूत सुविधाएं और प्रेरणाएं भी क्षेत्रीय औद्योगिक विकास की प्रकिया में विशेष रूप से सहायक हो रही हैं। फिर भी सम्पूर्ण सहयोग, सम्भावनाओं एवं प्रेरणाओं का उपयोग तभी हो सकता है जब इसका प्रयोग सही दृष्टिकोण एवं अन्तरआत्मा से किया जाय। औद्योगिक संसाधनों, बाह्य संरचनाओं, प्रेरणाओं, सहयोग एवं नीतिगत निर्देशों का एक संक्षिप्त विवरण निम्न रूप में देखा जा सकता है--

औद्योगिक संसाधन :-

अध्ययन क्षेत्र में महत्वपूर्ण औद्योगिक संसाधनों में बालू, ईंट, मिट्टी, वनीय उत्पाद, जल संसाधन, पशु उत्पाद, चट्टानी उत्पाद आदि प्रमुख रूप से पाए जाते हैं जिनका विवरण निम्नवत् है-

1. बालू :-

यह एक महत्वपूर्ण भवन निर्माण पदार्थ है जो भवन के अलावा भी अन्य निर्माण कार्यों में प्रयोग होता है। यद्यपि यह बालू सभी नदियों जैसे- गंगा, यमुना, टौंस, लपरी आदि की गोदियों में पाया जाता है किन्तु अच्छी किस्म का बालू जो मशीनरी कार्यों में प्रयोग किया जाता है वह गंगा व यमुना नदियों के किनारे केवल शंकरगढ़, जसरा, चाका, करछना एवं उरूवा ब्लाक के सीमावर्ती क्षेत्रों में पाया जाता है। इस बालू का निक्षेप स्थायी नहीं होता बल्कि प्रतिवर्ष नदी बहाव के कारण घाटियों में परिवर्तित स्थानों पर निक्षेपित होता रहता है। इन घाटियों में खनन के बाद सम्पूर्ण क्षेत्र की पूर्ति की जाती है।

2. ईंट-मृत्तिका :-

अध्ययन क्षेत्र में नदियों के द्वारा लगातार उर्वर और गहरी मिट्टी का निक्षेपण होता रहता है। इसी उच्च उर्वरता के कारण ही क्षेत्रीय उत्पादकता भी उच्च पायी जाती है। ज्यादात्तर क्षेत्रीय मृत्तिका गहरे निक्षेपण से युक्त है जो कृषि के अन्तर्गत आता है। अतः इस क्षेत्र में मिलनेवाली मृत्तिका चिपचिपाहट युक्त होती है जो कि ईंट बनाने के लिए मिट्टी की एक प्रमुख आवश्यकता होती है। इसकी अन्य विशेषता यह होती है कि इसमें अच्छे बालू का पर्याप्त मिश्रण होता है जो इसे कॉप मृत्तिका बनाने में सहायक होता है और यही कॉप मृत्तिका ईंट बनाने की एक प्रमुख विशेषता होती है। यह मिट्टी क्षेत्र में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। ईंटों की शहरी भवन, उद्योगों, पुल निर्माण आदि एवं ग्रामीण उद्योगों में बहुत बड़ी मांग है। इन मांगों की पूर्ति के लिए विभिन्न ब्लाकों जैसे- जसरा, चाका, करछना, मेजा एवं उरूवा आदि में अनेकों ईंट भट्ठे सुचारु रूप से चल रहे हैं।

3. वनीय संसाधन :-

अध्ययन क्षेत्र में 20.067 हेक्टेयर भूमि वनों में समाहित हैं जो कि सम्पूर्ण क्षेत्र का 0.93 प्रतिशत भाग होती है। सम्पूर्ण क्षेत्र में वन बिखरे हुए पाये जाते हैं। ज्यादा प्रबल मानसून पतझड़ प्रकार के हैं जिनके प्रमुख वृक्ष - आम, बरगद, महुआ, नीम, शीशम, पीपल, गूलर, जामून, बेर, आंवला, सलाई, काकोरी, बबूल, कहुआ, बांस, यूकेलिप्टस आदि हैं। इन क्षेत्रों से उत्पाद के रूप

में जलाउ लकड़ी, इमारती लकडी, फल, गोंद, व्यापारिक तेंदु पत्ता, बीज, औषधीय सामग्री 'जड़, पत्ता, फल, रस' रासायनिक अर्क आदि प्राप्त होते हैं जो क्षेत्रीय कुटीर एवं लघु ग्रामीण उद्योगों में कच्चे माल के रूप में प्रयोग होता है।

4. जल संसाधन :-

सम्पूर्ण अध्ययन क्षेत्र 'मानसून' जलवायु' के अन्तर्गत आता है तथा वर्षा काल अन्तिम जून से मध्य अक्टूबर तक में ज्यादातर वर्षा प्राप्त करता है। मुख्यतः तीन महीनों जुलाई, अगस्त, सितम्बर में ज्यादा वर्षा जल प्राप्त किया जाता है। इस वर्षा के काल में ज्यादातर क्षेत्र बाढ़ एवं जल भराव से प्रभावित, आच्छादित रहता है। इसी बाढ़ एवं वर्षा के जल को तालाबों, बांधों एवं पोखरों में एकत्रित कर लिया जाता है जो एक जल संसाधन के रूप में सिंचाई, उद्योगों एवं व्यापारिक लाभ के लिए किया जाता है। इस क्षेत्र में जल संसाधन का प्रमुख कारक गंगा, यमुना, टौस एवं लपरी नदियां हैं। इसके अतिरिक्त अनेकों झील एवं ताल पाए जाते हैं जो जल संसाधन को प्रचुर बनाते हैं।

इसके अलावा इस क्षेत्र में बड़ी संख्या में कुएं, सरकारी एवं प्राइवेट ट्यूबवेल, पम्पसेट, नहर आदि हैं जिनसे औद्योगिक उपयोग के लिए जल प्राप्त होता है। इन जलीय संसाधनों का उपयोग औद्योगिक उपयोग, मत्स्य पालन, कृषि सिंचाई एवं बागवानी आदि में प्रमुखतः होता है।

5. कृषि संसाधन : -

कृषि हमारी बहुल मानव शक्ति के लिए मुख्य आधार प्रस्तुत करती है। यह हमारी अर्थव्यवस्था का महत्वपूर्ण संसाधन युक्त परिखण्ड है जिसमें देश में ग्रामीण औद्योगीकरण की गति को बढ़ाने के लिए कच्चे पदार्थों की भारी राशियों की आवश्यक आपूर्ति सुनिश्चित होती है[5]। पिछले अध्याय से यह सुनिश्चित हो चुका है कि यमुना पार क्षेत्र कृषि की विभिन्न किस्मों जैसे- गेहूं, जौ, धान, बाजरा, चना, अलसी, तेलहन एवं दालें आदि पैदा करता है जो विभिन्न ग्रामीण एवं कृषि आधारित उद्योगों जैसे- चावल मिल, आटा मिल, दलिया और दाल मिल, तेल पिराई इत्यादि मिलों में कच्चे पदार्थ के रूप में प्रयोग होता है। मसूर, आलू, फूलों एवं सभी प्रकार की सब्जियां भी क्षेत्र में उगाई जाती हैं। अतः अनेकों फल संरक्षण इकाइयां इन उत्पादों को संरक्षित करने के लिए स्थापित की जा रही हैं। क्षेत्र की कृषि सघन जीविकोपार्जन स्तर की है तथा औद्योगिक मिजाज, ठेकेदारी सहभागिता, उद्यम उत्साह और प्रेरणादायी उत्साह की कमी से युक्त है। अगर इस क्षेत्र में कृषि आधारित लघु उद्योगों की स्थापना की जाय तो कृषि वस्तुओं की मांग बढ़ जाएगी और कृषक

TRANS-YAMUNA REGION OF ALLAHABAD DISTRICT
BANKING FACILITIES
YAMUNA RIVER
GANGA RIVER
NAINI
Chaka
Jasra
Bara
Karma
Karchhana
Kaundhiara
Shankargarh
Sirsa
Uruva
Meja
Bharatganj
Manda
Koraun
N
REFERENCES
BB BANK OF BARODA
S STATE BANK OF INDIA
A ALLAHABAD BANK
L LAND DEVELOPMENT BANK
U UNION BANK
R RURAL BANK
D DISTRICT CO OPRATIVE BANK
Uc UCO BANK
P PUNJAB NATIONAL BANK
10 5 0 10
km

Fig. 5.1

विविध फसलों को बड़ी मात्रा में उगाने के लिए आकर्षित होगा क्योंकि इससे उनको अत्यधिक लाभ की प्राप्ति होगी [6]।

इस प्रकार व्यापारिक स्तर पर वास्तविक आवश्यकतानुसार कृषि इन उपरोक्त वस्तुओं का उत्पादन बढ़ाता है और कृषकों को उत्साहित करता है। इसलिए क्षेत्र की बढ़ती हुई खाद्य मांगों की आसानी से पूर्ति हो जाती है एवं शेष उत्पाद ग्रामीण और शहरी उद्योगों के लिए कच्चे माल के रूप में प्रयोग होता है।

मानव संसाधन :-

यमुना पार क्षेत्र की '1991' सम्पूर्ण जनसंख्या 1237709 है जिसमें शहरी 93324 और शेष ग्रामीण है। क्षेत्र का औसत जनसंख्या घनत्व 381 व्यक्ति प्रतिवर्ग कि.मी. है और लिंगानुपात 873 महिला/ 1000 पुरुष है। ग्रामीण जनसंख्या का भाग 92.46 प्रतिशत अंशदान और शहरी जनसंख्या का अंशदान 7.54 प्रतिशत है। शहरी जनसंख्या मुख्यतः पांच नगरपालिका क्षेत्रों जैसे- नैनी '53436', भारतगंज '12465', शंकरगढ़ '10662', सिरसा '8929' एवं कोरांव '7832' में वितरित है। सम्पूर्ण क्षेत्र की साक्षरता का औसत 28.86 प्रतिशत है जिसमें 81.07 प्रतिशत पुरुष एवं 18.93 प्रतिशत महिला साक्षर है। अध्ययन क्षेत्र की ग्रामीण जनसंख्या का 35 प्रतिशत भाग ही कार्यरत जनसंख्या के रूप में है जिसमें 33.21 प्रतिशत मुख्य कर्मकार एवं 1.79 प्रतिशत सीमान्तक कर्मकार के रूप में है। शेष 65 प्रतिशत भाग बेरोजगार एवं अकर्मकारी जनसंख्या का है। सम्पूर्ण ग्रामीण जनसंख्या का 27.2 प्रतिशत (20 प्रतिशत पुरुष, 7.2 प्रतिशत महिला) कृषि कार्य में संलग्न हैं। सम्पूर्ण व्यावसायिक जनसंख्या का 91.31 प्रतिशत कृषि कार्य में ही लगा है जिसमें पुरुष वर्ग का 66.75 प्रतिशत एवं महिला वर्ग का 24.65 प्रतिशत भाग सम्मिलित है जबकि बहुत कम प्रतिशत भाग ही निर्माण, व्यापार एवं यातायात में लगा है। फिर भी यमुना पार क्षेत्र में अच्छी संख्या में बुनकर, लोहार, बढ़ई, धोबी, शिल्पी, कारीगर (भवन निर्माण), दर्जी आदि हैं जो पर्याप्त संख्या में गांवों में वितरित हैं किन्तु ज्यादातर मानव शक्ति एक वर्ष में खाली या बेकार बैठी रहती है क्योंकि कृषि क्षेत्र की क्षमता रोजगार देने में सीमित है। वर्तमान में इस बड़ी मानव शक्ति पर बहुत बड़ी जिम्मेदारी है कि वह अपने क्षेत्र में लघु उद्योगों एवं गांव के विकास में एक महत्वपूर्ण उपयोगी संसाधन के रूप में उपयोग हो सके।

फोटो प्लेट न0 19-यातायात प्रमुख चौराहा, मेजा रोड इलाहाबाद
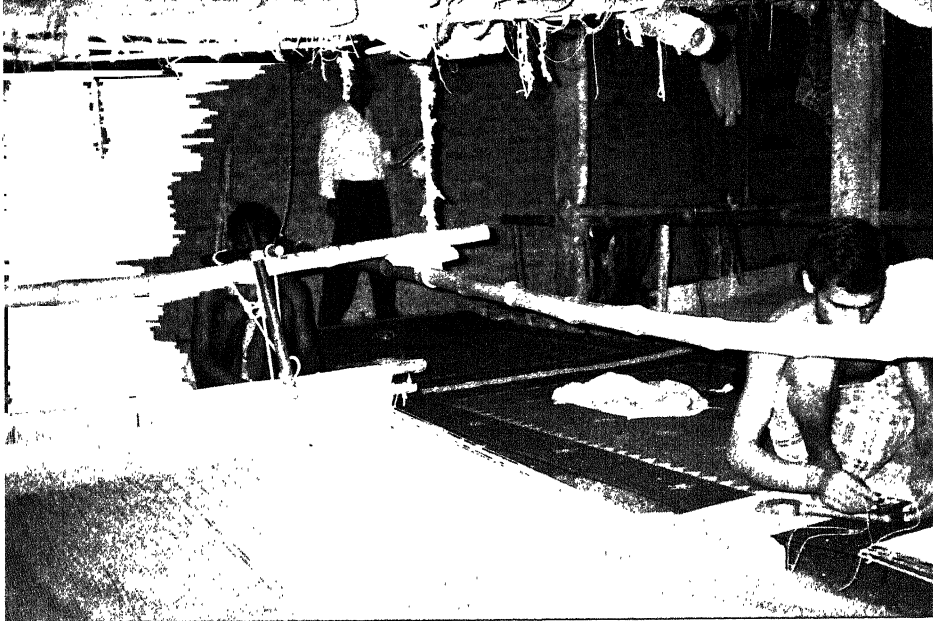
फोटो प्लेट न0 20- दरी बुनाई केन्द्र, लेहड़ी ग्राम, उरुवा, इलाहाबाद

औद्योगिक आधारभूत सुविधाएं :-

ग्रामीण क्षेत्र 'स्थान' के संदर्भ में बड़ा और बिखरा हुआ है। गांवों के गुच्छे अथवा एकान्त थैलों एवं विलग आच्छादि के लिए वाह्य आधारभूत सुविधाओं के विकास के लिए पर्याप्त धन और समय की आवश्यकता होती है। उद्योगों का रोजगार अमुद्रित स्थान की तरह पर्याप्त आधारभूत सुविधाएं जैसे- वित्त एवं बैंक, बाजार प्रणाली, यातायात और संचार, भण्डारण सुविधाएं, सांस्थानिक ढांचा, कौशल एवं तकनीकी आदि व्यवस्थाओं पर आश्रित होता है। यद्यपि हमारी सरकार ने 1960 में सम्पूर्ण देश के चौमुखी विकास के लिए ठोस एवं महत्वपूर्ण आधारभूत सुविधा का सांस्थानिक ढांचा बनाया किन्तु आज भी वर्तमान आधारभूत सुविधाएं आवश्यकता से काफी कम है। फिर भी आज आधारभूत सुविधाओं को पूरा करने की पूरी कोशिश की जा रही है। क्षेत्र में वर्तमान मूलभूत सुविधाओं जैसे बैंक, यातायात और संचार, कौशल और प्रशिक्षण का एक संक्षिप्त विवरण निम्नवत् देखा जा सकता है।

बैंकिंग सुविधाएं :-

अध्ययन क्षेत्र में वित्त के लिए बैंकिंग सेवाओं की एक अच्छी व्यवस्था है जिसका उपयोग औद्योगिक विकास की इच्छित पूंजी और वित्त की पूर्ति में होता है। यहां पर 50 कृषि को आपरेटिव सोसायटी, 32 राष्ट्रीयकृत बैंक, 3 भूमि विकास बैंक एवं 30 क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक आदि की शाखाएं सम्पूर्ण क्षेत्र की सेवाएं कर रहे हैं। मान-5.1 में वित्तीय संस्थान और बैंक औद्योगिक ठेकेदारों को आसानी से ऋण की व्यवस्था करते हैं जिससे वे क्षेत्र में औद्योगिक इकाइयों को स्थापित करते हैं। इस प्रकार अध्ययन क्षेत्र में ये वित्तीय संस्थाएं औद्योगिक विकास की उन्नति में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं।

यातायात एवं संचार :-

'यमुना पार प्रदेश' में रेल मार्ग, सड़क मार्ग एवं संचार लाइनों का एक बड़ा नेटवर्क पाया जाता है। इस क्षेत्र में सम्पूर्ण रेल मार्गों की लम्बाई मीटर और ब्राड गेज के साथ 102 कि.मी. है जिसपर 10 रेलवे स्टेशन पाये जाते हैं। राष्टीय एवं राज्य मार्गों की लम्बाई 323 कि.मी. है जिसमें 50 प्रमुख बस स्टेशन पाये जाते हैं। जिला मार्गों एवं अन्य मार्गों की लम्बाई सम्पूर्ण क्षेत्र में 488 कि.मी. पायी जाती है। अध्ययन क्षेत्र के प्रमुख साफ सुथरे मार्ग जहां एक ओर औद्योगिक विकास को अत्यधिक प्रोत्साहित करते हैं (फोटो प्लेट न0 19) वहीं सम्बद्ध मार्गों पर जल भराव की समस्या इसके विकास को हतोत्साहित करती है(फोटो प्लेट न0 20) रेल मार्ग देश के अन्य प्रमुख शहरों जैसे- इलाहाबाद, पटना, बाम्बे, लखनउ, दिल्ली, जबलपुर आदि महानगरों से जोड़ता

है जबकि सड़क मार्ग इन नगरों के अलावा पड़ोसी नगरों जैसे-वाराणसी, मिर्जापुर, बांदा, रीवां आदि नगरों से जोड़ता है। (मानचित-5.2) क्षेत्र की टेलीफोन लाइनें रेल मार्ग का अनुसरण करती हैं। क्षेत्र में टेलीफोन की कुल संख्या 450 है तथा पब्लिक कॉल आफिस की संख्या 150 है। तार घरों की संख्या 24 तथा डाकघरों की संख्या 155 पायी जाती है। ये सुविधाएं केवल मानव उत्पाद एवं वस्तुओं को पहुंचाने में ही मदद नहीं करतीं बल्कि क्षेत्र के बाहर एवं भीतर तेजी से महत्वपूर्ण सुविधाएं पहुंचाती हैं। इस प्रकार क्षेत्र में इन यातायात, संचार सुविधाओं का नेटवर्क औघोगिक विकास के लिए अत्यन्त आवश्यक आवश्यकता है। यदि इन माध्यमों का उपयोग बराबर एवं सही तरीके से होगा तो ये अध्ययन क्षेत्र में औघोगिक विकास प्रकिया की वृद्धि में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकते हैं।

औद्योगिक आस्थान :-

अध्ययन क्षेत्र में औघोगिक विकास प्रकिया की उन्नतशील मुख्य धारा में एक बड़ा 'नैनी' एवं पांच '5' छोटे औघोगिक आस्थन पाए जाते हैं। यह औघोगिक इस्टेट क्षेत्र के अलग-अलग ब्लाकों में पाए जाते हैं। चाका ब्लाक में नैनी उघोग समूह सबसे बड़ा उघोग स्थल है (मान-5.3) छोटे उघोग समूह शंकरगढ़, भारतगंज, सिरसा, जसरा, कोरांव आदि हैं। नैनी आस्थान में 5 बड़े एवं 15 मध्यम उघोग कार्यरत हैं। अन्य बड़े उघोग घूरपुर 'जसरा' में त्रिवेणी ग्लास वर्क्स एवं मेजा में सूती वस्त्र उघोग है। अन्य औघोगिक आस्थानों में छोटे-छोटे लघु उघोग समूह पाये जाते हैं। लघू उघोग आस्थान एक महत्वपूर्ण भूमिका नहीं अदा कर पा रहे हैं। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि अन्य औघोगिक आस्थानों में औघोगीकरण की तीव्र प्रकिया अब तक शुरु नहीं हो पायी है। ये औघोगिक इस्टेट जो अभी तक उघोग विकास में बराबर विकास नहीं कर पाये हैं वे आगे चलकर औघोगिक विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

कौशल एवं प्रशिक्षण :-

कौशल एवं प्रशिक्षण किसी प्रदेश के औघोगिक विकास में अर्थपूर्ण भूमिका- मजदूरों के गुणों में सुधार करके निभाता है। इसके द्वारा एक ओर तो प्रबन्धकीय संगठनों एवं औघोगिक इकाइयों की कार्यक्षमता में सुधार आता है तो दूसरी ओर औघोगिक उत्पाद की मात्रा और गुणों में विकास होता है। अध्ययन क्षेत्र के गांव, शिल्पकार एवं कारीगरों की अच्छी संख्या पर स्वामित्व रखते हैं जिनके पास वंशानुगत कौशल एवं अनुभव होता है जिसका वे अपने प्रमुख व्यापार और लघु उघोगों में अत्यधिक फलदायी उपयोग करते हैं।

अध्ययन क्षेत्र में वृद्धि और कौशल बढ़ाने वाले शैक्षणिक संस्थानों में - 580 जूनियर बेसिक स्कूल, 180 सीनियर बेसिक स्कूल, 75 हायर सेकेण्डरी स्कूल, 5 महाविद्यालय, 2 आई.टी.आई., 2 महिला पालिटेकनिक एवं 10 कम्प्यूटर संस्थान आदि हैं। ये शैक्षणिक संस्थान-शिक्षा कोर्स से और ठेकेदारी मार्ग के धन्धे में बदलाव और सुधार के द्वारा विद्यार्थियों के औद्योगिक कौशल एवं प्रशिक्षण को सुधारने में बेहतर एवं महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। शिक्षित कार्यकर्ता औद्योगिक विकास की प्रकिया में लगने वाली मूल्यवान सम्पत्ति को पहचानते एवं प्रमाणित करते हैं, उद्योग की संगठनात्मक और कार्यात्मक दशाओं को सुधारते हैं और उनकी पूरी क्षमता के प्रयोग की संस्तुति करते हैं।

औद्योगिक विकास हेतु सहयोग एवं प्रोत्साहन :-

अध्ययन क्षेत्र के औद्योगिक विकास के लिए राज्य सरकार अनेकों एजेन्सियों एवं संस्थानों के माध्यम से विविध सहयोग एवं प्रोत्साहन प्रदान करती है। यद्यपि इन संस्थानों एवं एजेन्सियों के केन्द्रीय कार्यालय क्षेत्र से दूर इलाहाबाद शहर में स्थित हैं फिर भी व्यावहारिक कार्य आफिस ब्लाक स्तर पर भी हैं जिससे ये सुविधाएं आसानी से क्षेत्र के आन्तरिक भागों में पहुंच जाती हैं। क्षेत्र में औद्योगिक विकास के लिए जो संस्थान एवं एजेन्सियां सहयोग प्रदान करती हैं उनमें प्रमुख जैसे - उ.प्र. राज्य औद्योगिक विकास कारपोरेशन, जिला उद्योग केन्द्र इलाहाबाद, उ.प्र. वित्तीय कारपोरेशन, उ.प्र. हैण्डलूम कारपोरेशन, उ. प्र. निर्यात कारपोरेशन, उ.प्र. वस्त्र कारपोरेशन, उ.प्र. उद्योग निदेशालय एवं उ.प्र. लघु उद्योग कारपोरेशन लिमिटेड आदि हैं।

Table-5.1
Distribution of Multi Based Small – Scale Industry of Trans –Yamuna Region of Allahabad District.

Sl. No.	Name of Industries	Number	Capital Investment In Lack Rs.	Employment Generation
I	**Agro Based Industries**			
1.	Mini Rice Mill	5	8.80	50
2.	Pulce Mill	16	13.40	63
3.	Edible Oil Mill	16	4.80	60
4.	Chivra Industry	17	1.80	38
5.	Biscuit Bakery	5	1.70	26
6.	Straw Board Mill	5	4.90	35
7.	Namkeen Making	14	1.90	50
8.	Confectionary Industry	9	1.80	28
9.	Khandsari Industry	6	2.20	25
10.	Papad ,Chips Making	3	2.40	28
11.	Fruit Conservation Industry	8	0.80	18
II	**Forest Based Industry**			
12.	Wooden Furniture Industry	10	1.60	48
13.	Wooden Saw Industry	10	2.20	50
14.	Ayurvadic Medicines	3	0.60	28
15.	Wooden Packing Making	3	0.60	28
16.	Picture Frame Making	3	0.40	10
17.	Dunlop Carriage	4	0.80	18
18.	Rickshaw Making	7	1.70	10
19.	Bamboo Bascket Making	11	0.70	50
III	**Live Stock Based Industries**			
20.	Leather Shoes Making	17	0.90	52
21.	Leather Purifier Industry	3	2.45	15
22.	Bone Mill	3	2.50	40
23.	Leather Attache and Bag	18	1.10	42
24.	Blanket Nitting	8	0.70	32
25.	Glue Making	8	1.00	40
IV	**Textiles Based Industries**			
26.	Readymade Garment Industries	19	2.20	68
27	Bedding Making	9	1.30	28
28	Bandage and Cattege	10	1.10	28
29	Handloom Industry	42	2.70	200
30	Nevar and Thread Industry	10	1.20	33
31	Screen Printing Industry	8	5.80	43
32	Cloth Bag and Compass By Making	20	6.00	40
V	**Chemical Based Industry**			
33	Soap Industry	11	1.50	58
34	Ditergent Powder Cake Making	10	1.40	50
35	Paints and Varnish Making	4	5.00	15

36	Agarbatti Making	15	0.90	20
37	Candle Making	16	1.20	50
38	Ink Making	4	0.90	15
39	P.V.C Pipe Making	2	4.80	17
VI	**Engineering Based Industry**			
40	Engineering Industry	18	3.30	93
41	Steel Fabration	17	2.00	73
42	G.I. Bucket Making	5	4.00	80
43	Foundry Industry	7	10.50	50
44	Almirah Box Making	8	1.50	50
45	Aluminium Pot	5	4.00	67
46	Wire Mail Making	3	1.40	60
47	Genaral Engineering Industry	17	4.50	30
VII	**Building Material Industry**			
48	Bricks Making	12	4.50	210
49	Surkhi Making	7	2.50	80
50	Lime From Kankar Making	8	1.30	68
51	Lime From Stone Making	5	0.90	58
52	Building Material From Stone	7	0.50	28
53	Domestic Utensils From Stone	8	0.80	29
54	Gitti Making From Stone	12	1.00	200
55	Cement Jally Industry	14	2.30	50
56	C.C. Pipe making	6	3.00	60
57	Caremix Pipe Making	5	2.600	20
VIII	**Misc. Industry**			
58	Printing Press	10	3.00	70
59	Book Binding	9	1.40	63
60	Photostate	12	3.70	20
61	Ice Making	4	3.00	60
62	Crometed Box Making	6	2.00	15
63	Glass Matterial Making	9	6.00	60
64	Dafti Box Making	7	1.00	18
IX	**Handicraft Industry**			
65	Imbriodary Making	8	1.45	15
66	Artistic Toys Making	7	0.85	20
67	Artistic Shoes Chappal Making	14	0.90	30
68	Artistic Carpel Making	13	4.00	80
69	Artistic Cloth Printing Work	18	1.85	90
	Total	683	177.50	3400

अध्ययन क्षेत्र में तीव्र औद्योगिक विकास के लिए सरकार कई प्रकार के छूट एवं प्रोत्साहन प्रदान कर रही है जिससे औद्योगिक वृद्धि विषय का उद्देश्य पूरा हो सके। इन प्रोत्साहनों में निम्न छूट जैसे- पूंजी निवेश, विक्रय कर, जिला उद्योग केन्द्र से वित्तीय सहायता, चूंगी ड्यूटी, उत्पादन कर, योजनाबद्ध ऋण उगाही, चक्रीय ब्याज, सरकारी योजनाओं में ऋण दर कमी आदि छूट उद्योगों को प्रेरणादायी एवं उत्साहपूर्ण बनाती है।

इनके अलावा 'खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड' भी क्षेत्र में अपने निर्देशन में स्थापित को-आपरेटिव और ग्रामीण उद्योगों को वित्तीय सहायता उपलब्ध कराता है। क्षेत्र समिति स्तर पर खादी ग्रामोद्योग लघु उद्योगों को ऋण उपलब्ध कराता है एवं औद्योगिक इकाइयों के अच्छे उत्पाद को बाजार में विक्रय की व्यवस्था करता है।

इस प्रकार उपरोक्त वास्तविक विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि विभिन्न सरकारी संस्थान एवं एजेन्सियां अध्ययन क्षेत्र की औद्योगिक इकाइयों को अनेक प्रकार से प्रोत्साहन एवं सहयोग प्रदान करते हैं। किन्तु इन सुविधाओं का विभिन्न अवरोधों के कारण पूर्णरूपेण प्रयोग नहीं हो पाता है।

यमुनापार क्षेत्र में उद्योगों के प्रकार

यमुनापार क्षेत्र में लघु एवं ग्रामीण कुटीर उद्योगों की परम्परा बहुत पुरानी है लेकिन बड़े एवं मध्यम उद्योग स्वतन्त्रोत्तर काल के हैं। बड़े उद्योगों की स्थापना नैनी औद्योगिक आस्थान, जो कि इलाहाबाद जिले का एक बड़ा औद्योगिक आस्थान भी है, मे बड़ी तीव्र गति से हुई है। उद्योगों का एक संक्षिप्त विवरण निम्न रूपों में देखा जा सकता है -

ग्रामीण एवं कुटीर उद्योग :-

क्षेत्रीय ग्रामीण उद्योगों की परम्परा तो काफी पुरानी है किन्तु इनका परिमार्जन एवं विकास 1950 के बाद काफी तेजी से हुआ। ये ग्रामीण एवं कुटीर उद्योग सम्पूर्ण क्षेत्र में व्यापक रूप से फैले हुए हैं। ये उद्योग श्रमिकों की बस्तियों के निकट ही स्थित हैं और सामान्यतया इन श्रमिकों के परिवार का स्वामी अपने पारिवारिक लोगों के साथ मिलकर काम करता है। इन उद्योगों में प्रमुख उद्योग जैसे- बीड़ी बनाना, गुड़ बनाना, हथकरघा-वस्त्र, कपड़ा छपाई, तेल, मिट्टी के बरतन, धातु का सामान, जूते-चप्पल, लकड़ी तथा बांस की वस्तुएं एवं दर्पण आदि बनाए जाते हैं। अध्ययन क्षेत्र में इन उद्योगों की लगभग 1000 इकाइयां हैं जिनमें बीस हजार व्यक्ति प्रतिवर्ष औसतन 3 लाख 20 हजार रुपये मूल्य का कच्चा माल प्रयोग करके लगभग 80 लाख रुपये की वस्तुएं तैयार करके विक्रय करते हैं।

TRANS YAMUNA REGION OF ALLAHABAD DISTRICT
TRANSPORT NETWORK
N
YAMUNA RIVER
GANGA RIVER
TONS RIVER
Belan River
NAINI
RS
Karchhana
RS
Sirsa
Unchadeeh
SH 44
RS
To Mirzapur
Jasra
Bara
Gauhani
Kaundhiara
From Banda
SH 44
Shankargarh
From Manikpur
Jari
N.H.27
MDR 121
Meja
Bharatganj
Manda
Nari Bari
FROM REWA
Koraon
MDR 146
Barokhar
REFERENCES
RS
RAILWAY LINE
N.H.27
NATIONAL HIGHWAY
SH 44
STATE HIGHWAY
MDR121
M.D.R.
10 5 0 10
km
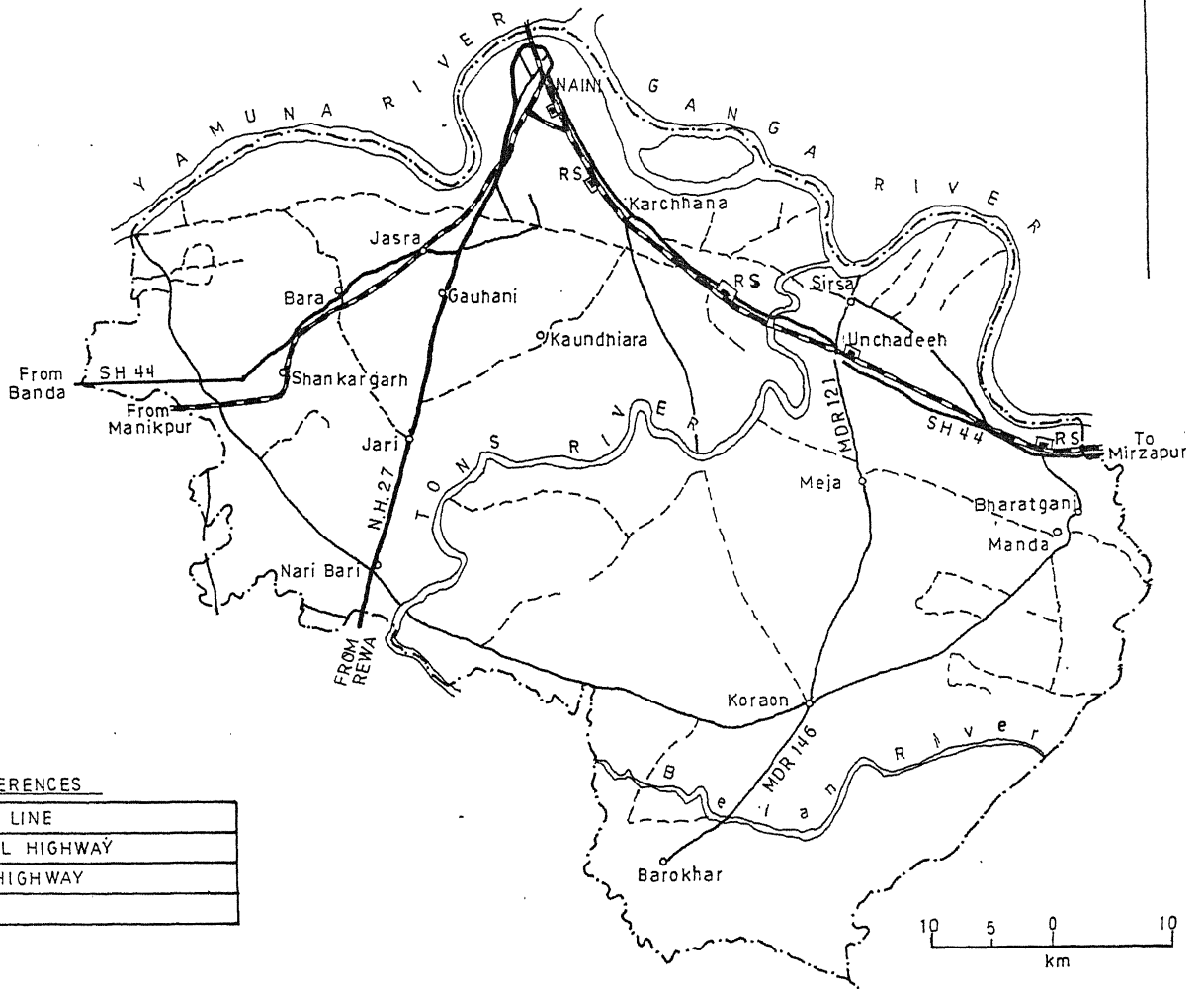
Fig. 5.2

लघु स्तर उद्योग :-

अध्ययन क्षेत्र में लघु स्तर उद्योगों की संख्या जनसंख्या के अनुपात में काफी कम है। ज्यादातर लघु उद्योग बेरोजगारी को दूर करने का माध्यम मात्र है। इन उद्योगों को मुख्यतः कृषि, वन सम्पदा, पशु धन, टेक्सटाइल्स, केमिकल्स, इंजीनियरिंग, बिल्डिंग एवं हस्तशिल्प आदि आधारों पर आधारित उद्योगों में बांटा गया है जो कुल 69 प्रकार के उद्योग समूह पाये गये हैं। (तालिका 5.1) लघु उद्योगों की कुल संख्या 683 है। इन उद्योगों की विनियोजित पूंजी 177.50 लाख रूपये है एवं इन उद्योगों से कुल 3400 लोगों को रोजगार मिला हुआ है।(तालिका 5.2) वर्तमान में क्षेत्रीय जागरूकता एवं सरकारी सहयोगों के द्वारा लघु उद्योगों का विकास बहुत तेजी से हो रहा है । क्षेत्रीय सर्वे से यह भी पता चला है कि ज्यादातर उद्योग कागज पर चल रहे हैं एवं जो उद्योग चल रहे हैं जैसे दरी बुनाई उद्योग (फोटो प्लेट न0 21) गलीचा उद्योग, बीडी उद्योग आदि का पंजीकरण नहीं कराया गया है। इसके कई कारण हैं जिसमें सरकारी असुविधा, कर देने का भय, आदि हैं। लेकिन कुछ जागरूक कार्यकर्ता अब इन उद्योगों की हर क्षेत्र में बढ़त कर रहे हैं जिससे इनका विकास हो रहा है। तालिका 5.1 देखने से यह स्पष्ट होता है कि कुछ संसाधनों पर आधारित उद्योगों का विकास काफी तेजी से हो रहा है जबकि ज्यादातर का विकास काफी मन्द गति से चल रहा है। लघु उद्योगों के मन्द वृद्धि से बेरोजगारी की समस्या का निदान भी काफी मन्द गति से हो रहा है। कुछ लघु उद्योगों का विकास- तकनीकी ज्ञान, वित्तीय अभाव, स्थानीय कर्मठता की कमी, सरकारी हस्तक्षेप एवं नीतियों के कारण नहीं हो पा रहा है।

वृहद / मध्यम स्तरीय उद्योग :-

यमुना पार क्षेत्र में बड़े उद्योगों का विकास मुख्यतः स्वतंत्रता के पश्चात हुआ है। इन उद्योगों में मुख्यतः कांच, कागज, इंजीनियरिंग का सामान एवं उपकरण, सूती कपड़े एवं धागे, केमिकल्स मशीनें, बिजली के सामान एवं उपकरण आदि उत्पादित किए जाते हैं। क्षेत्र में 14 बड़े/ मध्यम उद्योग स्थापित किए जा चुके हैं एवं 5 बड़े उद्योगों की स्थापना का प्रस्ताव है जो शीघ्र ही कार्य करने लगेंगे। इन उद्योगों में 441.89 करोड़ रूपये की पूंजी विनियोजित की गई है तथा इनसे 17294 लोगों को रोजगार मिला हुआ है। (तालिका 5.3) इस क्षेत्र में स्थापित ज्यादातर बड़े उद्योग स्थानीय कच्चे माल का प्रयोग नहीं करते बल्कि आयातित माल का प्रयोग करते हैं। अधिकांशतः बड़े उद्योग नैनी सेवा केन्द्र में स्थापित इन उद्योगों से क्षेत्रीय रोजगार के अलावा लघु उद्योगों को भी कच्चा माल उपलब्ध हो जाता है जिससे क्षेत्र में लघु उद्योगों की वृद्धि हो रही है। इन उद्योगों का स्थापना स्थल, कुल निवेश एवं सृजित रोजगार तालिका संख्या 5.3 से भी स्पष्ट हो रहा है। इस क्षेत्र के बड़े उद्योगों

फोटो प्लेट नं० 21- सड़क जलभराव मेजारोड से सिरसा मार्ग, इलाहाबाद
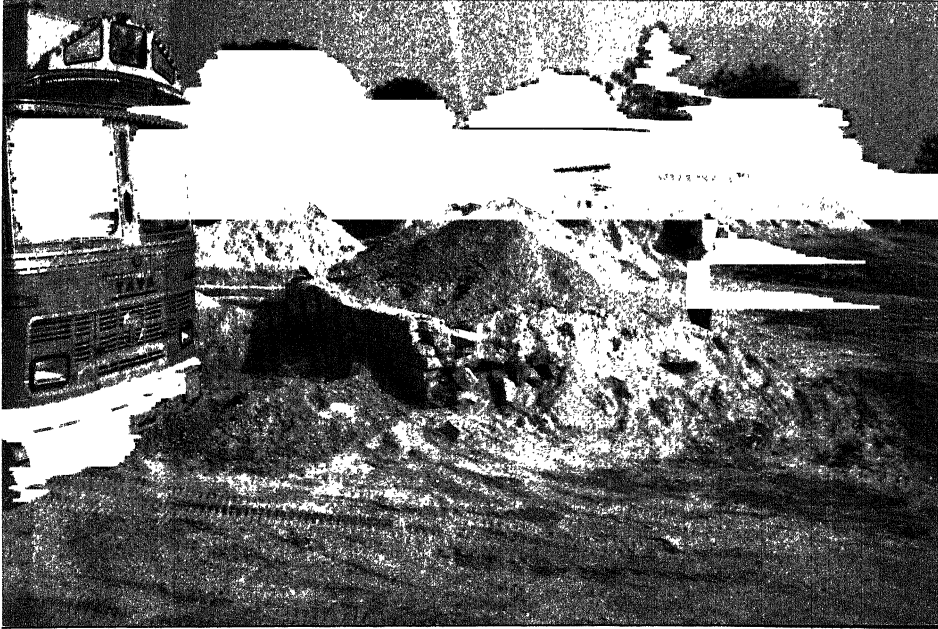
फोटो प्लेट न० 22- सिलिका सैण्ड खनन केन्द्र गोबरा कल्यानपुर गाँव- शंकरगढ़, इलाहाबाद

की एक बड़ी विशेषता यह है कि यह उद्योग एक दूसरे के उत्पादन एवं कच्चे माल का उपयोग करते रहते हैं जैसे- एक उद्योग का उत्पादन दूसरे का कच्चा माल एवं दूसरे का उत्पादन तीसरे का कच्चा माल बनता है जिससे उद्योगों को बढ़ावा मिल रहा है। क्षेत्र में त्रिवेणी ग्लास वर्क्स- घूरपुर 'जसरा' पूर्णतया क्षेत्रीय कच्चे माल पर आधारित उद्योग हैं।(फोटो प्लेट न0 22) अतः यह कहा जा सकता है कि इस क्षेत्र में एक ऐसे बड़े उद्योग की आवश्यकता है जो स्थानीय कृषि उत्पाद पर आधारित हो और स्थानीय उत्पाद से अपने कच्चे माल की पूर्ति करे तथा स्थानीय मानव शक्ति का श्रमिकों के रूप में प्रयोग करे।

अध्ययन क्षेत्र में कुछ उद्योग प्रस्तावित हैं जो अगले कुछ वर्षों में सुचारु रूप से कार्य करने लगेंगे। इन प्रस्तावित उद्योगों में भी ज्यादातर नैनी औद्योगिक क्षेत्र में ही प्रस्तावित हैं जो मशीनरी एवं इलेक्ट्रानिक्स से सम्बन्धित हैं। वैसे क्षेत्रीय मांग इन उद्योगों के साथ-साथ कृषि उत्पाद आधारित बड़े उद्योगों की आवश्यकता है जो स्थानीय उत्पाद का उपयोग करे एवं अपने उत्पाद वृद्धि के साथ-साथ क्षेत्रीय लोगों के जीवन स्तर को भी बढ़ाएं। प्रस्तावित उद्योगों का विवरण तालिका 5.4 से भी स्पष्ट होता है।

Table.No.5.2

Blockwise Distribution of Small Scale Industries of Trans-Yamuna Region of Allahabad District- 1996-97

Sl.No	Blocks	No.of Registered Industries	Capital Investment in Lack. Rs	Employment
1.	Karchhana	113	45.65	537
2.	Chaka	184	39.15	887
3.	Kondhiara	28	8.01	134
4.	Meja	32	7.05	163
5.	Monda	69	10.53	384
6.	Koroan	39	6.77	190
7.	Uruva	66	19.27	327
8.	Jasara	75	23.32	392
9.	Shankargarh	77	17.30	386
	Total	683	177.50	3400

Source:- District Industrial Bulletin- Allahabad-1995-96

TRANS-YAMUNA REGION OF ALLAHABAD DISTRICT
INDUSTRIAL ESTATES
N
Naini
Jasra
Karchhana
Bara
Sirsa
Kaundhiara
Uruva
Shankargarh
Meja
Bharatganj
Manda
Koraun
INDEX
INDUSTRIAL ESTATE
10
0
10
km
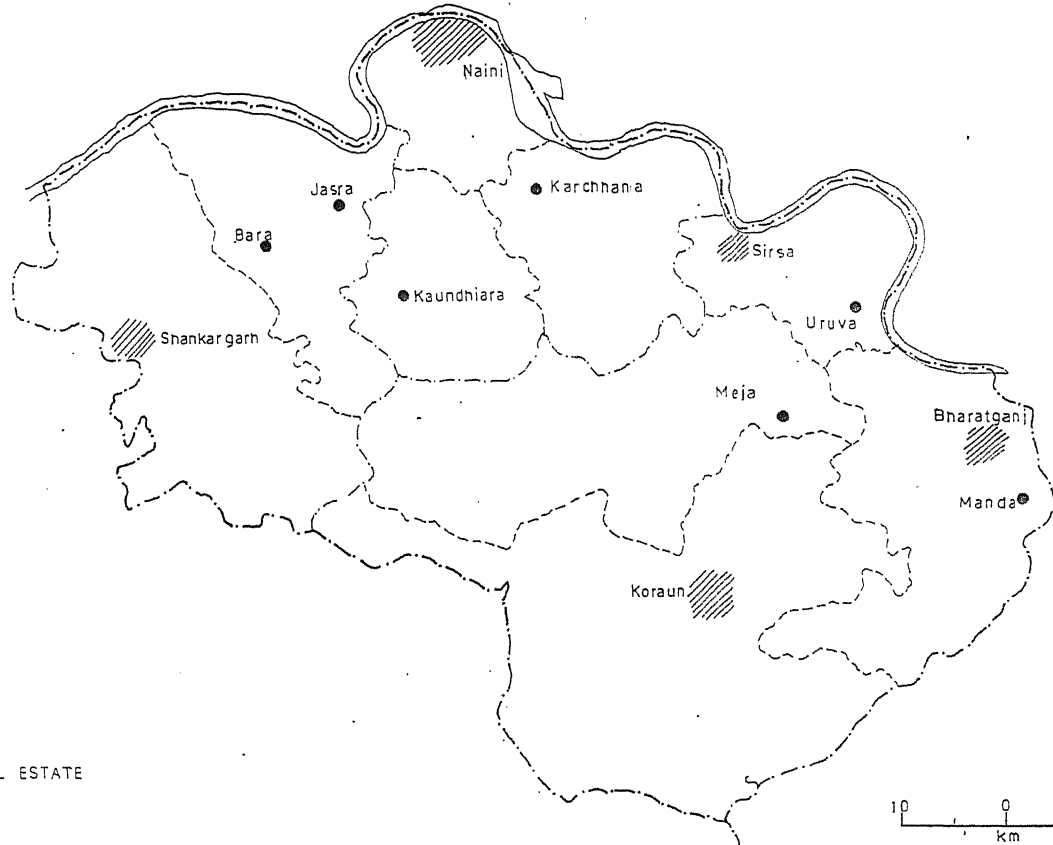
Fig. 5.3

औद्योगिक इकाइयों का स्थानीय वितरण। :-

औद्योगिक इकाइयों का स्थानीय वितरण देखने से स्पष्ट होता है कि ज्यादातर उद्योग सेवा केन्द्रों में स्थापित पाए जाते हैं। प्रथम श्रेणी सेवा केन्द्र नैनी में सबसे ज्यादा उद्योगों की स्थापना हुई है जिससे इसे इलाहाबाद का ही नहीं बल्कि उत्तर प्रदेश का बड़ा औद्योगिक आस्थान माना जा रहा है। मानचित्र संख्या 5.3 देखने से स्पष्ट होता है कि द्वितीय स्थान पर उद्योगों का एकत्रीकरण द्वितीय श्रेणी के सेवा केन्द्र शंकरगढ़, भारतगंज, सिरसा, जसरा एवं कोरांव में पाये जाते हैं। ब्लाक स्तर पर लघुस्तरीय उद्योगों को स्थानीयकरण चाका में सर्वाधिक (184) करछना में (113)शंकरगढ़ में (77) जसरा में (75) आदि में पाया जाता है। (तालिका 5.2 एवं मानचित्र 5.5) मानचित्र संख्या 5.6 से पूंजी निवेश तथा मानचित्र संख्या 5.7 से रोजगार सृजन स्पष्ट होता है। अध्ययन क्षेत्र में जहां भी उद्योग स्थापित हैं वे या तो सड़क मार्गों या रेल मार्गों से देश के अन्य भागों जैसे- कलकत्ता, मुम्बई, पटना, लखनउ, भोपाल, दिल्ली, वाराणसी, इलाहाबाद एवं जबलपुर से सम्बद्ध है जिससे क्षेत्रीय उद्योगों को कच्चा माल लाने एवं तैयार माल बाजार तक पहुंचाने में सुविधा होती है। विविध सामाजिक आर्थिक उद्देश्य, पर्याप्त स्थानीय अन्तर्क्रिया के उच्च स्तर की गम्यता एवं सम्बद्धता से औद्योगिक इकाइयां भी उत्साहित होती हैं। क्षेत्र में औद्योगिक इकाइयों के रेखीय वितरण का मुख्य कारण यह है कि ज्यादातर सेवा केन्द्र और बाजार इलाहाबाद जिले की विभिन्न सड़क मार्गों पर स्थित है।

विकास एवं वृद्धि :-

अध्ययन क्षेत्र के औद्योगिक विकास का स्तर काफी धीमी गति से बढ़ा है। 1990 में क्षेत्र में मात्र 175 उद्योगों का पंजीकरण जिला उद्योग केन्द्र में हुआ था जो 1997 में बढ़कर 683 की संख्या में पहुंच गया। इस तरह उद्योगों की पंजीकृत तालिका 5.4 एवं मानचित्र 5.8 देखने से स्पष्ट होता है कि विकास सामान्य तौर पर बराबर गति से हुआ है। इसी तालिका '5.4' एवं मानचित्र 5.9 में पूंजी निवेश की वृद्धि देखने से स्पष्ट होता है कि 1990 में पूंजी निवेश 177.30 लाख रूपये का हुआ था जो बढ़कर 1997 में 6348.43 लाख रूपये का हो गया है। लघु उद्योगों में रोजगार का सृजन दो गुने से ज्यादा अर्थात 1990 में 875 व्यक्ति से बढ़कर 1997 में 1805 व्यक्ति हो गया है 'तालिका 5.4 एवं मानचित्र 5.10' अतः स्पष्ट रूप से यह कहा जा सकता है कि अध्ययन क्षेत्र में तीनों- उद्योग संख्या, रोजगार एवं पूंजी निवेश क्षेत्रों में लगातार वृद्धि होती रही है। इसलिए क्षेत्र के औद्योगिक विकास के लिए सरकार का ध्यान गया और सरकार ने भी कई तरह की विकास योजनाएं, औद्योगिक ढांचों का विस्तार, औद्योगिक आस्थानों की स्थापना, औद्योगिक ठेकेदारी प्रथा को प्रोत्साहन आदि के द्वारा क्षेत्र पर विशेष जोर दिया।

औधोगिक विकास के दूसरे पक्षों पर सर्वेक्षण के दौरान ध्यान देने से स्पष्ट हुआ कि कुछ उधोग जिला उधोग केन्द्र में केवल कागज पर तो पंजीकृत हैं लेकिन वह वास्तविक स्थल पर स्थापित नहीं हैं। इसका वास्तविक कारण यह हो सकता है कि ग्रामीण ठेकेदार औधोगिक विकास को सुचारू रूप से कार्य करने के लिए आवश्यक वित्त, कच्चा माल, बराबर तकनीकी मार्गदर्शन और अन्य आवश्यक वस्तुएं एवं सुविधाएं नहीं प्राप्त कर पा रहे हैं बल्कि ठेकेदार अधिकारियों के उदासीन व्यवहार, सम्पर्कों की कमी, अधिकारियों के घूसखोरी इत्यादि से औधोगिक इकाइयां या तो बन्द हो जाती हैं या वे बीमार इकाई की श्रेणी में आ जाती हैं। इससे यह भी होता है कि जो वित्त उधोगों के विकास के लिए प्राप्त होता है उसका अन्य कार्यों में गलत प्रयोग करते हैं।

उधोग की समस्याएं :-

इलाहाबाद जिले का यमुनापार क्षेत्र अनेकों प्रकार के संसाधनों का भण्डार रखता है जिसका उपयोग करके क्षेत्र में निर्माण उधोगों का विकास एवं उत्साहवर्धन किया जा सकता है किन्तु अधिक प्रयासों के बावजूद भी पिछले दो दशकों के दौरान औधोगिक विकास की प्रगति संतोषजनक नहीं है। क्षेत्र में उधोगों के विकास को निम्न समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है-

Table-No-5.3

Funcioned Large/Mediam Scale Industries of Trans-Yamuna Region of Allahabad District-1996-97

Sl.No	Name of Units and Address	Product Goods	Capital Investment in caror.Rs	Generation
1.	Mess.Swadeshi Cotton Mills Naini Allahabad	Suti Thread	30.08	4575
2.	Mess.G.E.C. of India,Naini Allahabad	Transfarmer or Electronic Motor	3.57	1201
3.	Mess.E.M.C Sangam works Naini Allahabad	Aluminiam Wire	0.54	Present in clossed
4.	Mess.Triveni Engineering Works Naini Allahabad	Sugar Mill Machine	-	-
5.	Remond Syenthetics ltd Naini Allahabad	Syentheticsyarn	183.00	500
6.	Jai Sri Tyer and Ruber Product Naini Allahabad	Tayer Tube	6.00	Unit is clossed
7.	Mess.Triveni Structural Ltd Naini Allahabad	Fabrication Work	6.95	2154
8.	Mess.Bharat Pumps and Compreser Ltd Naini Allahabd	Compreser Sylender	44.52	2678
9.	Mess. Indian Telephone Industry Naini Allahabad	Telophone Parts	138.0000	4354
10.	Days Medical Store Naini Allahabad	Alopathic Drucs	2.83	220
11.	Hindutan Cabel Ltd Naini Allahabad	Telecum Cabels	3.15	260
12	Badhnath Aurved Ltd Naini Allahabad	Aurved Medecine	2.10	250
13.	Triveni Glass Works Ghurpur Alld	Glass Sheet	11.00	260
14.	Mess. U.P.Spinig Mill Moja Alld	Suti Thread	10.10	842
	Total		441.84	17294

Source-: District Industrial Bulletin- Allahabad-1996-97

TRANS YAMUNA REGION
ALLAHABAD DISTRICT
TYPES OF S.S.I. UNITS
N
YAMUNA RIVER
GANGA RIVER
TYPES OF S.S.I UNITS
Above 40
20 - 40
Below 20
10 5 0 10
km
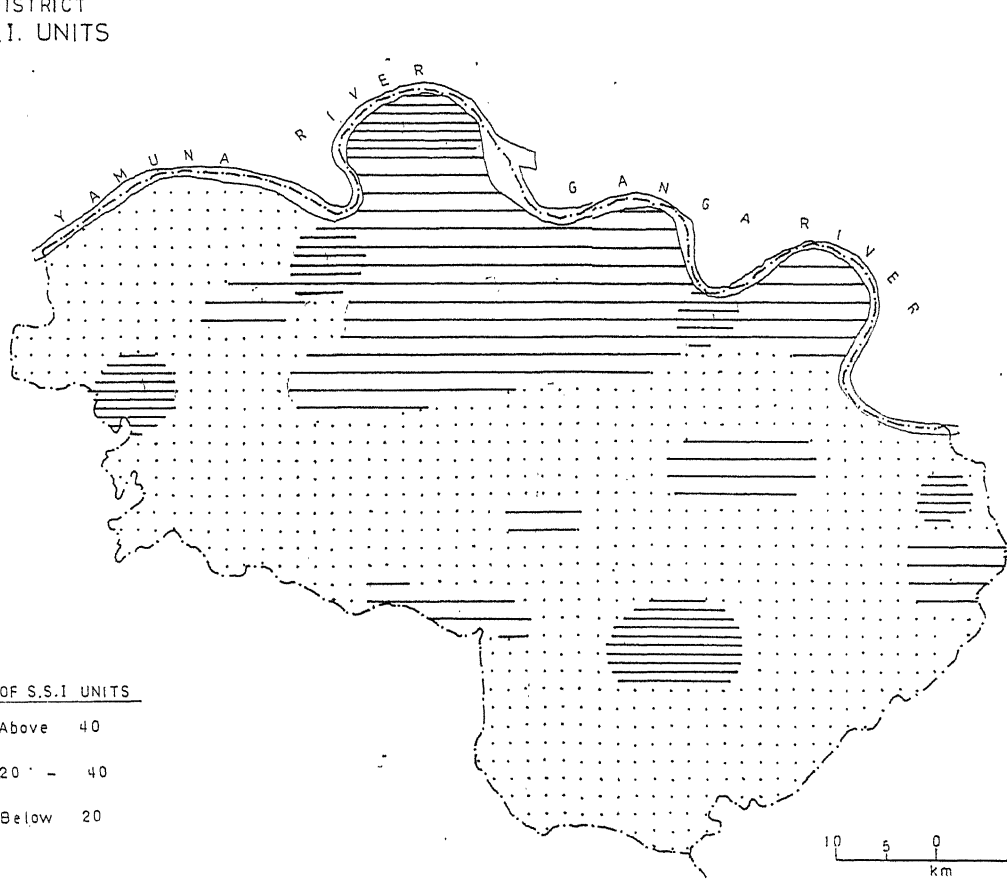
Fig.5.4

1. परम्परागत दृष्टिकोण :-

अध्ययन क्षेत्र का मानव समाज परम्परागत बन्धनों एवं रूढ़िवादी विचारों वाले लोगों से अभिभूत है। अधिकांश लोग वैज्ञानिक विकास के बजाय परम्पराओं और रूढ़ियों को श्रेष्ठ मानते हैं। यहां के ग्रामीण लोगों के बीच अनेकों अन्धविश्वास एवं भय व्याप्त है जिससे जीविका निर्वाह 'कृषि' करने को बाध्य होना पड़ता है जो क्षेत्र में उद्योग के विकास की प्रमुख बाधा है। यहां तक अंधविश्वास एवं रूढ़ियां व्याप्त हैं कि जो पढ़े-लिखे लोग या नवयुवक हैं वे भी अपना निजी लघु उद्योग स्थापित करने के बजाय प्राइवेट और सरकारी क्षेत्र के उन्हीं परिष्कृत रोजगार को करने में विश्वास रखते हैं जो आरामतलब हो, अच्छा पैसा हो, पारिश्रमिक के अलावा अन्य स्रोत से पैसा आता हो और कम से कम परिश्रम करना पड़े ऐसा विचार रखते हैं। यही रूढ़िवादी पुराणपंथी विचार और ठेकेदारी गुणों तथा उन्नतशील विचारों की कमी अध्ययन क्षेत्र के ग्रामीण उद्योगों के विकास में प्रमुख बाधा या रुकावट है[8]। इन कमियों और संदेहों को दूर करने के लिए ग्रामीण उद्योगों को रेखांकित करके सभाओं एवं परिचर्चाओं का आयोजन करके आयोजनों द्वारा लोगों को शिक्षित करके दूर किया जा सकता है। साथ ही संचार माध्यमों के द्वारा गुण एवं विशेषताओं का प्रसारण भी काफी लाभप्रद होगा। जैसा कि शिक्षा, परिवार नियोजन एवं संक्रामक बीमारियों के प्रसारण की सफलतम उद्देश्य पूर्ति उदाहरण के रूप में देखी जा सकती है।

Table-No-5.4
Development and Growth of S.S.I. Units In Trans- Yamuna Region of Allahabad District- 1990-97

l.No	Years	No.of S.S.I. Units	Cumulative No. of S.S.I Units	Capital Investment In Rs. Lac	Cumulative Capital Investment In Rs.Lac	Employment Generation	Cumulative Employment Generation
1.	1990-91	175	175	17.73	17.73	875	875
2.	1991-92	183	358	31.81	49.54	965	1840
3.	1992-93	217	575	58.08	107.55	1085	2925
4.	1993-94	239	814	94.03	201.59	1195	4120
5.	1994-95	263	1077	99.59	301.18	1335	5455
6.	1995-96	300	1377	144.58	445.76	1510	6965
7.	1996-97	683	2060	177.50	623.26	3400	10365
	Total	2060		623.26		10365	

Source:-Industrial Bulletins District Allahabad District Industry Center.1990-1997

TRANS YAMUNA REGION
ALLAHABAD DISTRICT
BLOCKWISE NO. OF S.S.I. UNITS
YAMUNA RIVER
GANGA RIVER
N
NO OF SSI UNITS
Above 120
60 - 120
Below 60
10 5 0 10
km
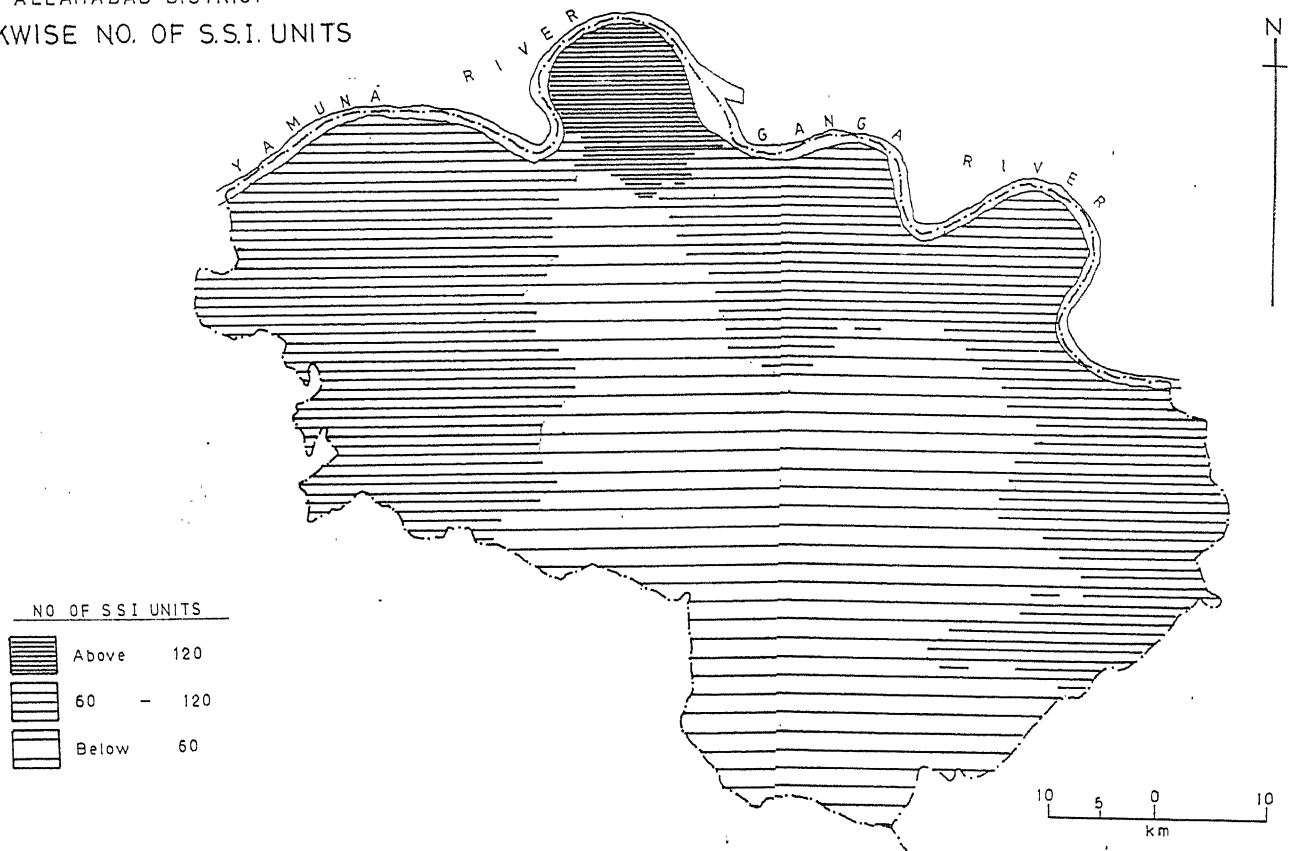
Fig. 5.5

2. कच्चे माल की कमी :-

ज्यादातर ग्रामीण संसाधन जैसे दालें, तिलहन, कपास, गन्ना, सन् 'सनई या जूट रेशा' खाद्य पदार्थ 'गेहूं ,जो' इत्यादि तथा अन्य कच्चे मालों जैसे- खनिजों, रसायनों, धागों, कागजों, प्लास्टिक पदार्थ आदि का प्रयोग लघु एवं दीर्घ उद्योगों में बहुत कम हो पाता है क्योंकि इन कच्चे पदार्थों की कमी के कारण आपूर्ति काफी कठिनाई से हो पाती है। क्षेत्र की ज्यादातर लघु इकाइयां कच्चे मालों की अल्प आपूर्ति से ग्रसित हैं जिससे इनकी कार्यात्मकता निम्न स्तर की हो गई है और उनमें से ज्यादातर इकाइयां बीमार इकाइयों के रूप में हैं अथवा बन्द हो गई हैं।

3. पूंजी की कमी :-

यमुना पार क्षेत्र इलाहाबाद जिले का विकासशील क्षेत्र है जहां पर कृषि उत्पाद एवं प्रतिव्यक्ति आय काफी कम है। लघु बचत की दर काफी नीची है और पूंजी बचत के कारणों की जानकारी लोगों में बहुत कम है इसीलिए वित्त एवं पूंजी की कमी है। वित्त की कमी के कारण औद्योगिक विकास की अन्य समस्याएं खड़ी हो जाती हैं। ज्यादातर राष्ट्रीयकृत एवं व्यापारिक बैंक ग्रामीण क्षेत्रों के उद्योगों को ऋण प्रदान करने में बडा रूखा और अड़ियल व्यवहार करते हैं। और जो ऋण उद्योगों को देते भी हैं उसकी वसूली काफी कड़ाई से करते हैं जिसका कारण सरकारी दबाव भी होता है। इन्हीं कमियों के कारण उद्योग प्रोत्साहित नहीं होते और उनके अन्य खर्चों के लिए अन्य बकाया रह जाते हैं।

4. आधारभूत सुविधाओं का अभाव :-

ग्रामीण औद्योगीकरण पर्याप्त और ठोस आधारभूत सुविधाएं जैसे- उर्जा आपूर्ति, वित्तीय सहायता, परामर्श सेवाएं, भण्डारण सुविधा, यातायात संचार इत्यादि की मांग करता है। यद्यपि यमुनापार क्षेत्र पर्याप्त रूप से सड़क मार्गों से आबद्ध है एवं काफी दूर के स्थलों से सड़कों की भांति रेल मार्गों से भी जुड़ा हुआ है लेकिन अन्य सुविधाएं जैसे- भण्डारण, वित्त, परामर्श आदि की अपर्याप्तता पायी जाती है। सम्पूर्ण क्षेत्र में चाका, मेजा एवं उरूवा एवं करछना ब्लाक में ही भण्डारण की सुविधा पायी जाती है। अतः इन उपरोक्त, जैसे- भण्डारण, वित्त, परामर्श की भॉति उर्जा आपूर्ति की पर्याप्त व्यवस्था प्रमुख रूप से एवं अविलम्ब होनी चाहिए।

5. तकनीकी ज्ञान की कमी :-

वर्तमान में अध्ययन क्षेत्र में अनेकों आन्तरिक ग्रामीण औद्योगिक इकाइयां पुरानी और निम्न श्रेणी तकनीकी, भण्डारण, कौशल और प्रशिक्षित निर्देशकों की कमी से विशेषीकृत है। सर्वेक्षण के दौरान यह देखने में आया कि ग्रामीण उद्योग वित्तीय संसाधनों की कमी से ग्रस्त हैं जिससे वे नवीन तकनीकी ज्ञान प्रसार एवं अति उत्पादन कारकों को ग्रहण करने में पीछे रह जाते हैं। तकनीकी श्रमिक महंगे होने के कारण भी अप्रशिक्षित लोगों से कम पैसा देकर काम करवाया जाता है जिससे उत्पाद की गुणवत्ता एवं उत्पादन में कमी आ जाती है।

6. उत्पाद की उच्च लागत :-

उपरोक्त समस्याओं के कारण अध्ययन क्षेत्र में ग्रामीण उद्योगों से उत्पादित वस्तुए पक्षीय रूप से महंगी होती जाती हैं क्योंकि इनके उत्पाद को बहुत कड़ा संघर्ष सुसंगठित औद्योगिक क्षेत्रों के उत्पाद से करना पड़ता है जिससे उत्पादन लागत काफी बढ़ जाती है और बढ़ी कीमतों के कारण वस्तुओं की मांग कम हो जाती है। ग्रामीण औद्योगिक इकाइयां वित्तीय रूप से इतनी मजबूत नहीं होती कि वह अपने उत्पाद को काफी समय तक के लिए पुनर्प्राप्ति हेतु रख सकें। अतः वे अपने उत्पाद को भण्डारित न करके काफी निम्न लाभ-मूल्य पर बेच देती है और इसी लाभ की कमी के कारण वे धीरे धीरे अपने कार्य या उत्पाद करने में अक्षम हो जाती है और आगे चलकर बन्द हो जाती है। अध्ययन क्षेत्र की ज्यादातक इकाइयां इस समस्या का सामना कर रही हैं।

अन्य जिन समस्याओं को क्षेत्रीय उद्योगों को सामना करना पड़ता है उनमें प्रमुख जैसे- सरकारी लाभदायक सूचनाओं की कमी, सरकारी उद्योगों में कड़ी प्रतियोगिता, अधिकारियों की कमीशनखोरी, भ्रष्टाचार, चोरबाजारी, नीति बदलाव में विधिक अड़चन, एक उत्पाद को प्राइवेट में कम श्रमिकों द्वारा एवं सरकारी में अधिक श्रमिकों द्वारा तैयार किया जाना, अतः लागत में दोनों में फर्क, कर्मचारी यूनियनों के द्वारा बाधा, स्थानीय राजनेताओं का हस्तक्षेप, पुराने कार्यकर्ताओं में उत्साह की कमी, शेयर्स समस्या, उपयोगी प्रबन्धन की कमी आदि समस्याओं का सामना अध्ययन क्षेत्र की औद्योगिक इकाइयों को करना पड़ता है।

TRANS YAMUNA REGION
ALLAHABAD DISTRICT
BLOCKWISE
CAPITAL INVESTMENT IN S.S.I
UNITS IN (Lakh Rs)
YAMUNA RIVER
GANGA RIVER
N
CAPITAL INVESTMENT
IN (Lakh Rs)
Above 30
15 – 30
Below 15
10 5 0 10
km
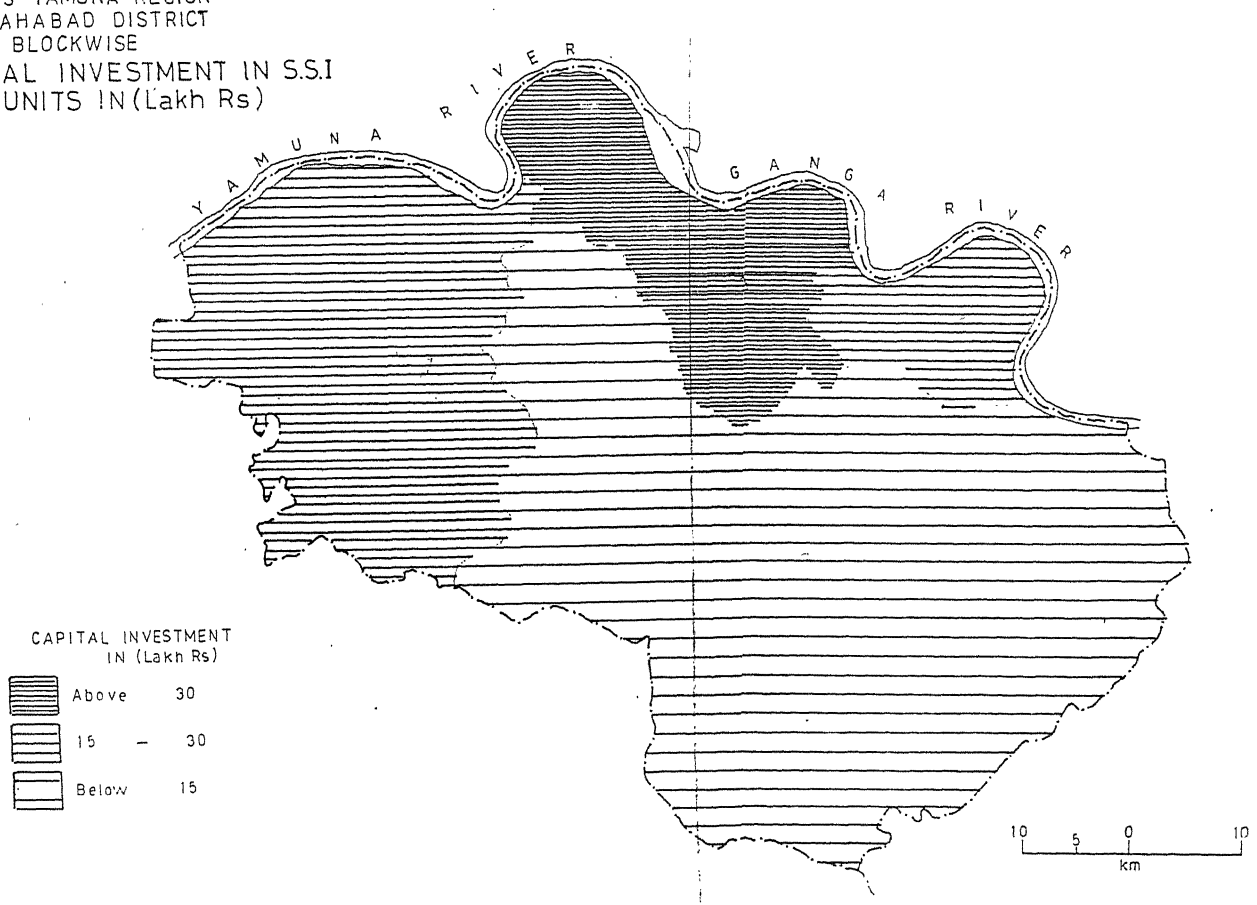
Fig. 5.6

औद्योगिक विकास हेतु स्थानिक नियोजन

अ-सेवा केन्द्रों की भूमिका :-

सेवा केन्द्रों का अनुकम स्थानों के सम्पूर्ण स्थानीय कम और संगठन पर संस्थापित होता है जो विभिन्न सामाजिक आर्थिक कियाओं एवं उच्च श्रेणी की सम्बद्धता की वजह से औद्योगिक इकाइयों की स्थापना के लिए एक उदीयमान स्थिति प्रदान करता है। सेवा केन्द्र केवल स्थानीय संसाधनों का ही उपयोग औद्योगिक प्रकिया में नहीं करता बल्कि वे अध्ययन क्षेत्र के बाहर से बहुत बड़े स्तर पर आयातित संसाधनों को प्रयोग करते हैं और साथ ही क्षेत्र में सामाजिक आर्थिक गतिशीलता तथा अन्तर्किया उत्पन्न करते हैं। इस प्रकार सेवा केन्द्र कार्यों, आय-व्यय तथा अन्य धन्धों के लिए एक बड़ी सम्भावना पैदा करते हैं। यमुनापार क्षेत्र में 26 महत्वपूर्ण सेवा केन्द्र हैं जिनमें एक प्रथम श्रेणी का सेवा केन्द्र, 5 द्वितीय श्रेणी के सेवा केन्द्र एवं 20 तृतीय श्रेणी के सेवा केन्द्र हैं। ये सेवा केन्द्र क्षेत्र में औद्योगिक इकाइयों की वृद्धि एवं विकास के लिए अनेकों मार्ग प्रतिपादित करते हैं। अतः अध्ययन क्षेत्र के औद्योगिक विकास में सेवा केन्द्रों की भूमिका निम्न बिन्दुओं से देखी जा सकती है-

Table:No-5.5

Proposed Industrial Units in Various Order of service Centres in Trans-Yamuna Region of Allahabad District

Sl.No	Name of Service Center	Large Scale Industries	Medium scale Industries	Small scale Industries
	1	2	3	4
	Ist Order			
1.	Naini	Central textile,chemical engineering , goods food products degree based,	Flourmills,dalmills, dehydrates, flour wheatand gram industries, tobaco-processing rice mills, textile based handicraft.	Bakery,carpet, textile,woolen and cotton, utensics, handloom cloth, matchfactory, softdriks, cosmeties engineering readymade garments
	IInd order			
2.	Shankargarh	Paper mills, silica sand based, agro based, iron industry.textile oil refinary.	Barood industry.card board industry.paper mills,chemicals	Woolen and cotton corpets, stationary items printing press, bakery, khansari, oil industry, readymade.

3.	Bharatgang	Food products, engineering. Readymade garments. Glassfoctory.	Sugar , strawboard , oil mills, engineering goods.	Woolen carpet, straw board, khandsari, printing press, jewellary utensils, handloom, ice foctory
4.	Koroan	Food products, cotton textile engineering chemical baesd	Suger mills, oil mills, rice mills, leather processing, forest based industry.	Woolen carpet, khansari. Rice, printing press, jewellary, chooran mills, bakery, soft driks, cosmetics, readymade garments
5.	Sirsa	Paper mills, textile, food products, rice mill.	Rice mill, choora mills, jewellary, corpet, agro based industry	Woolen and cotton carpet, stationary, items, printing press, bakery, khansary, oil industry, readymade.
6.	Jasara	Sugar mill, rice mill, glass foctory, forest based industry	Flour mill, leather processing, jewellary, printing press.	Cotton carpets, steel furniture printing press candle, soft drinks, readymade garments.

	III order			
7.	Bara	----------	Flour mill, cotton textile, leather goods.	Bakery, carpets, cosmetics match, industry, potato based goods
8.	Iradatganj	------------	Hosiory goods, Agri cultural implements	Spices oil crushers, steel furnitures handicraft, goods readymade garments plastic goods.
9.	Karma	------------	--------------	Bakery oil, crusher, candle, plastic wooden toys, readymade garments
10.	Jari	-------------	----------------	Dal mill, readymade garments, printing press, stationary, steel febrications.
11.	Karchhana	-------------	----------------	Oil crusher, fruits preservation, utensils, candle, handloom, readymadegarments food products
12.	Akoda	------------	-------------	Food products, wooden furniture, handloom,
13.	Barav	------------	-----------------	Card boar industry, cotton corpet, oil crusher, wooden toys,
14.	Ram nager	------------	-----------------	Woolen corpets, perfume oil, photochips.
15.	uruva	-------------	------------------	Handloom, cloth, wooden furniture, carpets, rice mill.
16.	Meja road	-------------	-------------------	Woolen textile, cotton corpets, perfume oil, potato chips.

17.	Meja khas	-------------	-----------------	Agricultural implements, handlooms cloth, candle, edible oil, food products.
18.	Chilbila	-------------	-------------------	Steel fabrication, steel and coal based industry, engineering goods food products.
19.	Manda	------------	------------------	Card board industries, khansari, straw board, woolen cloth, wooden toys.
20.	Barokhar	------------	-----------------	Wooden furniture, cotton dari, khansari, agro based industries.
21.	Lediari	---------------	-----------------	Potato chips, ice candy cotton dari, hand made paper.
22.	Khiri	-------------	----------------	Agro based industroes, wooden toys, handicraft materials,
23.	Naribari	-------------	------------------	Rice mill, oil mill, paper pringne workshope, plastic toys, cotton dari.
24.	Kohdarghat	--------------	-----------------	Wooden toys, wooden furniture, khansari, cotton dari.
25.	Unchdeeh	-------------	------------------	Agro based industries, jewellary, printing press, stationary items, corn flakes,
26.	Kaundhiara	------------	-----------------	Wooden toys, steel furniture,agro based industries , oil mill, cotton dari.

1. औघोगिक विकास में विशेषकर लघु स्तर एवं स्थानीय संसाधन आधारित औघोगिक इकाई के लिए एक अच्छे स्थान का चयन पहली एवं सर्वप्रमुख आवश्यकता है। सेवा केन्द्र इस समस्या का समाधान औघोगिक इकाइयों को केन्द्रीय गुच्छित स्थिति प्रदान करके करते हैं। ज्यादातर लघु एवं दीर्घ उघोग विभिन्न सेवा केन्द्रों जैसे- नैनी, घूरपुर, भारतगंज एवं शंकरगढ़ में पाए जाते हैं। ये सेवा केन्द्र विभिन्न आइटमों के आयात एवं निर्यात के उद्देश्य से निर्माणकारी इकाइयों को उन्नतिशील स्थिति प्रदान करते हैं। क्षेत्रीय सेवा केन्द्र जिस प्रकार बाहरी शहरों स्थलों से जुड़े हैं उसी प्रकार अध्ययन क्षेत्र के सम्पूर्ण आन्तरिक भाग से भी जुड़े हैं।
2. अध्ययन क्षेत्र के सेवा केन्द्र अनेकों प्रकार के सामाजिक आर्थिक सेवाएं जैसे- स्वास्थ्य, शिक्षा, वित्त, परामर्श इत्यादि सुविधाएं उन ठेकेदारों को प्रदान करते हैं जो इन सेवा स्थलों पर रहना पसंद करते हैं। इन केन्द्रों पर ग्रामीण भूदृश्य या परिवेश के साथ-साथ शहरी सुख सुविधाओं की उपलब्धता लोगों को आकर्षित करती हैं। सेवा केन्द्र ठेकेदारों को स्वच्छ और प्रदूषणरहित पर्यावरण में कार्य करने एवं रहने के लिए उत्साहित करते हैं।

TRANS YAMUNA REGION
ALLAHABAD DISTRICT
BLOCKWISE
EMPLOYMENT GENERATION
THROUGH S.S.I. UNITS
N
YAMUNA RIVER
GANGA RIVER
PERSONS EMPLOYED
Above 400
200 - 400
Below 200
10 0 10
km
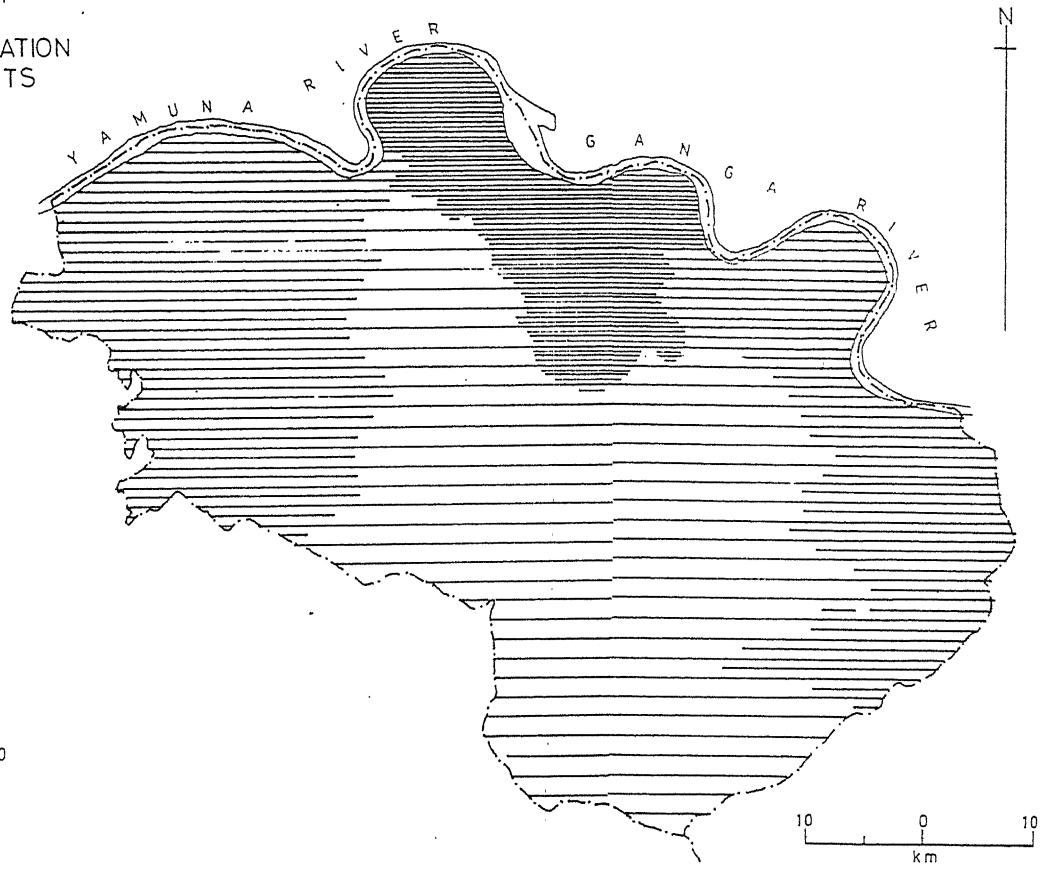
Fig. 5.7

3. अध्ययन क्षेत्र के सभी सेवा केन्द्र यद्यपि उद्योगों को विभिन्न कोणों से उत्साहित करते हैं लेकिन कुछ मूलभूत आधारभूत सुविधाएं जैसे- उर्जा, यातायात, बाजार, स्टोर आदि की विशेष सुविधा प्रदान करके उद्योगीकरण की प्रकिया को उत्साहित करते हैं। औद्योगिक इकाइयों की स्थापना के लिए उर्जा आपूर्ति संवर्धन, विभिन्न वस्तुओं का आयात एवं निर्यात, माल भण्डारण एवं विक्रय के लिए अच्छे यातायात, बाजार इत्यादि सुविधाओं की महती आवश्यकता होती है जिसको अध्ययन क्षेत्र के सेवा केन्द्र न्यूनाधिक पूर्ति करते हैं किन्तु उनकी क्षमता, शक्ति, सामर्थ्य वर्तमान मांग और उपयोग के अनुसार छोटी होती हैं।

4. ज्यादातर सेवा केन्द्र देहात क्षेत्रों में स्थित तथा स्थानीय संसाधनों पर आश्रित हैं जबकि औद्योगिक इकाइयों की अवस्थिति उनको अपने चारों ओर के संसाधन जैस- भूमि, पानी, वनस्पति, कृषि, खनिज, पशुपालन इत्यादि के पूर्ण उपयोग को प्रोत्साहित करती हैं। इस प्रकार उपरोक्त तत्यों से यह स्पष्ट है कि अच्छी संख्या में लघु मापक औद्योगिक इकाइयां स्थानिक स्तर पर उपलब्ध इन उपरोक्त संसाधनों पर आधारित है। जो संसाधन उपलब्ध नहीं हैं उन्हें देश के अन्य भागों से प्राप्त या आयात कर लेते हैं।

5. सेवा केन्द्र में भी उपरोक्त चारों प्रकार की सुविधाओं को उपलब्ध होने के कारण सेवा केन्द्र में रहने वाले तथा उसके समीपवर्ती ग्राम्य क्षेत्र में रहने वाले लागों को प्राथमिक क्षेत्र को छोड़कर द्वितीय क्षेत्र में प्रवेश करने हेतु प्रोत्साहित करते हैं। इस प्रकार सेवा केन्द्र स्थानीय जनसंख्या में औद्योगिक प्रवृत्ति एवं प्रेरणा जागृत करने में सहयोग प्रदान करते हैं।

6. सेवा केन्द्र के चारों ओर औद्योगिक इकाइयों की अवस्थिति भी ग्रामीण क्षेत्रों के वित्तीय संसाधनों की वृद्धि एवं विकास में सहयोग करती है और लघु बचतों के द्वारा पूंजी निमार्ण की प्रकिया निर्धारण में भी सहयोग करता है। औद्योगिक इकाइयां ग्रामीण क्षेत्रों की छोटी पूंजी निमार्ण की प्रकिया निर्धारण में भी सहयोग करता है। औद्योगिक इकाइयां ग्रामीण क्षेत्रों की छोटी पूंजी एवं बचतों को शेयरों, ऋण पत्रों, एवं ऋणों इत्यादि रोचक शर्तों एवं दशाओं से आकर्षित करती है। ग्रामीण जनसंख्या के प्रत्यक्ष ज्ञान या बोध में यह नवाचारित परिवर्तन सेवा केन्द्रों के कारण कमशः घटित होता है क्योंकि सेवा केन्द्रों का अनुकम, देहात क्षेत्रों के नवाचारों के प्रसारण के लिए एक पर्याप्त स्थानिक चैनल या माध्यम होता है। अब क्षेत्रीय लोग अपने स्थानीय सेवा केन्द्रों से अत्यधिक लाभ उनके साथ अधिकाधिक अन्तर्क्रिया से लेते हैं और अब लोगों में द्वितीयक क्षेत्रों में निवेश की एक परम्परा चली है।

TRANS YAMUNA REGION
ALLAHABAD DISTRICT
INDUSTRIES
N
YAMUNA RIVER
GANGA RIVER
Chaka
Jasra
Bara
Karchhana
Kaundiara
Shankargarh
Uruva
Meja
Manda
Koraon
LARGE AND MEDIUM SCALE INDUSTRIES
1 SWADESHI COTTON MILL
2 G.E.C. OF INDIA
3 TRIVENI ENGG WORKS
4 RAYMONDS SYNTHETIC LTD.
5 TRIVENI STRUCTURAL LTD.
6 BHARAT PUMPS AND COMPRESSURE LTD.
7 INDIAN TELEPHONE INDUSTRIES
8 DEYS MEDICAL STORE
9 TRIVENI GLASS WORKS
10 U P SPINNING MILL
11 HINDUSTHAN CABILS
12 VADHYA NATH AYURVADIC LTD.
GRAMODYOG
CANE AND BAMBOO
FIBRE
HAND MADE PAPER
L LEATHER
POTTERY
X RICE MILL
CARPET
IRON WOOD
OIL MILL
OTHERS
SMALL SCALE INDUSTRIES
JAM JELLY CONFECTIONARY
VEGETABLE OIL
P PLASTIC
PRINTING
W WOODEN FURNITURE
WASHING SILICA SAND
DIE DISTEMROR
& FABRICATION
# ELECTRIC GOODS
READYMADE GARMENTS
CARPET
LEATHER
10 0 10
km
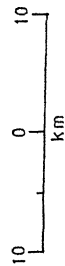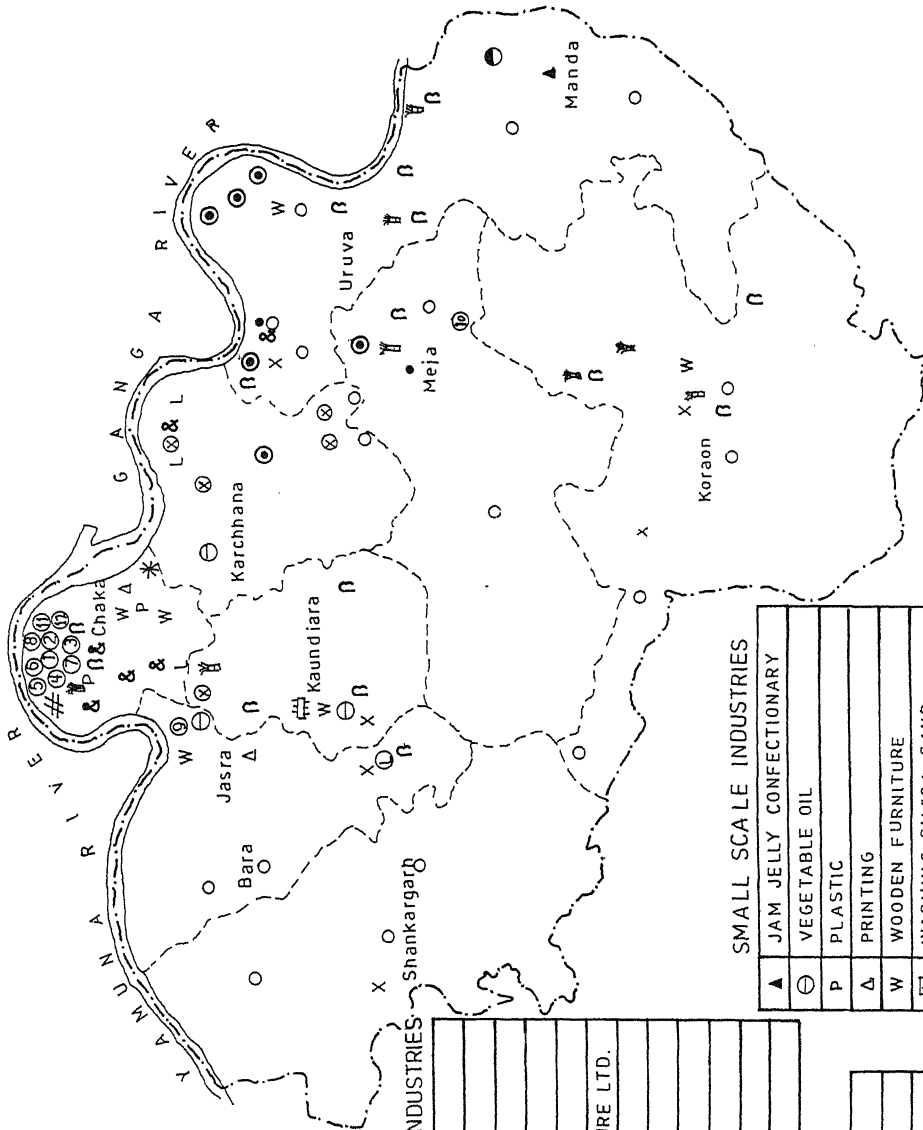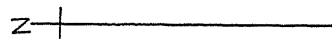
Fig. 5.8

7. सेवा केन्द्रों के चारों ओर औद्योगिक इकाइयों की अवस्थिति भी मानव संसाधनों जैस उनकी भौतिक क्षमता की तरह मानसिक क्षमताओं, कौशल और टेलेन्ट इत्यादि के अत्यधिक प्रयोग को उत्साहित करते हैं। सेवा केन्द्र मानव कल्याण को सुनिश्चित करते हैं और मानवीय प्रतिष्ठा को बढ़ाने वाले कारकों को भी उत्साहित करते हैं। ज्यादातर औद्योगिक इकाइयां सेवा केन्द्रों पर अवस्थित हैं और स्थानीय श्रमिक शक्ति को रोजगार दिए हुए हैं। किन्तु ज्यादातर औद्योगिक इकाइयां बहुत छोटी हैं और उनमें कार्य करने वाले लोगों की संख्या के अनुपात में एवं तकनीकी अवरोधों की गणनाओं पर बराबर कार्य नहीं करती हैं। यह वास्तव में बहुत छोटी होती हैं एवं इनके रोजगार की प्रकृति अस्थायी एवं पूर्णरूपेण मौसमी होती है।

8. सेवा केन्द्रों का अनुक्रम सामाजिक आर्थिक अन्तर्क्रिया की तरह ही बड़ी स्थानीय उन्नति के द्वारा भी लोगों के बीच उच्च कोटि की चेतनता और गतिशीलता से सहायता करते हैं जिससे औद्योगिक इकाइयों के विकास एवं वृद्धि पर वास्तव में धनात्मक प्रभाव पड़ता है। तथ्यों से यह स्पष्ट हो चुका है कि क्षेत्रीय लोग भी औद्योगीकरण के लाभ को स्वीकार करने लगे हैं।

9. सेवा केन्द्र यद्यपि ग्रामीण औद्योगीकरण की प्रक्रिया को अप्रत्यक्ष रूप से अच्छे कार्यों की सम्भावनाओं तथा रोजगार, धन्धे एवं जीवन स्तर सुधार को प्रबन्धित करके प्रोत्साहित करते हैं।

10. सेवा केन्द्र तुलनात्मक रूप से उन्नतिशील सामाजिक आर्थिक पर्यावरण को प्रबन्धित करता है जिससे लोगों के इस क्षेत्र में रहने के भय से छुटकारा पाने के लिए उत्साहित और प्रेरित करता है तथा संरचनात्मक और निर्माण क्षेत्रों में प्रवेश करने को उत्साहित करता है। यह तालिका संख्या 5.4 तथा मानचित्र 5.8, 5.9 एवं 5.10 को देखने से स्पष्ट होता है कि 1990 से 1997 के बीच उद्योग इकाई, पूंजी निवेश एवं रोजगार सृजन तीनों में तेजी से वृद्धि हुई है।

Table-No-5.6

Proposed large/medium scale industry of Trans-Yamuna Region of Allahabad District-1996-97

Sl.No	Name of units and address	Name of proposed products	Capital investment in coror.Rs	Employment generation
1.	M.G.F.C.India Ltd Naini Alld	Power distribution transfarmer	0.650	119
2.	Mess.Triveni engineering works Naini Alld	Drealing works and servsing ring and ekupment	2.13	51
3.	Mess.Triveni structural Naini Alld	Transmission tower	-	-
4.	Mess. Triveni Eng, works Naini Alld	Mitlargical plats and chemical machinerMitlargical plats and chemical machinery	-	-
5.	Mess.Triveni Eng, works Naini Alld,	System and eqapment for pullution center	-	-
6.	Agro based industry	Puls , rice,oil, flour, bisket.	-	-
7.	Forest based industry	Furniture, Basket, bedi,	-	-
8.	Live stock based industry	Shoes , chappal ,bag ,	-	-
9.	Textile based industry	Readymade garments, handloom, neivan, bandege and nage,	-	-
10.	Chemical based industry	Shoap, ditergent,ink,plastic agarbatti,candle.	-	-
11.	Engineering based industry	Agricultral arguments, steel furnitural, wire, utensils,	-	-
12.	Building matarial based industry	Cement, lime, bricks,tieles,	-	-
13.	Handy croft based industry	Artistic cloth printing and carpel,Artistic shoes and dalls making.	-	-
14.	Others industry	Printing press, book binding, photostate.	-	-

Source;-Area Servey by the scholar and distric industrial center Allahabad.

TRANS YAMUNA REGION
ALLAHABAD DISTRICT
A
TEMPORAL GROWTH OF S S I UNITS
NO OF S.S.I UNITS
700
600
500
400
300
200
100
0
1990-91
91-92
92-93
93-94
94-95
95-96
96-97
B
TEMPORAL GROWTH OF CAPITAL INVESTMENT
CAPITAL INVESTMENT IN (Rs Lakh)
200
180
160
140
120
100
80
60
40
20
0
1990-91
1991-92
92-93
93-94
94-95
95-96
96-97
COMULATIVE NO OF S.S.I UNITS
2000
1500
1000
500
0
1990-91
91-92
92-93
93-94
94-95
95-96
96-97
CUMULATIVE INVESTMENT IN (Rs Lakh)
600
400
200
100
20
1990-91
91-92
92-93
93-94
94-95
95-96
96-97
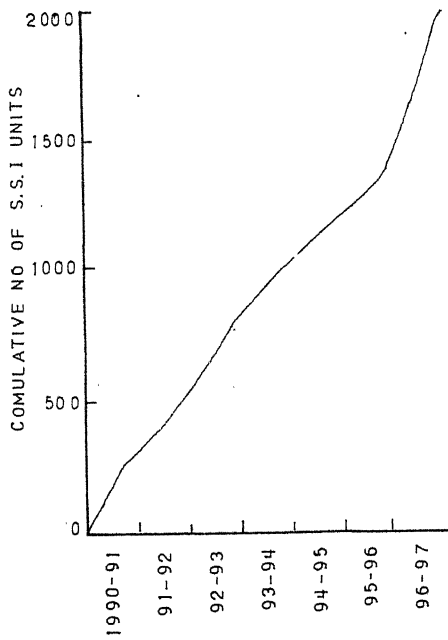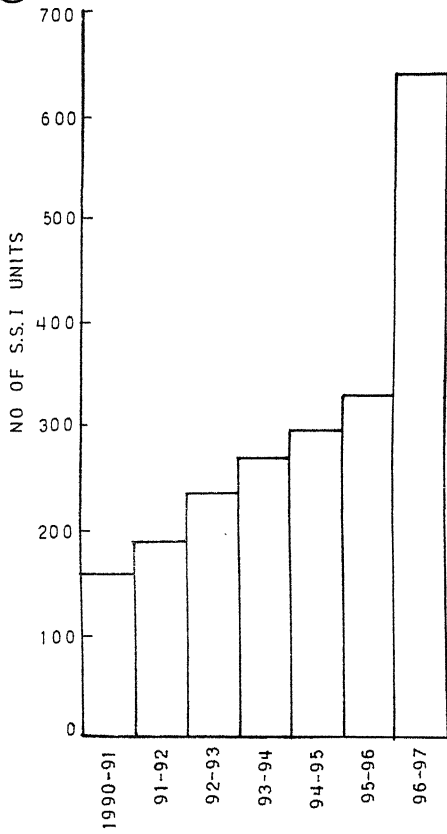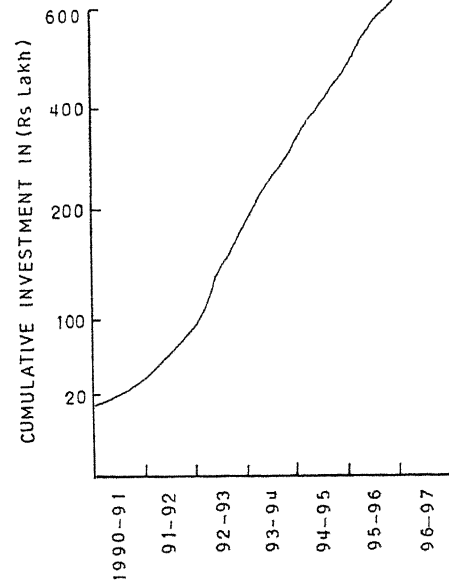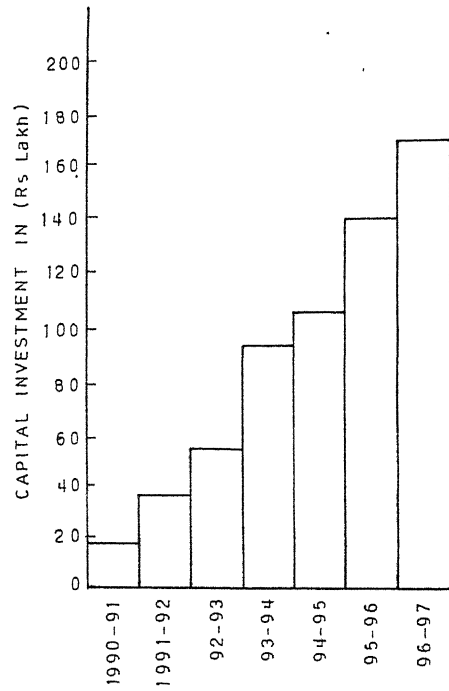
Fig. 5.9

'ब' उद्योगों के स्थानीयकरण के लिए स्थानिक नियोजन :-

यमुना पार क्षेत्र में औद्योगिक इकाइयों के वर्तमान जाल पर विचार करने पर यह स्पष्ट हुआ कि इन औद्योगिक इकाइयों के विकास के लिए अनेकों सम्भावित एवं मौजूदा समस्याओं का सामना करना पड़ता है। प्रस्तुत शोध ग्रन्थ में एक क्षेत्र हेतु स्थानिक नियोजन तैयार किया गया है जो विभिन्न प्रकार के बड़े या मध्यम एवं छोटे उद्योगों की अवस्थिति निर्धारित करने का सुझाव देता है और प्रस्तावित औद्योगिक इकाइयों के लिए उपयुक्त अवस्थिति का भी निर्धारण करता है। विविध स्तरीय उद्योगों हेतु अवस्थिति निर्धारण निम्नलिखित तत्वों के आधार पर किया गया है-

1. स्थानीय औद्योगिक संसाधनों की उपलब्धता।
2. इकाई स्थल पर औद्योगिक कच्चे माल की उपलब्धता।
3. क्च्चे मालों, शक्ति संसाधनों और औद्योगिक बाजारों के केन्द्र तक गम्यता।
4. क्षेत्र की आवश्यकता और मांग ।
5. सेवा केन्द्रों एवं उसके चारों ओर क्षेत्रों की आर्थिक सामर्थ्य।

उपरोक्त तथ्यों के आधार पर यमुना पार क्षेत्र में 14 प्रकार के उद्योग धन्धे 'तालिका 5.5' लगने के लिए प्रस्तावित है। इन विभिन्न प्रकार के उद्योगों की अनुमानित अवस्थिति मानचित्र संख्या 5.11 में दर्शायी गई है। मानचित्र तथा अन्य संदर्भों को देखने से स्पष्ट होता है कि ज्यादातर बड़े एवं मध्यम उद्योग क्षेत्र के नैनी सेवा केन्द्र में ही लगे हैं एवं प्रस्तावित भी हैं। इस केन्द्र पर सभी उद्योगों के विकास की सर्वोत्तम दशाएं पायी जाती हैं जिससे सारे बड़े या मध्यम उद्योग इसकी ओर आकर्षित हो रहे हैं।

मध्यम स्तर के उद्योग ज्यादातर द्वितीय एवं तृतीय क्रम के सेवा केन्द्रों की ओर आकर्षित हो रहे हैं। इन्हीं केन्द्रों जैसे- शंकरगढ़, भारतगंज, सिरसा, कोरांव एवं जसरा में लघु स्तरीय उद्योगों की अधिकता पायी जाती है जबकि शेष 20 तृतीय स्तर के सेवा केन्द्रों में कुटीर उद्योगों की अधिकता एवं लघु उद्योगों की कमी पायी जाती है। जब क्षेत्रीय औद्योगिक विकास के लिए यह स्थानिक नियोजन लागू करके एक वास्तविक आकार प्रदान किया गया तब उद्योगों का एक स्थानिक प्रतिरूप (मानचित्र संख्या 5.11') प्राप्त हुआ।

TRANS YAMUNA REGION
ALLAHABAD DISTRICT
TEMPORAL GROWTH OF INDUSTRIAL EMPLOYMENT
EMPLOYMENT GENERATION
3500
3000
2500
2000
1500
1000
500
0
1990-91
91-92
92-93
93-94
94-95
95-96
96-97
CUMULATIVE IMPLOYMENT GENERATION
11000
10000
9000
8000
7000
6000
5000
4000
3000
2000
1000
0
1990-91
91-92
92-93
93-94
94-95
95-96
96-97
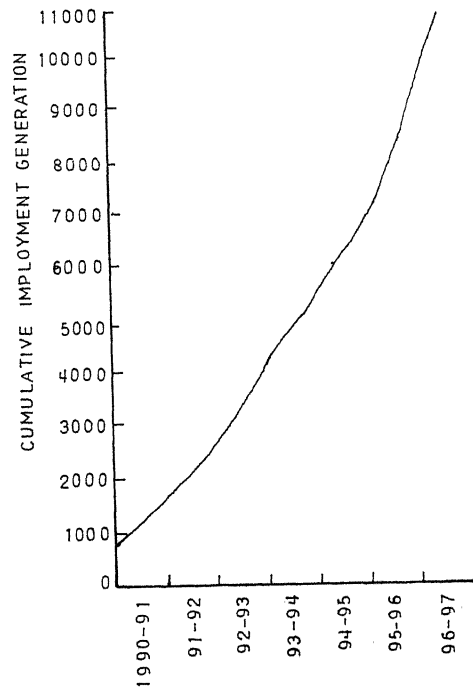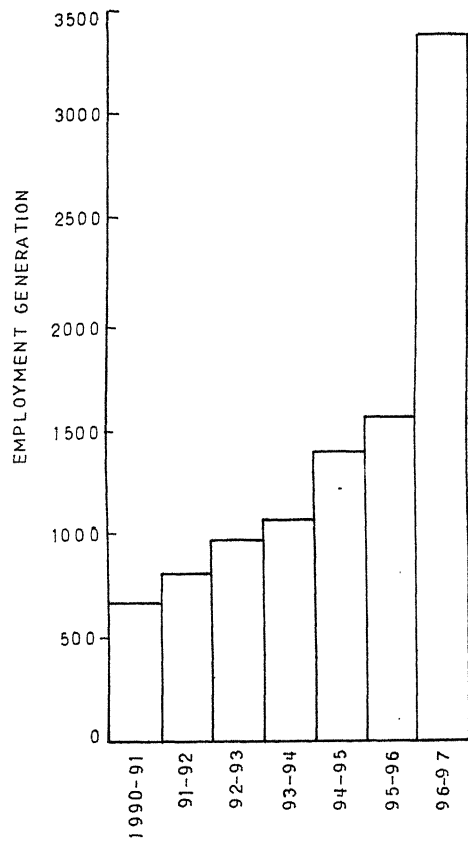
Fig. 5.10

'स' नीति सुझाव :-

'अ' नई औद्योगिक इकाई :-

इलाहाबाद जिले के यमुनापार क्षेत्र के लिए प्रस्तावित औद्योगिक इकाई को एक नियोजित एवं सुसंगठित ढांचा प्रदान करने के लिए निम्न परिष्कृत एवं संशोधित नीतियों की अनुशंसा की जा रही है-

1. अध्ययन क्षेत्र के विभिन्न भागों में उपलब्ध विभिन्न प्रकार के संसाधनों के आकार और मात्रा का वास्तविक आकलन होना चाहिए और औद्योगिक इकाइयों के बराबर संचालन और कच्चे पदार्थों की सुगम्य आपूर्ति को सावधानीपूर्वक बनाए रखना चाहिए।
2. अध्ययन क्षेत्र में मौजूद औद्योगिक इकाइयों से उत्पाद की तरह ही उपलब्ध संसाधनों का सावधानीपूर्वक आकलन एवं ज्ञान होना चाहिए जिससे औद्योगिक इकाई स्थापना, विकास एवं भविष्य के परिदृश्य में उद्योग लम्बे काल तक स्थायी रूप से चलता रहे।
3. इकाइयों की उपलब्ध आधारभूत सुविधाओं का पर्याप्त एवं सतत मूल्य निर्धारण भी औद्योगिक इकाई के सरल कियान्वयन को निश्चित करता है। इन सुविधाओं की अपर्याप्त या गलत गणना उद्योगों की स्थापना के सुगठित आकार को पहले ही परिवर्तित कर देती है।
4. औद्योगिक ठेकेदारों के लिए पर्याप्त वित्तीय सहायता, तकनीकी मार्गदर्शन, सहयोगी प्रेरणाएं आदि सुविधाएं नजदीकी केन्द्रों एवं जिला केन्द्रों में होनी चाहिए। इससे सम्पूर्ण कार्य प्रणाली और अभियांत्रिक स्थिरता जिसमें कभी कभी औद्योगिक इकाइयों के कियान्वयन में रुकावट होती है, को बदलने में सहयोगी होना चाहिए।
5. उपलब्ध मानव शक्ति के कौशल एवं परिमाण का बराबर आकलन एवं मूल्यांकन होना चाहिए जिससे औद्योगिक प्रकिया में स्थानीय जनसंख्या का प्रयोग भी होता रहे और औद्योगिक इकाई का उत्पाद भी बढ़ता रहे।
6. अन्तर्किया की प्रकिया का विश्लेषण और एक सटीक आकलन होना चाहिए। इससे प्रस्तावित औद्योगिक इकाइयां और चारों ओर की जनसंख्या के बीच एक साहचर्य उत्पन्न हो और क्षेत्रीय लोगों द्वारा ग्रामीण औद्योगीकरण को उन्नतशील बनाने के लिए यांत्रिक आपूर्ति होती रहे।

'ब' बीमार औद्योगिक इकाइयां :-

निम्न नीतियां एवं सुझाव मन्द गति से कियान्वित औद्योगिक इकाइयों के पुनः उद्धार के लिए उपयोगी मार्गदर्शक का काम कर सकती है-

TRANS YAMUNA REGION
ALLAHABAD DISTRICT
PROPOSED LARGE/MEDIUM, SMALL SCALE INDUSTRIES
N
YAMUNA RIVER
GANGA RIVER
Chaka
Jasra
Karchhana
Bara
Kaundhiara
Shankargarh
Uruva
Meja
Manda
Koraun
INDEX
G GEC INDIA LMTD.
T TRIVENI ENGINEERING
Ⓣ TRIVENI STRUCTURAL
Tm TRIVENI ENGINEERING WORKS
A AGRO BASED INDUSTRIES
V VEGITARIAL BASED ''
L LIVE STOCK BASED ''
⊗ TAXTILES BASED ''
⊖ CHEMICALS BASED ''
X ENGINEERING BASED ''
B BUILDINGS BASED ''
H HANDI CRAFT BASED ''
O OTHERS INDUSTRIES
10 0 10
km

Fig. 5.11

1. इन औद्योगिक इकाइयों को पर्याप्त वित्तीय संसाधन बैंकों से सरलता एवं आसानी के साथ बिना ठेकेदारों, दलालों, बिचौलियों, अनावश्यक वैधानिक रूकावटों के मिल जाना चाहिए। ताकि वे इकाइयां अपने ऊपर आने वाली अनेकों बाधाओं, रूकावटों का सामना स्वयं कर सके एवं आवश्यक वृद्धिपरक योजनाओं का क्रियान्वयन कर सके।
2. आवश्यक कच्चे मालों की बराबर एवं बाधारहित आपूर्ति सम्बन्धित सरकारी विभागों एवं संस्थानों द्वारा सुनिश्चित होनी चाहिए, जिससे कि इन औद्योगिक इकाइयों का उत्पादन और कार्य करना बन्द न हो।
3. इस प्रकार की औद्योगिक इकाइयों को बराबर तकनीकी सहायता एवं अन्य आवश्यक आवश्यकताओं की समयानुसार सुनिश्चितता सम्बन्धित शासकीय संस्थानों एवं विभागों द्वारा होनी चाहिए।
4. इस प्रकार की औद्योगिक इकाइयों के सामने आने वाली कार्यात्मक संगठनात्मक और प्रबन्धकीय समस्याओं का निराकरण जिम्मेदारीपूर्वक सम्बन्धित विभागों द्वारा समय-समय पर करना चाहिए।
5. औद्योगिक इकाइयों के उत्पाद विक्रय की जिम्मेदारी संविदा दर के आधार पर शासकीय विभागों एवं संस्थानों की होनी चाहिए इससे एक ओर जहां लघु इकाइयों के कार्यान्वयन में नियमितता होगी, वहीं दूसरी ओर सम्बन्धित संस्थानों की तरह ही इकाइयों की भी आय वृद्धि होगी।
6. इन लघु स्तरीय उद्योगों की इकाइयों को विस्तार और आधुनिकीकरण की जहां एवं जब आवश्यकता पड़े वहां इन इकाइयों की उत्पादन क्षमता और कार्यात्मक दक्षता क्रमशः बढ़ा देना चाहिए।

अतः यह कहा जा सकता है जब इन सुझावों का सच्चे दिल एवं इमानदारी के साथ प्रयोग किया जाएगा तो बीमार औद्योगिक इकाइयों का पुनः उद्धार एवं पुनर्नवीनीकरण हो सकेगा एवं उनकी कार्यात्मक दक्षता में सुधार होगा और वे अध्ययन क्षेत्र में सामाजिक आर्थिक विकास की व्यापक प्रक्रिया में उत्कृष्ट योगदान देंगी।

निष्कर्ष: -

उपरोक्त विवेकपूर्ण एवं तर्कसंगत विवेचना से यह स्पष्ट हो गया कि इलाहाबाद जिले का 'यमुना पार क्षेत्र' उद्योगों के विकास एवं वृद्धि के लिए आवश्यक अच्छी गर्भित अंतः शक्ति पर अधिकार रखता है। अध्ययन क्षेत्र में पाए जाने वाले औद्योगिक संसाधन ग्रामीण औद्योगीकरण की प्रकिया को बढ़ाने के लिए विशेष सहायक हो रहे हैं। वर्तमान में यह औद्योगिक विकासशील क्षेत्र है। यहां कुल 683 लघु स्तर उद्योग कुल 9 प्रमुख आधारों पर पाए जाते हैं किन्तु इनमें से ज्यादातर विभिन्न वित्तीय, कार्यात्मक, संगठनात्मक एवं तकनीकी समस्याओं के कारण बीमार इकाई हो गई है जो औद्योगिक विकास की प्रकिया की प्रमुख बाधा है। जब तक क्षेत्र की इन समस्याओं का निराकरण सावधानीपूर्वक निश्चित नहीं किया जाएगा, तब तक क्षेत्रीय विकास मात्र हास्यास्पद स्थिति में ही रहेगा।

REFERNECES

1. Mishra, B.N. 1989: Rural Industrialisation in India, in "Rural Development in India – Basic Issues and Dimensions Mishra, B.N. (ed.) pp.113-125.

2. Nanjappa, K.L. 1973: Industries in Rural Economy Yojana, Vol.XVIII, No.1, p.17, Planning Commission, New Delhi.

3. Sharma, D.P. and Desai, V.V. 1980: Rural Economy of India, Vikash Publishing House, New Delhi, pp.52-67.

4. Mishra, B.N. 1989: Op.Cit pp.113-125.

5. Ibid.

6. Nicholla, W.H. 1970: The place of Agriculture in Economic Developments, p.13.

7. Sharma, D.P. and Desai, V.V. 1980: Op Cit. P.4.

8. Mishra, B.N. 1989: Op. Cit. pp.122-125.

अध्याय - 6

सामाजिक सुविधाओं के विकास हेतु स्थानिक नियोजन

एक संगठित एवं अनुशासित मानव समाज के विकास हेतु वांछित सामाजिक सुविधाओं का पर्याप्त निर्धारण प्रमुखतया सरकार, नियोजकों एवं राजनीतिज्ञों के माध्यम से हो सकता है। सामाजिक सुविधाओं का आकार, मात्रा एवं गुण किसी मानव समाज के सामाजिक आर्थिक विकास स्तर को ही सूचित नहीं करता बल्कि इसके भावी स्वरूप एवं किया कलापों को सुनिश्चित करने का प्रयास भी करता है[1]। अतः एक प्रदेश की सामाजिक सुविधाओं की स्थानिक प्रतिरूप का अध्ययन शैक्षिक एवं व्यावहारिक दोनों महत्व का है।

भारत के लोगों के लिए पर्याप्त सुविधाओं का प्रावधान भारतीय संविधान में महत्वपूर्ण लक्ष्य के रूप में स्वीकार किया गया है। पांचवी पंचवर्षीय योजना '1974-79' के घोषणा-पत्रों में यह बताया गया है कि 'न्यूनतम आवश्यकता कार्यकर्मों के अन्तर्गत् पर्याप्त सामाजिक सुविधाएं और प्रतिमान क्या हैं' जिनको इन कार्यकमों में प्रयोग के तौर पर अपनाया गया है[2]। नियोजन आयोग द्वारा न्यूनतम आवश्यकता कार्यकम के अन्तर्गत निम्नलिखित सामाजिक सुविधाएं सम्मिलित की गई हैं -

1. प्राथमिक शिक्षा
2. स्वास्थ्य सुविधाएं
3. पीने योग्य पानी
4. ग्रामीण सड़कें
5. ग्रामीण विघुतीकरण
6. भूमिहीन श्रमिकों को आवास
7. रोजगार

Table-6.1

Comperative Litracy in Trans-Yamuna Region of Allahabad District- 1991. (In Percent)

Sl.No.	Region	Persons	Male	Female
1.	Trans-Yamuna Region	28.86	38.79	18.93
2.	Allahabad District	42.3	59.1	23.5
3.	Uttar Pradesh	47.71	55.35	26.02
4.	India	52.11	63.86	39.42

Source:-

1. Census Office Allahabad (unpublished)
2. India –1997 Publication Division- Ministry of Information And Broadcasting, Govt. of India.

सामाजिक सुविधाएं :-

प्रस्तुत अध्ययन में मात्र दो सामाजिक सुविधाएं- 'स्वास्थ्य एवं शिक्षा' का ही विवेचन किया गया है। शिक्षा एवं स्वास्थ्य नीतियों को दो तरह से देखा जा सकता है। यह संविधान का निर्देशक सिद्धान्त तथा योजना आयोग का न्यूनतम कार्यक्रम होने के नाते स्वतन्त्र भारत के नागरिकों का मौलिक अधिकार भी है। इस रूप में देखने पर स्वास्थ्य एवं शिक्षा की सुविधाओं का प्रावधान अपने में ही एक उद्देश्य हो जाता है। अतः इसे अन्य उत्पादक किया कलापों से जोड़ा जाना आवश्यक नहीं है क्योंकि यह जनता का मौलिक अधिकार है और इसका पूरा होना आवश्यक है। कोई भी सभ्य देश इस तथ्य की अनदेखी नहीं कर सकता। यद्यपि विकासशील देश में संसाधनों की कमी होने के कारण शिक्षा एवं स्वास्थ्य के क्षेत्र में उत्पादक किया कलापों से जोड़ दिया जाता है। इस प्रकार उत्पादकता के संदर्भ में शिक्षा एवं स्वास्थ्य का सीधे रूप में अनुत्पादक मान लिया जाता है तथा उसे न्यून वरीयता दी जाती है। इस दृष्टिकोण के आधार पर भारतीय परिवेश पूर्ण सत्य है क्यों कि सामाजिक सुविधाओं को भारत में शायद ही वृहद राष्टीय योजना और सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था के विकास का महत्वपूर्ण अंग माना गया हो[3]।

सामाजिक सुविधाओं का उत्पादक उपयोग जो कमजोर अर्थव्यवस्था की पूर्ति कर सकता है को दो रूपों में देखा जा सकता है। अब अल्पकालिक उपयोग के अन्तर्गत् इन सुविधाओं की स्थापना विकेन्द्रीकृत रूप में अथवा विविध सेवा केन्द्रों पर की जाए जहां पर नये कार्यक्रमों को जोड़कर इसका प्रसार किया जाए। दीर्घकालिक उपयोग के अन्तर्गत् ये स्वास्थ्य एवं शिक्षा सेवाएं अत्यन्त उत्पादक हैं। इस प्रकार के अध्ययन की मान्यता कृषि उत्पादन को सुधारने एवं बढ़ाने हेतु नई कृषि तकनीकी की उपयोग से सम्बन्धित रही । लेकिन यह कार्य किसानों के शैक्षिक स्तर को बढ़ाए बिना ही करने का पयास

TRANS YAMUNA REGION (ALLAHABAD DISTRICT)
LITERACY DENSITY 1971
A
PER CENT
> 10
5 – 10
< 5
LITERACY DENSITY 1991
PER CENT
> 30
25 – 30
< 25
LITERACY DENSITY 1981
PER CENT
> 18
9 – 18
< 9
LITERACY IN TRANS YAMUNA REGION OF ALLAHABAD DISTRICT
B
PERSON
MALE
FEMALE
LITERACY (%)
65
60
55
50
45
40
35
30
25
20
15
10
5
0
INDIA
U.P.
ALLD.
T-Y REGION
STUDY AREA
1971
1981
1991
Years
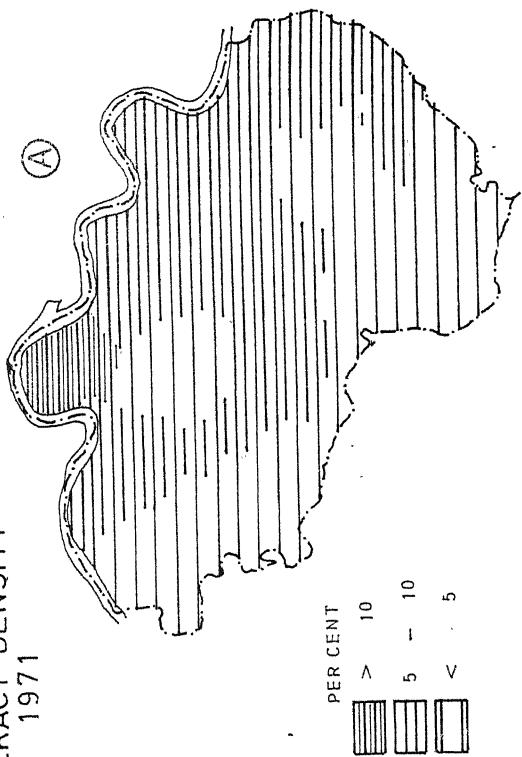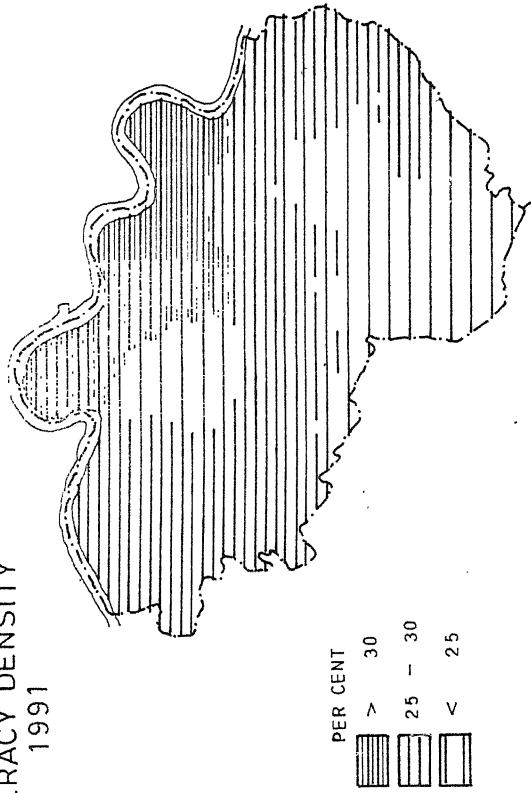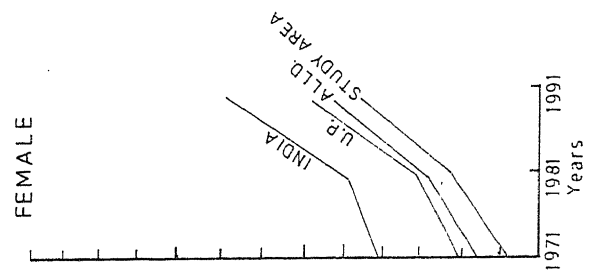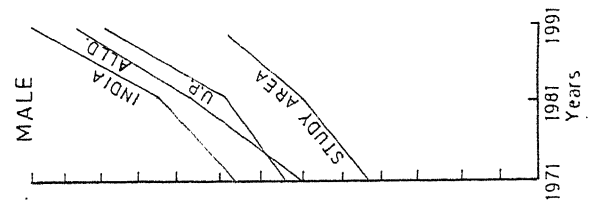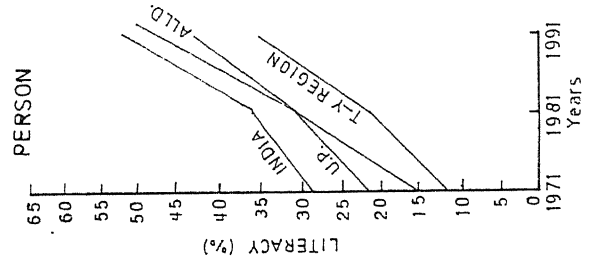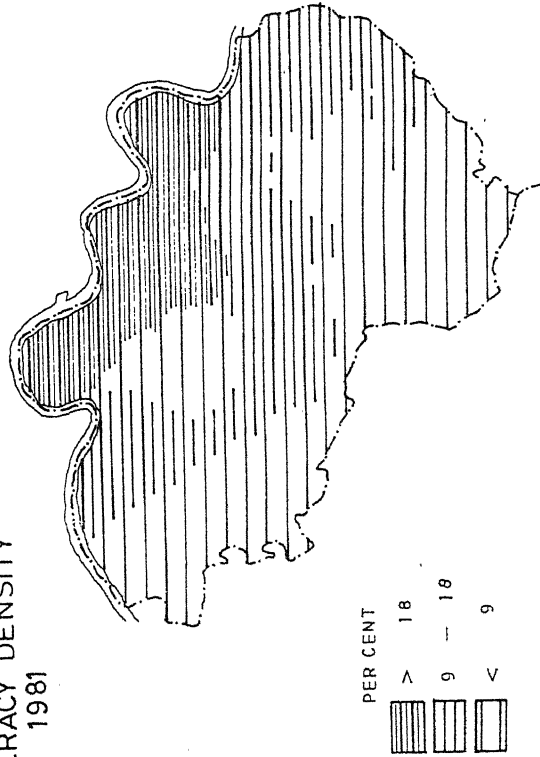
Fig.6.1

किया गया यह मान्यता आंशिक रूप से ही सही है[4] । इस दृष्टिकोण से शोध क्षेत्र के शिक्षा एवं स्वास्थ्य सुविधाओं के स्थानिक प्रतिरूप का अध्ययन अत्यन्त उपयोगी एवं महत्वपूर्ण है जिससे क्षेत्रीय विकास नियोजन की प्रकिया को तीव्रतर होने की सम्भावना है।

खण्ड (अ) शैक्षिक सुविधाएं :-

इलाहाबाद जिले के इस अध्ययन क्षेत्र -'यमुनापार' में पुरासाक्ष्यों के आधार पर ऐतिहासिक शैक्षिक प्रतिरूप का वर्णन करना कठिन है क्योंकि इसी जिले में अध्ययन क्षेत्र में लगे हुए वैदिक युगीन शैक्षिक स्थल गंगा यमुना के संगम पर प्रतिष्ठानपुर 'झूंसी' तथा यमुना किनारे कौशाम्बी के विकास से यह 'शैक्षिक छाया प्रदेश' के रूप में रहा, फिर भी यह दृढ़ता के साथ कहा जा सकता है कि इन शैक्षिक स्थलों को अध्ययन क्षेत्र से बिल्कुल लगे होने के कारण सर्वाधिक लाभ अध्ययन क्षेत्र के स्थानीय विद्यार्थियों ने - दर्शन, वेद, इतिहास, पुराण, ज्योतिष, व्याकरण, युद्ध विद्या आदि में लिया। इन शैक्षिक केन्द्रों को 'आश्रम' की संज्ञा दी गई जो ज्ञान एवं अनुशासन के केन्द्र थे[5] । महाभारत के पश्चात् वत्सों की राजधानी 'कौशाम्बी' वत्सराज उदयन के शासनकाल में ललित कलाओं 'संगीत, नृत्य' और विद्या की महान संरक्षक केन्द्र थी [6]।

कालान्तर में गुरु के प्रत्यक्ष मार्गदर्शन और सम्पर्क में शिक्षा देने की प्रणाली परम्परागत बन गई और ऐसे संस्थान जहां निःशुल्क शिक्षा प्रदान की जाती थी, 'गुरुकुल' कहे जाने लगे। मध्य काल में इन संस्थाओं का अपकर्ष होता गया और ये संस्थाएं निजी पाठशालाएं बनकर रह गईं। बाद में मुस्लिम आगमन के साथ यहां पर मकतब या मदरसे स्थापित किए गए जिनमें अधिकतर इस्लामी शिक्षा दी जाती थी। क्षेत्र पर अंग्रेजों के अधिकार के साथ बिना सरकारी आर्थिक सहायता वाले विद्यालयों में मजहब के हिसाब से शिक्षा दी जाने लगी। केवल व्यवसायी वर्ग के लोगों के लिए वाणिज्यिक किस्म के 'बाजार' स्कूल थे जिनमें वेतनभोगी अध्यापकों द्वारा 'मुड़िया' और 'कैथी' लिपियां सिखाई जाती थी और साथ ही एक प्रकार की व्यावहारिक गणित की शिक्षा दी जाती थी 7 ।

आगे चलकर अध्ययन क्षेत्र में 1846 में हल्काबन्दी प्रणाली के तहत् परगने के राजस्व के अनुसार एक विद्यालय खोला गया तथा इसी वर्ष सभी तहसील मुख्यालयों पर एक स्कूल खोला गया। 1857 के स्वतन्त्रता संग्राम से थोड़ी उथल-पुथल हुई किन्तु 1859 में बारा, करछना में तहसीली स्कूल पुनः कार्यरत हो गए। 1908 में क्षेत्र में कई वार्नाक्यूलर स्कूलों के अतिरिक्त अनेकों उच्च प्राथमिक, निम्न प्राथमिक, बालिका विद्यालय एवं कई अनुदानित विद्यालय

खोले गए जो शैक्षिक माहौल को बढ़ाते रहे, फिर भी क्षेत्रीय साक्षरता काफी कम थी [8] ।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जनसंख्या वृद्धि के साथ-साथ साक्षरता दर में भी वृद्धि हुई है जो क्षेत्र के विकास में धनात्मक सहयोग दे रही है। शैक्षिक सुविधाओं का निम्न विवरण महत्वपूर्ण तथ्यों को उजागर करता है।

Table –6.2

Block Wise Rural Litracy in Trans –Yamuna Region of Allahabad District – 1991

Sl. No.	Blocks	% of Male	% of Female	% of Illiterates persons	% of Literates persons
1.	Jasra	78.20	21.80	70.04	29.96
2.	Shankergarh	76.47	23.53	72.94	27.06
3.	Chaka	75.90	24.10	67.63	32.37
4.	Karchhana	82.35	17.65	68.50	31.50
5.	Kaudhiara	85.78	14.22	77.00	23.00
6.	Uruva	80.60	19.40	64.35	35.65
7.	Meja	83.43	16.57	72.50	27.50
8.	Koroan	83.96	16.04	76.46	23.54
9	Monda	83.67	16.33	71.63	28.37
	Stidy Area	81.07	18.93	71.14	28.86

Source :-
Census Office Allahabad, (Unpublished).

साक्षरता :-

साक्षरता सामाजिक आर्थिक विकास की धुरी है। जो व्यक्ति किसी भाषा को समझकर उसमें लिख और पढ़ सकता है उसे ही साक्षर माना जाता है, जो सिर्फ पढ़ सकता है लिख नहीं सकता उसे साक्षर नहीं माना जाता है। साथ ही भारत में 5 वर्ष से कम उम्र के बच्चे निरक्षर माने जाते हैं। अध्ययन क्षेत्र की साक्षरता का तुलनात्मक प्रतिशत तालिका 6.1 में दिखाया गया है, जो सामान्य तौर से इलाहाबाद जिले, उ.प्र. एवं भारत की साक्षरता प्रतिशत से काफी कम है। मानचित्र 6.1 से क्षेत्रीय साक्षरता की कालिक वृद्धि दिखाई गई है। अध्ययन क्षेत्र की साक्षरता स्पष्ट तौर से जिले, प्रदेश एवं देश तीनों स्तरों पर कम पायी जाती है। साक्षरता का ब्लाक स्तर पर स्थानिक प्रतिरूप देखने से स्पष्ट होता है कि उरुवा ब्लाक '35.65 प्रतिशत' साक्षरता में सर्वोच्च है जबकि चाका, करछना, जसरा, माण्डा की साक्षरता 28 से 35 प्रतिशत के बीच पायी जाती है। (मानचित्र 6.1 तथा सारणी 6.2) तथा शेष ब्लाकों- मेजा, शंकरगढ़, कौंधियारा में साक्षरता 23 से 28 प्रतिशत के बीच पायी जाती है। अतः यह

TRANS YAMUNA REGION OF ALLAHABAD DISTRICT
NUMBER OF EDUCATIONAL INSTITUTIONS AND TEACHERS
A
NO. OF STUDENTS
200
150
100
50
0
1985-86
90-91
91-92
92-93
93-94
94-95
95-96
96-97
Years
MIDDLE EDUCATION
SECONDARY EDUCATION
HIGHER EDUCATION
NO OF TEACHERS
2000
1500
1000
500
0
Secondary Education Teachers
Middle Education Teachers
Higer Education Teachers
NUMBER OF STUDENTS
B
MIDDLE EDUCATION
SECONDARY EDUCATION
HIGHER EDUCATION
NO. OF STUDENTS (in 000)
45
40
35
30
25
20
15
10
5
0
Years

Fig. 6.2

कहा जा सकता है कि क्षेत्र के सभी ब्लाकों की साक्षरता 1981 से 1991 में तेजी से बढ़ी है, लेकिन महिला साक्षरता का ग्राफ काफी चिन्ताजनक स्थिति में है जिसे सुधारने का प्रयास सरकारी एवं व्यक्तिगत संस्थानों द्वारा तेजी से जारी है।

सरकार द्वारा अध्ययन क्षेत्र में साक्षरता की वृद्धि शिक्षा और सीखने के अनेक प्रोग्राम लागू करके तथा अध्ययन क्षेत्र की शैक्षिक सुविधाओं जैसे- शिक्षक, संस्थानों, श्रव्य-दृश्य सामग्री, आधुनिक तकनीकों आदि में वृद्धि करके की जा सकती है। तालिका 6.3 और मानचित्र 6.2 से स्पष्ट होता है कि इन सुविधाओं- शिक्षक, संस्थानों में वृद्धि के साथ-साथ छात्रों की संख्या में भी प्रतिवर्ष उत्साहजनक वृद्धि हो रही है जो सुविधाओं की बराबर आपूर्ति के कारण ही है। इन सुविधाओं के साथ भी अध्ययन क्षेत्र के ज्यादातर मेधावी विद्यार्थी इलाहाबाद, वाराणसी एवं अन्य नगरों में चले जाते हैं। अध्ययन क्षेत्र का एक सिंहावलोकन करने पर स्पष्ट होता है कि प्रतिवर्ष लगातार शिक्षा के विविध स्तरों में अत्यधिक विकास हो रहा है जो लाभप्रद होगा। (मानचित्र 6.2)

वितरण और प्रकार :-

वर्तमान अध्ययन क्षेत्र में प्रमुख रूप से पांच प्रकार की शैक्षिक सुविधाएं उपलब्ध हैं - वे प्राथमिक शिक्षा, उच्च प्राथमिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा, उच्च शिक्षा एवं तकनीकी शिक्षा आदि हैं। इसके अतिरिक्त अनेकों शासन निर्देशित शैक्षिक प्रोग्राम और योजनाएं जैसे - अनौपचारिक शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा, महिला शिक्षा, विकलांग शिक्षा एवं विशेष उद्देश्य आधारित 'परिवार नियोजन' शिक्षा आदि अध्ययन क्षेत्र में समय-समय पर चलाई जा रही हैं। इन सुविधाओं की संख्या और वितरण मानचित्र संख्या 6.3 एवं 6.4 तथा तालिका संख्या 6.4 एवं 6.8 में विस्तृत रूप से विवेचित हैं।

शैक्षिक संस्थानों, अध्यापकों एवं छात्रों की संख्या और सामान्य स्थानिक प्रतिरूप तालिका 6.4 तथा मानचित्र 6.3 देखने से यह स्पष्ट होता है कि शैक्षिक संस्थानों की दृष्टि से विकास खण्ड उरूवा '42' सर्वोच्च स्थान पर है जबकि शंकरगढ़ '40' कोरांव '36' जसरा '34' आदि हैं।माण्डा '24' इस दृष्टि से सबसे निम्न स्थिति पर है। शिक्षकों की दृष्टि से सर्वोच्च संख्या चाका '291' ब्लाक की है जबकि द्वितीय स्थान पर क्रमशः करछना '278' उरूवा '266' एवं जसरा में 263 शिक्षक पाये जाते हैं। शिक्षकों की सबसे कम संख्या कौंधियारा '109' ब्लाक में पायी जाती है। विद्यार्थियों की संख्या में पहला स्थान उरूवा '11636' ब्लाक का है जबकि क्रमशः चाका '9910', जसरा '9202', शंकरगढ़ '9034' एवं कोरांव '8968' आदि ब्लाकों में विद्यार्थी पाये जाते हैं तथा सबसे कम विद्यार्थी कौंधियारा '5981' ब्लाक में पाये जाते हैं। (तालिका 6.4 एवं मानचित्र 6.3)

Table –6.3

Block Wise Rural Litracy in Trans –Yamuna Region of Allahabad District – 1991

Sl. No.	Years	Middle Education			Secondary Education			Higher Education		
		No.	Teachers	Students	No.	Teachers	Students	No.	Teachers	Studentds
1.	1985-86	168	301	23885	85	1628	30215	2	82	40
2.	1990-91	170	295	24995	90	1546	34713	2	85	4499
3.	1991-92	173	275	25322	93	1485	36514	3	85	5496
4.	1992-93	177	269	25852	93	1429	38142	3	95	5093
5.	1993-94	178	275	26025	95	1402	38818	3	95	5286
6.	1994-95	180	298	27118	95	1378	39995	3	95	5513
7.	1995-96	182	303	27589	96	1486	40813	3	95	5605
8.	1996-97	186	347	26090	98	1503	42538	3	95	5801

Source :- The District Statistical Bulletins Allahabad,State Planning Institute U.P.1985-86,90 To 97

'अ' प्राथमिक शिक्षा :-

वृद्धि और विकास अन्ततः लोगों के लिए ही होता है। सबको शिक्षित करना और अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा न केवल उत्पादन, रोजगार और आर्थिक प्रगति के लिए जरूरी है बल्कि किसी देश के लोकतांत्रिक जीवन में प्रत्येक व्यक्ति को पूरा भागीदार बनाने के लिए भी जरूरी है। क्षेत्र में प्राथमिक शिक्षा एक से लेकर पांच तक के विद्यार्थियों के सन्दर्भ में देखी गई है। प्राथमिक विद्यालयों, शिक्षकों एवं छात्रों का स्थानिक प्रतिरूप तालिका 6.5 एवं मानचित्र 6.4 में प्रदर्शित किया गया है। प्राथमिक विद्यालयों की संख्या की दृष्टि से कोरांव '95' ब्लाक सर्वोच्च स्थान पर है जबकि निम्नतम स्थान 40 विद्यालयों के साथ कौंधियारा ब्लाक का है। विद्यालयों की संख्या पर प्रभावी कारण शहरी वातावरण एवं ब्लाकों का क्षेत्रफल स्पष्ट रूप से डालता है। शिक्षकों की संख्या की दृष्टि से प्रथम स्थान पर करछना '290' ब्लाक है जबकि सबसे निम्न स्थान पर कौंधियारा '100' ब्लाक है। प्राथमिक स्तर पर छात्रों की दृष्टि से करछना '12339' ब्लाक सर्वोच्च स्थान पर है एवं कौंधियारा '5873' ब्लाक निम्नतम स्थान पर है। अतः शिक्षक एवं छात्रों की दृष्टि से करछना ब्लाक सर्वोच्च एवं कौंधियारा ब्लाक निम्नतम स्थान पर है। शिक्षक-छात्र अनुपात उच्चतम माण्डा '50.1' में तथा निम्नतम चाका '26.3' ब्लाकों के बीच विचलित होता है। इस प्रकार सम्पूर्ण अध्ययन क्षेत्र में प्राथमिक शिक्षा में 611 विद्यालय, 1856 शिक्षक एवं 73510 विद्यार्थी पाए जाते हैं। क्षेत्र का शिक्षक-छात्र अनुपात 1: 39 औसत पर स्थिर होता है।

TRANS-YAMUNA REGION (ALLAHABAD DISTRICT)
A
EDUCATIONAL INSTITUTIONS
N
> 36
30 – 36
24 – 30
B
NUMBER OF TEACHERS
> 270
170 – 270
< 170
C
NUMBER OF STUDENTS
> 11000
9000 – 11000
< 9000
10 0 10 20
km
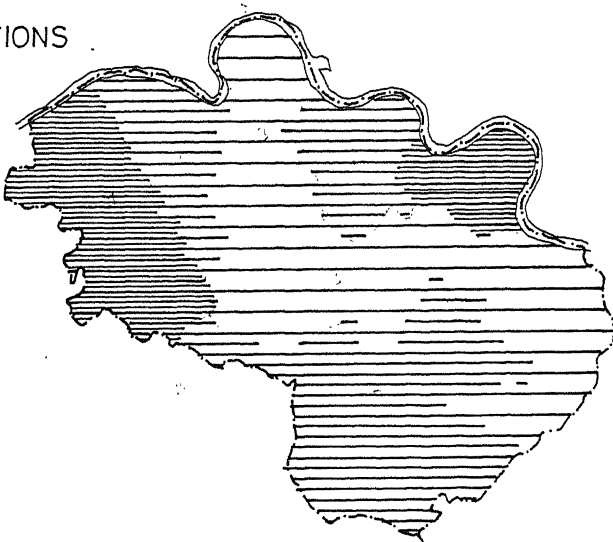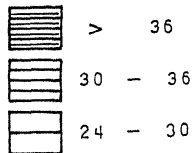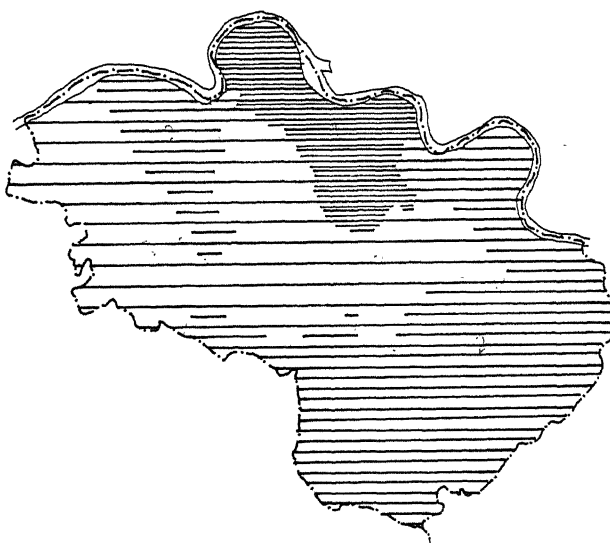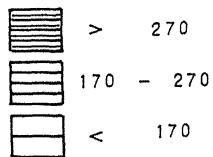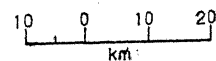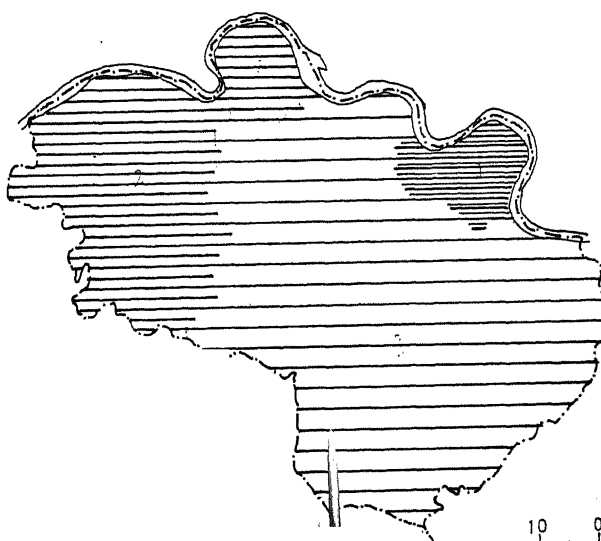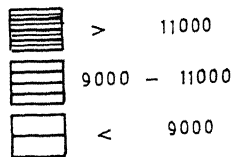
Fig. 6.3

प्राथमिक शिक्षा के विद्यालय, शिक्षक और छात्रों का अध्ययन क्षेत्रीय औसत (सारणी 6.5) से एक स्थानीय मानक अथवा नार्म्स पर, सामान्य रूप में समस्यात्मक क्षेत्र (मानचित्र 6.5 ए) की पहचान होती है। क्षेत्र के चाका, करछना, उरूवा एवं जसरा ब्लाक सन्तोषजनक स्थिति में हैं जबकि कौंधियारा, माण्डा, कोरांव, शंकरगढ़ आदि ब्लाक समस्याग्रस्त स्थिति में हैं जहां पर प्राथमिक शिक्षा के विकास के लिए सच्चे विचारों से नियोजन किए जाने और नियोजन प्रकिया चालू रखने की आवश्यकता है।

Table –6.4
Block Wise Total Number of Institution, Teachers and Students of Trans –Yamuna Region of Allahabad District – 1996-97
(Exempted Primary Education)

Sl. No.	Blocks	Total Institutions	Total Teachers	Total Students
1.	Jasra	34	263	9202
2.	Shankergarh	40	152	9034
3.	Chaka	30	278	9910
4.	Karchhana	29	291	8320
5.	Kaudhiara	26	109	5981
6.	Uruva	42	266	11638
7.	Meja	25	157	6581
8.	Koroan	36	195	8968
9	Monda	24	178	6809
	Study Area	286	1899	76441

Source :-
District Statistical Bulletin Allahabad, 1996-97

'ब' उच्च प्राथमिक शिक्षा : -

इसका अध्ययन कक्षा 6 से 8 तक के विद्यार्थियों के सन्दर्भ में किया गया है। इस शिक्षा में संस्थानों की संख्या, शिक्षक एवं छात्र की दृष्टि से अध्ययन क्षेत्र में स्थानिक वितरण का प्रतिरूप ज्यादातर समानता लिए हुए है जो तालिका 6.6 एवं मानचित्र 6.4 से प्रदर्शित किया गया है। शिक्षक '62' छात्र '3589' एवं स्कूलों '35' की संख्या में, क्षेत्र का शंकरगढ़ ब्लाक सर्वोच्च स्थान पर है जबकि स्कूलों में निम्नतम माण्डा '11' तथा शिक्षकों '22' एवं छात्रों '2571' दोनों में निम्नतम स्थान मेजा विकास खण्ड का है। शिक्षक-छात्र

TRANS-YAMUNA REGION OF ALLAHABAD DISTRICT
DISTRIBUTION OF EDUCATIONAL FACILITIES
N
YAMUNA RIVER
GANGA RIVER
Chaka
Jasra
Bara
Shankargarh
Kaundhiara
Karchhana
Uruva
Meja
Koraun
Manda
EDUCATIONAL INSTITUTIONS
PRIMARY EDUCATION
MIDDLE EDUCATION
SECONDARY EDUCATION
HIGHER EDUCATION
PROFESSIONAL AND TECHNICAL EDUCATION
10
0
10
km
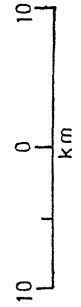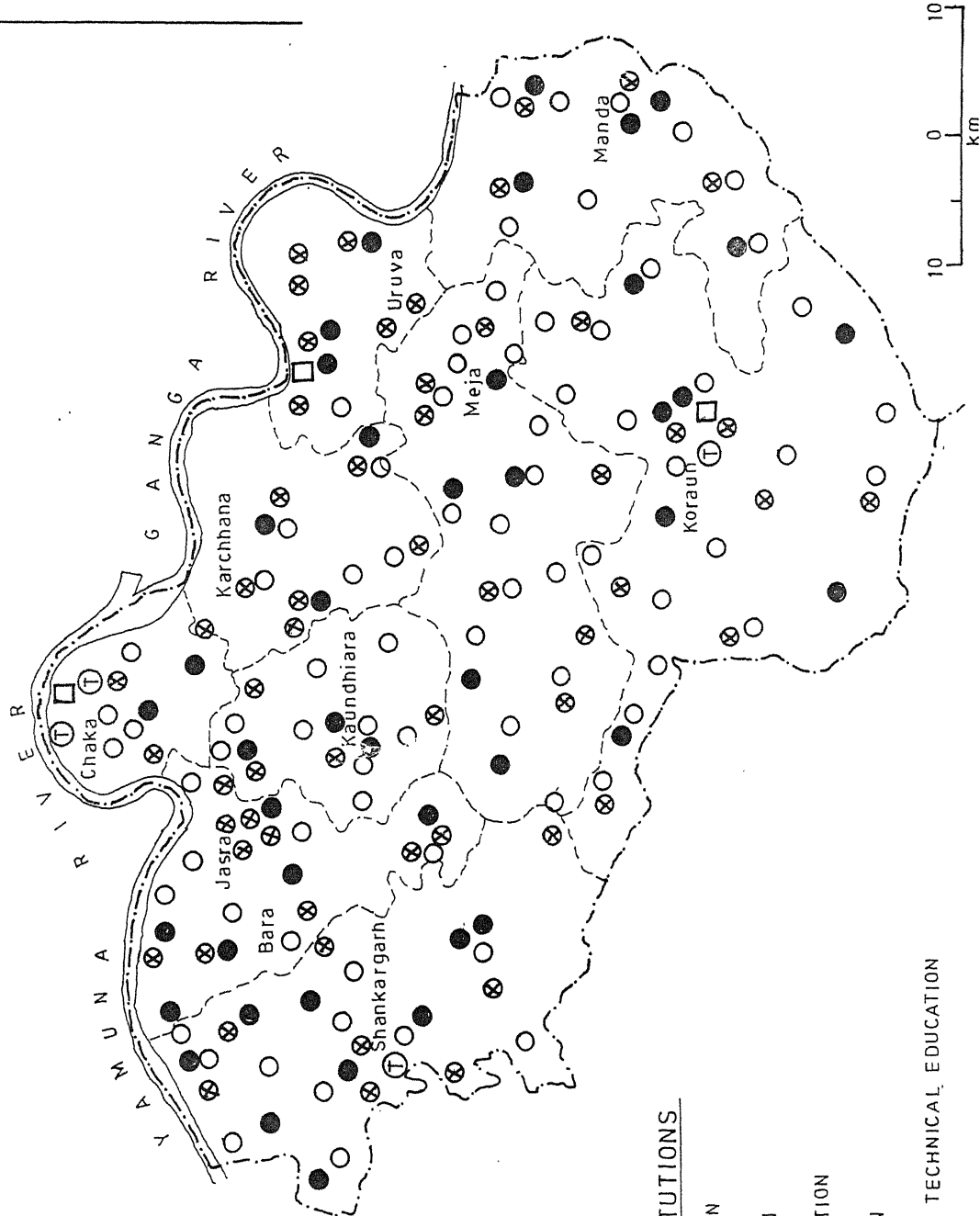
Fig. 6.4

औसत निम्नतम करछना '49.9' ब्लाक का एवं उच्चतम मेजा '116.9' ब्लाक का पाया जाता है।

अध्ययन क्षेत्र के शिक्षकों छात्रों एवं माध्यमिक विद्यालयों का सम्पूर्ण औसतों के पहचान के लिए स्थानीय मानकों एवं नार्म्स को लिया गया है 'तालिका 6.6' जिससे सामान्य तौर से माध्यमिक शिक्षा की पहचान होती है एवं विशिष्ट तौर से समस्या क्षेत्रों 'मानचित्र 6.5 बी' की पहचान होती है। शंकरगढ़, चाका, जसरा एवं करछना, माण्डा सामान्य तौर से सन्तोषजनक स्थिति में हैं जबकि कोरांव, कौंधियारा आदि ब्लाक समस्याग्रस्त स्थिति में हैं जहां पर माध्यमिक शिक्षा के लिए सच्चे दिल से विकास नियोजन सूत्रों को लागू करने की जरूरत है।

Table –6.5
Block Wise Distribution of Primary Education Facilities and Local Norms – 1996-97

Sl. No.	Blocks	No. Of Units	No. Of Teachers Norms		No. Of Students		Teachers-Students Ratio-1:
			Nos.	No/Units	Nos.	No./Units	
1.	Jasra	60	195	3.3	6229	103.8	31.9
2.	Shankergarh	63	192	3.0	6110	96.9	31.8
3.	Chaka	58	255	4.4	6719	115.8	26.3
4.	Karchhana	88	290	3.3	12339	140.2	42.5
5.	Kaudhiara	40	100	2.5	5875	146.8	58.7
6.	Uruva	82	269	3.3	10365	126.4	30.5
7.	Meja	60	163	2.7	6671	111.1	40.9
8.	Koroan	95	188	1.9	9019	94.1	47.9
9	Monda	65	203	3.1	10183	156.6	50.16
	Study Area	611	1855	3.03	75510	120.3	1:39.6

Source :-
District Statistical Bulletin Allahabad, State Planning Institute U.P. 1996-97.

'स' माध्यमिक शिक्षा :-

अध्ययन क्षेत्र में माध्यमिक शिक्षा के विद्यालयों की संख्या, शिक्षक, एवं विद्यार्थियों के समान प्रतिरूप के आकार की जानकारी तालिका 6.7 एवं मानचित्र 6.4 से स्पष्ट होती है। जसरा ब्लाक विद्यालयों '18' शिक्षकों '232' एवं विद्यार्थियों '5865' की संख्या में सर्वोच्च स्थान पर है जबकि कौंधियारा ब्लाक शिक्षक '85' स्कूल '9' एवं छात्रों '2998' की दृष्टि से निम्नतम स्थान पर है।
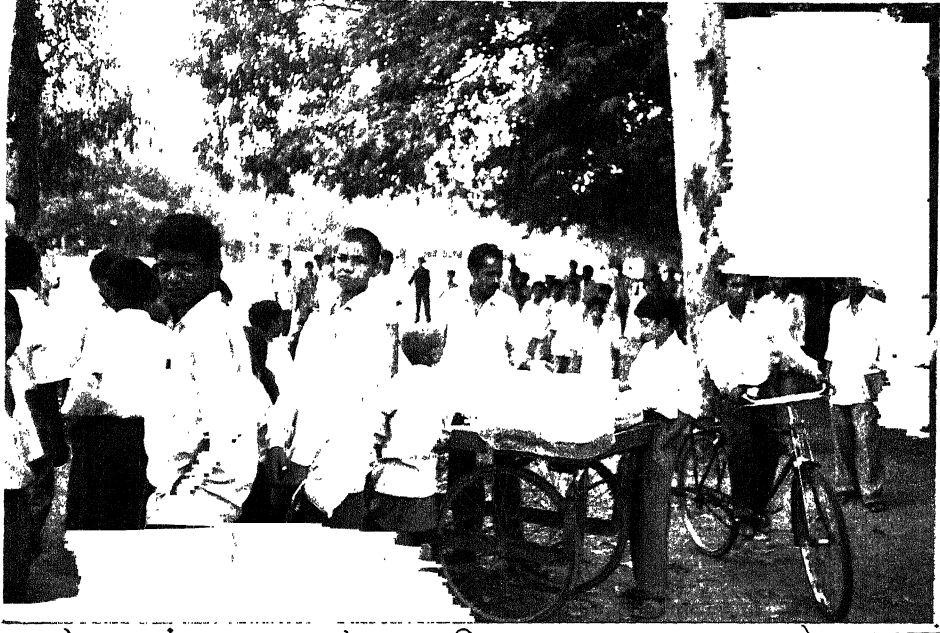
फोटो प्लेट नं० 23- गोपाल विद्यालय इण्टर कालेज प्रागंड, कोरांव, इलाहाबाद

फोटो प्लेट नं० 24- गाढ़ा जूनियर हाई स्कूल, गाढ़ा, कोरांव, इलाहाबाद
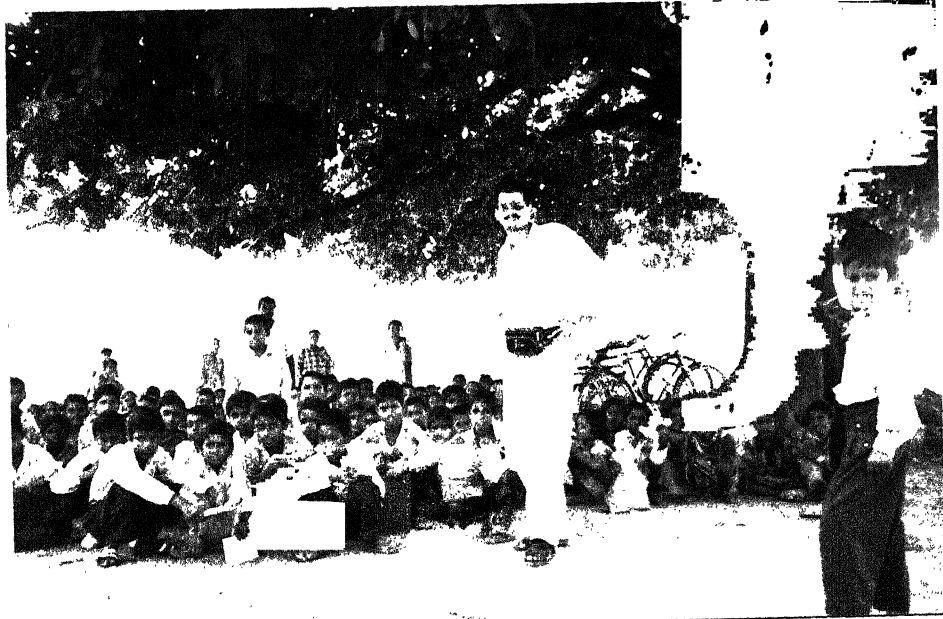
TRANS YAMUNA REGION OF ALLAHABAD DISTRICT
PROBLEM AREAS IN ACCORDANCE WITH THE LOCAL NORMS OF DIFFERENT LEVELS OF EDUCATION
N
A
PRIMARY EDUCATION
ABOVE AVERAGE
AVERAGE
BELOW AVERAGE
NIL
B
MIDDLE EDUCATION
ABOVE AVERAGE
AVERAGE
BELOW AVERAGE
NIL
C
SECONDARY EDUCATION
ABOVE AVERAGE
AVERAGE
BELOW AVERAGE
NIL
D
HIGHER EDUCATION
ABOVE AVERAGE
AVERAGE
BELOW AVERAGE
NIL
10
0
10
20
km
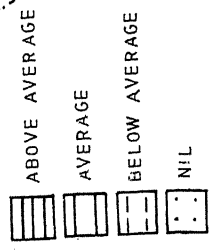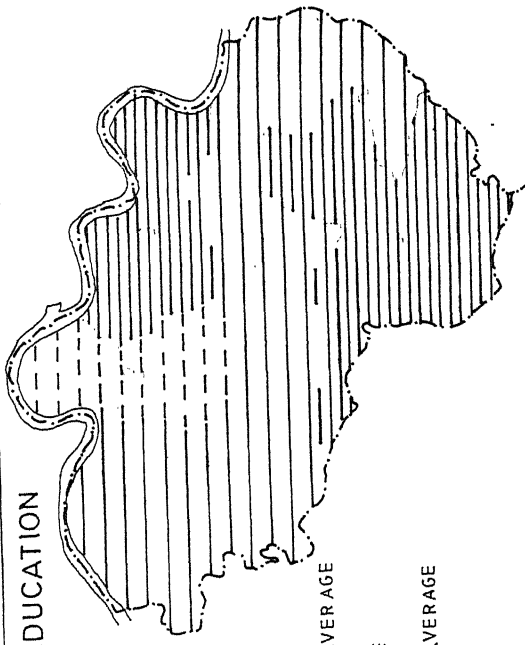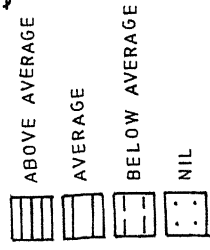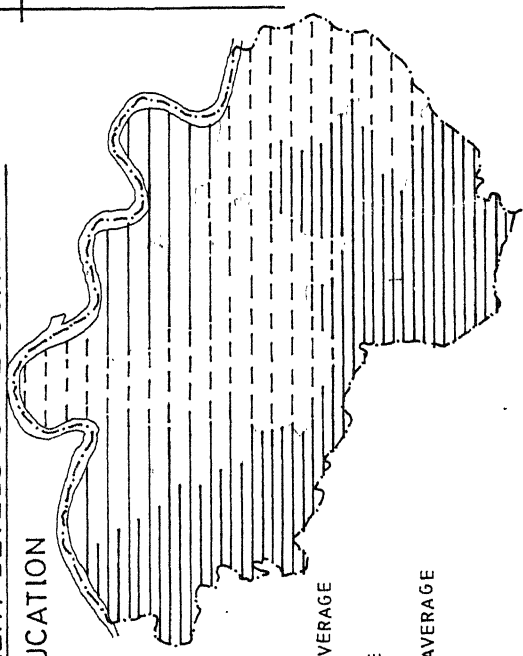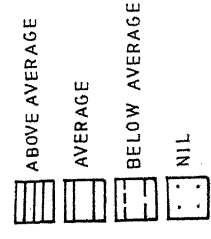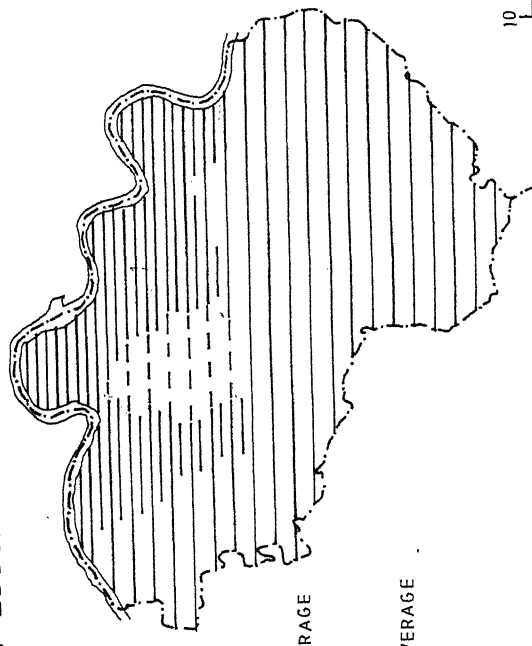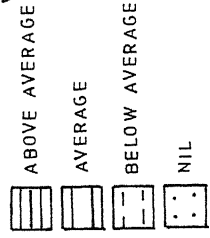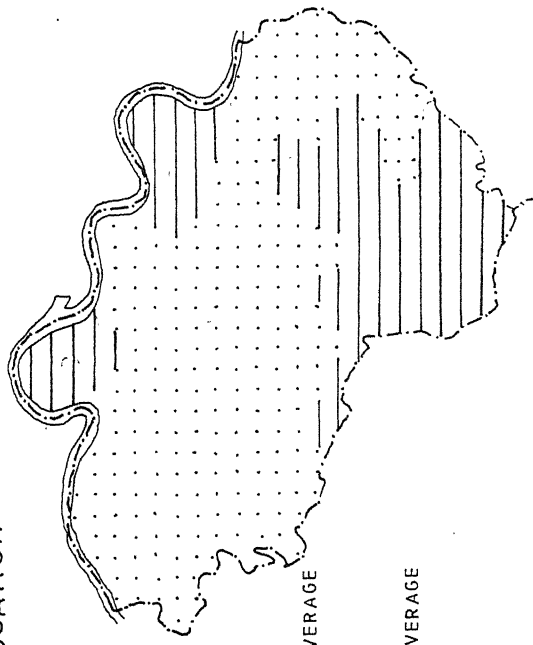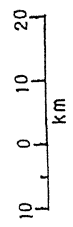
Fig. 6.5

शिक्षक छात्र अनुपात निम्नतम उरूवा '23.7' ब्लाक का एवं उच्चतम 38.9 शंकरगढ़ ब्लाक का है। उच्चतम में दूसरे स्थान पर 35.8 कोरांव ब्लाक का पाया जाता है।

अध्ययन क्षेत्र में माध्यमिक स्कूलों की पहचान सामान्य तौर पर जिला मानकों एवं नार्म्स से होती है एवं विशिष्ट तौर से समस्याग्रस्त क्षेत्रों के जसरा, उरूवा, चाका एवं मेजा ब्लाक सामान्य तौर से अच्छी स्थिति में है जबकि माण्डा कोरांव एवं कौधियारा आदि ब्लाक समस्याग्रस्त क्षेत्र को स्पष्ट करते हैं जहां पर माध्यमिक शिक्षा का विकास पूर्ण नियोजन प्राथमिकता के साथ करना चाहिए।(फोटो प्लेट न० 24) मेजा ब्लाक में जवाहर नवोदय विद्यालय इस क्षेत्र का नियोजित विद्यालय है।

Table –6.6
Block Wise Distribution of Middle Education Facilities and Local Norms – 1996-97

Sl. No.	Blocks	No. Of Units	No. Of Teachers Norms		No. Of Students		Teachers-Students Ratio-1:
			Nos.	No/Units	Nos.	No./Units	
1.	Jasra	20	28	1.4	2987	149.3	106.6
2.	Shankergarh	35	62	1.7	3589	102.5	57.8
3.	Chaka	15	30	2.0	2786	185.7	92.9
4.	Karchhana	21	54	2.7	2693	128.2	49.9
5.	Kaudhiara	19	31	1.6	2784	146.5	89.8
6.	Uruva	23	35	1.5	2835	123.2	81.0
7.	Meja	15	22	1.4	2571	171.4	116.9
8.	Koroan	27	44	1.6	3015	111.6	68.5
9	Monda	11	41	3.7	2830	257.2	69.0
	Study Area	186	347	1.9	26090	140.2	1:93.2

Source :-
District Statistical Bulletin Allahabad, State Planning Institute U.P. 1996-97.

'द' उच्च शिक्षा :-

अध्ययन क्षेत्र में उच्च शिक्षा के स्थानिक प्रतिरूप की स्थिति बड़ी विषम है जो तालिका 6.8 एवं मानचित्र 6.4 से स्पष्ट होती है। चाका ब्लाक वर्तमान शिक्षक '70' एवं छात्रों '2341' की दृष्टि से सर्वोच्च स्थान पर है जबकि ज्यादातर विकास ब्लाकों में उच्च शिक्षा की कोई व्यवस्था नहीं है। चाकां के अलावा उरूवा एवं कोरांव ब्लाक में एक एक महाविद्यालय पाए जाते हैं जो वांछित शिक्षा की अत्यल्प पूर्ति करते हैं। मानचित्र 6.5 डी से स्पष्ट होता है कि क्षेत्रीय शैक्षिक स्थिति सन्तोषजनक नहीं क्योंकि ज्यादातर ब्लाक समस्याग्रस्त

ब्लाक हैं। शिक्षक छात्र औसत भी चाका '33.4' ब्लाक का निम्न एवं उरूवा '148.7' ब्लाक का उच्च है।

क्षेत्र में उच्च शिक्षा का विकास न होने का कारण, 'इलाहाबाद का' शिक्षा का बहुत बड़ा केन्द्र होना है जिससे ज्यादातर विद्यार्थी इसी केन्द्र की तरफ चले आते हैं। अतः इस क्षेत्र में उच्च शिक्षा के विकास नियोजन की महती आवश्यकता है। इस आवश्यकता पूर्ति के लिए सरकारी एवं व्यक्तिगत संस्थानों द्वारा प्रयास किए जा रहे हैं जिससे निकट भविष्य में कई नए महाविद्यालय खुलने की सम्भावना है।

Table –6.7
Block Wise Distribution of Secondary Education Facilities and Local Norms – 1996-97

Sl. No.	Blocks	No. Of Units	No. Of Teachers Norms		No. Of Students		Teachers-Students Ratio-1:
			Nos.	No/Units	Nos.	No./Units	
1.	Jasra	18	232	12.8	5865	325.8	25.3
2.	Shankergarh	10	132	13.2	5145	514.5	38.9
3.	Chaka	14	195	13.9	5627	401.9	28.8
4.	Karchhana	13	215	16.5	5230	402.3	24.3
5.	Kaudhiara	9	85	9.5	2998	299.8	35.3
6.	Uruva	13	210	16.2	4970	382.3	23.7
7.	Meja	10	145	14.5	3761	376.1	25.9
8.	Koroan	10	137	13.7	3486	348.6	25.4
9	Monda	11	152	13.7	5465	545.6	35.8
	Study Area	98	1503	15.3	42538	434.0	1:28.3

Source :-
District Statistical Bulletin Allahabad, State Planning Institute U.P. 1996-97.

'ई' व्यावसायिक एवं तकनीकी शिक्षा :-

कृषि एवं कृषेत्तर क्षेत्रों के असन्तुलन को कम करने एवं आर्थिक विकास को उचित माध्यम से बढ़ाने के लिए व्यावसायिक एवं तकनीकी शिक्षा की महती आवश्यकता होती है। साथ ही साथ आधुनिक मशीनीकरण तथा उत्पाद बढ़ाने वाली नवीन प्रविधियों को ग्रहण करने के लिए स्थानीय लोगों में इस प्रकार की शिक्षा में प्रवीणता अत्यावश्यक है। अध्ययन क्षेत्र में इस प्रकार की व्यावसायिक एवं तकनीकी शिक्षा के लिए नैनी औद्योगिक आस्थान में - नैनी आई.टी.आई., शंकरगढ़ में महिला पालीटेकनिक आदि संस्थान स्थापित

किए जा चुके हैं तथा मेजा ब्लाक में महिला पालीटेकनिक की स्थापना का प्रस्ताव है जो जल्दी ही चालू हो जाएगा। इसके अलावा क्षेत्र में 10 कम्प्यूटर संस्थान, 15 टाइपिंग प्रशिक्षण केन्द्र एवं 'इलाहाबाद एग्रीकल्चर संस्थान' सुचारु रूप से व्यावसायिक प्रशिक्षण दे रहे हैं। इस प्रकार सम्पूर्ण यमुना पार क्षेत्र में इन शिक्षाओं के लिए 28 छोटे-बड़े विद्यालय/संस्थान, 90 शिक्षक एवं 1012 विद्यार्थी अध्ययनरत हैं। क्षेत्र में स्थापित 'इलाहाबाद कृषि संस्थान' क्षेत्र के लिए ही नहीं बल्कि भारत एवं विश्व के लिए अच्छे कृषि वैज्ञानिक तैयार कर रहा है।

Table –6.8
Block Wise Distribution of Higher Education Facilities and Local Norms – 1996-97

Sl. No.	Blocks	No. Of Units	No. Of Teachers Norms		No. Of Students		Teachers-Students Ratio-1:
			Nos.	No/Units	Nos.	No./Units	
1.	Jasra	-	-	-	-	-	-
2.	Shankergarh	-	-	-	-	-	-
3.	Chaka	1	70	70	2341	2341	33.4
4.	Karchhana	-	-	-	-	-	-
5.	Kaudhiara	-	-	-	-	-	-
6.	Uruva	1	17	17	2528	2528	148.7
7.	Meja	-	-	-	-	-	-
8.	Koroan	1	10	10	932	932	93.2
9	Monda	-	-	-	-	-	-
	Study Area	3	97	3.3			1:59.8

Source :-
District Statistical Bulletin Allahabad, State Planning Institute U.P. 1996-97.

अनौपचारिक एवं प्रौढ़ शिक्षा :-

राज्य के शिक्षा विभाग द्वारा उन छात्रों एवं प्रौढ़ों को साक्षर करने के उद्देश्य से इस प्रकार की शिक्षा योजनाएं चलाई जा रही हैं जो या तो स्कूल नहीं जा पाते या जाते-जाते अपनी घरेलू समस्याओं के कारण बीच में ही स्कूल छोड़ देते हैं। इस प्रकार के लोगों के लिए राज्य सरकार ने राष्ट्रीय शैक्षिक एवं अनुसंधान प्रशिक्षण परिषद 'एन.सी.ई.आर.टी.' नई दिल्ली द्वारा साक्षरता निकेतन लखनऊ के सहयोग से 1974- 75 में इस प्रकार की शिक्षा योजना लागू की गई। अध्ययन क्षेत्र में इस प्रकार के विद्यार्थियों को दो आयु वर्ग- 8-14 वर्ष एवं 15-35 वर्ष में बांटकर शिक्षा दी जाती है। अध्ययन क्षेत्र में अनौपचारिक एवं प्रौढ़ शिक्षा के 275 केन्द्र विभिन्न गांवों में स्थित हैं जिनमें 200 महिलाओं के साथ 1300 शिक्षार्थी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। कई प्राइवेट शिक्षण संस्थान भी प्रौढ़ शिक्षा में पंजीकृत हैं, किन्तु वास्तविकता यह है कि

TRANS-YAMUNA REGION OF ALLAHABAD DISTRICT
LOCATION OF PROPOSED EDUCATIONAL FACILITIES IN PROBLEM AREAS
N
YAMUNA RIVER
GANGA RIVER
Chaka
Jasra
Bara
Karchhana
Kaundhiara
Shankargarh
Uruva
Meja
Manda
Koraun
EDUCATIONAL INSTITUTION
PRIMARY EDUCATION
MIDDLE EDUCATION
SECONDARY EDUCATION
HIGHER EDUCATION
PROFESSIONAL AND TECHNICAL EDUCATION
10
0
10
km
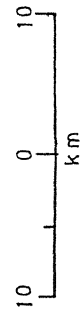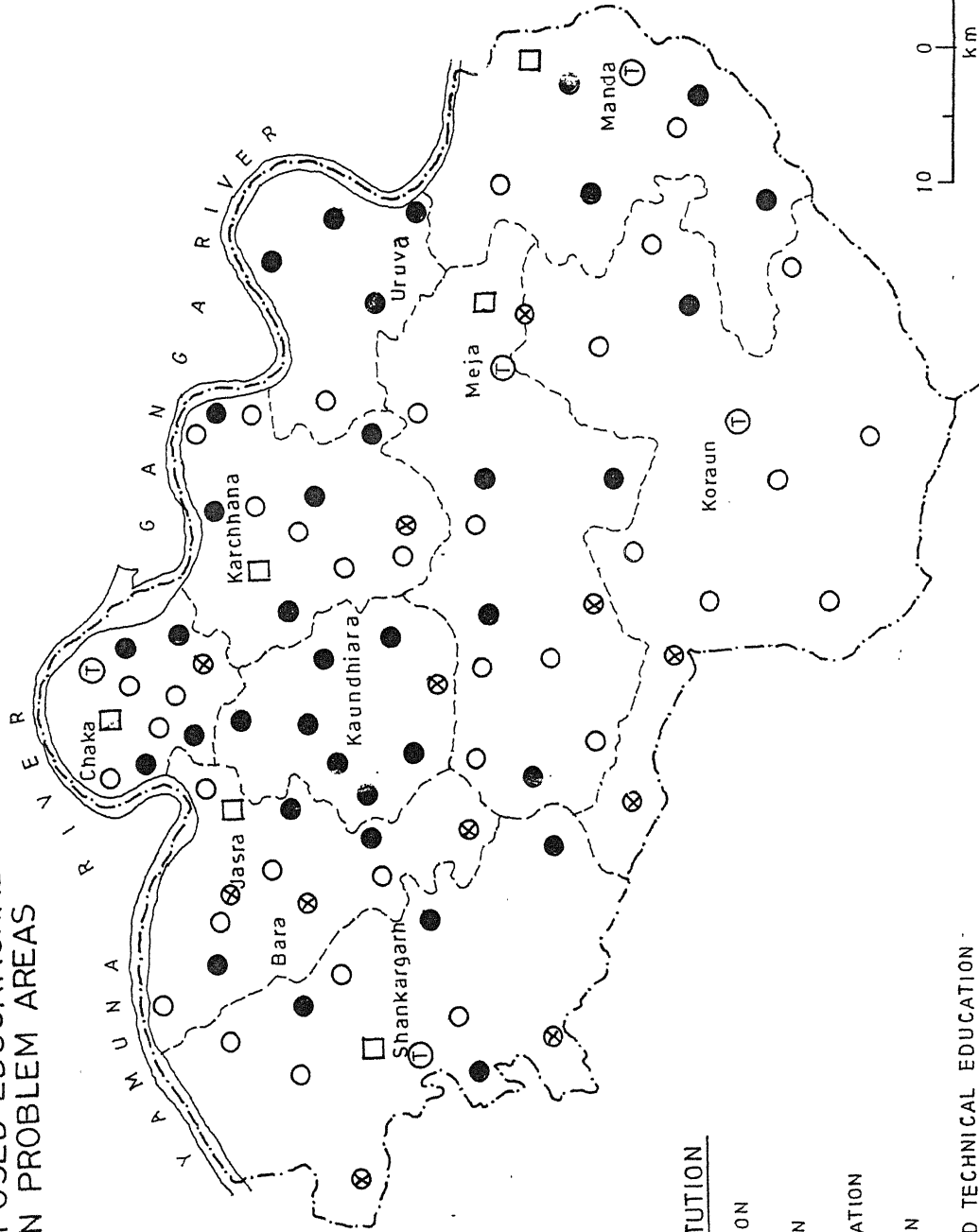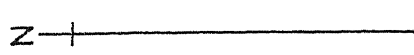
Fig. 6.6

इनमें से कोई भी विद्यालय और प्राइवेट संस्थान वास्तविक रूप से प्रौढ़ शिक्षा में संलग्न नहीं हैं। ज्यादातर संस्थान एवं स्कूल सरकारी सहायता एवं फण्ड आदि ग्रहण करने के लिए पंजीकृत हो गए हैं।

TABLE NO- 6.9

Proposed Location For Varios Educational Facilities in Trans-Yamuna Region of Allahabad District – 1996-97

SL-NO	Educational Facilities	Proposed Centres (no)
1.	Primary Education	Jasara(10), Sankargarh(9), Chaka(3),Karchhana(8), Kaundhiara(12), Uruva(5), Meja(9), Koroan(6),
2.	Middle Education	Jasara (3), Sankargarh(2), Chaka(4), Karchhana(5), Kaundhiara(7), Uruva(3), Meja(4), Manda(5), Koroan(4),
3.	Secondary Education	Chillagoahani, Meja, Chilbila, Pratappur, Naribari, Khiri,
4.	Higher Education	Goahania,Shankargarh,Karchhana,Naini,Meja, Bharatganj,
5.	Technical And Proffessional Education	Meja, Shankargarh, Koroan, Monda, Naini,

Source- Office of The Directerate of Education U.P Allahabad.

शिक्षा की प्रमुख समस्याएं :-

अध्ययन क्षेत्र में शिक्षा की इन उपरोक्त सुविधाओं के विस्तृत जाल के होते हुए भी क्षेत्र की शिक्षा निम्नलिखित समस्याओं से ग्रसित हैं-

1. क्षेत्र के अनेक ब्लाकों में जिला / प्रदेश के औसत मानकों पर शैक्षिक सुविधाओं की कमी। (मानचित्र 6.5)
2. वर्तमान स्थापित शिक्षण संस्थाओं के निस्पादन / प्रदर्शन एवं कमजोर दशाओं का होना।(फोटो प्लेट न0 24)
3. व्यावसायिक तकनीकी एवं वैज्ञानिक शिक्षा के लिए सुविधाओं की कमी।
4. व्यावसायिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण केन्द्रों की कमी।
5. विविध प्रकार के पाठ्यकमों एवं विभिन्न स्तरों की शिक्षा के लिए आधारभूत सुविधाओं की कमी।
6. अत्यल्प शिक्षक-विद्यार्थी अनुपात।

7. अनुसूचित जाति / जनजाति एवं अल्पसंख्यकों की निम्न स्तर की शिक्षा एवं साक्षरता।
8. महिलाओं की शिक्षा एवं साक्षरता का प्रतिशत निम्न होना।
9. प्रौढ़ शिक्षा एवं अनौपचारिक शिक्षा की अत्यन्त कमजोर दशाएं।

शैक्षिक सुविधाओं के लिए स्थानिक नियोजनः -

अध्ययन क्षेत्र में शैक्षिक सुविधाओं के विकास के लिए स्थानिक नियोजन उपरोक्त प्रमुख समस्याओं और पहचाने गए समस्याग्रस्त क्षेत्रों को ध्यान में रखकर किया गया है। यह नियोजन इन्हीं पांच प्रकार की शैक्षिक सुविधाओं के लिए अध्ययन क्षेत्र में प्रस्तावित स्थानों (मानचित्र 6.6) पर आधारित है और स्थानीय नियोजन को एक ठोस आधार या विषयवस्तु देने के लिए प्रभावपूर्ण और प्रासंगिक संस्तुति है। प्रस्तावित शैक्षिक सुविधाओं की स्थिति का विस्तार मानचित्र 6.9 में दिखाया गया है। इन प्रस्तावित शैक्षिक सुविधाओं की अवस्थिति के लिए अनुशंसित केन्द्र उन्हीं वास्तविक समस्यात्मक क्षेत्रों (मानचित्र 6.5) में प्रस्तावित है जहां इन सुविधाओं की कमी है और जिला मानकों पर खरे नहीं है। स्थानिक नियोजन को एक ठोस आकार देने तथा शैक्षिक समस्याओं को दूर करने के लिए कुछ महत्वपूर्ण एवं प्रभावी नीतियों का सुझाव निम्न रूप में है -

1. मानचित्र 6.6 में दिखाए गए समस्याग्रस्त क्षेत्रों में विभिन्न स्तर के नए शिक्षा संस्थानों को संस्तुत केन्द्रों में खोला जाना चाहिए।
2. उन स्थापित शिक्षा संस्थानों को जिनकी संरचना एवं शिक्षा दशाएं खराब हैं उनका लोगों के शैक्षिक मांग के अनुरूप सुधार होना चाहिए।
3. वैज्ञानिक तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा के लिए दी गई सुविधाओं का अध्ययन क्षेत्र में वास्तविक मांगों के अनुरूप विस्तार एवं प्रसार होना चाहिए।
4. व्यावसायिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण केन्द्रों में प्रशिक्षण की शुरुआत माध्यमिक स्तर के छात्रों से शुरू की जानी चाहिए ताकि उस शिक्षा से बेरोजगार युवक लाभदायक कार्यों एवं अपने निजी व्यवसाय शुरू कर सकें।
5. विभिन्न प्रकार के पाठ्यक्रमों के लिए पर्याप्त आधारभूत सुविधाएं वर्तमान एवं प्रस्तावित शैक्षिक संस्थानों में दी जानी चाहिए।
6. अध्ययन क्षेत्र में एक शिक्षक पर छात्रों की संख्या सभी स्तरों पर उच्च है। इन विभिन्न शिक्षा केन्द्रों या संस्थानों में अधिक शिक्षकों की नियुक्ति करके शिक्षक-छात्र अनुपात को सही बनाया जाना चाहिए।

7. अनुसूचित जाति / जन जाति एवं अल्पसंख्यकों के बच्चों को नामांकन के लिए प्रेरित करना चाहिए ताकि वे शिक्षित होकर क्षेत्र की सामाजिक आर्थिक विकास की प्रकिया में उत्पादक भूमिका निभा सकें।
8. क्षेत्र की ज्यादा से ज्यादा महिलाओं को शिक्षा ग्रहण करने के लिए विभिन्न माध्यमों से प्रेरित करना चाहिए ताकि वे महिला साक्षरता में वृद्धि के साथ-साथ विकास प्रकिया में भी बराबर का योगदान कर सकें।
9. अनौपचारिक एवं प्रौढ़ शिक्षा के कार्यकमों को मानसिक रूप से कमजोर एवं पिछड़े लोगों के बीच बड़ी सावधानी एवं इमानदारीपूर्वक स्थापित एवं विस्तारित करना चाहिए ताकि वे शिक्षित होकर अध्ययन क्षेत्र के सामाजिक-आर्थिक विकास की प्रकिया में धनात्मक योगदान कर सकें।

खण्ड 'ब' स्वास्थ्य सुविधाएं

स्वास्थ्य एवं मानव विकास एक देश अथवा प्रदेश के सामाजिक-आर्थिक विकास के अनिवार्य अवयव हैं। संविधान में सार्वजनिक स्वास्थ्य एवं सफाई राज्य सरकार में निगमित है[9] । भारत में स्वास्थ्य सुविधाओं के क्षेत्र में नियोजित आर्थिक विकास वांछित प्राप्ति के साथ स्वतन्त्र रूप से संगठित हैं। जन्म पर जीवन प्रत्याशा की सार्थकता में सुधार हुआ है। संचारित रोगों जैसे - हैजा, चेचक, प्लेग, आदि रोगों के सह अनुवर्ती नियंत्रण एवं इनके सम्पूण सुधार और मलेरिया प्रकोप पर नियंत्रण, सफाई सुविधाओं, स्वच्छ पीने के पानी की उपलब्धता से मृत्युदर निश्चित रूप से कम हुई है[10] ।

स्वास्थ्य सुविधाओं के विकास में अत्यधिक तीव्रता स्वतन्त्रता के पश्चात् प्रजातांत्रिक व्यवस्था में तब आयी जब उत्पादक उद्देश्य के लिए सार्वजनिक स्वास्थ्य की आवश्यकता महसूस की गई। यमुनापार क्षेत्र में भी स्वास्थ्य एवं मेडिकल की सेवाओं में तीव्र विकास एवं विस्तार पंचवर्षीय योजनाओं के दौरान हुआ। इन योजनाओं के तहत अध्ययन क्षेत्र में कई अस्पतालों, चिकित्सालयों एवं औषधालयों की स्थापना क्षेत्र के विविध भागों में हुई।
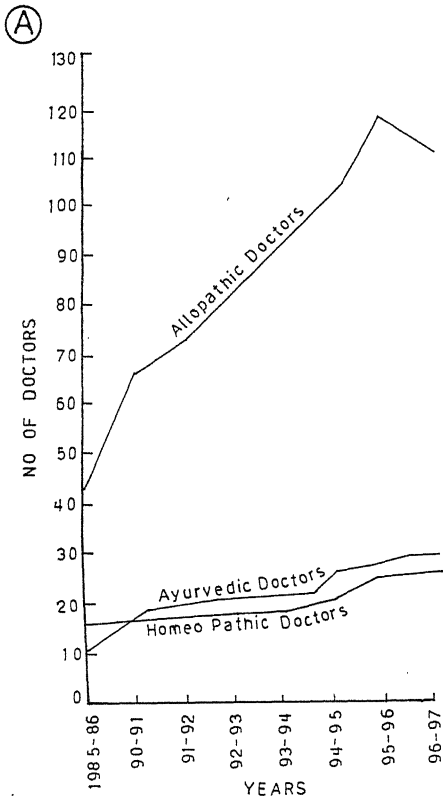
TRANS-YAMUNA REGION OF ALLAHABAD DISTRICT
A
NUMBER OF DOCTORS
NO OF DOCTORS
Allopathic Doctors
Ayurvedic Doctors
Homeo Pathic Doctors
YEARS
NUMBER OF BEDS IN ALLOPATHIC AND AYURVEDIC HOSPITALS
BEDS IN AYURVEDIC AND ALLOPATHIC HOSPITALS
Allopathic
Ayurvedic
YEARS
B
NUMBER OF DISPENSARIES
NO OF DISPENSARIES
Ayurvedic Dis.
Allopathic Dis.
Homeo Pathic Dis.
YEARS
NO. OF PRIMARY HEALTH CENTRES
NO. OF PRIMARY HEALTH CENTRES
Primary Health Centres
YEARS
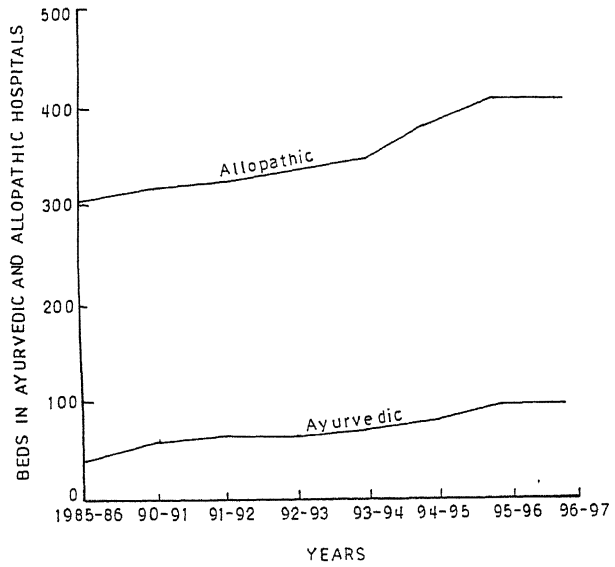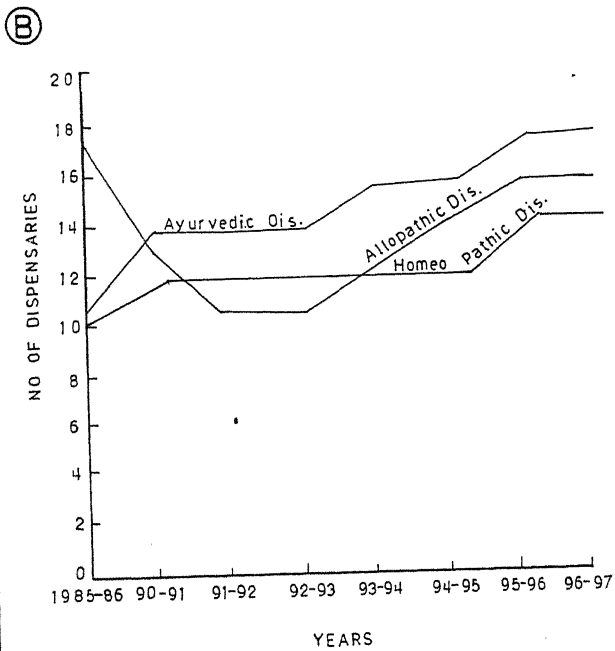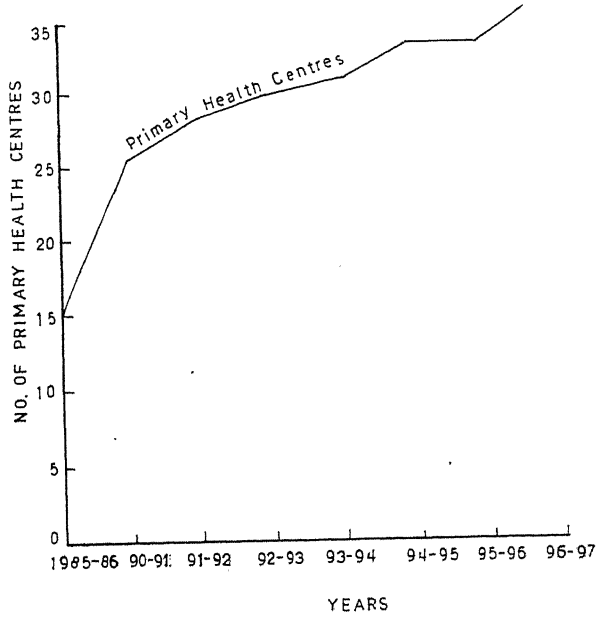
Fig.6.7

TABLE NO 6.10

Kcal Requirment for Children and Adults

SL No	Age in Years	Approximate K cal/Day
1.	1-3	1000
2.	4-6	1300
3.	7-9	1600
4.	10-12	2000
5.	13-15	2400
6.	16-19	2800
7.	For Average Adult Male	2600
8.	For Average Adult Female	2100
9.	Preginent Women	2600
10.	Manual Worker	4000
11.	Nursing Mother	3000

Source – Hand Book of Preventive Social Medicine

पथ्य और पोषण :-

मनव पोषण का विज्ञान स्वास्थ्य एवं बीमारियों के लिए भोजन-सम्बन्धों से निर्धारित होता है। इसका उद्देश्य समुदायों के सभी समूहों के स्वास्थ्य स्तर को धनात्मक रखने, सन्तुलित रखने के लिए पर्याप्त मात्रा में आवश्यक विविध पोषाहारों का प्रावधान करना है। अच्छे पोषाहार में सभी एवं सन्तुलित पोषक तत्व विशेष तौर से प्रोटीन, विटामिन और लौह तत्व पाए जाते हैं। कुपोषण की विशेष तौर से प्रचलित समस्या विश्व के अनके भागों में विविध प्रकार से पोषण विज्ञान को एक बड़ा संवेग प्रदान करती है[11]।

भारत में विभिन्न आयु समूह के लोगों के लिए आवश्यक कैलोरी उर्जा की मात्रा को तालिका संख्या 6.10 में दर्शाया गया है। इन कैलोरी मूल्यों की आवश्यकता विभिन्न आयु समूह के लोगों को उनके प्रतिदिन के कार्य निपटाने एवं सामान्य स्वास्थ्य को बरकरार रखने के लिए होती है ताकि उनमें बीमारियों से लड़ने के लिए वांछित प्रतिरोधक शक्ति का विकास होता रहे। सारणी में दर्शित कैलोरी उर्जा की पूर्ति के लिए लोगों को उम्र और कार्यानुसार विशेष तौर से प्रोटीन और विटामिन आदि सभी पोषक तत्वों से युक्त सन्तुलित पथ्य लेना चाहिए। एक सन्तुलित पथ्य में आवश्यक विटामिन और लौह तत्वों के साथ-साथ 50-60 प्रतिशत कार्बोहाइड्रेट, 30-35 प्रतिशत वसा, 10-15 प्रतिशत प्रोटीन होनी चाहिए। तथापि भारत में पोषाहार सुझाव समिति ने एक कार्यशील प्रौढ़ के लिए सन्तुलित पथ्य और वांछित कैलोरी के लिए खाद्य वस्तुओं की एक

विशिष्ट मात्रा का संयोजन निश्चित किया है जो तालिका 6.11 में दिखाया गया है।

भारत में निर्धारित पथ्य से तुलना करने पर अध्ययन क्षेत्र का सामान्य पथ्य काफी निम्न स्तर का है। फिर भी कस्बाई और उच्च वर्ग परिवारों की स्थिति थोड़ी ठीक है जबकि क्षेत्रीय ग्रामीण गरीब की स्थिति अत्यन्त बदतर है तथा महिला पथ्य स्तर भी निम्न कोटि का है। तालिका 6.11 के अनुसार अध्ययन क्षेत्र के लोगों द्वारा विभिन्न आइटमों का उपयोग मान्यताप्राप्त मानकों से नीचे है। इससे अध्ययन क्षेत्र में कुपोषण, अल्पपोषण, संचारित एवं विषाणुयुक्त बीमारियों की दशाएं पैदा होती हैं। साथ ही प्राकृतिक जलवायुविक घटनाएं जैसे- बाढ़, सूखा आदि से भी स्वास्थ्यकर वातावरण अत्यन्त खराब हो जाता है।

प्रमुख बीमारियां :-

अस्वच्छ, असन्तुलित और निम्न कैलोरिक पथ्य लेने के कारण अध्ययन क्षेत्रीय लोगों का सामान्य स्वास्थ्य एक प्रमाणीकृत मानक से मेल नहीं खाता है। क्षेत्र की ज्यादातर बीमारियां जिनसे प्रतिवर्ष लोग बीमार पड़ते हैं, वास्तव में वे कुपोषण की बीमारियां हैं। अध्ययन क्षेत्र की प्रमुख बीमारियां - मलेरिया, टाइफाइड, हैजा, डायरिया, इन्फ्लुएन्जा, रक्ताल्पता, स्थानीय घेघा, खसरा, बेरी-बेरी, मोतियाबिन्द, शर्दी जुकाम, फ्लू और पेट की बीमारियां आदि हैं। अतः सरकारी संस्थानों और विभागों द्वारा विशेष तौर से स्वतन्त्रता के पश्चात् इन बीमारियों को नियंत्रित करने के लिए एवं सामान्य स्वास्थ्य में सुधार लाने के लिए स्वास्थ्य संस्थानों की वृद्धि एवं विस्तार के सम्पूर्ण प्रयास किए जा रहे हैं। इस क्षेत्र की स्वास्थ्य सुविधाओं पर एक दृश्यावलोकन से यह स्पष्ट होता है कि ये सुविधाएं क्षेत्र में कम हैं।
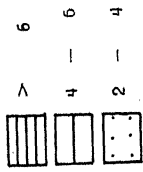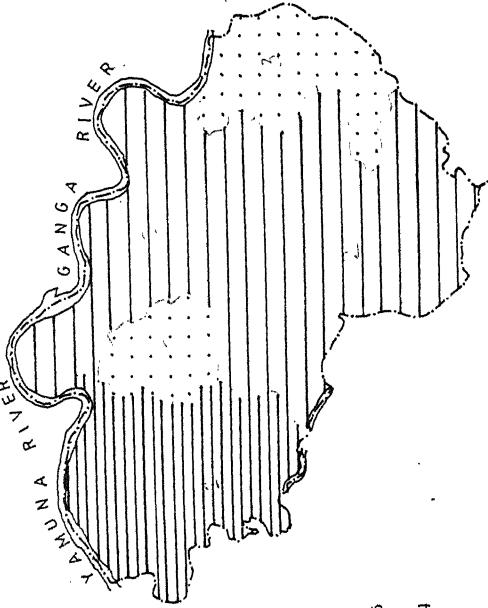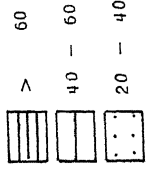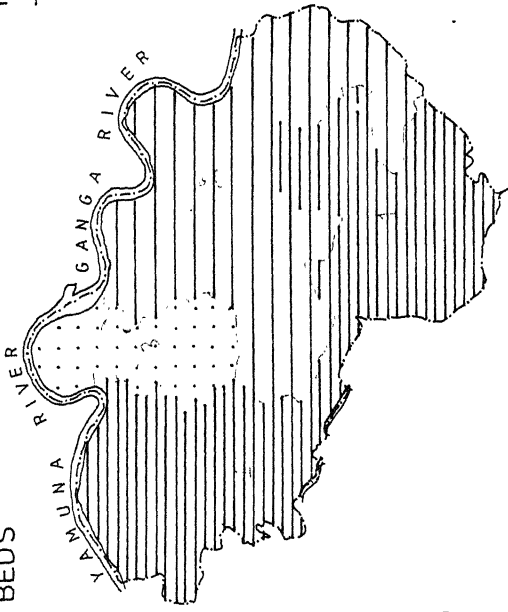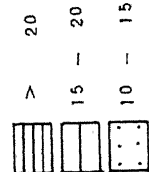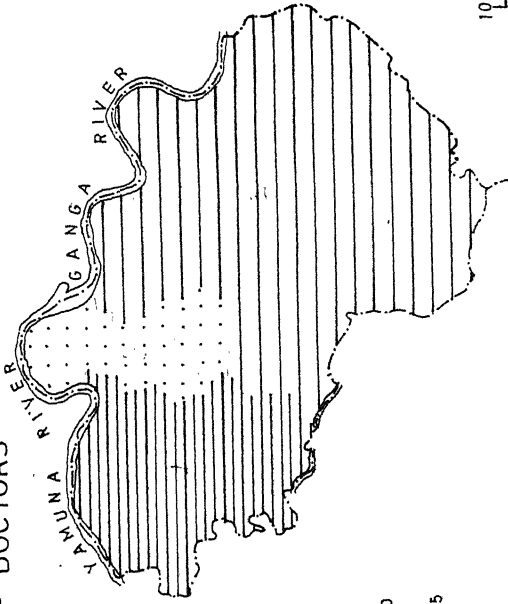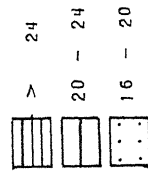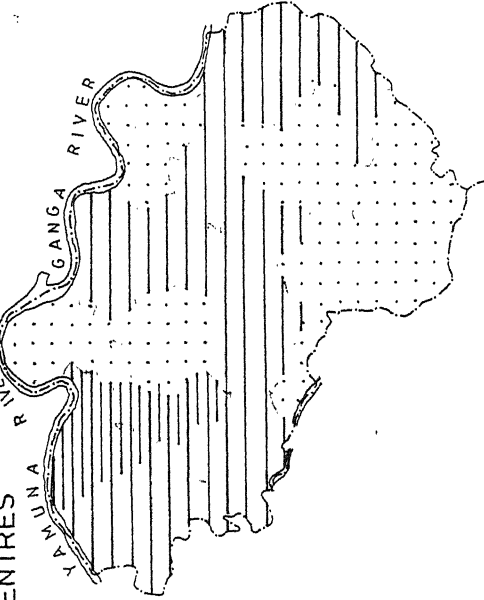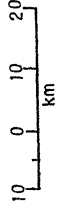
Table-No-6.11

Diet And Nutrition (Gram/Day/Head)

Food Item	Recommended Balanced in India	Mixed Diet Grams	Vegete Rain Diet ,Grams	General Diet Grams	Urvan Grams	Rural Grams	Upper Grams	Lower Grams	Male Grams	Female Grams
1.	Coreals (Atta,Rice)	400	400	440	300	550	300	650	440	395
2.	Pulses	85	113	40	60	25	60	20	40	30
3.	Oil And Ghee	56	56	20	65	30	30	10	22	22
4.	Milks Ites Products	284 ml	284 ml	60 ml	50 ml	100 ml	100 ml	50 ml	60 ml	60 ml
5.	Vegatable Leafy	113	113	40	125	10	150	05	40	15
6.	Non Leafy	85	85	40	75	-	75	-	20	15
7.	Root vegetable	85	85	85	75	150	75	250	50	50
8.	Fruits	56	56	15	50	-	40	-	15	05
9.	Sugar	56	56	50	50	20	50	10	50	40
10.	Fish Meatoreggs(on Alternate Days)	85	-	85	50	-	50	-	-	-
11.	Ground Nuts	-	28	-	-	-	-	-	-	-

Source:- Hand Book of Preventive and Social Medicine

स्वास्थ्य सुविधाओं की वृद्धि :-

अध्ययन क्षेत्र में स्वास्थ्य एवं चिकित्सा सुविधाओं की संख्या प्रतिवर्ष बढ़ी है। अनेक प्रकार के चिकित्सालयों, डाक्टरों की संख्या और मरीज शय्या संख्या 1985 से 1997 तक तालिका संख्या 6.12 और मानचित्र संख्या 6.7 ए बी में दर्शित हैं। एलोपैथिक चिकित्सालयों, डाक्टरों और मरीज शय्या की कालिक वृद्धि आयुर्वेदिक और होमियोपैथिक की तुलना में अत्यधिक हुई है। इन चिकित्सालयों, डाक्टरों एवं शय्या में वृद्धि सरकार द्वारा समय समय पर अनेक स्वास्थ्य विकास कार्यकमों के लागू करने से सम्भव हुई है। केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मन्त्रालय ने राष्टीय लोगों के स्वस्थ्य एवं प्रसन्नतापूर्वक जीवन यापन के लिए बहुत बड़ी भूमिका अदा की है। मन्त्रालय, राष्टीय महत्व के स्वास्थ्य कार्यकमों जैसे- परिवार कल्याण, प्राथमिक स्वास्थ्य उपचार सेवाएं, विषाणु एवं जीवाणु संचारित बीमारियों से बचाव एवं नियंत्रण आदि कार्यकमों

TRANS-YAMUNA REGION OF ALLAHABAD DISTRICT
DISTRIBUTION OF HEALTH FACILITIES
N
YAMUNA RIVER
GANGA RIVER
Chaka
Jasra
Bara
Karchhana
Kaundhiara
Shankargarh
Uruva
Meja
Manda
Koraun
CMMUNITY HEALTH CENTRES
PRIMARY HEALTH CENTRES
ADDITIONAL PRIMARY HEALTH CENTRES
M.C.W.C. OR MIDWIFE CENTRES
FAMILY PLANNIG CENTRES
10
0
10
km
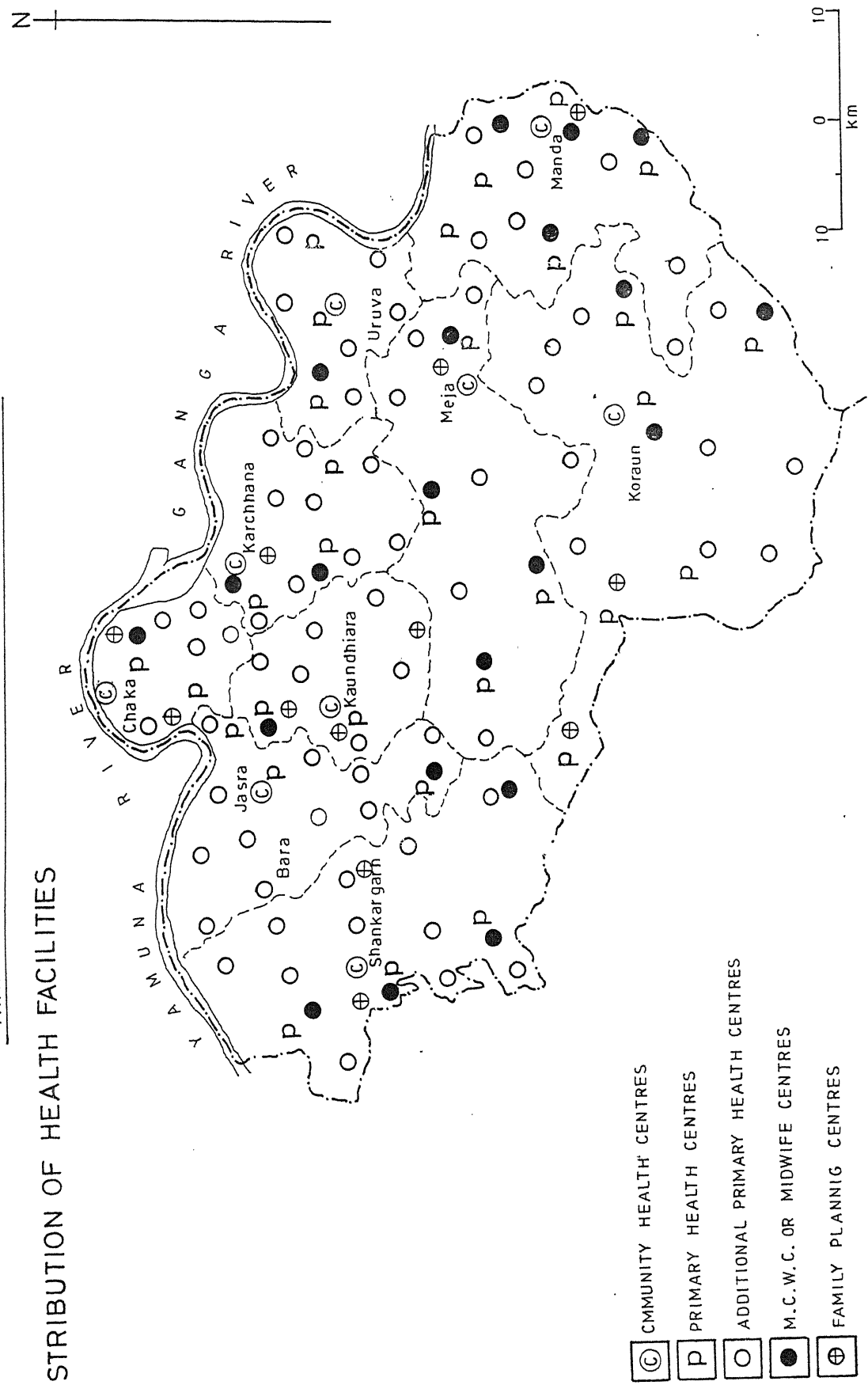
Fig.6.9

को लागू करने के लिए जिम्मेदार होता है[12] । इन सुविधाओं की संख्या बढ़ती हुई जनसंख्या के दबाव निम्न कैलोरी प्राप्ति, खराब सफाई एवं अस्वास्थ्यकर जलवायु के कारण आवश्यकता एवं मांग से काफी कम है। अतः इन आवश्यकताओं की प्राप्ति के लिए स्वास्थ्य एवं चिकित्सा के विकास की प्रक्रिया का विस्तार काफी तीव्र गति से होना चाहिए। अतएव ग्रामीण क्षेत्रों में आयुर्वेदिक एवं होमियोपैथिक दवाइयों जैसी स्वास्थ्य सुविधाओं के निम्न बजट के प्रावधान को बढ़ाना चाहिए ताकि वह लोगों के स्वास्थ्य सुधार में अत्यन्त प्रभावकारी हो।

Table:No-6.12

Temporal Variation of Health Facilities in Trans-Yamuna Region of Allahabad District-1985 To 1997

		Allopathic				Ayurvedic			Homeopathic		
Sl. No	Years	Dispensaries	P.H. c.s	Beds	Doctors	Dispensaries	Beds	Doctors	Dispensaries	Beds	Doctors
1.	1985-86	17	15	304	42	11	40	10	10	-	12
2.	1990-91	13	24	316	65	14	63	15	12	-	12
3.	1991-92	10	28	331	72	14	63	13	12	-	12
4.	1992-93	10	29	356	83	14	64	14	11	-	12
5.	1993-94	13	29	372	96	15	70	17	12	-	11
6.	1994-95	14	31	393	105	15	70	17	12	-	12
7.	1995-96	15	31	415	125	17	76	19	14	-	15
8.	1996-97	15	35	420	120	17	76	19	14	-	15

Source: The District Statistical Bulletion- Allahabad. State Planning Institute- U.P- 1986, 1990, 91, 92, 93, 94, 95, 96, And District C.M.O Office Allahabad.U.P

स्वास्थ्य सुविधाओं का प्रकार और वितरण :-

अध्ययन क्षेत्र में पांच प्रकार की स्वास्थ्य एवं चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध हैं - ये हैं - 1. उप स्वास्थ्य केन्द्र अथवा मिड वाइफ केन्द्र, 2. परिवार एवं मातृ शिशु कल्याण केन्द्र 3. अतिरिक्त प्राथमिक उपकेन्द्र 4. प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र तथा 5. सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र आदि। इन सुविधाओं की संख्या और वितरण मानचित्र संख्या 6.8, 6.9 तथा सारणी संख्या 6.13, 14, 15 में दर्शायी गई है।

औषधालयों, शय्याओं तथा डाक्टरों की संख्याओं का सामान्य स्थानिक प्रतिरूप (तालिका संख्या 6.13 और मानचित्र संख्या 6.8) यह प्रदर्शित करता है कि 9 औषधालयों के साथ जसरा ब्लाक सर्वोच्च स्थान पर है जबकि शंकरगढ़ (7) चाका (6), करछना (6) मेजा (5)आदि हैं एवं निम्नतम स्थान पर 2 औषधालय वाला कौंधियारा ब्लाक है। शय्या की संख्या की दृष्टि से जसरा ब्ला (77)उच्चतम स्थान पर है तथा इसी कम में शंकरगढ़ (75), कोरांव (67), माण्डा (59), उरूवा (57) आदि हैं और 23 शय्याओं के साथ कौंधियारा ब्लाक निम्नतम स्थान पर है। डाक्टरों की संख्या की दृष्टि से भी जसरा (24)कोरांव (19) करछना (18)आदि ब्लाक हैं। कौंधियारा ब्लाक में मात्र 11 डाक्टर हैं जो क्षेत्र की निम्नतम स्थिति है।

1. उप स्वास्थ्य केन्द्र :-

उप स्वास्थ्य केन्द्रों की दृष्टि से जसरा (23)ब्लाक उच्च स्थान पर है तथा इसी कम में शंकरगढ़, मेजा, माण्डा प्रत्येक में 21 केन्द्र, चाका (20) करछना (19)आदि ब्लाक हैं जबकि 16 उप केन्द्रों के साथ उरूवा ब्लाक निम्नतम स्थान पर है। (तालिका 6.14 एवं मानचित्र 6.9) प्रशिक्षित जन्म सहायकों के लिए राष्टीय मानक प्रत्येक गांव में एक रखने का है जबकि अध्ययन क्षेत्र में प्रति 1000 जनसंख्या पर एक स्वास्थ्य गाइड है। अध्ययन क्षेत्र में कुल 185 उप केन्द्र हैं। फिर भी कुछ क्षेत्र एवं गांव उप केन्द्रों से वंचित हैं जिनमें इनकी आवश्यकता है।

TRANS YAMUNA REGION OF ALLAHABAD DISTRICT
LOCATION OF PROPOSED HEALTH FACILITIES
IN PROBLEM AREAS
N
YAMUNA RIVER
GANGA RIVER
Chaka
Jasra
Bara
Shankargarh
Kaundhiara
Karchhana
Uruwa
Meja
Manda
Koraun
C
COMMUNITY HEALTH CENTRES
PRIMARY HEALTH CENTRES
ADDITIONAL PRIMARY HEALTH CENTRES
M. C. W. C. CENTRES AND FAMILY PLANNING CENTRES
HOMEOPATIC MEDICAL CENTRES
10 0 10
km
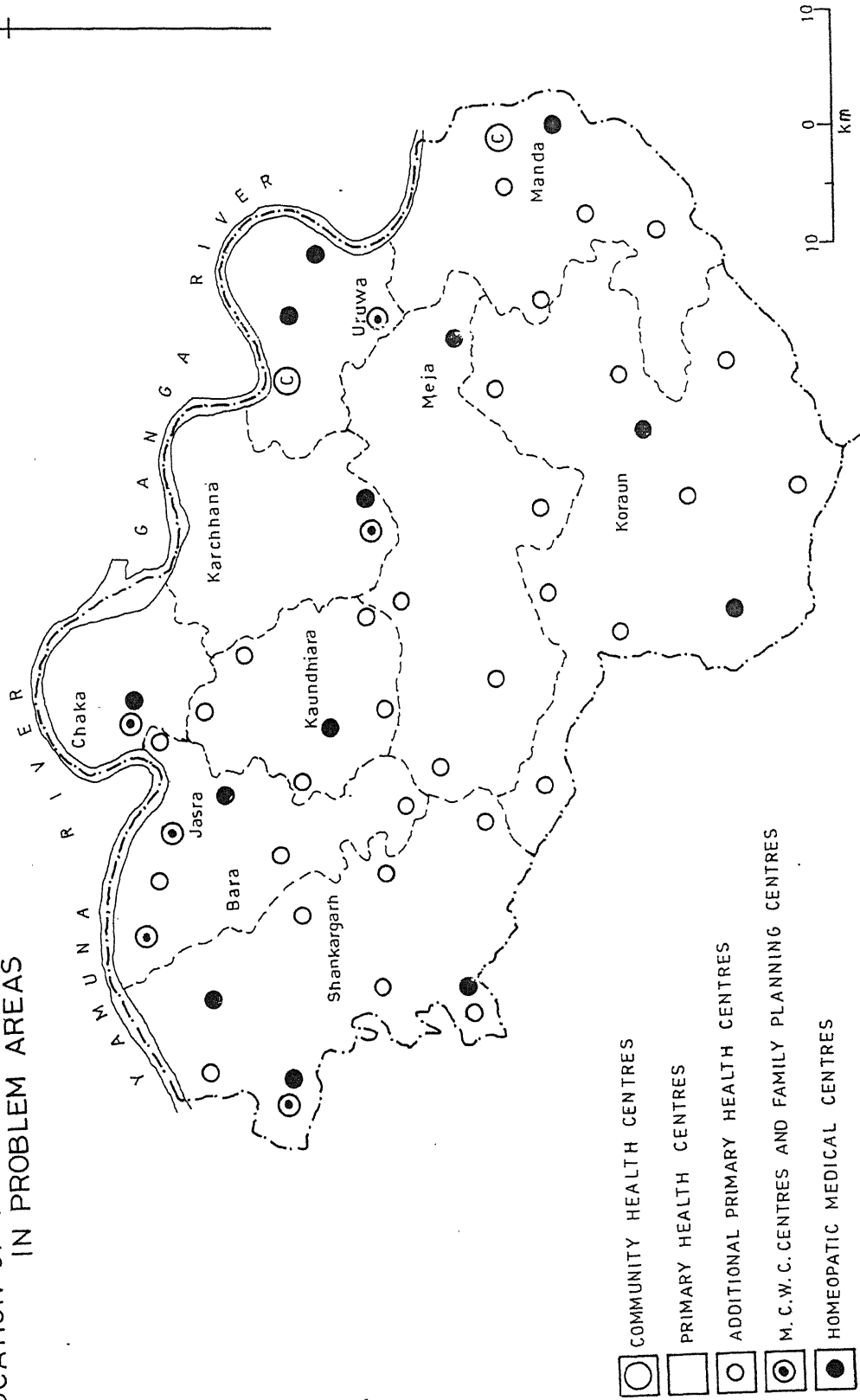
Fig.6.10

2. प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र :-

ग्रामीण जनसंख्या को एक मानक स्वास्थ्य एवं पर्याप्त चिकित्सा सुविधाएं प्रदान करने के लिए सरकार ने प्रत्येक ब्लाक में प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र स्थापित किए हैं। इस प्रकार अध्ययन क्षेत्र में कुल 35 प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र हैं। प्रत्येक प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र के अन्तर्गत एलोपैथिक दवाखाना, मातृत्व एवं शिशु कल्याण केन्द्र, 3 से 5 उप मातृत्व एवं शिशु कल्याण केन्द्र एवं 5 परिवार कल्याण उप केन्द्र होते हैं।

Table.No-6.13
Block Wise Total Number of Dispensaries, Beds, And Doctors in Trans-Yamuna Rigion of Allahabad District-1996-97

SL.No	Blocks	Total No of Dispensaries	Total No of Beds	Total No of Doctors
1.	Jasara	9	77	24
2.	Shankargarh	7	75	21
3.	Chaka	6	27	14
4.	Karchhana	6	52	18
5.	Koundhiara	2	23	11
6.	Uruva	4	57	16
7.	Meja	5	59	16
8.	Monda	3	59	15
9.	Koroan	4	67	19
	Total in Study Area	46	496	154

Sourse:- The District Statistical Bulletion- Allahabad State Planning Institute U.P 1996-97- And District- C.M.O Office Allahabad

इस सबका प्रमुख एक चिकित्साधिकारी होता है जिसकी सम्पूर्ण जिम्मेदारी - महामारी, बाढ़, सूखा, स्वास्थ्य शिक्षा, पर्यावरणीय प्रकोप, प्रदूषण, सफाई इत्यादि की होती है। यह सफाई निरीक्षक, स्वास्थ्य सहायक, चेचक निर्देशक टीका निरीक्षक इत्यादि से सहायता लेता है जबकि मुख्य चिकित्साधिकारी द्वारा केन्द्र से सम्बन्धित अन्य चिकित्साधिकारियों से अपनी देख रेख में परिवार कल्याण, मातृत्व एवं शिशु कल्याण, परिवार नियोजन इत्यादि कार्य कराए जाते हैं ताकि क्षेत्रीय लोगों के स्वास्थ्य की देख भाल सुचारु रूप से होती रहे।

अध्ययन क्षेत में कुल 35 प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र हैं। क्षेत्र के सभी ब्लाकों में प्राथमिक और सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र हैं साथ ही सभी ब्लाकों में लगभग दो नवीन प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र भी स्थापित किए जा चुके हैं।

फोटो प्लेट न0 25- सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र, तरांव, कोरांव, इलाहाबाद

(तालिका 6.14 और मानचित्र 6.9) प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र संख्या की दृष्टि से जसरा (7) ब्लाक प्रथम स्थान पर है। इसके बाद शंकरगढ़ (05)माण्डा (05) द्वितीय स्थान पर हैं। केवल दो केन्द्रों के साथ कौंधियारा ब्लाक निम्न स्थान पर है। 30000 की जनसंख्या पर एक प्राथमिक केन्द्र सरकारी मानक के हिसाब से होना चाहिए। अतः क्षेत्र में कम से कम 3-4 स्वास्थ्य केन्द्र अध्ययन क्षेत्र में और खोले जाने चाहिए।

3. अतिरिक्त प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र :-

अध्ययन क्षेत्र में कुल 185 अतिरिक्त प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र हैं जो क्षेत्र में समान रूप से वितरित हैं (तालिका 6.16 और मानचित्र 6.9) क्षेत्र के सभी ब्लाकों में अतिरिक्त प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र हैं। इन उप प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों का राष्ट्रीय मानक 5000 की जनसंख्या पर एक है। तालिका संख्या 6.17 में राष्ट्रीय मानकों का एक कम दिखाया गया है। इस के अनुसार अध्ययन क्षेत्र में कुल 15 स्वास्थ्य केन्द्रों की आवश्यकता है।

4. सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र :-

अध्ययन क्षेत्र में कुल 9 सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र हैं (फोटो प्लेट न0 25) अतः हर ब्लाक में कम से कम एक स्वास्थ्य केन्द्र है। उरूवा ब्लाक को छोड़कर सभी ब्लाक मुख्यालयों पर ही सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र हैं, जबकि उरूवा के रामनगर में सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र है। इन केन्द्रों में अन्य स्वास्थ्य केन्द्रों की तुलना में बड़ी संख्या एवं उच्च विविधता से युक्त स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध होती हैं। सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र की स्थापना का राष्ट्रीय मानक 1,20,000 जनसंख्या पर एक का है। अतः अध्ययन क्षेत्र में 2-3 सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र और खोले जाने की आवश्यकता है।

5. मातृत्व एवं शिशु कल्याण केन्द्र :-

इलाहाबाद जिले के इस अध्ययन क्षेत्र में कुल एम.सी.डब्ल्यू.सी. केन्दीय की संख्या 26 है जबकि उप केन्दों की संख्या 185 है। (सारणी 6.14 और मानचित्र संख्या 6.8 और 6.9) अध्ययन क्षेत्र की महिलाओं के स्वास्थ्य खराब होने का कारण - अल्प पोषक तत्व युक्त तथा अल्प कैलोरी युक्त भोजन, घर एवं बाहर के कार्यों का अत्यधिक भार, बच्चों के पालन पोषण की जिम्मेदारी, पारिवारिक तनाव आदि हैं। यह उपरोक्त परिस्थितियां ज्यादातर ग्रामीण क्षेत्रों एवं अल्प आय वाले परिवार की महिलाओं को होती है। महिलाओं के उत्तम स्वास्थ्य की आवश्यकता गर्भकाल एवं सन्तानोत्पत्ति के समय अत्यधिक होती है क्योंकि ग्रामीण क्षेत्रों में प्रशिक्षित नर्स एवं प्रसाविका

(दाई) उपलब्ध नहीं होती जिससे ज्यादातर प्रजनन कार्य अप्रशिक्षित लोगों द्वारा कराया जाता है जिसके कारण जच्चा एवं बच्चा दोनों की मृत्युदर क्षेत्र में अधिक होती है। अतः अध्ययन क्षेत्र की उपरोक्त कमी को दूर करने के लिए सरकार ने 1958-59 से आज तक अनेकों स्वास्थ्य कार्यक्रमों के तहत कई मातृत्व एवं शिशु कल्याण केन्द्र स्थापित किया है। 1980 तक इन केन्द्रों की कुल संख्या 80 थी जो आज बढ़कर 185 तक पहुंच चुकी है। क्षेत्र के इन स्वास्थ्य केन्द्रों पर तो परासिका और प्रशिक्षित नर्स की व्यवस्था भी है। अध्ययन क्षेत्र के इन सभी मातृत्व केन्द्रों का नियंत्रण एवं संचालन इलाहाबाद जिला हेडक्वार्टर पर स्थित स्वास्थ्य केन्द्र कार्यालय से होता है।

Table:No-6.14
Block –Wise Allopathic Health Facilaties in Trans-Yamuna Rigion of Allahabad District-1996-97

SL.No	Blocks	Dispensaries	P.H.Cs	M.C.W Center	M.C.W. Sub Center	Beds	Doctors
1.	Jasara	3	7	3	25	68	17
2.	Shankargarh	3	5	3	22	60	14
3.	Chaka	1	4	3	21	25	12
4.	Karchhana	2	3	3	21	25	12
5.	Koandhiara	1	2	2	19	19	9
6.	Uruva	1	3	3	16	56	14
7.	Meja	1	3	3	22	50	14
8.	Koroan	2	3	3	20	60	16
9.	Monda	1	5	3	22	56	14
	Study Area Total	15	35	26	185	-	120

Source:-The District Statiatical Bulletion-Allahabad 1996-97. And C.M.O office Allahabad. U.P.

परिवार नियोजन केन्द्र :-

पिछले कुछ दशकों के दौरान जनसंख्या विस्फोट हम सभी की गंभीर समस्या हो गई है जिसका कारण नियंत्रण की कमी रहा है। इस जनसंख्या वृद्धि से सभी विकास योजनाएं प्रभावित हो रही है। इसलिए पूरे अध्ययन क्षेत्र में इस जनसंख्या की अनियंत्रित वृद्धि को रोकने के लिए परिवार नियोजन कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इन परिवार नियोजन कार्यक्रमों को सभी ब्लाकों में स्थित प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों से सम्बद्ध करके चलाया जा रहा है।

Table:No-6.15

Block Wise Ayurvedic And Homeopathic Health Facilities in Trans-Yamuna Rigion of Allahabad District-1996-97

		Ayurvedic			Homeopathic		
No	Blocks	Dispensaries	Beds	Doctors	Dispensaries	Beds	Doctors
	Jasara	4	14	5	3	-	4
	Shankargharh	2	6	1	5	-	5
	Chaka	3	10	3	2	-	3
	Karchhana	3	24	4	2	-	2
	Koundhiara	1	5	1	-	-	-
	Uruva	-	-	-	1	-	1
	Meja	2	9	3	-	-	-
	Koroan	1	5	1	-	-	-
	Monda	1	3	1	-	-	-
	Study Area Total	17	76	19	13	-	15

Source:-The District Statistical Bulletion- Allahabad 1996-97 And C.M.O. office Allahabad U.P.

आयर्वेदिक एवं होमियोपैथिक स्वास्थ्य सुविधाएं :-

अध्ययन क्षेत्र में आयुर्वेदिक एवं होमियोपैथिक स्वास्थ्य सुविधाएं अल्प संख्या में उपलब्ध हैं। (तालिका 6.15 और मानचित्र 6.7 ए बी) यहां पर सरकारी आंकड़े के अनुसार 17 औषधालय 76 मरीज शय्या एवं 19 डाक्टर आयुर्वेदिक चिकित्सा में हे जबकि होमियोपैथिक चिकित्सा में 14 औषधालय, 15 डाक्टर तो हैं लेकिन एक भी मरीज शय्या की व्यवस्था नहीं है। सरकारी आंकड़े के अनुसार इन सुविधाओं का रिकार्ड है लेकिन वास्तव में इनकी संख्या नगण्य है जो वास्तविकता के विपरीत है। आयुर्वेदिक औषधालयों की संख्या की दृष्टि से जसरा (4) ब्लाक उच्चतम स्थान पर है जबकि चाका (3) करछना (3) द्वितीय स्थान पर एवं निम्नतम स्थान पर एक-एक औषधालयों के साथ माण्डा, कोरांव एवं कौधियारा ब्लाक हैं। मरीज शय्या में करछना (24) उच्चतम स्थान पर है जबकि जसरा (14) द्वितीय स्थान पर एवं कौंधियारा (5) कोरांव (5) आदि ब्लाक हैं एवं माण्डा (1) निम्नतम स्थान पर है। आयुर्वेदिक डाक्टरों की संख्या की दृष्टि से जसरा ब्लाक (5) सर्वोच्च स्थान पर है जबकि करछना (4) चाका-मेजा (3) द्वितीय एवं शंकरगढ़, कौधियारा, कोरांव प्रत्येक एक डाक्टर के साथ निम्नतम स्थान पर हैं। होमियोपैथिक चिकित्सालयों के सन्दर्भ में 5 औषघालयों के साथ शंकरगढ ब्लाक सर्वोच्च स्थान पर एवं जसरा (3) द्वितीय

स्थान पर है जबकि एक औषधालय के साथ उरूवा ब्लाक निम्न श्रेणी पर स्थित है। होमियोपैथी में मरीज शय्या की क्षेत्र में कोई व्यवस्था नहीं है जबकि 5 डाक्टरों के साथ शंकरगढ़ उच्च स्थान पर एवं एक डाक्टर के साथ उरूवा निम्न स्थान पर है। (तालिका 6.15) सम्पूर्ण क्षेत्रावलोकन से स्पष्ट है कि होमियोपैथी स्वास्थ्य सुविधाएं असमान रूप से फैली है क्योंकि ज्यादातर ब्लाकों में इसकी सुविधाएं बिल्कुल नहीं हैं। परिणामस्वरूप होमियोपैथिक स्वास्थ्य सुविधा जिसको लोग सस्ती होने के कारण वरीयता देते हैं वह उन्हें आसानी से नहीं मिलती है। अतः अध्ययन क्षेत्र में अनेकों होमियोपैथिक औषधालय खोले जाने की आवश्यकता है।

Table:No-6.16

Health Center in Trans –Yamuna Region of Allahabad District-1996-97

Sl.No	Blocks	Cummunity Health Centres	Primary Health Centres	Female Hospitals	New Primary Health Centres	Additional Primary Health Centres
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)
-	-	-	-	-	-	-
1.	Karchhana	Karchhana	Karchhana	Baroav, Karchhana	Baroav Birpur	Karchhana, Bardaha. Sonai, Rokari, Baroav, Bharckhara, Dharvara, Birpur, Chaldoly, Devarikala, Khai, Palasa, Basahi, Ghoradeeh, Jagdishpur, Deeha, Bandi, Mugari, Rampur, Kareha, Ghatava,
2.	Chaka	Chaka	Chaka	-	Bagbana	Chaka, Dabhavan, Madoaka, Chackgareebdas,Imilia,Basvara,Bagbana,Danupur,Ubhari, Hathigan, Valapur, Chakbabura, Mahuari, Masika, Lavaien, Neebi, Sarangapur, Purva, Khasan,
3.	Kondhiara	Kondhiara	Kondhiara	Karma	Karma	Kondhiara, Amba, Devra, Poari, Pipraha, Khiri, Nirodha, Belsara,Baribajahia,Bargohana ,Khurd, Karma, Noagava, Akora, Nachana, Piri, Kukuri, Chakdhan, Mahishyamdhas, Mavaeya.
4.	Jasara	Jasara	Jasara	Jaribajar	Jaribajar, Bara, Devra,	Jasara, Iradatganj, Ghoorpur, Bhita,Birval,Sedhvar,Chillagoavhani,Godia,Manipur,Belamun

					Ghoorpur	di, Kanti, Jari(1), Jari(II), Khunjhi, Lotar, Chandi, Kuri, Rera,Pandar,Pachkhara,Tatarganj, Bara(1), Bara(II), Chamu, Parvejabad
5.	Shankargarh	Shankargarh	Shankargarh	Shankargarh	Bhatpurra (Lalapur), Naribari	Shankargarh, Amgodar, Navarihauparhar,Bhadivara,Jorvat,Kalyanpur,Bhagdeva,Joohi,Patelnagar,Ausa,Naribari,Sarbvansahani,Devara,Jamkhori,Bharatnager,Lohgara,Sunderpur,Dhara, Baghala,Pandua,Imiliyatatarhar,Basahara-uparhar,
6.	Meja	Meja	Meja	-	Laltara,Itavakala,Kohdarghat,	Meja(I),Meja(II),Bhatoti,Looter,Jankiganj,Lotadh,Nevariha,Gunai,Kurkakala,Kohdarghat,Sahpur, Hargarh, Bhaiya,Pathara, Suhas, Dehran, sujani, Sinadhikala, Vaelpatti, Piproan, Sirhar, Khuta,
7.	Monda	Monda	Monda	Bharatganj	Mahevakala,Karevar,Dohatha	,Raipura,Paranipur,Jera,Auta, Munai,Shivpura,Imiliyakala,
8.	Uruva	Ramnagar.	Ramnagar	Sirsa	Sirsa,Shukulpur,Chilbila	Ramnager,Misharpur,Pakari,Huhriya, Shukulpur Uruva, Sirasa, Bedouli, Kodholi, Bisorakala,
9.	Koroan	Koraon	Koroan	Koroan	Barokhar, Ramgarhdaiya,Khiri, Leriari,	Ramgarh,Ayodhya,Siki,Orthartal,Devghat,Bhoahasi,Pawari, Leriari,khiri,Barocha,Pasana, Chandi,Taigakala,Gadha, Khajuri,Saji,Baranpur,Rampurkala,Murlipur,

स्वास्थ्य सुविधाओं की प्रमुख समस्याएं :-

इस अध्ययन क्षेत्र में स्वास्थ्य एवं चिकित्सा सुविधाओं का इतना बड़ा जाल होने के बावजूद यह क्षेत्र कुछ स्वास्थ्य एवं चिकित्सा समस्याओं से घिरा है में समस्याएं निम्नवत् देखी जा सकती हैं -

1. स्वास्थ्य सुविधाओं में अवस्थितिक अन्तराल।
2. चिकित्सा एवं औषधालय जैसी स्थापित सुविधाओं की संरचना और कियात्मकता का खराब दशा में होना।
3. डाक्टर नर्स एवं प्रसाविकाओं की अपर्याप्तता।
4. आपरेशन कक्ष, पैथालाजिकल टेस्ट, एक्स-रे एवं पर्याप्त नर्सिंग सुविधाओं की कमी।

5. बराबर सफाई और स्वास्थ्यकर सुविधाओं की कमी।
6. आधारभूत सुविधाएं जैसे- भवन, पार्ड्स, शय्या, उर्जा आपूर्ति, पानी आपूर्ति, आपरेटर्स इत्यादि की कमी।
7. आवश्यक दवाओं और ड्रग्स की बराबर अनुपलब्धता एवं अपर्याप्तता।
8. एम.सी.डबलू.सी. और परिवार नियोजन सुविधाओं की कमी।
9. हैजा, सर्पदंश, जलने, दुर्घटना, बच्चा जनन आदि आकस्मिक केशों के लिए व्यवस्था / प्रावधान का न होना।
10. विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों के पथ्यों में बराबर पोषक तत्वों की कमी।
11. जिले के अन्य अस्पतालों में स्थानान्तरण के लिए एम्बूलेन्सों की कमी।
12. ज्यादातर चिकित्सालयों एवं औषधालयों में मेडिकल स्टाफ द्वारा ध्यानपूर्वक लगाव एवं सहानुभूति, कर्तब्यपरायणता की कमी।
13. उच्चाधिकारियों द्वारा निर्देशक, प्रबन्धन एवं नियंत्रण में कमी।
14. ग्रामीण क्षेत्रों एवं मलिन बस्तियों में रहने वाले ज्यादातर गरीब एवं दबे कुचले लोगों के लिए चैरिटेबुल चिकित्सा सुविधाओं की कमी।

Table:No-6.17 (A)

Central Norms of Health Facilities

SL.No	Functionary Sarvice Center	Norms
1.	Trained Birth Attendent(Dai)	One,Per Village
2.	Village Health Guide	One,Per 1000 Population
3.	Sub Center	One,Per 5000 Population
4.	Primary Health Center	One, per 30000 Population
5.	Community Center	One,Per 1,20,000 Population
6.	The Hospital Bed	Population Ratio=0.74 Per 1000 Population

(B)

Proposed Location for Various Health Facilities in Trans-Yamuna Region of Allahabad district.

SL.No	Health Facilities	Proposed Centres (Number in Br)
1.	Sub centres Or Midwife centres	Meja(9),Monda(8),Uruva(6),Koroan(10),Karchhana(6), Chaka(4),Koundhiara(5),Jasara(9), Shankargarh(11),
2.	Addititional Primary Health Centres	Meja(4),Monda(6),Jasara(5),Shankargarh(7),Koundhiara(5),Koroan(9),Uruva(3),Karchhana(4),Chaka(3),
3.	Primary Health centres	Uruva,Khiri,Chilbila,Manpur,Jari,
4.	Community Health Centres	Bharatganj,Sirsa,
5.	M.C.W.C And Family Planning Centres	Manpur,Chillagoahani,Pandua,Pratappur,Sarangapur,Baroan,Uruva,Mahuli,Saji,Rampurkalan,Dohatha,
6.	Homeopathic Medical Centres	Sarangapur,Shukulpur,Meja,Monda,Ramnagar,Koaroan, Jasara,Devera,Baroan,Pandua,Lalapur,Barokhar,Koandhiara,

स्वास्थ्य सुविधाओं के लिए स्थानिक नियोजन :-

अध्ययन की स्वास्थ्य सुविधाओं के लिए स्थानिक नियोजन का प्रस्ताव इन उपरोक्त समस्याओं को ध्यान में रखकर और समस्याग्रस्त क्षेत्रों की पहचान करके किया गया है। क्षेत्र के विभिन्न भागों में यह नियोजन मुख्य छः प्रकार की स्वास्थ्य सुविधाओं के प्रस्तावित अवस्थिति के अनुसार किया गया है। 'मानचित्र 6.10' अतः स्वास्थ्य सुविधाओं के प्रस्तावित स्थिति के स्थानिक नियोजन को एक ठोस आकार देने के लिए सन्दर्भित एवं प्रभावकारी सुझाव दिए गए हैं। इन प्रस्तावित सुविधाओं को मानचित्र 6.10 में दर्शाया गया है तथा उन केन्द्रों के नामों का विवरण तालिका 6.17 में दिया गया है। स्वास्थ्य के राष्टीय मानकों और वांछित समस्यात्मक क्षेत्रों की समस्याओं को ध्यान में रखकर ही प्रस्तावित स्वास्थ्य सुविधाओं की अवस्थिति के लिए केन्द्रों की संस्तुति की गई है। अतः अध्ययन क्षेत्र में स्थानिक नियोजन को एक ठोस आधार देने और स्वास्थ्य समस्याओं को कम करने के लिए कुछ महत्वपूर्ण तथा प्रभावकारी सुझाव नीचे दिए जा रहे हैं-

1. स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी वाले क्षेत्रों की पूर्ति के लिए तालिका संख्या 6.17 एवं मानचित्र संख्या 6.10 में दिखाए गए संस्तुत सीासनों पर अनेक प्रकार एवं स्तरों के नए स्वास्थ्य एवं चिकित्सा केन्द्रों को स्थापित किया जाना चाहिए।
2. स्थापित अस्पताओं एवं औषधालयों से प्रदत्त सुविधाओं की खराब दशाओं का सुधार सम्बन्धित विभाग एवं सरकारी मंत्रालय को यथा सम्भव शीघ्रातिशीघ्र दूर करना चाहिए।
3. मरीजों की बराबर देखभाल के लिए प्रत्येक केन्द्र पर उचित संख्या में डाक्टर, नर्स और प्रसाविकाओं की व्यवस्था होनी चाहिए।
4. समस्यात्मक क्षेत्रों में नए आपरेशन कक्षों, पैथलाजी, प्रयोगशाला, एक्स-रे केन्द्र इत्यादि की व्यवस्था की जानी चाहिए।
5. विशेषकर ग्रामीण एवं मलिन बस्तियों में लोगों के स्वास्थ्य एवं अच्छे जीवन स्तर के लिए पर्याप्त सुविधाएं प्रदान की जानी चाहिए।
6. अनेक प्रकार की बीमारियों एवं स्वास्थ्य समस्याओं के लिए पर्याप्त आधारभूत सुविधाएं, वर्तमान में स्थापित एवं प्रस्तावित केन्द्रों में उपलब्ध कराई जानी चाहिए।
7. आवश्यक दवाइयों और ड्रग्स चिकित्सालयों एवं औषधालयों में प्रचुर मात्रा में रखी जानी चाहिए। साथ ही दवाओं की चोर बाजारी रोकी जानी चाहिए।
8. एम.सी.डबलू.सी. और परिवार नियोजन सुविधाएं ग्रामीण क्षेत्रों में प्रचुर मात्रा में प्रदान की जानी चाहिए जिससे वे वहां बहुत जरूरी आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकें।
9. आकस्मिक मरीजों को भर्ती करने की विशेषकर सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों में पर्याप्त एवं सुचारु व्यवस्था होनी चाहिए।

10. सम्बन्धित सरकार, संस्थाएं एवं विभागों को ग्रामीण क्षेत्रीय लोगों को उत्साहित करना चाहिए कि वे सन्तुलित एवं पौष्टिक आहार लें तथा साथ ही उनको यह भी सुझाव दें कि वे अपनी निजी जरूरत की पौष्टिक खाद्य वस्तुएं स्वयं उत्पादित करें।
11. गंभीर मरीजों की देखभाल के लिए अथवा उनको बड़े चिकित्सालयों में सीमान्तरण के लिए यातायात की पर्याप्त सुविधा होनी चाहिए।
12. चिकित्सा स्टाफ को कड़ाई पूर्वक चिकित्सा आचार संहिता का पालन करना चाहिए और बीमारों से सहानुभूति रखरनी चाहिए तथा उन्हें सम्बन्धित चिकित्सा कार्य में पर्याप्त प्रशिक्षित होना चाहिए।
13. लोगों को पर्याप्त सेवा देने के लिए उच्च अधिकारियों द्वारा समय-समय पर प्रभावी परीक्षणों, नियंत्रणें, पर्याप्त प्रबन्धन एवं निर्देशन देते रहना चाहिए। इसकी सुनिश्चितता सभी स्तरों पर होनी चाहिए।
14. समाज के ज्यादातर ग्रामीण और मलिन बस्ती क्षेत्रों में रहने वाले गरीब और निम्न वर्ग के लोग इन चिकित्सा सुविधाओं की उच्च कीमतों के कारण लाभ नहीं उठा पाते। अतः इस तरह के लोगों की सहायता के लिए स्वयंसेवी संस्थाएं एवं सरकार द्वारा निःशुल्क चिकित्सा केन्द्र खोले जाने चाहिए।

सारांश

ग्रामीण क्षेत्र अनेक प्रकार की शैक्षिक एवं स्वास्थ्य समस्याओं का सामना करते रहते हैं जिनका विवेचन पिछले पृष्ठों में किया जा चुका हैं वे अपने आप नियंत्रित नहीं होंगीं बल्कि उपर संस्तुत किये गये स्वास्थ्य सेवा विकास हेतु स्थानिक नियोजन के आधार पर सम्बन्धित सरकारी तन्त्र एवं विभागों द्वारा इस दिशा में आवश्यक कदम उठाये जाने चाहिए। स्थानिक योजना में इन विविध स्वास्थ्य एवं शैक्षिक समस्याओं का हल प्रस्तुत किया गया है और अनेकों प्रस्तावित सुविधाओं की बराबर अवस्थिति वांछित स्थानिक नियोजन में दी गई है। अगर इन योजनाओं और सुझावों का सही कियान्वयन किया जाए तो ग्रामीण क्षेत्रों की ज्यादातर शैक्षिक एवं स्वास्थ्य समस्याएं समाप्त हो जाएंगीं तथा ग्रामीण क्षेत्र की मानव संसाधन को आधिकाधिक उत्पादक बनाकर उनकी शक्ति एवं क्षमता का पूर्ण लाभ राष्टीय एवं क्षेत्रीय विकास में किया जा सकता है।

REFERENCES

1. Mishra, B.N. 1989 : Spatical Analysis of Socio-economic facilities for Integrated Rural Development in the Mountain: A study from Garhwal Himalaya, in 'Rural Development in India-Basic Issues & Dimensions, Mishra, B.N. (ed.) Sharada Pustak Bhawan, University Road, Allahabad P.169.
2. Approach Paper Fifth Plan (1974-79)
3. Sen, L.K. and others.
4. Ibid.
5. Majoomdar, R.C. and Others An Advanced History of India –Page.71.
6. Kalla,S.C.Terakota Feagars from Koshambi – Page.38.
7. Sir. W. Hanter, Report of Indian Education Commission of 1882. Page.73.
8. Joshi Smt. Ishabasanti (Ed.) Uttar Pradesh District Gazetteers, Allahabad – Page.164.
9. India, 1997. A Reference Annual (Ed.) Research and Reference Division, Ministry of Information and Broadcasting (Govt. of India) P.200.
10. Economic Survey of India, 1996-97. Ministry of Finance (Economic Division), Govt. of India – P.73.
11. V. Ratan, 1984 : Handbook of Preventive and Social Medicine, Jaypee Brothers, Medical Publishers, New Delhi, P.33.
12. India, 1997. A Reference Annual, Op. Cit. P.200.

13. Mishra, B.N. 1989 : Spatical Analysis of Socio-economic facilities for Integrated Rural Development in the Mountain: A study from Garhwal Himalaya, in 'Rural Development in India-Basic Issues & Dimensions, Mishra, B.N. (ed.) Sharada Pustak Bhawan, University Road, Allahabad P.169.
14. Approach Paper Fifth Plan (1974-79)
15. Sen, L.K. and others.
16. Ibid.
17. Majoomdar, R.C. and Others An Advanced History of India –Page.71.
18. Kalla,S.C.Terakota Feagars from Koshambi – Page.38.
19. Sir. W. Hanter, Report of Indian Education Commission of 1882. Page.73.
20. Joshi Smt. Ishabasanti (Ed.) Uttar Pradesh District Gazetteers, Allahabad – Page.164.
21. India, 1997. A Reference Annual (Ed.) Research and Reference Division, Ministry of Information and Broadcasting (Govt. of India) P.200.
22. Economic Survey of India, 1996-97. Ministry of Finance (Economic Division), Govt. of India – P.73.
23. V. Ratan, 1984 : Handbook of Preventive and Social Medicine, Jaypee Brothers, Medical Publishers, New Delhi, P.33.
24. India, 1997. A Reference Annual, Op. Cit. P.200.

अध्याय - 7

सारांश एवं निष्कर्ष

सारांश

इलाहाबाद जिले के यमुना पार प्रदेश के सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए स्थानिक नियोजन का अध्ययन अनेक दृष्टिकोण से प्रादेशिक विकास में सार्थक भूमिका निभाता है। क्षेत्र के सामाजिक निर्माण, उद्योग, कृषि आदि के विकास पर जोर देने वाले सेवा केन्द्रों की स्थानीय कियात्मक विशेषताओं का अध्ययन अनेक सामाजिक आर्थिक समस्याओं को प्रकट करने के लिए हुआ है। क्षेत्र के कुछ सेवा केन्द्रों पर अनेक सामाजिक-आर्थिक सेवाओं का अनियमित एकत्रीकरण तथा यातायातीय एवं अन्य आधारभूत सुविधाओं की कमी के कारण ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में एक बड़ा सामाजिक-आर्थिक अन्तराल पैदा हुआ है जिसकी वजह से असेवित क्षेत्रों की एक विशाल मानव शक्ति का और स्थानीय प्राकृतिक संसाधनों का बराबर उपयोग उत्पादक क्षेत्रों में नहीं हो पाता है। परिणामतः शहरी क्षेत्र ग्रामीण क्षेत्रों से अत्याधिक समृद्ध हो गए हैं। तथापि क्षेत्र के सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए स्थानिक नियोजन का अध्ययन प्रादेशिक कृषि, उद्योग और सामाजिक सुविधाओं जैसे- शिक्षा-स्वास्थ्य के विकास में सेवा केन्द्रों की बहुत बड़ी भूमिका और सार्थकता है।

यद्यपि शोध प्रबन्ध के उद्देश्य में अनेक कार्यों जैसे- साहित्यिक परामर्श के लिए पुस्तकालय, तत्थ्यात्मक खोज के लिए क्षेत्र सर्वेक्षण और प्रयोगशाला शोध आदि से सम्बन्धित होने के कारण सुविधापूर्वक सम्पन्न हो गए हैं। इस अध्याय को सम्मिलित कर शोध प्रबन्ध कुल सात अध्यायों में विभाजित है जिनके तहत समस्यात्मक प्रश्नों का हल विभिन्न पहलुओं से किया गया है जबकि यह अध्याय शोध प्रबन्ध के किसी महत्वपूर्ण भाग का सघन अध्ययन नहीं करता है फिर भी यह छः अध्यायों के सारांश एवं उपसंहार का विवेचन प्रस्तुत करता है।

प्रथम अध्याय विभिन्न पहलुओं से शोध समस्याओं का संकल्पनात्मक विश्लेषण करता है। इस अध्याय में प्रश्नगत् समस्याओं पर सैद्धान्तिक पृष्ठीभूमि से संक्षिप्त परिचर्चा और विकासशील देशों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति के सन्दर्भ में अध्ययन किया गया है। विभिन्न प्रकार के प्रदेशों जैसे- आकारजनक प्रदेश, कार्यात्मक प्रदेश, नियोजन प्रदेश, समस्यात्मक प्रदेश इत्यादि का विश्लेषणात्मक विवरण और विविध विशेषताओं से युक्त प्रदेशों पर विशेष प्रकाश डाला गया है। विविध नियोजनों एवं

विकासात्मक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए अनेक प्रकार के प्रदेशों का तुलनात्मक उपयोग किया गया है।

केन्द्रीय स्थल अध्ययनों का एक संक्षिप्त सारांश जिसकी शुरुआत 1933 में 'डब्लू किस्टालर' द्वारा 'केन्द्रीय स्थल सिद्धान्त' से हुई थी और बाद में इसका अनुकरण पेरोक्स और बोड बिले का 'विकास ध्रुव सिद्धान्त', हैगर स्ट्रोल्ड का 'प्रसारण सिद्धान्त', हरमैन और मिशैल का संचार और विकास सिद्धान्त, प्रो. आर.पी.मिश्रा का 'विकास बिन्दु सिद्धान्त' आदि का भी विश्लेषण किया गया है। इन विद्वानों के प्रयासों के माध्यम से ही सेवा केन्द्र संकल्पना प्रादेशिक विकास एवं नियोजन की वैज्ञानिक एवं विश्व स्तरीय प्रतिदर्श बन सका। सेवा केन्द्रों का संगठित पदानुकम तथा उनके मध्य क्षैतिज सम्बद्ध वस्तु, व्यक्ति एवं सेवाओं हेतु एक कुशल एवं प्रभावी श्रृंखला प्रस्तुत करते हैं जिससे विकास सम्बन्धी विविध सामाजिक आर्थिक किया कलापों का विकेन्द्रीकरण एवं नवाचारों का प्रसरण किया जा सकता है अतः सेवा केन्द्र प्रतिदर्श किसी प्रदेश में केन्द्रों की न्यूनतम संख्या के माध्यम से विविध सामाजिक-आर्थिक सेवाओं के प्रभावी विकेन्द्रीकरण हेतु एक सन्तुलित स्थानिक एवं कार्यातमक ढांचा प्रस्तुत करता है। साथ ही यह अविकसित एवं विकासशील देशों में विकास नियोजन प्रकिया को तीव्रतर करने में भी सहयोग करता है।

संकल्पना और नियोजन के प्रकार तथा प्रादेशिक नियोजन और प्रादेशिक विकास के लिए राष्टीय नियोजन की संकल्पना भी इसमें समाहित है। राष्टीय विकास के लिए नियोजनों तथा ग्रामीण विकास के लिए रण नीतियों और विविध स्वीकृत उपागमों को भी इस अध्याय में विवेचित किया गया है। अध्याय के अन्त में प्रश्नगत समस्याओं तथा उसके उद्देश्यों का विस्तृत विवेचन किया गया है तथा अध्ययन की प्रमुख परिकल्पनाओं को भी सूचीबद्ध किया गया है।

द्वितीय अध्याय में आन्तरिक भौतिक तत्वों, जनसंख्या और अधिवासों का सुविस्तृत विवेचन है। यमुना पार प्रदेश $81^{0}\ 29^{|}$ पूर्व से $82^{0}\ 19^{|}\ 30^{||}$ पूर्व देशान्तर और $25^{0}\ 25^{|}\ 40^{||}$ उत्तरी अक्षांशों से $24^{0}\ 41^{|}\ 15^{||}$ उत्तरी अक्षांशों के बीच स्थित है जिसका सम्पूर्ण क्षेत्रफल 2999 वर्ग कि.मी. है। भूगर्भित दृष्टिकोण से यह क्षेत्र रीवां कगार से अलग होता हुआ गंगा यमुना मैदान का अवसादित भाग है। अध्ययन क्षेत्र की जलवायु उष्ण कटिबंधीय मानसून प्रकार की है जिसमें गर्मी, जाड़ा और वर्षा ऋतुए पायी जाती हैं। इस जटिल मौसमी दशाओं के कारण अध्ययन क्षेत्र में तीन प्रमुख फसलें जैसे- रबी, खरीफ, जायद उगाई जाती हैं। इस क्षेत्र की मिट्टी मुख्यतः छः प्रकार- गंगा खादर, नवीन जलोढ़, गंगा समतली, यमुना उच्च भूमि, यमुना समतली, भारी काली जलोढ़ मिट्टी आदि हैं। इस क्षेत्र की प्राकृतिक वनस्पति उष्ण कटिबंधीय

मानसूनी पतझड़ है जिसमें महुआ, आम, नीम, जामुन, गूलर, पीपल आदि वृक्ष पाए जाते हैं।

वर्ष 1991 की जनगणना के अनुसार अध्ययन क्षेत्र की सम्पूर्ण जनसंख्या 1237709 है। क्षेत्र की जनसंख्या वृद्धि का ग्राफ देखने से स्पष्ट होता है कि 1901 से 1921 के बीच जनसंख्या वृद्धि ऋणात्मक रही एवं 1921 से 1941 तक जनसंख्या मन्द गति से हुई जबकि 1941 से आज तक जनसंख्या काफी तीव्र गति से बढ़ी है। सम्पूर्ण क्षेत्र का औसत गणितीय घनत्व 381 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. है तथा चाका विकास खण्ड का जन घनत्व सर्वाधिक 921 व्यक्ति है। क्षेत्र का औसत कृषि घनत्व 464 व्यक्ति प्रति वर्ग कि0 मी0 का है। चाका ब्लाक का कृषि घनत्व सर्वाधिक 1183 व्यक्ति प्रति वर्ग कि0 मी0 है।सम्पूर्ण क्षेत्र का लिंगानुपात 873 महिला/1000 पुरुष है। सम्पूर्ण ग्रामीण जनसंख्या में 53.39 प्रतिशत पुरुष एवं 46.61 प्रतिशत महिलाएं हैं। सम्पूर्ण अध्ययन क्षेत्र की साक्षरता 28.86 प्रतिशत है जिसमें 81.07 प्रतिशत पुरुष एवं 18.93 प्रतिशत महिलाएं साक्षर हैं। उरुवा क्षेत्र का सर्वाधिक शिक्षित विकास खण्ड है। क्षेत्र में दोनों प्रकार - ग्रामीण एवं कस्बाई अधिवास पाया जाता है। क्षेत्र में कुल गांवों की संख्या 1342 है जिसमें बसे हुए गांव 1202 एवं 140 केवल राजस्व गांव हैं। अधिवास प्रतिरूप प्रमुख तीन सघन, अर्द्ध-सघन एवं बिखरे प्रकार का है। ग्रामीण इलाके में तो ज्यादातर घर कच्चे बने हैं जबकि कस्बाई इलाके- कंकड़, पत्थर, ईंट आदि से बने पक्के भवन हैं।

शोध प्रबन्ध का तृतीय अध्याय गुच्छित प्रदेशों, सेवा केन्द्रों की संकल्पना का परिचय कराता है और साथ ही इसमें केन्द्रा प्रसारित और केन्द्राभिसारी बलों की परिचर्चा की गई है जिसमें सेवा केन्द्र और उसके सेवित क्षेत्र अन्तर्सम्बन्धित है। भारत में अनेक विद्वानों द्वारा भी सेवा केन्द्रों के विभिन्न पहलुओं पर विशेष प्रकाश डाला गया है। भूगोल विषय में सेवा केन्द्रों की शैक्षिक एवं व्यावहारिक मान्यताएं हैं। नियोजन इकाइयों की पहचान पर परिचर्चा सेवा केन्द्र अध्ययनों की औपचारिक शुरुआत की मान्यता से प्रारम्भ होती है।

इस अध्ययन में नियोजन इकाइयों को पहचानने में आने वाली कुछ व्यावहारिक समस्याएं भी अंकित की गई हैं। केन्द्रीय कार्यों की संकल्पना विश्लेषित की गई है। तथा क्षेत्र के 45 केन्द्रीय कार्य एवं सेवाएं जो प्रादेशिक जनसंख्या की जीवन शैली और सामान्य उपभोग प्रतिरूप निर्धारित करती है, को औसत न्यूनतम जनसंख्या के आधार पर तीन विभिन्न श्रेणियों में बांटा गया है। औसत न्यूनतम जनसंख्या की सार्थकता 'प्रवेश बिन्दु' और 'संतृप्त बिन्दु' के बीच के माध्य मूल्य से पहचानी गई है। केन्द्रीय कार्यों एवं सेवाओं के अनुक्रमों का निर्धारण सेवा केन्द्रों की सम्बद्धता सूचकांक तथा विभिन्न श्रेणियों के केन्द्रीय कार्यों एवं सेवाओं को प्राप्त करने के लिए उपभोक्ताओं की स्थानीय वरीयता और व्यवहारों के एक अनुभवात्मक विश्लेषण द्वारा सुनिश्चित और प्रमाणित हुई है। अनेक श्रेणी के केन्द्रीय कार्यों की सहायता से, उपभोक्ता

व्यवहार प्रतिरूप और सम्बद्धता सूचकांक से, तीन कमों के 45 केन्द्रीय कार्यों से अध्ययन क्षेत्र में कुल 26 सेवा केन्द्र निश्चित किए गए हैं। प्रथम कम का सेवा केन्द्र केवल एक 'नैनी' है जो एक बड़ा शहरी क्षेत्र है। द्वितीय कम के कुल पांच सेवा केन्द्र हैं जबकि तृतीय कम में कुल 26 सेवा केन्द्र निर्धारित किए गए हैं। इन सभी सेवा केन्द्रों को यमुना पार प्रदेश के मानचित्र में भी दर्शाया गया है।

सेवा क्षेत्र की परिचर्या सेवा क्षेत्रों के सैद्धान्तिक जाल से जुड़ी हुई है। अध्ययन क्षेत्र में विभिन्न श्रेणी के सेवा केन्द्रों के सेवा क्षेत्र का निर्धारण उपभोक्ताओं की स्थानिक वरीयता और 'अलगाव बिन्दु' सूत्र के आधार पर किया गया है। तथापि केन्द्रीयता की संकल्पना और नियोजन प्रदेश के सदृश सेवा केन्द्रों की उपयुक्तता और प्रासंगिकता भी विश्लेषित और विवेचित की गई है। अन्ततोगत्वा अध्ययन क्षेत्र में नियोजन प्रदेश की तरह सेवा केन्द्रों के सेवा क्षेत्र प्रयोग का व्यावहारिक आशय मूल्यांकित और परिकल्पित किया गया है। इससे यह सारांश निकला कि विविध कमों के सेवा केन्द्रों का सेवा क्षेत्र एक कार्यात्मक प्रणाली देगा जिसका प्रयोग अध्ययन क्षेत्र के विकास एंव वृद्धि के लिए और अनेक सामाजिक-आर्थिक किया कलापों के अवस्थितिक नियोजन के लिए हो सकता है।

चौथा अध्याय अध्ययन क्षेत्र में कृषि विकास विश्लेषण के लिए समर्पित है साथ ही कृषि विकास के स्थानिक नियोजन में सेवा केन्द्रों की भूमिका दर्शायी गई है। अतः इस अध्याय का परिचय एक प्रदेश के सामाजिक-आर्थिक विकास में कृषि की भूमिका पर जोर देता है। इसमें कृषि क्षेत्र की बदलती हुई प्रकृति का उच्च प्रदर्शन तथा समय और स्थान के अनुसार बदलते हुए भू उपयोग प्रतिरूप का एक तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है। यमुना पार के कुल प्रतिवेदित क्षेत्र में 58.69 प्रतिशत भाग 0-2 हेक्टेयर के अन्तर्गत आता है। रबी और खरीफ कृषि प्रतिरूप एक जटिल जीविका निर्वाह कृषि प्रतिरूप दिखाता है। खरीफ फसलों का बुआई और मूल्य अधिकतम होता है। क्षेत्र के कुल फसली क्षेत्र का 41.8 प्रतिशत भाग पर खरीफ फसलें बोयी जाती हैं। धान अध्ययन क्षेत्र की सबसे अधिक पानी चाहने वाली फसल है जिसका कुल क्षेत्रफल 78243 हेक्टेयर है। धान में अध्ययन क्षेत्र का मेजा विकास खण्ड 11568 हेक्टेयर के साथ प्रथम स्थान पर है।

रबी फसल चक को एक अलग दशा में तापमान और जल की आवश्यकता होती है। अध्ययन क्षेत्र के कुल फसली क्षेत्र का 57.8 प्रतिशत भाग रबी फसलों के अन्तर्गत आता है। गेहूं इस मौसम की मुख्य फसल है। कोरांव ब्लाक (25736 हेक्टेयर) गेहूं के क्षेत्रफल में प्रथम स्थान पर है। अध्ययन क्षेत्र में नहरों, प्राइवेट एवं सरकारी ट्यूबवेलों एवं पम्प सेटों, तालाब आदि साधनों द्वारा सिंचाई की जाती है। क्षेत्र में सम्पूर्ण बोये गये क्षेत्र का 52.36 प्रतिशत

सिंचित क्षेत्र है। नहर, सरकारी एवं प्राइवेट ट्यूबवेलों द्वारा सम्पूर्ण सिंचित भाग का 95 प्रतिशत सिंचाई की जाती है। अध्ययन क्षेत्र में ज्यादातर सामान्य कृषक अपने पुराने रखे हुए अपरिष्कृत बीज का प्रयोग करते हैं जबकि बड़े एवं शिक्षित कृषक उन्नतशील बीजों का प्रयोग करते हैं। क्षेत्र में कृत्रिम कृषि यन्त्रों और औजारों का प्रयोग केवल विशिष्ट वर्ग के कृषकों द्वारा किया जाता है। कृषकों का एक बहुत बड़ा वर्ग अभी भी लकड़ी के हल और पाटे का प्रयोग करते हैं जबकि बड़े कृषक ट्रैक्टरों का प्रयोग करने लगे हैं।

शस्य संकेन्द्रण और शस्य विकेन्द्रीकरण का विश्लेषण अध्ययन क्षेत्र के कुल 9 ब्लाकों में विभिन्न फसलों के स्थानिक प्रभाव क्षेत्र को प्रक्षेपण बनाकर किया गया है। शस्य गहनता शुद्ध बोये गये क्षेत्र और कुल बोये गए क्षेत्र के बीच औसत निर्धारित करता है और साथ ही एक फसली क्षेत्र और द्विफसली क्षेत्र का एक स्पष्ट चित्र प्रस्तुत करता है। शस्य गहनता का कालिक विचलन भी सारणीबद्ध किया गया है और अन्त में कृषि विकास में सेवा केन्द्रों की भूमिका और कृषि विकास के लिए सुझावों की परिचर्चा और प्रस्ताव के साथ विविध विकास लागतों की अवस्थिति के लिए विभन्न कम के सेवा केन्द्र बनाए गए हैं।

पांचवां अध्याय अध्ययन क्षेत्र के सामाजिक आर्थिक विकास हेतु स्थानिक नियाजन में उद्योगों की भूमिका और सार्थकता की परिचर्चा से शुरु होकर औद्योगिक विकास का विश्लेषण तक दिखाता है। यमुना पार प्रदेश में औद्योगिक विकास के लिए सम्भाव्यता का आकलन और विश्लेषण तीन आधारों- जैसे औद्योगिक संसाधन, औद्योगिक बाह्य संरचनात्मक सहायता और औद्योगिक विकास के लिए संकेन्द्रण पर किया गया है। अध्ययन क्षेत्र विविध प्रकार के संसाधनों जैसे- मशीनरी, बालू, ईंट, मिट्टी, वनस्पति संसाधन, जल संसाधन, कृषि संसाधन, पशुपालन आदि में आन्तरिक रूप से सुदृढ़ है जिससे भविष्य में औद्योगिक विकास सुनिश्चित होगा। यद्यपि क्षेत्र में उद्योगों के बराबर विकास के लिए आवश्यक ठोस बाह्य संरचनात्मक सुविधाओं की कमी है लेकिन वर्तमान में बाह्य सुविधाओं के जाल को बढ़ाया जा रहा है जिससे कि भविष्य में आवश्यकताओं के अनुसार औद्योगिक विकास को बढ़ाया जा सके। इसके अलावा सरकार के अनेकों संस्थान और एजेन्सियां अध्ययन क्षेत्र में औद्योगिक विकास के लिए कई प्रकार के प्रोत्साहन और छूट, वित्तीय सहायता और विकास की विविधता प्रदान करते हैं।

अध्ययन क्षेत्र की वर्तमान औद्योगिक संरचना का स्थानिक और कालिक प्रतिरूप की परिचर्चा भी विस्तार से की गई है। परिचर्चा में उद्योगों के प्रकार, औद्योगिक इकाइयों की वृद्धि और विकास, पूंजीनिवेश और रोजगार सृजन, उद्योगों की संरचना आदि को सम्मिलित किया गया है। अध्ययन क्षेत्र में लघु उद्योगों की संख्या लगभग 901 है और क्षेत्र में कुल 14 वृहद उद्योग

स्थापित हैं जो ज्यादातर नैनी औद्योगिक आस्थान में स्थापित किए गए हैं। अध्ययन क्षेत्र के औद्योगिक विकास में सेवा केन्द्रों के योगदान की परिचर्चा की गई है और प्रमुख समस्या जैसे - पूंजी, कच्चा माल, आधारभूत सुविधाओं की कमी तथा क्षेत्रीय रूढ़िवादिता, तकनीकी कमी, उच्च उत्पादन लागत आदि से ऐसी समस्याओं की पहचान की गई है जिनसे क्षेत्र के निरन्तर औद्योगिक विकास में रूकावट पैदा हो रही है। और अन्त में अध्ययन क्षेत्र में सेवा केन्द्रों की भूमिका और औद्योगिक विकास के लिए स्थानिक नियोजन का सुझाव दिया गया है। साथ ही यमुना पार क्षेत्र में कुछ बड़े उद्योगों एवं लघु स्तरीय उद्योगों की पहचान की गई है तथा स्थानिक अवस्थिति के उद्देश्य के लिए विभिन्न सेवा केन्द्रों पर स्थान प्रस्तावित किया गया है।

छठा अध्याय यमुना पार क्षेत्र में सामाजिक सुविधाओं जैसे - स्वास्थ्य एवं शिक्षा के विकास हेतु स्थानिक नियोजन,अध्ययन में समर्पित है। इस अध्याय की शुरूआत क्षेत्र के सम्पूर्ण विकास में स्वास्थ्य, शिक्षा सुविधाओं की सार्थकता के संक्षिप्त वर्णन से हुई है। बाद में स्वास्थ्य शिक्षा का क्षेत्र में स्थापित स्तर और दशाओं का विवेचन, उनका प्रकार, स्थानिक वितरण और वृद्धि एवं प्रमुख समस्याओं पर विशेष प्रकाश डाला गया है। इन समस्याओं को दूरकरने के लिए तथा सुविधाओं की पूर्ति का प्रबन्ध क्षेत्रीय मांग के अनुरूप करने के लिए स्थानिक नियोजन किया गया है। अध्ययन क्षेत्र में स्वास्थ्य एवं शिक्षा जैसी जटिल सुविधाओं की कमी वाले क्षेत्रों में इनकी अवस्थिति का प्रस्ताव भी विभिन्न सेवा केन्द्रों में किया गया है। तथा इन सुविधाओं के स्थानिक नियोजन को एक ठोस आधार देने के लिए कुछ व्यावहारिक सुझाव और संस्तुतियां भी दी गई हैं।

अन्तिम अध्याय पूरे कार्य को एक सारांश प्रस्तुत करता है और साथ ही अध्ययन से उत्पन्न महत्त्वपूर्ण उपसंहार का चित्रांकन भी किया गया है जिससे सामान्य तौर पर सम्पूर्ण और विशिष्ट अध्ययन क्षेत्र 'यमुना पार' के ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक-आर्थिक विकास की प्रकिया को गतिवर्धित और पदोन्नति करने के लिए मार्ग दर्शन कर सकें।

निष्कर्ष

वर्तमान शोध योजना जिसका उद्देश्य- 'इलाहाबाद जिले के 'यमुना पार प्रदेश' के सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए स्थानिक नियोजन' का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन करना है। उक्त का समय-विस्तार कुल सात अध्यायों में किया गया है। प्रादेशिक विकास, सेवा केन्द्र और स्थानिक नियोजन से सम्बन्धित अनेक समस्याओं की परिचर्चा प्रथम छः अध्यायों में परिसीमित की गई है। सातवां और अन्तिम अध्याय पूर्ववर्ती छः अध्यायों का केवल सारांश और निष्कर्ष है। सेवा केन्द्र प्रणाली कृषि उद्योग और सामाजिक सुविधा विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। यह तीनों एक प्रदेश के महत्वपूर्ण अवयव होते हैं। इन अवयवों का चयन वर्तमान शोध योजना के अन्तर्गत विश्लेषण और परिचर्चा के लिए किया जा चुका है। इसके अतिरिक्त उपरोक्त चार प्रमुख क्षेत्रों के पास अवस्थितिक और स्थानिक परिमाप है जो क्षेत्रीय सेवा प्रणाली से निर्धारित और संचालित होते हैं इसलिए यह संयोजन प्रादेशिक विकास प्रकिया में भौगोलिक अध्ययनों की कृत्रिम और संस्थापित धुरी से अत्यधिक स्वाभाविक है।

अतएव अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों जैसे- कृषि उद्योग, शिक्षा और स्वास्थ्य की उत्पन्न समस्याओं पर गहराई से परिचर्चा अलग-अलग अध्यायों में की गई है और व्यावहारिक स्थानिक योजनाएं और नीति संस्तुति / सुझावों के साथ उनका प्रयोग भी परिचालन स्तर पर तैयार किया गया है। किन्तु अध्ययन क्षेत्र में संस्तुति योजनाओं को वास्तविक कार्यरूप प्रदान करने की आवश्यकता है जिससे सम्बन्धित शासकीय विभागों / संस्थानों की सकिय भागीदारी से इसका उद्देश्य पूर्ण हो सके। अन्यथा प्रादेशिक विकास में इन योजनाओं एवं संस्तुतियों का तथा शासकीय संस्थानों एवं विभागों की भागीदारी का कोई मतलब नहीं होगा। अतः अच्छे आशय एवं विचारों से ही यह परिकल्पना वास्तविक एवं ठोस हो सकती है।

इसके अतिरिक्त उपरोक्त चारों क्षेत्रों,- विशेषकर विशेष क्षेत्रों में विकास पक्षों के गतिवर्धन के लिए और सामान्य रूप से सम्पूर्ण यमुनापार में उत्पन्न समस्याओं को दूर करने के लिए उपरोक्त परिचर्चा की तरह नियोजित सुझाव दिया गया है। योजनाओं को एक व्यावहारिक आकार देने में एक वास्तविक, भौतिक, वित्तीय एवं मानव शक्ति संसाधनों की महती आवश्यकता होती है जो सरकारी विभागों एवं एजेन्सियों की सकिय भागीदारी के लिए भी उपयुक्त होगी। यद्यपि विकास नियोजन और प्रचुर विकास में लोगों की भागीदारी से कोई समस्या नहीं है। वे लोग सहर्ष उपलब्ध हैं और विकास कार्यकमों में सदैव स्वेच्छापूर्वक उनका सकिय सहयोग होता है। इस प्रकार पूर्व प्रस्तावित योजनाओं के प्रयोग में सरकार की सहयोगशीलता एवं पूर्ण सहमति पूर्व अपेक्षित एवं अपरिहार्य है। अतः यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि सच्चे विचार एवं हृदय से संस्तुति योजनाओं का ही प्रयोग करने पर क्षेत्र

की ज्यादातर सामाजिक-आर्थिक विकास की समस्याएं अपने आप हल हो जाएगी और अध्ययन क्षेत्र अत्यन्त तीब्र गति से समृद्धि के पथ पर अग्रसर हो जाएगा।

यद्यपि विकास प्रक्रिया एवं नियोजन में लोगों की भी भागीदारी कोई समस्या नहीं है वे क्षेत्र में पहले से ही उपलब्ध है तथा विकास कार्यक्रमों में अपना क्रियात्मक सहयोग देने के लिए तत्पर रहते हैं। अतः उपरोक्त संस्तुति स्थानिक योजनाओं को क्रियान्वित करने हेतु सरकारी प्रतिबद्धता एक अनिवार्य शर्त है। यदि संस्तुत योजना पूर्णरूपेण लागू कर दी जाए तथा सुझावों को समाहित किया जाए तो शोध क्षेत्र की अधिकांश सामाजिक-आर्थिक समस्याएं शीघ्र समाप्त हो जाएंगीं तथा क्षेत्र की विकासधारा पहले की अपेक्षा अधिक तीब्रतर एवं उन्नतशील होगी।

परिशिष्ट-1

प्रश्नावली

भाग- अ : केन्द्र पर

1. सेवा केन्द्र का नाम क्या है?
2. इस जगह को नाम क्यों दिया गया है?
3. सेवा केन्द्र की स्थिति (सापेक्ष और निर्पेक्ष)' क्या है?
4. सेवा केन्द्र का क्षेत्रफल क्या है?
5. सेवा केन्द्र की जनसंख्या कितनी है?(लिंगानुपात, साक्षरता, दशकीय विचलन)
6. प्रशासनिक स्तर क्या है?
7. इस केन्द्र में कौन-कौन सी प्रशासनिक सेवाएं उपलब्ध हैं?(जिला, तहसील, ब्लाक, थाना इत्यादि')
8. इस केन्द्र पर कौन सी शिक्षा सेवा उपलब्ध है? (प्रकार, इकाई)
9. इस केन्द्र पर शिक्षा सेवा प्राप्त करने के लिए कितनी दूरी तक के लोग आते हैं?
10. इस केन्द्र पर कितनी चिकित्सा-स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध हैं? (उनके प्रकार, इकाइयों की संख्या' 'सरकारी / प्राइवेट)
11. स्वास्थ्य सेवाएं लेने आने वालों की दूरी क्या है?
12. इस केन्द्र पर उपलब्ध यातायात सुविधाएं क्या-क्या हैं? (रेल / सड़क, पुल बस स्आप / स्टेशन / डिपो, रेलवे स्टेशन / जंक्शन)
13. दूर दराज के लोग इस केन्द्र पर कैसे एवं किसलिए आते जाते हैं?
14. इस केन्द्र पर पत्र व्यवहार एवं संचार सुविधाएं कैसी हैं? 'पोस्ट आफिस, पोस्ट / टेलीग्राम, मुख्य पोस्ट आफिस, टेलीफोन एक्सचेंज'
15. कितनी दूरी तक के लोग इन संचार सुविधाओं का लाभ प्राप्त करते हैं?
16. इस केन्द्र में किस प्रकार के बाजार / व्यापार की सेवा उपलब्ध है? (हाट / मेला, प्रतिदिन / साप्ताहिक बाजार, खुदरा / थोक बाजार, अनाज मण्डी, मण्डी समिति, विकय / कय केन्द्र, माल गोदाम, कोल्ड स्टोरेज इत्यादि)
17. कितनी दूरी तक के लोग इन केन्द्रों से खरीददारी करने आते हैं?
18. इस क्षेत्र पर किस प्रकार की कृषीय आकार / विस्तार सुविधाएं उपलब्ध हैं? (बीज, खाद, कीटनाशक, औजार कन्द्र / दूकान, सुझाव केन्द्र सेवाएं, बीज भण्डार, उद्यान कृषि, मत्स्य पालन, रेशम पालन इत्यादि सुविधाएं, मृदा संरक्षण केन्द्र, कृत्रिम गर्भाधान, पशु अस्पताल, थोक अनाज केन्द्र इत्यादि)
19. कितनी दूसरी तक के लोग इन कृषि आकार / विस्तार सेवाएं लेते हैं?

20. विभिन्न औघोगिक इकाइयों एक वर्ष में अवस्थिति, पूंजी निवेश, कच्चा माल, उपयोग, रोजगार सृजन, उत्पादित वस्तुओं पर बाजारीय मूल्य लाभ क्या है?
21. इस केन्द्र के चारों ओर स्थापित औघोगिक इकाइयों की सुविधाएं क्या-क्या हैं? (कुटीर उघोग, कृषि आधारित, लघु / मध्यम बड़े उघोग, उनके प्रकार और इकाइयां, सुविधाएं, बड़े / लघु / मध्यम औघोगिक आस्थान का निर्धारण और मूल्यांकन)
22. क्या स्थापित उघोग अपना कच्चा माल, उर्जा और श्रम स्थानीय प्राप्ति का प्रयोग करते हैं अथवा आयात करते हैं।
23. इन केन्द्रों पर स्थापित उघोगों इकाइयों को चारों ओर के निवासियों को किस प्रकार का फायदा होता है?
24. इस केन्द्र पर किस प्रकार के ऋण (लोन) की व्यवस्था उपलब्ध है? (को आपरेटिव सोसायटी, को आपरेटिव बैंक, ग्रामीण विकास बैंक, राष्टीयकृत बैंक, फाइनेंसियल बैंक या कृषि उघोगिक विकास में सहायक अन्य फाइनेंसियल संस्थान/ एजेन्सी आदि)
25. इस क्षेत्र के ऋण और वित्त की वृद्धि के लिए ये एजेन्सी कितनी प्रगति और प्राप्ति कर पायी है?
26. इन सुविधाओं को लेने के लिए कितनी दूरी तक के लोग इस केन्द्र पर आते हैं?
27. इस केन्द्र पर उपलब्ध सेवाओं का सार्वजनिक उपयोग क्या है? (जल आपूति, उर्जा आपूति, सार्वजनिक सफाई और स्वास्थ्य)
28. इस सेवा केन्द्रों के भवनों एवं घरों की आकारीय संरचना क्या है?
29. इस केन्द्र पर व्यवसाय / व्यापार की कौन-कौन सी सेवाएं उपलब्ध हैं? (थोक एवं खुदरी सेवा स्तर पर?' 'अनाज, फल, सब्जी, किराना की दुकान / जनरल स्टोर, किताबें एवं लेखन सामग्री, कपड़े / होजरी, उपकरण/ साफ्टवेयर, होटल/ रेस्टोरेन्ट, विघुत/ विघुत के सामान, हार्डवेयर/ भवन निर्माण सामग्री, आभूषण/ महिलाओं के साज/ सामान, मिठाई, चाय की दुकान, अभियांत्रिक सामान, मोटर के सामान, सिले सिलाए कपड़े, स्टील / लकड़ी के सामान, गढ़ाई की दूकान, दवाखाना, डीजल/ पेटोल/ मिट्टी के तेल की दूकान, पम्प की दूकान आदि। 'इनके प्रकार एवं संख्याएं)
30. इन सेवाओं के लिए इस केन्द्र पर कितनी दूरी से लोग आते हैं?
31. इस केन्द्र पर मरम्मत और अन्य सेवाएं कौन-कौन सी उपलब्ध है? (इनकी संख्याएं एवं प्रकार, जैसे- साइकिल, छाता, जूता, उपकरण, रेडियो/ घड़ी, आटो, दांत के डाक्टर, दवाएं एवं ड्रग्स, टेन्ट/ चारपाई / सज्जा वस्तुएं आपूर्ति, खान-पान / आर्डर / आपूर्ति, कपड़ा धुलाई सेवाएं, सिलाई सेवाएं , तांगा की मरम्मत, रिक्शा चालक, टैक्सी चालक, सुनारगीरी, लुहारगीरी, बढ़ईगीरी, अनाज विकय, बिल्डर्स इत्यादि की मरम्मत सेवाएं)

32. इस केन्द्र पर कितनी दूरी तक के लोग इन सेवाओं का उपभोग करने आते हैं?
33. इस केन्द्र पर कौन-कौन सी सांस्कृतिक और मनोरंजन सेवाएं उपलब्ध हैं? उनके प्रकार और इकाई संख्याएं' (ऐतिहासिक स्थल, पर्वत, मंदिर, चर्च, मस्जिद इत्यादि, अन्य धार्मिक स्थलों / चीजों / चैरिटेबुल ट्रस्ट, मार्ग दर्शक संगठन, सांस्कृतिक संगठन, सार्वजनिक पुस्तकालय, सिनेमा हाल, ड्रामा हाल, क्लब, पार्क, खेल मैदान इत्यादि)
34. इन सेवाओं को लेने के लिए कितनी दूरी तक के लोग आते हैं?
35. वह कौन सी वस्तु है जिसका इस केन्द्र पर प्रमुख रूप से क्रय/ विक्रय होता है? (वस्तु बजट : वस्तु विक्रय)।
36. इस केन्द्र पर आने वाले लोगों का व्यवहार कैसा है?
37. लोगों द्वारा इस केन्द्र को क्यों वरीयता दी जाती है? (नजदीक के कारण, निम्न कीमत, तुलनात्मक मूल्य, बड़ी विविध वस्तुएं, उत्तम किस्म, परम्परागत / भावनात्मक लगाव, मनोवैज्ञानिक कारण, यातायात / सुविधा, तथा अन्य कारण आदि)
38. पिछले कुछ वर्षों से अथवा वर्तमान समय में इस केन्द्र की प्रमुख समस्या क्या है जिसका यह केन्द्र सामना कर रहा है?
39. इस केन्द्र को कौन सी सेवा बढ़ानी चाहिए जिससे इसके सामाजिक-आर्थिक विकास में सुधार हो तथा चारों ओर के क्षेत्र के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सके?

भाग- ब : केन्द्र के चारों ओर

1. इस केन्द्र द्वारा सेवित क्षेत्र कितना है? (क्षेत्र से मतलब चारों ओर के गांवों की संख्या से है)
2. इस केन्द्र द्वारा, कितनी जनसंख्या की सेवा की जाती है? (चारों ओर के सभी गांवों की जनसंख्या जो कि इस केन्द्र से सीधे प्रभावकारी हो)
3. इस केन्द्र द्वारा सेवित क्षेत्र की सामान्य भौगोलिक विशेषता क्या है? (उच्चावच, मौसम, प्रवाह, वनस्पति इत्यादि)
4. इस केन्द्र द्वारा सेवित क्षेत्र में पाये जाने वाले संसाधनों का आर्थिक, व्यावसायिक और औघोगिक उपयोग क्या है?
5. इस क्षेत्र में मिलने वाली मिट्टी का प्रमुख प्रकार क्या है?
6. इस क्षेत्र के उन स्थानों को चिन्हित करिए जो अपरदन, अनाच्छादन और ऊसरीकरण इत्यादि से प्रभावित हो?
7. इस केन्द्र के चारों ओर सेवित क्षेत्र में किस प्रकार की कृषि की जाती है? (आदिम, परम्परागत, जीविका निर्वाह, सघन जीविका निर्वाह, सघन व्यापारिक, मिश्रित कृषि पशुपालन के साथ इत्यादि)
8. इस केन्द्र द्वारा सेवित क्षेत्र में कौन-कौन सी फसलें उगाई जाती हैं इन तीनों फसल चक्रों के दौरान में? (खरीफ, रबी, जायद मौसम में उत्पादन का एक अनुमानित औसत कितना रहता है)
9. इसके चारों ओर कृषि में निवेश का स्तर क्या है? (सिंचाई, बीज, उर्वरक, कीटनाशक यंत्रों का प्रयोग प्रति एकड़ क्षेत्र के अनुसार)
10. इस केन्द्र द्वारा सेवित क्षेत्रों में पशुपालन, मत्स्य पालन, मधुमक्खी पालन इत्यादि की दशाएं क्या हैं?
11. इस क्षेत्र में प्रमुख व्यापारिक फसल कौन सी उगाई जाती है?
12. क्षेत्र में प्रमुख औघोगिक फसल क्या उगाई जाती है?
13. इस केन्द्र में स्थापित औघोगिक इकाई में किस कृषि उत्पाद को कच्चे माल के रूप में प्रयोग किया जा रहा है?
14. इस केन्द्र में स्थापित औघोगिक इकाई को क्या मजदूरों की आपूर्ति इसी क्षेत्र से होती है? (यदि हां, तो कितनी संख्या में मजदूर शक्ति आपूर्ति की जाती है?)
15. इस क्षेत्र के कितने लोग प्रतिवर्ष रोजगारशुदा होते हैं?(स्वयं का व्यापार, स्थापना, आदि अन्य क्षेत्र में)
16. क्या यह क्षेत्र पर्याप्त रूप से रेल/ रोड द्वारा केन्द्र से जुड़ा हुआ है? (कृपया रेलमार्ग/ सड़क मार्ग के जोड़ों को बताएं जिनसे यातायात सरल होता है।)
17. इस केन्द्र द्वारा सेवित क्षेत्र का क्या सभी एवं सम्पूर्ण भाग बराबर सुगम्य है?
18. इस केन्द से सेवित क्षेत्र की प्रमुख समस्याएं कौन-कौन सी हैं?

19. केन्द्र और सेवित क्षेत्रों के बीच बराबर सम्बन्ध बनाए रखने के लिए तथा आपसी अन्तर्क्रिया की प्रतिकिया की वृद्धि को बढ़ाने के लिए क्या क्या करना चाहिए?
20. यदि आपको कोई और समस्या / बात नजर आती है, तो उसे भी बताएं।